प्रकाशक—
राजमल बडजात्या मंत्री,
मुनि अनंत कीर्तिग्रंथमाला
कालबादेवी रोड बम्बई।



मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रेस, ४३४,
ठाकुरद्वार, बम्बई।

श्री वीतरागायनमः

नियमावली।

मुनि श्री अनन्तकीर्ति ग्रंथमाला।

१ यह ग्रन्थमाला श्री अनन्तकीर्ति मुनिकी स्मृतिमें स्थापित हुई है जो दक्षिण कनड़ाके निवासी दिगम्बर साधु चारित्रके तत्व ज्ञानपूर्वक पालनेवाले थे और जिनका देहत्याग श्री गो० दि० जैन सिद्धान्त विद्यालय मुरैना (गवालियर) हुआ था।

२ इस ग्रन्थमाला द्वारा दिगम्बर जैन सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थ भाषाटीका सहित तथा भाषाके ग्रन्थ प्रवधकारिणी कमेटीकी सम्मतिसे प्रकाशित होंगे।

३ इस ग्रन्थमालामे जितने ग्रन्थ प्रकाशित होगे उनका मूल्य लागत मात्र रक्खा जायगा लागतमे ग्रन्थ सम्पादन कराई सशोधन कराई छपाई जिल्द वधाई आदिके सिवाय आफिस खर्च भाडा और कमीशन भी सामिल समझा जायगा।

४ जो कोई इस ग्रन्थमालामें रु १००) व अधिक एकदम प्रदान करेंगे उनको ग्रन्थमालाके सब ग्रन्थ विनान्योछावरके भेट किये जायगे यदि कोई धर्मात्मा किसी ग्रन्थकी तैयारी कराईमें जो खर्च परे वह सब देवेंगे तो ग्रन्थके साथ उनका जीवन चरित्र तथा फोटो भी उनकी इच्छानुसार प्रकाशित किया जायगा यदि कमती सहायता देगे तो उनका नाम अवश्य सहायकोंमें प्रगट किया जायगा इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित सब ग्रन्थ भारतके प्रान्तीय सरकारी पुस्तकालयोंमें व म्यूजियमोंकी लायब्रेरियोंमें व प्रसिद्ध २ विद्वानों व त्यागियोंको भेटस्वरूप भेजे जायंगे जिन विद्वानोंकी सख्या २५ से अधिक न होगी।

५ परदेशकी भी प्रसिद्ध लायब्रेरियों व विद्वानोंको भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मंत्री भेट स्वरूपमें भेज सकेंगे जिनकी सख्या २५ से अधिक न होगी।

६ इस ग्रन्थमालाका सर्व कार्य एक प्रवंधकारिणी सभा करेगी जिसके सभासद ११ व कोरम ५ का रहेगा इसमें एक सभापति एक कोषाध्यक्ष एक मंत्री तथा एक उपमंत्री रहेंगे।

७ इस कमेटीके प्रस्ताव मत्री यथा सभव प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे स्वीकृत करावेंगे।

८ इस ग्रन्थमालाके वार्षिक खर्चका वजट वन जायगा उससे अधिक केवल १००) मंत्री सभापतिकी सम्मतिसे खर्च कर सकेंगे।

९ इस ग्रन्थमालाका वर्ष वीर सम्वत्से प्रारम्भ होगा तथा दिवाली तककी रिपोर्ट व हिसाव आडीटरका जचा हुआ मुद्रित कराके प्रति वर्ष प्रगट किया जायगा।

१० इस नियमावलीमें नियम नं १-२-३ के सिवाय शेषके परिवर्तनादि पर विचार करते समय कमसे कम ९ महाशयोंकी उपस्थिति आवश्यक होगी।

श्री दि० जैन मुनि अनंतकीर्तिग्रंथमालाके मुख्यसहायक महाशय।

२२०२) सेठ गुरुमुखरायजी सुखानदजी बम्बई

११०१) मुनिमहाराजके आहार दान समय.

११०१) यात्रार्थ आये हुए दिल्लीके संघके समय

११०१) से हुकमचदजी जगाधरमलजी-दिल्ली

११०१) से. उम्मेदसिंहजी मुसद्दीलालजी-अमृतसर

५०१) श्री जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय-बम्बई

४११) श्री धर्मपत्नी लाला रायबहादुर हजारीलालजी-दानापुर.

२५१) से. नाथारगजी वाले-बम्बई

२०१) से चुन्नीलाल हेमचदजी-बम्बई

१०१) साहु सुमतिप्रसादजी-नजीबाबाद

१०१) लाला जुगलकिशोरजी-हिसार.

१०१) श्री जैनधर्मवर्धिनी सभा बम्बई।

१०१) राजमलजी बडजात्या बम्बई।

१०१) से. बैजनाथजी सरावगी हाथरस।

१०१) से कस्तूरचद वेचरदासजी बम्बई।

१०१) लाला जैनेन्द्रकिशोरजी।

ठि—उत्तमचद भरोसालाल-आगरा।

भूमिका ।



ग्रंथपरिचय ।

श्रीमत्सकलतार्किकचक्रचूड़ामणिमाणिकनंदिजी आचार्यका **परीक्षामुख** ग्रंथ सूत्र रूपसे समुपलब्ध है। जो कि यह सूत्र ग्रंथ यथा नाम तथा गुणकी कहावतको चरितार्थ कर रहा है क्योंकि परीक्ष्य पदार्थोंकी परीक्षाका यह मुख्य कारण है। अथवा जिनके द्वारा हेयोपादेयारूप समस्त पदार्थोंकी परीक्षा होती है उन प्रमाण लक्षण फल वगैर का स्वरूप दिखानेके लिये यह ग्रंथ दर्पणके समान है। इसी विषयको स्पष्ट करनेके लिये खुद ग्रंथकर्ता ही इस ग्रंथकी प्रशस्तिमें इस प्रकार लिखते हैं।

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः
संविदे मादृशोवालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

तथा यह ग्रंथ समस्त न्याय वचनका सारभुत अमृत है क्योंकि इसकी शानी (मुकाविले) का सारभूत न्यायका सूत्र ग्रंथ ऐसा कोई भी अभी तक देखनेमें नहीं आया है। वास्तविक दृष्टिसे विचार किया जाय तो यह अन्य न्याय शास्त्रोंकी पूंजी है। क्योंकि इसकी उत्पत्ति श्री १००८ भगवान् जिनेन्द्रदेव तथा उनकी शिष्य परपराके प्रशिष्य तार्किक सिद्धान्त प्रधान श्रीमत् अकलंकदेवजीके वचन रूप समद्रसे सुधा सदृश हुई है।

इस विषयमें श्री अनंतवीर्यजी महाराज इस प्रकार लिखते हैं

अकलंकवचोम्भोधेरुद्दध्रे येन धीमता।
न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दने ॥ २ ॥

इस ग्रंथके ऊपर श्रीप्रभाचद्राचार्यजीकी वड़ी प्रमेय कमलमार्तंड, और छोटी श्रीअनंतवीर्यजीकृत प्रमेयरत्नमाला टीका है। प्रभाचंद्राचार्यजी तथा उनके ग्रंथका अनंतवीर्यजीने वड़ेही महत्वसूचक शब्दोंसे स्तुतिरूप गान किया है और इस प्रमेय रत्नमालाकी रचना प्रमेय कमल मार्तंडके आधारपर सारवचनोंमें हुई है इस विषयको दिखाते हुए ग्रंथकारने अपनेमें कृतज्ञता तथा लघुताके साथ अपने ग्रंथमें प्रमाणीकता सूचित की है जैसे: कि—

प्रभेन्दु वचनोदारचन्द्रिकाप्रसरे सति
माद्दशा क्क नु गण्यन्ते ज्योतिरिंगणसन्निभा ॥ १ ॥
तथापि तद् वचो पूर्वरचना रुचिर सताम्।
चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलम् ॥ २ ॥

इस कथनसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रथके पठन तथा मननरूप अवलंबनसे प्रमेय कमलमार्तंड, तथा प्रमेय कुमुदचंद्रोदय सरीखे शास्त्रसमुद्रमें प्रवेश कर समस्त न्याय विषयमें पारगत हो सकता है। अर्थात् न्याय विषयमें प्रवेश करनेके लिये यह ग्रथ मुखद्वारही सिर्फ नहीं है किंतु इसके पढनेसे जितनी विद्वत्ता तथा जानकारी होनी चाहिये उससे कई अशमे अधिक यह ग्रंथ जानकारी तथा विद्वत्ताका विशेष साधन है।

अन्यधर्ममें कारिकावलीकी टीका एक मुक्तावली है और वह उस मतके विशेष शास्त्रोंमें प्रवेश करानेके लिये मुखद्वार माना जाता है। परतु प्रमेय रत्नमालामे इससे भी अधिक यह विलक्षणता है कि यह स्वमत परमतसवधी समस्त विशेष शास्त्रोंमें प्रवेशमार्ग प्राप्त करानेके अलावा कुछ विशेष विद्वत्ता व दक्षताको भी हासिल करा सकती हैं। क्योंकि इसका मूल पाया जो परीक्षामुख है वह उस शैलीसे सूत्रित किया गया है कि जिसमें प्रायः सर्वही विषय परमत निराकरणके साथ स्वमतकी स्थापनास्वरूप है जैसे दृष्टान्तमे ‘स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञान प्रमाणम्, इस सूत्रमे प्रमाणका लक्षण जो ज्ञान कहा है वह साथहीमें ऐसे विशेषणसे विशिष्ट है कि जिस विशेषणमे अन्य मतावलंबियोंद्वारा माने गये प्रमाणके लक्षण हैं उन सबका उसमे खडन विशेष है इसी शैली पर इस समस्त ग्रथकी रचना है। और उसका विशेष खुलासा स्वरूप यह प्रमेयरत्नमाला टीका है वह योग्य दक्षतापूर्वक विद्वत्ता तथा समस्त दर्शन प्रवेशिताका मुख्य कारण है। क्योंकि इस ग्रंथके विना उच्च कोटिके प्रमेयकमल मार्तण्डादि ग्रथोंमें प्रवेश होना अति दु स्सह है इसी हेतुसे दयाशील श्रीमदनंत वीर्याचार्यजीनें शांतिषेण नामके किसी शिष्यके लिये वैजेयके पुत्र हीरपके आग्रहसे इसका निर्माण किया—इस विषयको ग्रथमे स्वत आपनेही प्रदर्शित किया है,

वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः।
शान्तिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपंचिका।

१ ऐसीही प्रख्याति कारिकावली मुक्तावलीके विषयमें भी है।

इस ग्रंथका दूसरा नाम **परीक्षामुखपंचिका** भी है। पदोंके जुदे २ कर अर्थ करनेको पंचिका कहते हैं क्योंकि कहा भी है **पंचिका पदभंजिका** इसी अर्थको पंडित जयचंद्रजी छावडाने भी कहा है 'सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकूं पंचिका कहिये है' इत्यादि। इस टीकामें विशेषताके साथ अर्थकी ऐसीही रचना है इस लिये इसका—परीक्षामुख पंचिका नाम भी वास्तविक है। इस टीकाका प्रमेय रत्नमाला जो नाम है वह यथा नाम तथा गुणसे खाली नहीं है। क्योंकि रत्नचीज जिस तरह स्वपरप्रकाशक होती है उसी तरह प्रत्यक्ष परोक्षादि रूप अनेक प्रकारके प्रमाण स्वरूप प्रमेयकी माला अर्थात् पंक्ति स्वरूप यह ग्रंथ है।

तथा इस नामसे यह सूचित किया है कि भाग्यशालियोंके हृदयको यह भूषित करनेवाली है और भाग्यहीनोंको दुर्लभ है। जैसे रत्नमाला भाग्यशालियोंको ही प्राप्त होकर उनके हृदयको भूषित करती है भाग्यहीनोंको उसकी प्राप्ति होना ही दुर्लभ है इसी प्रकार भाग्यशील विशिष्ट क्षयोपशमके धारक ही इसको धारण कर सकते हैं भाग्यहीन मंदक्षयोपशमी इसको धारण नहीं कर सकते, इसी अर्थको श्री वीरनंदिस्वामिजीनें भी सूचित किया है।

गुणान्विता निर्मलवृत्तमौक्तिका
नरोत्तमैः कंठविभूषिर्णाकृता।
न हारयष्टिः परमेव दुर्लभा
समंतभद्रादिभवा च भारती ॥ १ ॥

यह ग्रंथ भी परीक्षामुख सूत्र ग्रंथके समान छह समुद्देशोंमें विभक्त है उनमेंसे छहोंके ही नाम विषय प्रतिपादनकी अपेक्षासे रखे गये हैं। वे इस प्रकार हैं। प्रमाण स्वरूप समुद्देश १ प्रत्यक्षसमुद्देश २ परोक्षसमुद्देश ३ विषय समुद्देश ४ फलसमुद्देश ५ आभास समुद्देश। ६। इन छहों समुद्देशोंमेंसे प्रत्येक २ समुद्देशमें क्या २ विषय है यह यद्यपि इन समुद्देशोंके नामसे ही प्रतीत होता है तथापि इनमें विशेष २ विषय कोन २ सें है इस बातकी बहुत आवश्यकता है। इसी हेतुसे मैंने पाठकोंके संतोषके लिये कुछ विषयसूचि और सूत्र सूची बनाकर ग्रंथके साथ लगादी है उससे इस ग्रंथके पाठक ग्रंथका कुछ ज्ञान तथा महत्व समझ सकेंगे।

इस ग्रंथकी देशभाषा वचनिकामें टीका श्रीमत् पंडित जयचंद्रजी छावडाने की है जिसमें सूत्र तथा प्रमेय रत्नमालाके पदार्थ तथा भावार्थ बहुतही मनोज्ञता

१ जैन धर्ममें ज्ञानको स्वपरप्रकाशत्व माना है।

तथा विद्वत्तासे लिखे गये हैं कि जिसके पठनेसे सामान्यबुद्धि भी प्रमेय रत्नमाला सरीखे पदार्थोंको बखूबी समझ सकता है तथा कहीं कहीं विशेष स्पष्टी करनके लिये ग्रंथमें कुछ २ विशेष विषय भी सगठित किये गये हैं। वे इस ग्रंथके स्वाध्याय करनेवालोंको स्वत-ही प्रतीत हो सकते हैं।

ग्रन्थकर्ताओंका परिचय।

माणिक्यनंदिजी।

मूल सूत्र ग्रथ (परीक्षामुख) के कर्ता श्रीमन्माणिकक्यनन्दीजी एक बड़ेही प्रतिभाशाली विद्वान् हुए हैं क्योंकि उनने समस्त न्याय समुद्रको मथन कर यह अमृत सरीखा ग्रथराज बनाया है। इस ग्रथके शिवाय इनका कोई दूसरा ग्रथ अभीतक देखनेमें नहीं आया है तथा इस विषयमें इनके पीछेके किसी भी आ-चार्यने ऐसा उल्लेख किया हो ऐसा भी देखनेमें अभीतक नहीं आया। और अपने विषयको इस ग्रंथमें भी आपने कुछ भी प्रशस्ति नहीं दी है इससे हम निश्चित रूपसे आपके विषयमें कुछ भी लिख नहीं सकते तथापि इतना निश्चय हो जाता है कि ये या तो अकलङ्क देवके समयके तथा उनके कुछ पीछेके और प्रभाचंद्रजीके कुछ समय पहलेके तथा उनकेही समयके विद्वान् हैं। क्योंकि प्रभाचन्द्राचार्यजीने प्रमेय कमल मार्तंडकी प्रशस्तिमें—उनको गुरु शब्दसे स्मरण किया है। और गुरु शब्दके ऊपर जो टिप्पणी दीहै उसमें 'स्वस्य' लिखा है इससे स्पष्ट हो जाता है कि ये आचार्य प्रभाचंद्राचार्यजीके गुरु थे। फिर अखीरके पद्यमें अप-नेको इस प्रकार लिखते हैं।

श्रीपद्मनंदिसैद्धान्तशिष्योऽनेकगुणालयः
प्रभाचंद्रश्चिरंजीयाद्रत्ननन्दिपदे रतः॥ १ ॥

इस पद्यमें—पद्मनदि आचार्यका सिद्धान्तविषयका शिष्य और—माणिक्यनदिके चरणोंमें रत ऐसे दो विशेषण दिये हैं। उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सिद्धान्त विषयके शिवाय अन्य विषयके गुरु प्रभाचद्रजीके माणिक्य नदिजीही थे। इससे यह निश्चय हो जाता है कि श्रीमाणिक्यनदीजी तथा प्रभाचद्रजीका समय एकही है।

परतु वशीधरजी शास्त्रीनें प्रमेयकमल मार्तंडके उपोद्घातमें माणिक्यनंदिजीके परीक्षामुखसूत्र बननेका समय विक्रमसवत् ५६९ दिया है और प्रभाचंद्रजीका

---

१ निर्णय-सागर प्रेसकी छपी हुई प्रतिमें।

१०६० से ११९५ तक विक्रम संवत् दिया है और विद्याभूषण तथा ए. एम्. आदि पदधारक श्रीसतीश्चंद्रजीने अकलंक स्वामीजीको ईसवी ८ वी शताब्दीके विद्वान् स्वीकृत किया है।

प्रभाचंद्रजीने प्रमेयकमल मार्तंडकी समाप्ति भोजदेवराज्यके समयमें की तथा अपनेको धारा नगरीका निवासी लिखा है। परतु कई भोजराज्योंके होनेसे प्रभाचंद्रजीका समय भोजराज्यपरही निर्भरित नहीं रह मकता है। परंतु प्रमेय-कमल मार्तंडके अतिम पद्यसे यह अवश्यही निश्चय हो सकता है—अकलक देवके-पीछे या अकलंक देवके समयमें। ये दोनों (माणिक्यनंदि-प्रभाचंद्र) आचार्य एकही समयके हैं। इस विषयके विशेष विचारमें हम विद्वानोंके ऊपरही निर्भरित हैं।

अनंतजीवीर्याचार्य

इन आचार्यके विषयमें हम कुछ भी नहीं लिख सकते क्योंकि इनका जो प्रमेय रत्नमाला नामक ग्रथ है उसकी प्रशस्तिमें आपने अपने ग्रंथ निर्माणका समय तथा निवास वगैर-का कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। तथा आपके सम-यादिके विषयमें हमें अन्यत्र भी इस समय तक कुछ भी विषय उपलब्ध नहीं हुआ है इस लिये इनके विषयमें मैं इस समय विशेष परिचय देनेके लिये अस-मर्थ हूं। सामन्य परिचयमें भी सिर्फ इतनाही है कि ये आचार्य उच्च कोटिके विद्वान् थे इस विषयका ज्ञान आपके प्रमेयरत्नमाला नामक ग्रंथके अवलोकनसे ही हो जाता है। आपने अपनी जो प्रशस्ति दी है वह अर्थसहित इस ग्रंथके अतमें लगी हुई है उससे पाठकोंको इनके विषयमें जितना ज्ञान हो सकेगा बस उतनाही ज्ञान हमको है। ग्रंथोंके विषयमें भी इस समय आपका एक प्रमेय रत्नमालाही ग्रंथ उपलब्ध है जो कि मुद्रित हो चुका है।

पं. जयचंद्रजी छावडा

ढुंढाहरदेशके विशाल जयपुर नगरमें पं. जयचंद्रजी छावडाका जन्म तथा निवासस्थान था। आप विक्रम उन्नींसवीं १९०० शताब्दिके एक गण्य तथा मान्य विद्वान् थे। आपके ग्रंथोंका अनुवाद पढ़नेसे मालूम होता है कि आप न्याय अध्यात्म साहित्य वगैर सर्वही विषयके अच्छे विद्वान तथा परोपकारी और उद्यमशील पुरुष थे। इस शताब्दीके विद्वानोंमेंसे पं. टोडरमलजीके समान आपही. गणना योग्य तथा माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। आपनें १३ तेरह ग्रंथोंपर

भाषा वचनिकायें लिखी हैं। इन सब वचनिका ग्रंथोंकी श्लोकसख्याका प्रमाण ६० हजारके करीब है। वे १३ ग्रन्थ विक्रम सम्वत्के साथ नीचे लिखे प्रमाण हैं।

१ सर्वार्थसिद्धि	१८६१ वि	
२ प्रमेयरत्नमाला (न्याय)	१८६३ ,,	
३ द्रव्यसग्रह वचनिका	१८६३ ,,	
४ आत्मख्यातिसमयसार	१८६४ ,,	
५ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा	१८६६ ,,	
६ अष्टपाहुड़	१८६७	यह इस ग्रंथमालामें जल्दी निकलनेवाला है।
७ ज्ञानार्णव	१८६५	
८ भक्तामरस्तोत्र	१८७०	
९ आप्तमीमांसा (देवागमन्याय)	१८८६	यह ग्रंथ इस ग्रंथ मालामें तैयार हो चुका है;
१० सामायिकपाठ		समय लिखा नही.
११ पत्रपरीक्षा (न्याय)		
१२ मतसमुचय (न्याय)		
१३ चंद्रप्रभद्वितीयसर्गका न्यायभाग,		समय मालूम नहीं.

ये सर्व ग्रथ बड़ेही कठिन गंभीराशयके हैं तथा बड़ेही महत्वके सस्कृत प्राकृत भाषाके हैं। इनमेंसे पांच ग्रंथ तो केवल न्यायके हैं और सभी ग्रथ उच्च कोटिके तात्त्विक विषयके हैं तथा धर्ममें दृढता और भक्ति पैदा करनेवाले हैं। आप देशभाषाके पद्य रचना करनेमें भी सिद्ध हस्त थे आपने फुटकर विनतिया वगैरः लिखी है उनकी श्लोक सख्या ११०० के करीब होगी तथा द्रव्य संग्रहको भी अपने पद्यमें लिखा है। आपकी १८७० की लिखी हुई एक पद्यात्मक चिट्ठी वृन्दावन विलासमें प्रकाशित हो चुकी है। इन सबसे यह निश्चित होता है कि आप गद्य पद्य बनानेमें बहुतही सिद्ध हस्त थे। तथा सस्कृत और प्राकृतमें आपका ज्ञान खूबही चढा बढ़ा था इस विषयका ज्ञान आपके ग्रंथोंका अवलोकन करनेसे सभीको हो सकता है।

तथा चार प्रकारके कवियोंमेंसे आपमें गमकॅकवि शक्ति भी श्रेष्ठ थी क्योंकि आपने **नतामर**—इत्यादि प्रमेयरत्नमालाके प्रथम श्लोकके अर्थको '**मोक्षमार्गस्य-नेतारं**' इत्यादि श्लोकके भावमें प्रदर्शित कर बड़ेही महत्व भरे पांडित्यको प्रदर्शित किया है। इससे आपने यह दर्शित कर दिया है कि जिस प्रकार तत्वार्थ मोक्ष शास्त्रके ऊपर सर्वार्थ सिद्धि छोटी तथा गंभीराशयवाली टीका है उसी प्रकार इस न्यायकी पूंजी स्वरूप—**परीक्षामुखसूत्र** पर यह प्रमेय रत्नमाला टीका है। क्योंकि (मोक्षमार्गस्य नेतारं-) यह श्लोक सर्वार्थ सिद्धिका मंगलाचरण माना जाता है। तथा सूत्र ग्रंथके ऊपर छोटी और गंभीराशयकी सर्वार्थ सिद्धि टीका है उसी प्रकार इस ग्रन्थमे भी यह सर्व समानता मौजूद है इत्यादि। आपने अपनी सर्वही टीकाओंमे ग्रंथोंके आशयको कहीं २ बढाकर भी बहुत खूब सूरतीके साथ समझाया है।

जैसे कि इस प्रमेय रत्नमालाहीमें—विशेष लिखिये है इस प्रकारसे ग्रंथके विषयको समझानमें विशेष खूवी की है उसी प्रकार सर्व ही (अपने टीका किये हुए) ग्रंथोंको समझानेमें बहुतही मनोज्ञ शैली व शक्तिको भरकस रूपसे काममें लाये हैं सर्वार्थसिद्धि तथा आप्त मीमांसा वगैरः ग्रंथोंमे आपने मूल ग्रंथके आशयको अच्छी तरह समझानेके हेतुसे उनके बड़े २ टीकाग्रंथ राजवार्तिक श्लोकवार्तिक अष्ट सहस्री वगैरःको भी देशभाषामें उद्धृत करके ग्रंथोंके आशयको बहुतही भव्य बना दिया है। इस प्रकारके आपके प्रयत्नसे सामान्य भाषा जाननेवाले भी इन बड़े ग्रंथोंके अभिप्रायोंको समझ सकते हैं। आपकी इन सर्व कृतियोंसे मालूम होता है कि आप बड़ेही परोपकारी महात्मापुरुष थे। तथा प्रायः सर्वही बड़े २ न्याय अध्यात्म आदि ग्रंथोंके मर्मज्ञ रूपसे जानकार थे। अर्थात् आप सर्वांगसुन्दर एक अद्वितीय विद्वान थे तथापि आपने अपनी लघुताही दिखाई है जैसा कि प्रमेयरत्नमालाके अंतमे आपने अपने विषयमे लिखी है।

बालबुद्धिलखि संतजन हसैं न कोप कराय
इहैरीति पंडितगहै धर्मबुद्धि इमभाय ॥

इस परसे यह पता चलता है कि आप पूर्ण विद्वान् होकर भी अहंकार रहित थे। अहंकारताका अभाव विद्वत्तामे सोनेको सुगंधिकी कहावतको चरितार्थ करता है।

---

१ कविके गूढ तथा गंभीर आशयको स्पष्ट करनेवाला गमक कवि होता है।

विद्वान होकर जो अहंकार रहित होगा वही अपने वचनादि प्रयत्नों द्वारा प्राणियोंका उपकार कर सकता है तथा वही प्रमाणताका पात्र हो सकता है। खंडेलवाल जातिभूषण—पं जयचंद्रजी छावड़ामें ये सर्व गुण मौजूद थे इसी कारण इनकी समाजमें विशेष प्रतिष्ठा रही तथा आगे भी कायम रहेगी।

उक्त पंडितजीके विषयमें जो कुछ हमने लिखा है वह बहुत ही थोड़ा संक्षेपतासे लिखा है यदि विशेष लिखते तो एक ग्रंथका ग्रंथही बन जाता। पंडितजीने अपने थोड़ेसे जीवन कालमें इतने टीका तथा विनतीस्वरूप ग्रंथोंका निर्माण कर अपनी बुद्धिकी बहुत ही विचक्षण विलक्षणताका परिचय दिया है। हमने सुना है कि उक्त पंडितजी साहेबने इन ग्रंथोंके अलावा अन्य भी कई ग्रंथोंपर टीका की है। यदि यह बात सर्वांग सत्य है तो कहना पड़ेगा कि पंडितजीमें कोई विलक्षण शक्ति थी। पाठकगण पंडितजीके विषयमें विशेष जाननेकी इच्छा रखते हों तो उनके निर्माण ग्रंथोंमें उनके हाथकी लिखी हुई प्रशस्तिसे अपनी इच्छाकी पूर्ण पूर्ति करें।

विनीत

रामप्रसाद जैन-बम्बई।

विषय सूची ।

प्रथम समुद्देश १

	पत्र.
पं. जयचंद्रजी विरचित मंगल और प्रतिज्ञा–तथा भाषाटीका बनानेका प्रयोजन ।	१
पं. जयचंद्रजी विरचित मूल ग्रंथ रचनाके संबंधमें कुछ हेत्वात्मक वाक्य ।	२
संस्कृत टीकाकारका मंगलाचरण ।	३
माणिक्यनंदिजीको नमस्कार तथा परीक्षामुख और प्रमेयरत्नमालाकी प्रमाणीकता विषयक कथन ।	४
टीका बननेका संबंध और टीकाके द्वितीय नामका निरुत्त्यक अर्थ । तथा परीक्षामुख बननेका प्रयोजन ।	५
न्याय तथा प्रमेयरत्नमाला शब्दका निरुक्तिपूर्वक अर्थ ।	६
प्रमाण प्रमाणाभासरूप प्रतिज्ञा ।	७
ग्रंथकी उपादेयताके कारण अभिधेयादिका निरूपण ।	८
मंगलाचरणविषयक शंका और उसका समाधान ।	९
प्रमाणका लक्षण तथा तद्-	११

	पत्र.
विषयक अन्य प्रमाण कल्पनाओंका परिहार ।	
ज्ञानही प्रमाण है इस विषयको दिखानेमें सहेतुकताका निरूपण ।	१५
बौद्धकल्पित ज्ञान प्रमाणविषयक अनध्यवसायताका खंडन और अध्यवसायताका मंडन ।	१७
दो प्रकारसे अपूर्वार्थका निरूपण ।	१९
परपदार्थके समान ज्ञान अपनाभी निश्चय करानेवाला है । इत्यादि विषयका कर्मकर्तृकरणादि द्वारा सोदाहरण निरूपण ।	२०
ज्ञानके स्वप्रकाशकहेतुका विशेषतासे निरूपण ।	२३
ज्ञानके स्वप्रकाशकत्वमें दीपकका दृष्टान्त ।	२४
अभ्यस्तदशामें ज्ञान स्वतः प्रणाम है और अनभ्यस्त दशामें परतः प्रमाण है इस विषयका निरूपण तथा मीमांसक मतका खंडन ।	२५

द्वितीय समुद्देश २

	पत्र
प्रमाणके प्रत्यक्ष और परोक्ष दो। भेदका वर्णन तथा अन्य वादियों कर मानी गई जो प्रमाण संख्या है उसमें समस्त प्रमाणके भेदोंका अतंर्भाव नहीं होता ऐसा वर्णन।	३४
क्रमपूर्वक सब संख्या वादियोंका मत प्रदर्शन पूर्वक खंडन।	३५
प्रत्यक्षका लक्षण।	४६
मुख्य तथा सांव्यवहारिकरूप प्रत्यक्षके भेद और सांव्यवहारिकका स्वरूप और भेद।	४८
नैयायिक परिकल्पित अर्थ और आलोकको कारणताका खंडन।	५१
बौद्ध द्वारा माने गये जो अर्थ विषयक ताद्रूप और तदुत्पत्ति ज्ञानकारण हैं उनके इस मतका खंडन और स्वमतविषयक कारणताका प्रतिपादन।	५३
मुख्य प्रत्यक्षका लक्षण तथा उसमें आवरण सहितत्व और करणजन्यत्वका निषेध।	५६
मुख्य प्रत्यक्ष तथा सर्वज्ञ विषयक अन्यवादि स्वीकृत अन्यथा मतोंका परिहार और अपने मतका स्थापन।	५७

तृतीय समुद्देश।

	पत्र.
परोक्षका लक्षण और उसके भेद।	८५
सोदाहरण स्मृतिका लक्षण, आकारनिर्देशपूर्वक प्रत्यभिज्ञान का लक्षण।	८६
अन्यवादिकृत उपमान प्रमाणका खंडन।	८७
प्रत्यभिज्ञानके उदाहरण	८८
आकारसहित तर्क प्रमाणका लक्षण तथा उदाहरण।	९०
अनुमानका लक्षण, हेतुका लक्षण तथा अन्यवादिस्वीकृत हेतु लक्षणका परिहार।	९१
अविनाभावका लक्षण तथा सहभावका लक्षण।	९४
क्रमभावका लक्षण, अविनाभावका तर्कसे निर्णय होता है ऐसाकथन तथा साध्यका लक्षण।	९५
धर्मी (पक्ष) का लक्षण।	९८
धर्मी प्रसिद्ध होता है ऐसा कथन और उसके भेदका वर्णन	९९
पक्षके वचनकी आवश्यकता।	१०३
पक्ष और हेतु ये दोही अनुमानके अंग हैं उदाहरण नहीं इत्यादि समर्थन।	१०६
बालव्युत्पत्तिके निमित्त शास्त्रमे ही उदाहरणादिका उपयोग है इत्यादि।	११०
दृष्टान्तके भेद और अन्वयव्यतिरेक दृष्टान्तका लक्षण।	१११

	पत्र.
उपनयनिगमनका लक्षण।	११२
अनुमानके स्वार्थ और परार्थ भेद तथा उनके लक्षण ।	११३
हेतुके भेद प्रभेदोंका सोदाहरण वर्णन ।	११५
आगमका लक्षण, मीमांसित कल्पित वेदके अपौरुषेयत्वका खंडन ।	१३३
नामजाति गुण क्रिया आदि स्वरूप शब्दका अर्थ नहीं है क्योंकि शब्द और अर्थके सबंधका अभाव है फिर शब्दमें आप्तप्रणीत पना होनेपर भी सत्यार्थ ज्ञान किस प्रकार हो सकता है इस प्रकारकी शंकाका उत्तर तथा उसमें दृष्टान्त ।	१५०
बौद्ध अन्यापोह ज्ञानरूप आगमको प्रमाण मानता है तथा कोई अन्य प्रकार भी मानता है उन सबका निराकरण ।	१५१

चतुर्थ समुद्देश.

विषयका लक्षण तथा अन्य वादिकल्पित सत्ता प्रधान आदि विषयके लक्षणका खडन ।	१५७
अनेकान्तात्म वस्तुके समर्थनके हेतु तथा समान्य विषयके भेद और तिर्यक् सामान्यका उदाहरण सहित लक्षण।	१७९
उर्द्धता सामान्यका दृष्टान्त सहित लक्षण तथा विशेष विषयके भेद ।	१८०
पर्याय विशेषका उदाहरण सहित लक्षण ।	१८१
व्यतिरेक विशेषका उदाहरण सहित लक्षण ।	१८५

पंचम समुद्देश.

फलका लक्षण तथा फलके भेद।	१८७

छठ्ठा समुद्देश.

आभास सामान्यका लक्षण स्वरूपाभास सामान्यका लक्षण ।	१९०
प्रत्यक्षाभासका उदाहरण सहित लक्षण ।	१९५
परोक्षाभासका लक्षण, उदाहरण सहित स्मरणाभास, प्रत्यभिज्ञानाभासका लक्षण ।	१९६
तर्काभास, अनुमानाभास तथा अनुमानके अवयवाभासमें पक्षाभासका लक्षण ।	१९७
भेदसहित हेत्वाभासका लक्षण ।	२००
भेदपुरस्सर दृष्टान्ताभासका लक्षण ।	२०५
वालप्रयोगाभासका लक्षण ।	२०७
आगमाभासका उदाहरणसहित लक्षण ।	२०९
संख्याभासका लक्षण सोदाहरण ।	२१०
विषयाभास ।	२१२
फलाभास ।	२१४
नय तथा नयाभास ।	२१७
मूलग्रंथकर्ताकी प्रशस्ति ।	२१८
सस्कृतटीका कर्ताकी प्रशस्ति ।	२१९
भाषाटीका कर्ताकी प्रशस्ति ।	२२१

इति ।

परीक्षामुखसूत्रसूची ।

मंगलाचरण ।

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्यय ।
इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥ १ ॥

प्रथम समुद्देश.

सूत्र	पृष्ठ.
१ स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान प्रमाणम्	१०
२ हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत्.	१५
३ तन्निश्चयात्मक समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत्	१७
४ अनिश्चितोऽपूर्वार्थ॰.	१९
५ दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक्	१९
६ स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः	२०
७ अर्थस्येव तदुन्मुखतया	२०
८ घटमहमात्मना वेद्मि.	२१
९ कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीते	२१
१० शब्दानुच्चारणेपि स्वस्यानुभवनमर्थवत्	२२
११ कोवा तत्प्रतिभासनमर्थमध्यक्षमिच्छस्तदेव नेच्छेत्	२३
१२ प्रदीपवत्	२४
१३ तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च	२५

द्वितीयसमुद्देश.

१ तद्वेधा	३४
२ प्रत्यक्षेतरभेदात्	३४
३ विशदं प्रत्यक्षम्	४६
४ प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम्	४८
५ इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः साव्यवहारिकम्	४९
६ नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत्	५१
७ तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च	५१

८ अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ५३
९ स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यता हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति ५३
१० कारणस्यच परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः ५५
११ सामिग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् ५६
१२ सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबन्धसंभवात् ५६

तृतीयसमुद्देश.

१ परोक्षमितरत् ८५
२ प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागमभेदम् ८५
३ संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ८६
४ सदेवदत्तो यथा ८६
५ दर्शनस्मरणकारणक सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि. ८६
६ यथा स एवायं देवदत्तः,
गो सदृशो गवयः,
गो विलक्षणो महिषः,
इदमस्माद्दूरम्,
वृक्षोयमित्यादिः, ८८
७ उपलम्भानुपलम्भनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूहः इदमस्मिन्सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ९०
८ यथाग्नावेव धूमस्तदाभावे न भवत्येवेतिच ९०
९ साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् ९१
१० साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ९१
११ सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ९४
१२ सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ९४
१३ पूर्वोत्तरचारिणो. कार्यकारणयोश्चक्रमभावः ९५
१४ तर्कात्तन्निर्णय. ९५
१५ इष्टमबाधितमसिद्ध साध्यम् ९५
१६ संदिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथास्यादित्यसिद्धपदम् ९६
१७ अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं माभूदितीष्टाबाधितवचनम् ९७

१८ नचासिद्धवदिष्ट प्रतिवादिन ९७
१९ प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ९७
२० साध्यं धर्मं क्वचित्तद्विशिष्टोवा धर्मी ९८
२१ पक्षइति यावत् ९८
२२ प्रसिद्धो धर्मी ९९
२३ विकल्पसिद्धे तस्मिन्सत्तेतरे साध्ये १००
२४ अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् १००
२५ प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता १०१
२६ अग्निमानयं देश परिणामी शब्द इति यथा १०२
२७ व्याप्तौ तु साध्यं धर्मएव १०३
२८ अन्यथा तदघटनात् १०३
२९ साध्यधर्माधारसदेहापनोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् १०३
३० साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसहारवत् १०४
३१ को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति १०५
३२ एतद्वयमेवानुमानाङ्ग नोदाहरणम् १०६
३३ न हि तत्साध्यप्रतिपत्यङ्गं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात् १०७
३४ तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकादेव तत्सिद्धे. ,,
३५ व्यक्तिरूप च निदर्शन सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावन- १०८
वस्थान स्यात् दृष्टान्तरापेक्षणात्
३६ नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृते १०८
३७ तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने सन्देहयति १०८
३८ कुतोन्यथोपनयनिगमने १०९
३९ न च ते तदङ्गे साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोवचनादेवासशयात् १०९
४० समर्थन वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वास्तु साध्ये तदुपयोगात् ११०
४१ वालव्युत्पत्यर्थं तत्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ११०
४२ दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् १११
४३ साध्यव्याप्तं साधन यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः १११
४४ साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्त· १११
४५ हेतोरुपसहार उपनय. ११२
४६ प्रतिज्ञायास्तु निगमनम् ११२

४७ तदनुमानं द्वेधा ११३
४८ स्वार्थपरार्थभेदात् ११३
४९ स्वार्थमुक्तलक्षणम् ११३
५० परार्थंतु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ११३
५१ तद्वचनमपितद्धेतुत्वात् ११४
५२ सहेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ११५
५३ उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ११५
५४ अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्य कार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ११५
५५ रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छद्भिरिष्टमेव किंचित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबंधकारणान्तरवैकल्ये ११६
५६ नच पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ११८
५७ भाव्यतीतयोर्मरणजागृद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ११९
५८ तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम् ११९
५९ सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात् सहोत्पादाच्च. १२०
६० परिणामीशब्दः कृतकत्वात्, य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति यस्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वन्ध्यास्तनंधयः, कृतकश्चायं तस्मात् परिणामी १२१
६१ अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्याहारादेः १२२
६२ अस्त्यत्र छाया छत्रात् १२२
६३ उदेश्यति शकटं कृतिकोदयात्
६४ उदगाद्भरणि. प्राक्त एव १२३
६५ अत्यत्र मातुलिंगेरूपं रसात् १२३
६६ विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा १२४
६७ नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् १२४
६८ नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् १२४
६९ नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् १२४
७० नोदेष्यति मुहूर्तान्ते शकट रेवत्युदयात् १२५
७१ नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् १२५
७२ नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् १२५
७३ अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात् १२५

७४ नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुपलब्धेः १२६
७५ नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धे १२६
७६ नास्त्यत्र प्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धे १२६
७७ नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः १२७
७८ न भविष्यति मुहूर्त्तान्ते शकट कृतिकोदयानुपलब्धे १२७
७९ नोदगाद्भरणिर्मुहूर्त्तात् प्राक्‌एव १२७
८० नास्त्यत्र समतुलायामुन्नामो नामानुपलब्धे १२७
८१ विरुद्धानुपलब्धिर्विधौत्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् १२८
८२ यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेपोस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धे १२८
८३ अस्त्यत्रदेहिनिदु खमिष्टसयोगाभावात् १२८
८४ अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुलब्धे १२९
८५ परपरया सभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् १२९
८६ अमूदत्र चक्रे शिवक स्थासात् १२९
८७ कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ १३०
८८ नास्त्यत्रगुहाया मृगक्रीडन मृगारिसशब्दनात् कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा १३०
८९ व्युत्पन्नप्रयोगस्तुतथोपपत्यान्यथानुपपत्यैव १३१
९० अग्निमानय प्रदेशस्तथैवधूमवत्वोपपत्तेर्धूम–वत्वान्यथानुपपत्तेर्वा १३१
९१ हेतुप्रयोगो हि यथा व्याप्तिग्रहण विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधार्यते १३१
९२ तावता च साध्यसिद्धि १३२
९३ तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्त १३२
९४ आप्तवाक्यदिनिबन्धनमर्थज्ञानमागम १३२

चतुर्थसमुद्देश

१ सामान्यविशेषात्मा तदर्थोविषय १५७
२ अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात् पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थिति लक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च १७८
३ सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्ध्वताभेदात् १७९
४ सदृशपरिणामस्तिर्यक् खण्डमुण्डादिपु गोत्ववत् १७९

५ परापरविवर्तव्यापि द्रव्यमूर्द्धता मृदिव स्थासादिषु १८०
६ विशेषश्च १८०
७ पर्याय व्यतिरेकभेदात् १८१
८ एकस्मिन्द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामा पर्याया आत्मनि हर्ष विषादादिवत् १८१
९ अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् १८५

पंचम समुद्देश.

१ अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् १८७
२ प्रमाणादभिन्नं भिन्नं च
३ य: प्रमिमीते सएव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्षा चेति प्रतीतेः १८८

छठा समुद्देश.

१ ततोऽन्यत्तदाभासम् १९०
२ अस्वसंविदितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः १९०
३ स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात् १९२
४ पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छतृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादिज्ञानवत् १९३
५ चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च १९४
६ अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासम् बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् १९५
७ वैशद्येपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् १९६
८ अतस्मिंस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा १९६
९ सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभिज्ञानाभासम् १९६
१० असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावाँस्तत्पुत्र: स श्याम इति यथा १९७
११ इदमनुमानाभासम् १९७
१२ तत्रानिष्टादि: पक्षाभासः १९७
१३ अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः १९८
१४ सिद्ध श्रावणशब्द: १९८
१५ बाधित. प्रत्यक्षानुमानागम लोकस्ववचनै: १९८
१६ तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथा अनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वाज्जलवत् १९८
१७ अपरिणामी शब्द कृतकत्वाद् घटवत् १९९
१८ प्रेत्याऽसुखप्रदोधर्म पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् १९९
१९ शुचिनरशिर:कपालं प्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत् १९९

२० मातामे वंध्या पुरुषसंयोगेप्यगर्भत्वात् प्रसिद्धवंध्यावत् २००
२१ हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिंचित्कराः २००
२२ असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्ध
२३ अविद्यमानसत्ताक परिणामी शब्द चाक्षुषत्वात् २००
२४ स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् २०१
२५ अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् २०१
२६ तस्य वाष्पादिभावेन भूतसघाते सदेहात् २०१
२७ सांख्यं प्रति परिणामी शब्द कृतकत्वात् २०१
२८ तेनाज्ञातत्वात् २०१
२९ विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्द कृतकत्वात् २०२
३० विपक्षेप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिक २०२
३१ निश्चितवृत्तिरनित्य. शब्द प्रमेयत्वाद् घटवत् २०२
३२ आकाशे नित्येप्यस्य निश्चयात् २०३
३३ शंकितवृतिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् २०३
३४ सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाविरोधात् २०३
३५ सिद्धे प्रत्यक्षादिवाधिते च साध्येहेतुरकिंचित्करः २०३
३६ सिद्ध श्रावण· शब्द शब्दत्वात् २०३
३७ किञ्चिदकरणात् २०४
३८ यथानुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौकिंचित्कर्तुमशक्यत्वात् २०४
३९ लक्षण एवासौदोषोव्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् २०४
४० दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभया· २०५
४१ आपौरुषेय शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटमत् २०५
४२ विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्तम् २०६
४३ विद्युदादिनातिप्रसगात्
४४ व्यतिरेके सिद्धतद्व्यतिरेका परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् २०६
४५ विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्तंतन्नापौरुषेयम् २०७
४६ वालप्रयोगाभास पंचावयवेषु कियद्धीनता २०७
४७ अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्वाद्यदित्थ तदित्थं यथा महानस २०८
४८ धूमावॉश्चायम् २०८
४९ तस्मादग्निमान् धूमवॉश्चायम् २०८

५० स्पष्ट तया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् २०८
५१ रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् २०९
५२ यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माणवकाः २०९
५३ अङ्गुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च २०९
५४ विसंवादात् २०९
५५ प्रत्यक्षमेवकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासम् २१०
५६ लौकायतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धे-रतद्विषयत्वात् २१०
५७ सौगतसांख्ययौगप्रभाकरजैमिनीयाना प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्य-भावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् २११
५८ अनुमानादेरतद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् २११
५९ तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वं, अप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् २११
६० प्रतिभासभेदस्यच भेदकत्वात् २१२
६१ विषयाभासः सामान्यं विशेषोद्वयं वा स्वातंत्र्यम् २१२
६२ तथा प्रतिभासनात्कार्यकारणाच्च २१२
६३ समर्थस्य करणें सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् २१३
६४ परापेक्षणे परिणामिकत्वमन्यथा तदभावात् २१३
६५ स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् २१३
६६ फलाभासः प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा २१४
६७ अभेदे तद् व्यवहारानुपपत्ते २१४
६८ व्यावृत्त्यापि न तत्कल्पना फलान्तराद् व्यावृत्त्याऽफलत्वप्रसंगात् २१४
६९ प्रमाणान्तराद् व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य २१५
७० तस्माद्वास्तवो भेदः २१५
७१ भेदेस्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः २१५
७२ समवायेऽतिप्रसंगः २१६
७३ प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च २१६
७४ संभवदन्यद्विचारणीयम् २१७

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्वयोः
संविदे मादृशोवालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

इति.

निवेदन

इस ग्रंथका सशोधन श्रीयुत पडित पन्नालालजी सोनी तथा मैंने किया है सभव है कि अज्ञान वश इसमें वहुतसी त्रुटियां रह गई होंगी तथा मैंने जो यह भूमिका और विषय सूची तथा सूत्र सूची लिखी है वहा भी प्रमाद हुआ ही होगा उसका खयाल न कर पाठकगण हमें अनुगृहीत करेंगे।

निवेदक—

रामप्रसाद जैन, बम्बई।



स्वर्गीय पंडित जयचंदजी विरचित—

हिन्दी प्रमेयरत्नमाला ।

दोहा ।

श्रीमत वीरजिनेश रवि तम-अज्ञान नशाय ।
शिवपथ वरतायो जगति वंदौं मैं तसु पाय ॥ १ ॥
माणिकनंदिमुनीशकृत ग्रंथ परीक्षाद्वार ।
करूं वचनिका तासकी लघुटीका अनुसार ॥ २ ॥

ऐसैं मगलपूर्वक प्रतिज्ञा करी । अव परीक्षामुखनाम सस्कृतसूत्रबंध माणिक्यनंदिआचार्यकृत ग्रंथ है ताकी वडी टीका तो प्रमेयकमलमार्त्तंड-नाम है सो प्रभाचन्द्र आचार्यकृत है, तामै तौ विशेष करि वर्णन है । वहुरि छोटी टीका प्रमेयरत्नमाला है सो लघु अनन्तवीर्य आचार्यकृत है ताकै अनु-सार मै देशभाषामय वचनिका लिखू हू । तामै बुद्धिकी मंदतातै तथा प्रमादतै कहू हीनाधिक अर्थ लिख्या होय तौ पंडितजन हास्य मत करियो, मूलग्रथ देखि शुद्ध करलीजियो ।

इहा कोई कहै जो प्रमाणके प्रकरण तौ सस्कृतवचनरूपही चाहिये, देशभाषामय वचनतैं हीनाधिक कहना वणै तौ विपर्यय होनेतै वडा दोष लागै । ताका समाधान—जो यह तौ सत्य है देशभाषाके वचन अपभ्रंश वहुत हैं तहा अर्थ विपर्ययरूपभी भासै परन्तु कालदोषतैं सस्कृ-तके पढनेवाले विरले हैं, अर केई हैं ते भी गुरुसंप्रदायके विच्छेद

होनेतैं अर्थ यथार्थ न समझैं है तातै संस्कृतका भावार्थ समझनेकूं देशभाषा करिये हैं। अर जे विशेष पंडित हैं ते मूलग्रंथ तथा संस्कृतटीकातैं समझैहींगे। जैनमतमैं प्रमाणनयरूप स्याद्वाद न्यायके ग्रंथ वहुत हैं तिनिके अर्थ समझनेंकू यह प्रकरण बड़ा उपकारी है तातै याका भावार्थ देशभाषामयभी लिखिये हैं। अर जे जिनमतकी आज्ञा मानैं हैं तिनिकै अर्थका विपर्ययभी न होयगा जेता यथार्थ समझैंगे तेता तौ यथार्थ रहैहीगा अर कहीं अन्यथा होयगा तौ विशेष बुद्धिवान पंडितनिका संयोग भये यथार्थ होयगा, जैनमतके श्रद्धानवाले पुरुष हठग्राही नाहीं होहै तातै देशभाषा करनेमै दोष न लागैगा ऐसैं जाननां।

तहां प्रथमहीं याका संबंध ऐसा—जो पहले श्री अकलंकदेव आचार्य भये, ते कैसे भये, अपनी निर्दोष ज्ञान अरु संयमरूप संपदा ताकरि प्रत्येकबुद्ध श्रुतकेवली सूत्रकार आदि बडे ऋषीश्वर तिनिकी महिमांकूं आप लेंत भये, बहुरि कल्याणरूप भये। बहुरि समस्त तार्किकनिका समूह तिनिविषै जे बड़े तार्किक तेई भये चूडामणि तिनिकी किरण सारिखी नमनक्रिया ताकरि मिली है चरणनिके नखनिकी किरण जिनिकी। भावार्थ—बडे बड़े तार्किक जे तर्कशास्त्रके वेत्ता ते जिनिके चरण सेवैं हैं। बहुरि कविता करना, टीका करना, वाद जीतना, वक्तापणा करना, यहु च्यारि प्रकार पंडितपणा तिसके जाननेके इच्छुक तृषातुर ग्रहण करनेके इच्छुक जे विनयकरि नम्रीभूत शिष्यजन तिनिसहित किया आप अनुभव जिनूनैं ऐसे भये, तिनिनैं तर्क ग्रंथनिके सात प्रकरण रचे। बृहत्त्रय, लघुत्रय, चूर्णिका। ते अतिकठिन जिनिमैं मन्दबुद्धि प्रवेश न करि सकै, तातैं तिनिमैं मन्दबुद्धीहूनिका प्रवेश होनेके अर्थि तिनिहीका अर्थ लेकरि धारा नगरीकैविषै श्रीमाणिक्यनंदिआचार्य तिनिनै यह परीक्षामुख नाम प्रकरण रच्या। तिसका विवरण करनेके

इच्छुक जे लघु अनतवीर्य आचार्य ते तिसकी आदि विषै नास्तिकताका परिहार, शिष्टाचारपालन, पुण्यकी प्राप्ति. निर्विघ्न शास्त्रकी समाप्ति आदि फलकूं चाहते सते श्लोक कहै हैं,—

नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥ १ ॥

याका अर्थ——टीकाकार कहै है जो जिन कहिये कर्मशत्रुके जीतने हारे जे अरहत परमेष्ठी तिनि सर्वनिके अर्थि हमारा नमस्कार होहु। कैसे हैं जिन——नये जे देवनिके मस्तक तिनिके मुकुटनिके मणिनिकी प्रभा तिसविषै पोई है मिली है चरणके नखनिकी किरण जिनिकी। भावार्थ——अरहंत परमेष्ठीकूं च्यारि प्रकारके देव नमस्कार करै है। बहुरि कैसे हैं कठिन है निवारन जाका ऐसा जो कामरूप सुभट ताका मदके छेदन हारे हैं। इस श्लोकमै मारवीरमदच्छिदे ऐसा विशेषण जिनका है ताका ऐसाभी अर्थ है,—मा कहिये लक्ष्मी ताहि राति कहिए दे ताकूं मार कहिए, सो इस मार शब्दके अर्थ तै मोक्षमार्गके दाता भये। बहुरि वीर शब्दकरि वि कहिए विशेष करि ईर कहिए समस्त पदार्थनिकूं जाननहारे हैं ऐसैं सर्वज्ञ भये। बहुरि मदच्छित् कहिए मानकषायके छेदनहारे है, ऐसैं मद ऐसा उपलक्षणपदतैं सर्व रागादिकका नाश करन हारे भये ऐसैं " मोक्षमार्गस्य नेतारं " इत्यादि सूत्रकी टीका विषैं कहे जे आप्तके तीनूं विशेषण ते सिद्ध भये। बहुरि अन्य प्रकार कहैं है,—मा कहिये प्रमेयका प्रमाणरूप जाननहारा केवलज्ञान सोई भया रवि कहिये सूर्य, बहुरि इरा कहिये वाणी दिव्यध्वनि, ये दोऊ कैसे ? दुर्वार कहिये खोटे हेतु दृष्टांतनिकरि निवारन जिनका न होय ऐसे जाके होय सो दुर्वारमारवीर कहिये। बहुरि मद कहने तैं सर्व रागादिक लेने तिनकौं छेदै सो मदच्छित्

कहिये। ऐसैं भी ते आप्तके तीनू विशेषण भये ऐसा जाननां। ऐसैं मंगलकै अर्थि नमस्कार कीया। तहां मगल दोय प्रकार हैं—एक मुख्यमंगल, दूजा अमुख्य मंगल। तहा मुख्यमंगल तौ जिनेन्द्रके गुणनिका स्तोत्र करना है अरु अमुख्यमंगल लौकिक है तहा दधि अक्षत आदि हैं। सो इहां मुख्यमगल जिनेद्रके गुणनिका स्तोत्र है सो ही कियां है।

आगैं इस ग्रंथके कर्त्ताकू टीकाकार नमस्कार करै है;—

अकलंकवचोऽम्भोधेरुद्दध्रे येन धीमता।
न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दिने॥ २॥

याका अर्थ—तिस माणिक्यनदिनाम आचार्यकै अर्थि हमारा नमस्कार होहु—जा बुद्धिवाननैं अकलक कहिये कर्मकलंककरि रहित श्रीवर्द्धमानस्वामी अथवा अकलकनामा आचार्य तिनिके वचन अथवा अकलंक कहिये निर्दोष सर्वज्ञकी दिव्यध्वनि सोही भया समुद्र तातै न्यायविद्यारूप जो अमृत सो मथिकरि काढ्या—प्रगट कीया ऐसे हैं। इहां लौकिक कथा है जो नारायण समुद्र मथिकरि चौदह रत्न काढे तिनिमैं अमृतभी है सो प्रसिद्ध अपेक्षा अलंकाररूप वचन है।

आगैं इस ग्रथकी बड़ी टीका 'प्रमेयकमलमार्तण्ड' है ताका कर्त्ता प्रभाचन्द्र आचार्य है ताकी महिमा दोय श्लोकमै करै है;—

प्रभेन्दुवचनोदारचन्द्रिकाप्रसरे सति।
मादृशाः क्व नु गण्यंते ज्योतिरिंगणसन्निभाः॥३॥
तथापि तद्वचोऽपूर्वरचनारुचिरं सताम्।
चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलम्॥ ४॥

इनिका अर्थ—प्रभाचन्द्रनाम आचार्यके वचनरूप उदार चादणीका फैलना होतैं हम सारिखे आग्यानामा कीटजीवतुल्य कौन गणनामै गणिये तोऊ हम इस ग्रंथकी टीका करै है सो जैसैं नदीका जल

नवीन घटविषैं किछू घालिये सोहू शीतल होय पीवनेंवाले पुरुषनिके चित्तकू प्रिय लागै तैसैं तिस प्रभाचन्द्रके वचनही अपूर्व रचना कहिये तिनिकूं नई रचनारूप किये सते सुंदर सत्पुरुषनिके चित्तकू हरनहारे होयंगे।

आगैं यह टीका जिस निमित्ततें वणी है सो संबंध कहै है;—

वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः।
शांतिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपंचिका ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वैजेयका प्यारा पुत्र जो हीरपनामा ताकी प्रार्थनातैं शांतिषेणनामा कोई शिष्य है ताके पढनेके अर्थि यह परीक्षामुखनामा ग्रंथकी पंचिका आरंभी है।

इहां "परीक्षामुख" ऐसा नामका अर्थ ऐसा, जो परीक्षानाम विचारका है जो वस्तु ऐसैं है कि नाही है कि अन्यप्रकार है ऐसा विचारकूं कहिए सो इहां प्रमाणका लक्षण आदिकी परीक्षा करिये हैं इस द्वारतैं सर्वही वस्तुकी परीक्षा होय है तातैं परीक्षामुख है। बहुरि ताकी टीकाकू पंचिका कही सो सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनिका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकू पंचिका कहिए है, सो इस टीकामैं सूत्रनिका भिन्न भिन्न पदनिका अर्थ करियेगा। तातैं पंचिका नाम है। याका दूजा नाम प्रमेयरत्नमालाभी है।

आगैं मूलग्रंथका आदि सूत्रकी सूचनिका कहै है;—

श्रीमत् कहिये पूर्वापरविरोधरहितपणा सो ही जो श्री लक्ष्मी ताकरि सहित ऐसा जो न्याय सो ही भया समुद्र जामैं अगणित प्रमेय वस्तुरूप रत्न भरे सो ही है सार जामैं ऐसा न्यायरूप समुद्र ताके अवगाहन करनेकू अव्युत्पन्न जे न्यायशास्त्रके अभ्यासरहित पुरुष ते असमर्थ है, ऐसा विचारि श्रीमाणिक्यनन्दिनाम आचार्य तिनिके अवगाहनेंकू जिहा-

जसारिखा यहु परीक्षामुखनाम प्रकरण रचै है । इहा न्याय ऐसा शब्द है सो 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'इण् गतौ' धातुकै घञ्प्रत्यय करण अर्थमें जोड्या है तातै ऐसा अर्थ होय है—जो कोई प्रकार नियमकरि प्रमेय-पदार्थका स्वरूप जाकरि जाणिये सो न्याय है । अथवा नयप्रमाणरूप युक्ति ताका कहनेहारा होय ताकू भी न्याय कहिये । वहुरि याका श्रीमान् विशेषण किया ताका यहु अर्थ—जो निवधिपणा होय सो श्री, अथवा श्रद्धान आदि गुणका उपजावना है लक्षण जाका ऐसी श्रीकरि युक्त होय सो श्रीमान् । वहुरि याकू समुद्र कह्या सो रूप-कालंकार करि कह्या सो याका विशेषण किया जो अमेयप्रमेयरत्नसार है । सो अमेय कहिये मिथ्यादृष्टीनिकरि जाननेमै न आवै अथवा गणनारहित अनंतानंत ऐसै जे प्रमेय कहिये प्रमाणकरि जिनिकू जानिये ऐसे जीव आदिपदार्थ वस्तु है । वहुरि रत्ननिविषै सार होय सो रत्नसार कहिये, ऐसै अमेय प्रमेय है रत्न सार जामै ऐसैं वहुव्रीहि समास है । वहुरि अमेय प्रमेय जे रत्न तिनिकरि सार है—उत्कृष्ट है ऐसा न्यायरूप समुद्र है ऐसै तत्पुरुप समास है । ऐसै इस परीक्षामुख प्रकरणके संवध, अभिधेय, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इनि तीनूनिकौ जानें विना परीक्षावान पुरुप-निकी प्रवृत्ति या विषै होय नाहीं, इस हेतुतै तिनि तीनूनिका अनुवाद कहिये पूर्वाचार्यनि करि कह्या होय तिस अनुसार कहना सो है पुरस्सर कहिये मुख्य जामै । वहुरि वस्तु जाका कथन कीजिये सो ऐसा इहां वस्तुशब्दकरि प्रमाण अर प्रमाणाभास लेना ताका निर्देश कहिये स्वरूप कहनां तिस विषै पर कहिये उत्कृष्ट—तत्पर ऐसा प्रतिज्ञाका श्लोक कहै है ।

भावार्थ—इस ग्रंथका आदिका श्लोक है तामैं अभिधेय संवध शक्या-नुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीनूकौ जनाय अर प्रमाण अर प्रमाणाभासका लक्षण जो पूर्वाचार्यनिकरि कह्या है तिनिका अनुसार ले कहनेकी प्रतिज्ञा करै है;—

प्रमाणादर्थसंसिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥ १ ॥

याका अर्थ—प्रमाणतै अर्थकी ससिद्धि होय है, बहुरि प्रमाणाभासतैं अर्थकी ससिद्धि नाहीं होय है—विपर्यय होय है। या हेतुतैं मै ग्रथकर्त्ता हू सो तिस प्रमाणका अरु प्रमाणाभासका लक्षण कहूगा ।

टीका—अह कहिये मैं ग्रथकर्त्ता माणिक्यनदिआचार्य हू सो तल्लक्ष्म कहिये प्रमाण अर तदाभास इनि दोऊनिका लक्षण है ताहि वक्ष्ये कहिये कहूगा। सिद्ध कहिये पूर्वाचार्यनिकरि प्रसिद्ध किया सो ही। वहुरि कैसा ? अल्प कहिये थोरे अक्षरनिकरि कहनें योग्य अरु अर्थतैं महान्। बहुरि कौनकू विचारि करि कहूगा ? अतिशय करि लघु जे शिष्यजन तिनिकू विचारि करि। इहा लघुपणा बुद्धिकृत ग्रहण करना, शरीरपरिमाणकृत न लेणा, जातैं छोटे शरीरवालेहू बडे बुद्धिवान होय है, बहुरि अवस्थाकृत भी न लेणा जातै छोटी अवस्थावालेभी केई बड़े बुद्धिवान होय है, तातैं जिनिमैं बुद्धि थोडी होय ते इहा लघुशब्दकरि ग्रहण करनें। इहा लक्षणका तौ स्वरूप ऐसा जानना—जो बहुत वस्तु एकठी मिलिरही होय तिनिमैसू जुदी करनेंका जो किछु वस्तुमैं प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय। बहुरि सिद्ध विशेपणतैं अपनीही रुचि करि नाही कीया पूर्वे कह्या तिसही अर्थरूप है ऐसा जनाया है। बहुरि अल्प कहनेंतैं यामैं थोरे अक्षरनिमै ही अर्थ बहुत है ऐसे याका निष्प्रयोजनपना निपेध्या है। यह प्रमाण तदाभासका लक्षण कौन हेतुतैं कहिये है जातैं अर्थ जो जाननें योग्य वस्तु ताकी ससिद्धि कहिये प्राप्ति होना अथवा जानना ये दोऊ प्रमाणतैं होय हैं यातै। बहुरि केवल प्रमाणतैं अर्थकी संसिद्धि होय है, ऐसाही नाहीं है प्रमाणाभासतै अर्थससिद्धिका अभावभी होय है यातैं दोऊहीका लक्षण कहना। बहुरि इति

शब्द है सो हेतु अर्थमैं है अर याका समुदायार्थ उपरि कह्या सो जानना ।

इहा तर्क;—जो अभिधेय, सबंध, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीननि करि सहित शास्त्र होय हैं । तहा इस प्रकरणका जहा ताई अभिधेय अरु संबंध ये दोऊ न कहिये तहा ताई याका उपादेयपणा न होय—यहु ग्रहण करनें योग्य न होय। इहा उदाहरण—जैसैं काहूनै कह्या जो यह वध्याका पुत्र जाय है, आकाशके फूलनिका जाके मस्तक सेहुरा है, मरीचिका—भाडलीमैं स्नान करि जाय है, सुसाके सींगका धनुप धरे है, ऐसे कहनेमैं किछू वस्तु नाही अवस्तु कहे तातैं यामैं अभिधेय—अर्थ नाही । बहुरि काहूनैं कह्या—दश दाडिम हैं, छह पूवा हैं, चरवी है, छेलीका चामड़ा है, मासका पिड है अथवा अहो देखो यह गेरू है स्पष्ट किया ताका पिता शीला होय गया ऐसे वचन कहे तिनिमै काहूका सबंध न मिल्या—प्रलापमात्र भये । ऐसै शास्त्रमैं अभिधेय सम्बन्धरहित वचन होयतौ परीक्षावान आदरै नाही । बहुरि तैसैं ही जो अशक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन होय जाका ग्रहण करना कठिन होय अरु अपने इष्ट होय तौ जैसे सर्पका मणि सर्वज्वर—रोगका हरनहारा है ऐसे कहनेमै रोगका हरणा तौ इष्ट है परन्तु तिसका ग्रहण करना कठिन है ऐसे वचनकू परीक्षावान आदरै नाही । तैसैंही शक्यानुष्ठान अनिष्टप्रयोजन होय, जैसैं काहूनै कह्या माताका विवाह करना, तौ याका करना तौ सुगम है परन्तु यह इष्ट नांही सो ऐसे वचन भी परीक्षावान आदरै नाही । तातैं ये तीनूं ही या शास्त्रके कहे चाहिए ?

ताका समाधान;—आचार्य कहै है जो यहु सत्य है । या प्रकरणके अभिधेय प्रमाण अरु प्रमाणभास है ते तौ इस श्लोकमैं प्रमाण तदाभास पदका ग्रहणतै कहे ही, जातैं इस प्रकरणकरि प्रमाण प्रमाणाभासकाही

कथन करिये है। बहुरि सबध है सो अर्थका सामर्थ्यहीतैं आया जातै या प्रकरणकै अरु प्रमाण प्रमाणाभासरूप अभिधेयकै वाच्यवाचक है लक्षण-जाका ऐसा सबध प्रतीतिमैं आवैही है। बहुरि प्रयोजन शक्यानुष्ठानरूप अरु इष्टरूप है सोभी आदि श्लोककरिही लखिये है, जातैं प्रयोजन दोय प्रकार है एक साक्षात्, दूजा परपरा। तहा इस श्लोकमैं 'वक्ष्ये' ऐसा पद है सो या पदकरि साक्षात् प्रयोजन कहिये है जातैं सशय विपर्ययरहित शास्त्रका ज्ञान होनेतैं शिष्यजन देखि लैगे, शिष्यजननिहीकूं विचारि करि कहनेंकी प्रतिज्ञा करी है सो यही साक्षात् प्रयोजन है, बहुरि परप-राप्रयोजन अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति है सो आदि श्लोकमैं 'अर्थससिद्धि' ऐसा पद है ताकरि कह्या, जातै शास्त्रके ज्ञानकै अनतर अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति होयगी ऐसै जानना।

फेरि तर्क,—जो समस्त विघ्नके नाशकै अर्थि इष्टदेवताका नमस्कार शास्त्रकी आदि विषैं चाहिये सो इस प्रकरणके कर्त्तानैं न किया सो कहा कारण?

ताका समाधान,—आचार्य कहै है जो ऐसै न कहना, जातैं नम-स्कार मन अरु कायकरि भी सभवै है तातैं ऐसैं जानूं मन करि अरु कायकरि शास्त्रके प्रारभ करतैं कर लिया होयगा। बहुरि वचनकरि नमस्कारभी इस आदि वाक्यकरि जानना, जातैं केई वाक्य ऐसे है जिनका दोय आदि अर्थभी देखिये है, जैसै काहूनै कह्या 'श्वेतो धावति' ऐसे वाक्यके दोय अर्थ होय है, एक तौ ऐसा जो 'श्वा' कहिये कूकरा (कुत्ता) सो 'इत'कहिये या तरफ 'धावति' कहिये दोडै है। बहुरि दूजा अर्थ—जो श्वेत कहिये धोळा गुणयुक्त कोई दोडै है। ऐसे दोय अर्थकी प्रती-ति है। तहा आदिके वाक्यकै विषैं नमस्काररूप अर्थभी है, सोही कहिये है,—तहा अर्थ कहिये हेयोपादेयरूप वस्तु ताकी ससिद्धि कहिये यथार्थ-

ज्ञान सो प्रमाणतैं होय है, तहा मा कहिये लक्ष्मी अन्तरग तौ अनंतचतुष्टयरूप अरु बाह्य समवसरणादिकरूप; बहुरि आण कहिये शब्द इनि दोजनिका द्वन्द्वसमासतैं माण ऐसा भया, बहुरि उपसर्ग जोड्या तव प्रमाण भया सो इस उपसर्गके योगतैं ऐसा अर्थ भया जो ऐसी प्रकृष्ट उत्कृष्ट लक्ष्मी हरि–हर–ब्रह्मा आदिकूं लौकिकदेव मानै है तिनिकै नाही। बहुरि ऐसी दिव्यध्वनि वाणी प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतैं विरोधरहित अन्यकै नांही, ऐसा प्रमाणनाम भगवान अरहतकाही भया ऐसैं असाधारण गुण दिखावना—कहना है सो भगवानका स्तवनही है तातै अर्थकी ससिद्धिकू अवश्य कारणभूत जो प्रमाण कहिये भगवान अर्हन्त तातै तौ अर्थकी ससिद्धि सम्यग्ज्ञान होय है। बहुरि प्रमाणाभास जे हरिहरादिक तिनितै अर्थकी सासिद्धिका अभाव—मिथ्याज्ञान होय है। इस हेतुतै इस प्रकरणतैं तिनि प्रमाण प्रमाणाभासका लक्षण कहूंगा। ऐसै कह्या तैसा आगैं सूत्र कहियेगा। जो "सामग्रीविशेष" इत्यादिक तिनिमैं सर्वज्ञ असर्वज्ञका निश्चय करियेगा। ऐसै अरहतका सत्यार्थस्वरूप कहनां सो मगलरूप भया, अन्यका निषेध सो अमगलका निषेध है ऐसा जानना।

आगैं अब कहनेंकू प्रारभ किया जो प्रमाणतत्व ताविषैं अन्यवादीनिकै च्यारि विप्रतिपत्ति हैं। स्वरूपविप्रतिपत्ति १ सख्या विप्रतिपत्ति २ विपयविप्रतिपत्ति ३ फलविप्रतिपत्ति ४ ऐसैं च्यारि। तिनिमैं प्रथमही स्वरूपकी विप्रतिपत्तिका निराकरणकै अर्थि सूत्र कहै है। इहा विप्रतिपत्ति नाम अन्यथा जाननेका है सो प्रमाणका स्वरूप अन्यवादी अन्यप्रकार कहै है सो बाधासहित है, सत्यार्थ नाहीं, ऐसा इस सूत्रतै सिद्ध होय है;—

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—स्व कहिये आप आत्मा अपूर्वार्थ कहिये पहिले जाकी प्रमाणता न भई ऐसा अन्य वस्तु इनि दोऊनिविपै व्यवसायात्मक कहिये व्यापारकरि निश्चय करने स्वरूप जो ज्ञान सो प्रमाण है। इहा प्रमाण शब्दकी निरुक्ति ऐसी,—'प्र' कहिये प्रकर्परूप सशय, विपर्यय, अनध्यवसायकरि रहित होय कारि 'मीयते' कहिये वस्तुस्वरूपकू जानिये जा करि सो प्रमाण है, ऐसै करणसाधनरूप निरुक्ति है, सो ऐसा ज्ञान विशेपणकरि तौ जे अज्ञानरूप सनिकर्प आदिकू प्रमाण मानैं है तिनिका निराकरण भया। तहा लघु नैयायिकमतवाले तौ इंद्रियकै अर पदार्थकै सबध होना ऐसा जो सन्निकर्प ताकू प्रमाण मानै है, अर वडे पुराणे नैयायिक ते कर्त्ता कर्म आदि कारकनिका सकलपणाकू प्रमाण मानै है। वहुरि साख्यमतवाले इन्द्रियनिकी प्रवृत्तिहीकू प्रमाण मानै है। वहुरि प्राभाकर जे मीमासकमतके भेदवाले अज्ञानरूप जो ज्ञाता का व्यापार ताकू प्रमाण मानै है तिनिका निपेध ज्ञान कहनेतै भया। वहुरि बौद्धमती प्रमाण ज्ञानहीकू कहै है परन्तु प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके च्यारि भेद करै हैं। स्वसवेदनप्रत्यक्ष १ इन्द्रियप्रत्यक्ष २ मानसप्रत्यक्ष ३ योगिप्रत्यक्ष ४ ऐसैं यह च्यारूही प्रकारका प्रत्यक्ष निर्विकल्प—व्यापार करि रहित मानैं है तिनिके निराकरणकै अर्थि व्यवसायपदका ग्रहण है। जो व्यापाररूप सविकल्प होय—निश्चय करनेवाला होय सो प्रमाण है। वहुरि अर्थपदका ग्रहणतै जे वाह्य पदार्थका लोप करनेंवाले विज्ञानाद्वैतवादी बौद्धमती तथा ब्रह्माद्वैतवादी वेदान्तमती तथा दीखती वस्तुका लोप करनेंवाले शून्यएकान्तवादी तिनिका निराकरण है। बौद्धमतीके च्यारि भेद है तहा माध्यमिक तौ सर्वशून्य मानै है, वहुरि योगाचार वाह्यपदार्थकू शून्य मानैं है ज्ञानकू अद्वैत मानै है, वहुरि सौत्रातिक अनुमानका विषय अनुमेयकू अवस्तु मानैं हैं, वहुरि वैभापिकभी सर्व वस्तुकू शून्य

मानैं है। बहुरि अर्थका अपूर्व विशेषण है सो गृहीतग्राही पहले ग्रहण किया—जान्या ताहीकूं ग्रहण करै—जानै ऐसा जो धारावाही ज्ञान ताके प्रमाणताका निषेधकै अर्थ है, धारावाहीज्ञान प्रमाणका फलरूप प्रमिति है करणस्वरूप प्रमाण नाही। बहुरि स्वपदका ग्रहणतैं ज्ञानकूं परोक्षही मानैं ऐसे मीमासकमती तथा ज्ञान स्वसंवेदनस्वरूप नाही परहीकूं जानै है—आपकूं आप जानै नाही ऐसे माननेवाले साख्यमती तथा ज्ञान है सो दूसरे ज्ञान करि जानिये है आपकू आपही जानै नाही ऐसैं माननेवाले यौगमती नैयायिक इनिका निषेध है; ज्ञान स्वपरप्रकाशक है। ऐसैं अव्याप्ति अतिव्याप्ति असभव ऐसे तीन लक्षणके दोष हैं तिनितैं रहित भलै प्रकार ठहरया निश्चय भया प्रमाणका लक्षण है। ऐसैं यहु सूत्र है सो प्रमाणभूत है। तहा अनुमानप्रमाणका प्रयोगस्वरूप या सूत्रकू दिखाइए है,—तहा प्रमाण तौ इहां धर्मी है ता विषैं यह लक्षण कह्या सो साध्य है, बहुरि प्रमाण जो धर्मी सो ही इहा हेतु कहना।

इहा प्रश्न;—जो प्रमाण शब्दकै तौ प्रथमा विभक्ति है अर हेतु विषै पचमी होय है सो प्रमाण शब्द हेतु कैसै?

ताका समाधान;—जो कोई जायगा प्रथमा विभक्ति अंतपदभी हेतुस्वरूप होय है, जैसैं कह्या है 'प्रत्यक्षं विशदं ज्ञानं' इहा साध्य साधनका प्रयोग करिये तब प्रथमाभी हेतुरूप है, इस सूत्रका प्रयोग ऐसै किया है, "प्रमाण है सो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है, काहे तैं जातैं प्रमाणपना याहीकै है, तातैं जो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान नाहीं सो प्रमाण नाहीं जैसे संशयादिक स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक नाही ते प्रमाणभी नाहीं तथा घट आदि जडपदार्थ ते भी ऐसे नाहीं ते प्रमाण नाहीं, बहुरि प्रमाण है सो ऐसा है, तातैं स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है सो ही प्रमाण

है।” ऐसै अनुमानके पंच अवयवरूप यह सूत्र है। धर्मी अर साध्य दोऊ स्वरूप पक्ष कहिये ताका वचन सो प्रतिज्ञा है, साधनका वचन सो हेतु है, व्याप्तिकू लार लगाय दृष्टातका वचन सो उदाहरण है, दृष्टातकूं अरु पक्षकू समान कहना हेतुको सकोचना सो उपनय, साध्यका नियम कहना सो निगमन, ऐसै इनि पाचनिका स्वरूप आगै सूत्रकार कहसी। ऐसैं सूत्र है सो प्रमाणभूत है आप्तका यह वचन है तातैं तौ आगमप्रमाणरूप होहै, बहुरि अनुमानके अवयवरूप होहै। बहुरि सूत्रका ऐसा भी स्वरूप कह्या है;—जामै अक्षर अल्प होय, बहुरि जामै सदेह न उपजै, बहुरि सारर(स)हित होय निःसार नाही होय, बहुरि जामैं निर्णय गूढ होय, अर्थ गंभीर होय, बहुरि शब्द अर्थ जामैं निर्दोष होय, बहुरि हेतु-सहित होय, बहुरि सत्यार्थ होय ऐसा होय सो सूत्र है, सो इस प्रकरणके सर्वसूत्रनिका ऐसा स्वरूप जानना। इहा प्रमाणकूही हेतु कह्या सो असिद्ध नाही है जातैं सर्वही प्रमाणका स्वरूप कहनैंवालेनिकै प्रमाणसामान्यविषै विप्रतिपत्तिका अभाव है, प्रमाणसामान्य प्रसिद्ध है जो ऐसै नाही मानिये तौ अपना इष्टतत्वकू साधना परका इष्टतत्वकू दूपण देना न होय प्रमाण विना काहेतै साधै काहेनैं दूपै।

इहा तर्क,—जो धर्मीहीकू हेतु कहे प्रतिज्ञाका एकदेश भया सो असिद्धनामा हेत्वाभास भया।

ताका समाधान;—जो ऐसैं नाही, प्रमाणका विशेपकूं धर्मीकरि अरु प्रमाण सामान्यकू हेतु कहैं तिनिकै दोप नाही आवै है इसही वचनतै या हेतुकू अपक्षधर्म कहै सो भी नाही है जातैं सामान्य हैं सो समस्त विशेपनिमैं व्यापक होय है सो पक्षका धर्मही है। बहुरि हेतुकै पक्षका धर्मपणाका बलकारि साध्य प्रति गमकपणा नाही है साध्य विना न होना इस बलतैं ही साध्य प्रति गमकपणा है सो यहु साध्यान्यथानुपपत्ति कहिये,

सो इहा प्रमाणनामा हेतुकै स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञाननामा साध्यतैं नियम करि पाइए है सो विपक्ष जो सशयादिक तिनिविषै यह साध्यान्यथानुपपत्ति नाहीं है सोही बाधक प्रमाण है ताके बलतै निश्चयस्वरूप है। इसही कथनतै इस हेतुकै विरुद्धपणा बहुरि अनैकान्तिकपणा भी निराकरण भया ऐसा जानना जातैं विरुद्ध हेतुकै अरु व्यभिचारी हेतुकै अविनाभावका नियमका निश्चय सो ही है लक्षण जाका ऐसी व्याप्तिका अयोग है यातैं प्रमाणत्वनामा हेतु तैं यथोक्त साध्यकी सिद्धि होयही है, यह केवलव्यतिरेकी हेतु है तातैं साध्य प्रति गमकही है। जैसैं ऐसे हेतु और भी कहै हैं;—जीविता शरीर आत्मासहित है, जातैं प्राणादिसहितपणा है, जो आत्मासहित नाहीं होय सो प्राणादिसहित नाहीं होय—श्वासोच्छ्वासादिक्रिया जामै नाहीं होय जैसै मृतकशरीर, ऐसैं प्राणादिमत् पणा हेतु केवलव्यतिरेकी है याका अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टात नाही तातैं केवलव्यतिरेकी कहिये, तैसैं प्रमाणत्वनामा हेतु भी केवलव्यतिरेकी जानना, याकाभी अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टात नाही है।

इहा पहले कह्या था जो प्रमाण सशयादिरहित वस्तुकूं जानै है सशयादिकका स्वरूप न कह्या सो ऐसै है—जो दोय पक्षमैं ज्ञान समान होय—निर्णय न होय सकै, जैसैं स्थाणु था ता विषै अंधकारादिके निमित्ततै संशय उपज्या 'जो यह स्थाणुहै कि पुरुष है' ऐसै दोऊ पक्षमें निश्चय न भया, जो कहा है सो तौ संशय है। बहुरि 'दोऊ पक्षमैं एकका अन्यथाका निश्चय होना सो विपर्यय है' जैसैं स्थाणु था ता विषैं ऐसा निश्चय भया जो यहु पुरुषहीं है, ऐसा विपर्यय है। बहुरि अनध्यवसाय—जामैं चलते तृणादिका स्पर्श भया तहा ऐसा 'ज्ञान जो कछु है' ऐसैं जामैं सशय भी नाही अन्यथा निश्चय भी नाही यथार्थ निश्चय भी नाही सो अनध्यवसाय है।

बहुरि अव्याप्त अतिव्याप्त असभवि ये तीन लक्षणाभास कहे। तिनिका स्वरूप ऐसा—जो लक्ष्य काहू वस्तुकू स्थापि ताका लक्षण करिये सो जो लक्षण लक्ष्यके सर्वविशेषभेदनिमै न व्यापै कोईमै होय कोई विशेषमै न होय सो लक्षण अव्याप्तस्वरूप है। बहुरि जो लक्षण लक्ष्य स्थाप्या तामैं भी होय अरु जो लक्ष्य नाही तामै भी होय सो अतिव्याप्त है। बहुरि जो लक्ष्य स्थाप्या तामैं नाही संभवै सो असभवि है। सो इहा प्रमाण तौ लक्ष्य है अर स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान लक्षण है, सो ज्ञान ऐसा कहनेमै तौ सम्यग्ज्ञानके पाच भेद हैं ते परोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाणके भेद हैं तिनिमै सर्वमै पाइए है तातै अव्याप्त लक्षण नाही। बहुरि व्यवसायात्मकविशेषणतैं सशयादिक अप्रमाण ज्ञान हैं तिनिमै व्यवसाय कहिये यथार्थ निश्चयस्वरूपपणा नाही तातै तिनिमै व्यापै नाही तातै अतिव्याप्त नाही। बहुरि स्वविशेषणतै असभव दोष भी नाही है जो आपकू न जानै सो परकू भी न जानै ऐसा असभवदोष यामै नाही। ऐसे त्रिदोषरहित लक्षण जानना। जो लक्ष्य अप्रसिद्ध होय ताका प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय है॥ १॥

आगै अब अपना कह्या जो प्रमाणका लक्षण ताका ज्ञान ऐसा विशेषण किया, ताकू समर्थनरूप दृढ करते सते आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ॥ २ ॥

याका अर्थ—हि कहिये जातै हितकी प्राप्ति अहितका परिहार विषैं समर्थ प्रमाण है तातैं ऐसा ज्ञानही है। अज्ञानरूप सन्निकर्षादिकविषैं यह सामर्थ्य नाही। तहा हित तौ सुख है जातैं सर्व प्राणी सुखहीकूं चाहै हैं, बहुरि सुखका कारण है सो भी हित ही है। बहुरि

अहित दुःख है जातै सर्व प्राणी दुःखकूं दूरि किया चाहैं हैं बहुरि दुःखका कारण है सो भी अहित ही है इहां दोऊनिका द्वंद्वसमास है। बहुरि प्राप्ति अरु परिहारका द्वंद्वसमास करणां ताकूं यथासंख्य लगावनां, तब हितकी प्राप्ति अहितका परिहार ऐसा भया। इनि दोऊविषै समर्थ कहिये करनेंकी शक्तियुक्त ऐसा। बहुरि 'हि' शब्द हेतु अर्थमैं है तातैं ऐसा अर्थ भया जो हिताहितकी प्राप्ति परिहार विषैं समर्थ है सो ही प्रमाण है। तातै प्रमाणपणां करि मान्या जो वस्तु सो ज्ञानही होनें योग्य है। अज्ञानरूप जे अन्यमतीनिकरि मानें सन्निकर्ष आदि प्रमाण ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारविषैं समर्थ नाही तातै ते प्रमाण नाही। या सूत्रका अनुमान प्रयोग ऐसै करना;— 'प्रमाण ज्ञान ही है,' यह तौ धर्मी अर साध्यके वचनरूप प्रतिज्ञा भई, बहुरि 'हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थपणातैं' यह साधनका वचनरूप हेतु भया, बहुरि 'जो ज्ञान है सोही ऐसा है अन्य ऐसा नाही जैसैं घट आदि जड़पदार्थ' यह व्यतिरेकव्याप्तिरूप दृष्टांतका वचन सो उदाहरण भया, बहुरि 'ऐसा यह प्रमाण है' यह उपनय भया, बहुरि 'तातैं हिताहितप्राप्ति-परिहारविषै समर्थ जो प्रमाण सो ज्ञान ही है' यहु निगमन भया। ऐसैं पांच अवयरूप अनुमानका प्रयोग या सूत्रका होय है। इहा हेतु, असिद्ध नाही है जातैं परीक्षावान पुरुष हैं ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारकै अर्थिही प्रमाणकूं विचारैं हैं, निष्प्रयोजन व्यसनमात्रही प्रमाणकी कथनी नाही करैं है। ऐसै सर्वही प्रमाणके कहनेंवाले मानैं हैं॥२॥

आगै बौद्धमती कहैं हैं जो सन्निकर्षादिक अज्ञानरूप ही प्रमाणकूं मानैं हैं तिनिके निराकरणकै अर्थि ज्ञानहीकै प्रमाणपणा कह्या सो तौ होहु याकूं हम नाही निषेधै हैं, बहुरि तुम व्यवसायात्मक ज्ञानका विशेषण किया सो या विषैं हम युक्ति नांही देखैं है जो यह तुम कैसैं

कहो हो ? हमारै तौ अनुमान प्रमाणकै तौ व्यवसायात्मकपणाकरि प्रमाणपणाका अंगीकार है, बहुरि प्रत्यक्षप्रमाणकै तौ निर्विकल्पणा होतैं ही सत्यार्थपणातैं प्रमाणपणा बणै है, ऐसैं बौद्ध कहै ताके समाधानकै अर्थि सूत्र कहै हैं;—

तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥

याका अर्थ—तत् कहिये प्रमाणस्वरूप कह्या जो ज्ञान सो निश्चयात्मक कहिये निश्चयस्वरूप है, काहे तें ? जातैं समारोप कहिये सशयादिक तिनितैं विरुद्ध है यथार्थ है, जैसैं अनुमान है तैसैं। इहां याका प्रयोग ऐसैं—तत् कहिये सो प्रमाणपणाकरि मान्या वस्तु यहु तौ धर्मी भया, बहुरि यहु निश्चयात्मक कहिये व्यवसायस्वरूप है यहु साध्य है, दोऊ मिल्या हुवा पक्ष है, याका वचनकूं प्रतिज्ञा कहिये। बहुरि समारोपविरुद्धपणातैं यह हेतु है, इहां समारोप नाम सशयादिकका है। बहुरि अनुमानवत् यहु दृष्टांतका वचन सो उदाहरण है। इहां यहु अभिप्राय है जो सशय विपर्यय अनध्यवसाय स्वभाव जो समारोप जिसका विरोधी जो वस्तुका ग्रहण कहिये जानना सो है लक्षण जाका ऐसा व्यवसायस्वरूपपणाकूं होतैं ही अविसवादी पणा कहिये बाधारहित सत्यार्थपणा सो बणै है, बहुरि जो अविसवादी पणा है सो ही प्रमाणपणा है। ऐसैं बौद्धमतीनै मान्या जो च्यारि प्रकारका प्रत्यक्षप्रमाण ताकै प्रमाणपणाकूं अगीकार करनेका इच्छुक है तौ समारोपका विरोधी जो ग्रहण—जानना सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चयात्मक ज्ञानकूं ही प्रमाण मानना योग्य है।

इहां बौद्धमती कहै है जो समारोपका विरोधी अरु व्यवसायात्मक ये दोऊ रूप तौ एक ज्ञानहीके भये तहां साध्यसाधनभाव एक ज्ञानहीकै

कैसैं वर्णै ? ताकूं आचार्य कहै है—ऐसैं न माननां जातै इनि दोऊनिकै ज्ञानस्वभावकारि अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक जो धर्म तिनिका आधारपणां कारि भेदभी वर्णै है, जैसैं शीसूं नामा वृक्ष है ताकै शीसूंपणांकै वृक्षपणातैं अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक धर्मके आधारपणांकारि भेद वर्णै है। भावार्थ—व्यापककै तौ व्याप्य बहुत है बहुरि व्याप्यकै सो व्यापक एक ही है, तहां व्यापककूं तौ गम्यसंज्ञा कही है अरु व्याप्यकूं गमकसंज्ञा कही है, सो इहा व्यवसायस्वरूप ज्ञान तौ व्यापक है जातैं यथार्थनिश्चयात्मक जो प्रमाण ताविषैं भी वर्तै है अरु अन्यथानिश्चयात्मक जो विपर्यय ज्ञान तामैं भी वर्त्तै है। बहुरि समारोपका विरोधीपणा है सो यथार्थनिश्चयात्मक ज्ञान विषैं ही प्रवर्त्तै है, विपर्ययविषैं नांही है तातैं भेद है; जैसैं वृक्षपणां तौ सर्व वृक्षनिमैं वर्त्तै है सो व्यापक है बहुरि शीसूंपणां शीसूं वृक्षविषै ही वर्त्तै है तातैं व्याप्य है, तातैं शीसूंपणां तौ वृक्षविषैं गमक भया अर वृक्षपणा शीसूंकै गम्य भया, ऐसा जननां तातैं साध्यसाधनभाव वर्णै है। बौद्धमती प्रत्यक्ष प्रमाणाका लक्षण कल्पनारहित अभ्रात ऐसा कहै है, ताकूं अविसंवादस्वरूप कहैं हैं, अर्थक्रियाहीतैं कहैं हैं, वस्तुका प्राप्त करनेवाला कहैं हैं, याहीकूं वस्तुका प्रवर्त्तक कहैं हैं, अपनें विषयका दिखावनेवाला कहैं है, वस्तुविषैं निश्चय उपजावनहारा कहैं हैं सो ऐसा तौ व्यवसायात्मक विशेषण किये ही बणैंगा। बहुरि अनुमानकूं बौद्धमती सविकल्प सामान्यमात्रविषयस्वरूप कहैं हैं ताकूं इहा दृष्टात कीया है जो जैसैं अनुमानकूं निश्चयस्वरूप सविकल्प मानैं हैं तैसैं प्रत्यक्षकूं भी मानों, सर्वथा निर्विकल्पकै प्रमाणपणां वर्णै नांही। बहुरि इहां समारोपका विरोधी कह्या सो विरोध तीनप्रकार होय है, एक तौ सहानवस्थानलक्षण, जहां दोऊ विरोधी एकठे रहैं नाही जैसैं प्रकाश अरु अंधकार। बहुरि दूजा परस्परपरिहारलक्षण, जैसैं

एकठे तौ रहै परन्तु स्वरूप मिलै नाही जैसैं रूपगुण अर रसगुण, एक वस्तुमें रहै स्वरूप जुदा जुदा है ही। तीसरा वध्यघातकलक्षण, परस्पर घातकरै जैसें सर्पकै अरु न्योलाकै वैर होय। सो इहा समारोपकै अरु यथार्थनिश्चयात्मककै सहानवस्थानलक्षण विरोध है, यथार्थ निश्चय होय तहा समारोप संशय विपर्यय अनध्यवसाय रहै नाही॥ ३॥

आगैं अब प्रमाणका लक्षणमैं अपूर्व विशेषणसहित अर्थका ग्रहण है ताकूं समर्थन करि दृढ करता संता—तिसकूं स्पष्ट करता संता सूत्र कहैं हैं;—

अनिश्चितोऽपूर्वार्थः॥ ४॥

याका अर्थ—जाका पूर्वें निश्चय न भया होय ऐसा वस्तु अपूर्वार्थ है। तहा जो अन्य प्रमाणकरि संशयादिकका व्यवच्छेद करि निश्चय न किया ऐसा जो अर्थ कहिये वस्तु सो अपूर्वार्थ है। ऐसा कहनें करि ईहा ज्ञानका विषय वस्तुकूं पहिले अवग्रहादिक करि ग्रहण किया ताकै गृहीतग्राहीपणा होतै भी पूर्वार्थपणा नाही है, जातै ईहादिक ज्ञानका विषयभूत वस्तु अवग्रहके ग्रहे पीछै जो अवान्तरविशेष कहिये अन्याविशेष सो अवग्रहादिकरि निश्चय नाही होय है तातैं पूर्वार्थ नाही है, अपूर्वार्थ ही है॥ ४॥

आगै कहै हैं, जो अपूर्वार्थ कह्या सो याही प्रकार है कि कोई अन्य भी प्रकार है ऐसैं पूछैं सूत्र कहै है,—

दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक्॥ ५॥

याका अर्थ—जो वस्तु पूर्वें देख्या होय—प्रमाणतैं निश्चय किया होय पीछैं ताविषैं संशयादिक जो समारोप सो होय जाय तौ वस्तु 'तादृक्' कहिये विना निश्चय कीया समान है—अपूर्वार्थ है। तहा 'दृष्टोऽपि'

कहिये अन्य प्रमाणकरि ग्रह्या होय तौ भी तादृक् कहिये अपूर्वार्थ ही है। इहां ऐसा अर्थ भया जो अनिश्चित ऐसैं पूर्वैं कह्या सो ही केवल अपूर्वार्थ नाही है, देखे विषैं भी संशयादिक होय जाय सो भी अपूर्वार्थ है। इहा ऐसा अर्थ है जो अन्यप्रमाणकरि पहली ग्रह्या था सो धूंधला आकारपणा करि निर्णय न होय सकै सो भी वस्तु अपूर्व है जातैं तिसविषैं प्रवर्त्त्या जो समारोप कहिये संशयादिक तिनिका व्यवच्छेद नाही है ॥ ५ ॥

आगैं जे ज्ञानकूं स्वप्रकाशक नांही मानैं हैं ते कहैं हैं जो विज्ञानकै अपूर्वार्थ व्यवसायात्मकपणा तौ होहु परन्तु स्वव्यवसाय तौ हम नांही जानैं हैं, ऐसैं कहे ताकू उत्तरका सूत्र कहै है;—

स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अपनें सन्मुखपणां करि अपना प्रतिभासना सो अपनां व्यवसाय है। अपनें स्वोन्मुखपणां सो तौ 'स्वोन्मुखता' कहिये ऐसैं अपना अनुभव ताकरि प्रतिभासना प्रतीति होनां सो 'स्वस्य व्यवसाय' कहिये। तहा मैं मेरे तांई जानूं हूं ऐसी प्रतीति जाननीं ॥६॥

इहां दृष्टान्तका सूत्र कहै हैं;—

अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जैसैं अर्थ कहिये अन्यपदार्थ ताकै सन्मुख होय ताकूं जानै है तैसैं ही आपके सन्मुख होय अपनीं तरफ देखै तब आपकूं जानैं। इहां 'तत्' शब्द करि तौ अर्थका ग्रहण करना जैसैं अर्थकै सन्मुखपणा करि प्रतिभासनां होय तब अर्थका निश्चय होय है, तैसैं अपनें सन्मुखपणा करि अपनां प्रतिभासनां होय तब अपना निश्चय होय है ॥ ७ ॥

आगैं इहा उल्लेख कहै हैं,–(दृष्टान्त दार्ष्टान्तिकका उदाहरणकूं उल्लेख कहिये);—

घटमहमात्मना वेद्मि ॥ ८ ॥

याका अर्थ—मैं आपही करि घट है ताहि जानू हू। इहा 'अह' ऐसा तौ कर्त्ता है, 'घट' कर्म है, 'आत्मना' करण है, 'वेद्मि' ऐसी क्रिया है। सो जैसैं आप आपकरि घट वस्तुकू जानैं है तैसै आप आपकरि आपकू भी जानैं है ऐसा जानना ॥ ८ ॥

आगै इहा नैयायिक तौ कहै है,–ज्ञान है सो अन्यपदार्थकूं ही निश्चय करै है—कर्महीकू जानै है आपकू नाही जानै है, आप करण है तथा आत्मा जो कर्त्ता है ताकू भी नाही जानै है तथा फलरूप क्रिया है ताकूं भी नाही जानै है। इहा जैनमत अपेक्षा अज्ञानका नाश होना हेयोपादेयका जानना तथा वीतरागतारूप होना ऐसा प्रमाणका फल जानना। बहुरि मीमासकनिमै भट्टमतवाले कहै है—जो कर्त्ता अरु कर्मकू ही ज्ञान जानै है, आप करण है सो आपकू आप नाही जानै है अर क्रियारूप फलकू भी नाही जानै है। बहुरि मीमासकमतमैं ही जैमिनीय मत हैं ते कहैं है कर्त्ता कर्म क्रियाकू ज्ञान जानै है अरु आप करण है सो आपकू आप नाही जानैं है। बहुरि मीमासकमतमै ही प्रभाकरका मत है सो कहै है—कर्म क्रियाहीकू ज्ञान जानै है आत्मा कर्त्ताकू अर आप करणकू नाही जानै है। सो ये सर्वही मत प्रतीतिबाधित हैं ऐसा दिखावता सता सूत्र कहैं है,—

कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः ॥ ९ ॥

याका अर्थ—ज्ञानविपैं जैसैं कर्मकी प्रतीति है तैसै ही कर्त्ता, करण, क्रियाकी प्रतीति है ऐसै पूर्वसूत्रका हेतुरूप यहु सूत्र है, तातैं पचमी

विभक्ति अन्तमैं है। तहा ज्ञानका विषयभूत वस्तु है सो तौ कर्म कहिये है, जातैं कर्मका स्वरूप ऐसा है जो क्रियाकै व्याप्य होय—प्राप्त होने योग्य होय तथा रचनें योग्य होय तथा विकार करनें योग्य होय सो इहा ज्ञप्तिक्रियाकै व्याप्य ज्ञानका विषय वस्तु ही है। बहुरि कर्मवत् कह्या सो यह उपमा अलंकाररूप दृष्टान्तका वचन भया। बहुरि कर्त्ता आत्मा है। बहुरि करण प्रमाणरूप ज्ञान है। बहुरि क्रिया प्रमिति है। तिनिका द्वंद्व समास करि प्रतीति शब्दतैं षष्ठीतत्पुरुष समास करना, ताकै अंतविषैं हेतु अर्थ मैं पंचमी विभक्ति करनी। इहा वृत्तिमै 'का' ऐसी पंचमीकी संज्ञा है सो जैनेन्द्रव्याकरण अपेक्षा है। ऐसै पहले सूत्र कह्या तामैं अनुभवका उल्लेख है ता विषैं यथा अनुक्रम संबंध करणा तब ऐसा अर्थ होय है—जो ज्ञान जैसैं अपना विषयभूत वस्तु जो कर्म ताकी प्रतीति करै है तैसैं ही कर्त्ता आत्माकी तथा करणरूप आपकी तथा क्रियाकी प्रतीति करै है यातैं जैसैं घटकूं मैं आप करि जानूं हू ऐसी प्रतीति करै है तैसैं ही कर्त्ता करण क्रिया विषै भी मैं इनिकूं जानूं हू ऐसी प्रतीति करै है यामैं बाधा नाहीं है, अनुभवसिद्ध है। इहा ऐसा जानना जो एक ही ज्ञानमैं कर्त्ता आदि अनेक कारक अवस्था भेद विवक्षा करि सभवै है तातैं जैनमत स्याद्वाद है तामैं अपेक्षातैं विरोध नाहीं है, सर्वथा एकांतीनिकै विरोध आवै है ॥ ९ ॥

आगै कोई कहै जो यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति कही सो तौ शब्दका उच्चारमात्र ही है वस्तुका स्वरूपका बलतैं तौ नाहीं उपजी, कहनें मात्र है, वस्तुस्वरूप ऐसैं नाहीं, ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहैं हैं;—

शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत् ॥१०॥

याका अर्थ—यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति ज्ञाने कै होय है सो शब्दका उच्चार विना भी होय है ऐसैं आपका अनुभव आपकै है जैसैं

अन्य अर्थका अनुभवन है तैसैं ही आपका है । तहा जैसैं घट आदिक शब्द हैं तिनिका उच्चार किया विना भी घट आदि वस्तुका ज्ञानविषैं तदाकार अनुभव होय है तैसैं ही 'मैं हूं मैं हूं' ऐसा जो अन्तरङ्गकै विषैं सन्मुख होतै आपका तदाकारपणा करि प्रतिभास होय है सो शब्दके उच्चार किये विना ही आपकरि अनुभव कीजिये है ॥ १० ॥

आगैं इस ही अर्थकूं युक्तिपूर्वक अन्यवादीका उपहाससहित वचन जैसैं होय तैसैं सूत्र कहै हैं,—

को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छँस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—तिस ज्ञान करि प्रतिभास्या जो अर्थ कहिये वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता संता पुरुष ऐसा कौन है जो तिस ज्ञानहीकूं प्रत्यक्ष इष्ट न करै, इष्ट करै ही । इहा 'को वा' ऐसा कहनें तै लौकिक जन तथा परीक्षक जन सर्व ही लेणें । बहुरि 'तत्प्रतिभासिन' कहिये तिस ज्ञानकरि प्रतिभासनेंका जाका स्वभाव होय सो लीजिये । ऐसा जो प्रत्यक्ष विषयरूप वस्तु ताकूं प्रत्यक्ष इष्ट करता पुरुष सो ऐसा कौन है जो 'तदेव' कहिये सो ही ज्ञान ताहि 'तथा' कहिये प्रत्यक्षपणाकरि नाही इष्ट करै 'अपि तु' कहिये निश्चयतै इष्ट करै ही करै। जातै विषयी जो ज्ञान ताका प्रत्यक्षपणा धर्म है सो उपचार करि ताके विषयभूत पदार्थकूं प्रत्यक्ष कहिये है, मुख्य तौ प्रत्यक्षपणा ज्ञानका धर्म है । इहां ऐसा जानना—जो मुख्यका अभाव होतै बहुरि प्रयोजन अरु निमित्त होतै उपचार प्रवर्त्तै है सो इहा अर्थकै तौ प्रत्यक्षपणा मुख्य नाही है अरु प्रत्यक्षपणा मुख्य धर्म ज्ञानका है सो ताके विषयभूत अर्थ विषै प्रत्यक्षपणाका उपचार है सो प्रयोजन तौ इहा व्यवहारका प्रवर्त्तना है अरु निमित्त इहा ज्ञानकै अरु वस्तुकै विषयविषयीभाव संबध है सो है,

ऐसा जाननां। जो ऐसैं न मानिये तौ अप्रामाणिकपणां कहिये अपरीक्षकपणाका प्रसंग आवै है॥ ११॥

आगै इहा इसका उदाहरण कहै हैं;—

प्रदीपवत्॥ १२॥

याका अर्थ—जैसैं दीपककैं प्रत्यक्षता अर प्रकाशता विना तिसकरि भासे जे घटादिक पदार्थ तिनिकै प्रकाशता प्रत्यक्षता न वणै तैसैं प्रमाणस्वरूप ज्ञानकै भी जो प्रत्यक्षता न होय तौ तिसकरि प्रतिभास्या अर्थकै भी प्रत्यक्षता न वणै। इहा तात्पर्य कहै है—ताका प्रयोग—ज्ञान है सो अपनें प्रतिभास करनैं विषै आपतैं अन्य जो समानजातीय अन्य अर्थ तिसकी अपेक्षा न चाहै है यह तौ धर्मिसाध्यका समुदायरूप पक्षका वचन सो प्रतिज्ञा है। प्रत्यक्ष पदार्थका गुण होतैं अदृष्ट जो शक्ति ताकी व्यक्तिरूप अनुयायिकरणपणातैं यहु हेतु है। बहुरि प्रदीपभासुराकारवत् यह उदाहरण है। इहा भावार्थ ऐसा—जो ज्ञान अपनें जाननें विषै अन्यज्ञानकी अपेक्षा न करै है आप ही आपकूं जानैं है जातै ज्ञान आत्मा ही का गुण है सो जाननेकी शक्तिकी व्यक्तिरूप करण अवस्थाकू प्राप्त होय है। आपकी प्रमिति प्रति आपही करण है जैसै दीपककी प्रकाशरूप लोय है सो आपके प्रकाशनेमें अन्य लोयकी अपेक्षा नाही करै है, आप ही आपकूं प्रकाशै है, ऐसैं जानना॥१२॥

आगैं कोई आशंका करै है जो प्रमाणका लक्षण कह्या सो ऐसा तौ होहु तथापि इस प्रमाणकी प्रमाणता 'स्वतः' कहिये आपहीतै होय है कि 'परतः' कहिये अन्यतै होय है? जो स्वतः ही कहौगे तौ अविप्रतिपत्ति होयगी आप अन्यथा भी ग्रहण करै ताका निषेध काहेतै होयगा? बहुरि परतैं कहौगे तौ अनवस्थानामा दूषण आवैगा जातैं

प्रमाणकी प्रमाणता अन्यतैं होय तब तिस अन्यकी प्रमाणता काहेतैं होय ? बहुरि तिसकी भी अन्यतैं कहिये तौ कहू ठहरना नाही तब अनवस्था भई। ऐसैं दोऊ आशंकाका निराकरणकरि अपना मत स्थापते संते सूत्र कहैं हैं। इहां ऐसा भावार्थ—जो मीमांसकमती तौ प्रमाणका प्रमाणपणा स्वतः कहैं हैं अप्रमाणपणा परतः कहै हैं। बहुरि सांख्यमती प्रमाणपणा तौ परतः अप्रमाणपणा स्वतः कहै हैं। बहुरि नैयायिकमती दोऊ ही परतः होय है ऐसें कहैं हैं। ऐसें बहुत वादीनिकरि अन्य अन्य प्रकार कहनेंतैं संशय उपजै है तातैं कथंचित् स्वतः कथंचित् परतः ऐसैं स्याद्वादतैं यथार्थसिद्धि होय है ऐसे सूत्र कहै हैं,—

तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥ १३ ॥

याका अर्थ—तिस प्रमाणका प्रामाण्य कहिये प्रमाणपणा कथंचित् आपहीतैं होय है कथंचित् परतैं होय है। तहां सूत्रनिके संप्रदायमैं ऐसी परिभाषा है—जो वाक्य कहिये सूत्र हैं ते सोपस्कार कहिये अन्यपदनिका अध्याहार—मेलना सहित होय है, सो इहां ऐसी प्रतिपत्ति करणी, जो अभ्यासदशा विषैं तौ प्रमाणका प्रमाणपणा आपहीतैं होय है, बहुरि अनभ्यासदशा विषैं परतैं होय है। ऐसें कहनेंतैं दोऊ एकान्तका निराकरण भया। इहां कथंचित् अनभ्यास दशा विषैं परतैं प्रमाणपणा कहनेंमैं अनवस्था जैसैं एकान्त कहनेंमैं आवै है तैसै समान नाही आवै है जातैं अभ्यस्तविषयस्वरूप जो अन्यज्ञान ताकरि आप हीतैं प्रमाणपणा होय है ताकरि अनवस्थाका परिहार होय है ऐसा अंगीकार हमनैं किया है। अथवा प्रमाणका प्रमाणपणा उत्पत्तिविषै तौ परतैं ही हो है जातैं विशिष्ट नवीन कार्यका होना विशिष्ट नवीन कारणतैं ही होय है। बहुरि विषयका जाननेंरूप तथा विषयविषै प्रवर्त्तनेंरूप जो प्रमाणका कार्य ता विषैं अभ्यासदशामै तौ आपहीतैं प्रमाणता

है, बहुरि अनभ्यासदशाविषैं परतै प्रमाणता होय है, ऐसा निश्चय है।' इहा अभ्यासदशा तौ सो कहिये जहा वारवार ग्रहण होय अनभ्यास जो प्रथम ही ग्रहण होय सो कहिये। जैसै जा गावमै आप वसै ताका सरोवरका जल आपकै अभ्यासमैं आप रह्या होय तहा तिसका जलका प्रमाणपणा तथा जलज्ञानका प्रमाणपणा आपकै आपहीतै होय है ताकी प्रमणता करनेंमैं अन्य प्रमाणादिकका सहाय चाहै नांही तिस सरोवरकै समीप जातै ही स्नान करना, जल भरना, पीवना आदि कार्य निःशकपणै करै है सो इहा तौ अभ्यासदशाविषैं स्वतः प्रामाण्य भया। बहुरि सो ही पुरुष अन्यग्रामादिक जाय तहां मार्गमैं दूरितैं जलका निवास देखै तहा अपने ज्ञानकी तथा जिस जलरूप विपयकी प्रमाणता आई नाहीं, विचारने लगा यह जल है कि भाडली है ? कि कांश फूलि रह्या है ? कि मोकू अन्यथा दीखै है ? ऐसा सशय उपज्या तहा जे जलकी प्रमाणता करनेके कारण पूर्वं अभ्यासमै थे, जो जहा अन्य लोक जल भरि ल्यावते होय तथा जल भरते होय तथा घट आदि जलके पात्र जहां दीखते होय तथा कमलनिकी सुगंध आवती होय मींडके वोलते होय इत्यादि कारणनितैं तिस जलकी प्रमाणता आवै तहा अनभ्यासदशाविषै परतैं प्रमाणपणां कहिये। बहुरि उत्पत्तिमैं परहीतैं कह्या सो अन्तरंग तौ ऐसा ही ज्ञानावरणका क्षयोपशम अर वाह्य पापकर्म आदि दोपरहित अपना ज्ञान होय। बहुरि ज्ञानके कारण जे इंद्रियादिक ते निर्दोप निर्मलता आदि गुणकरि युक्त होय तव नवीन प्रमाणतारूप कार्य उपजै, जातै विशिष्ट कार्य होय जो विशिष्ट कारणतै ही होय। बहुरि विपायका जाननेंरूप क्रिया है लक्षण जाका अर विपयविषै प्रवृत्ति होना है लक्षण जाका ऐसा जो प्रमाणका कार्य ताविषैं अभ्यासदशाविषै तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतै होय है अर अनभ्यासदशाविपैं परतै होय है, ऐसा निश्चय कीजिये है।

इहां मीमांसकमती कहै है,—जो प्रमाणपणाकी उत्पत्तिविषैं विज्ञानके कारण जे निर्दोष नेत्र आदिक तिनितै भिन्न अन्य कारणकी अपेक्षापणा है सो असिद्ध है—अन्यकारण नाहीं है तातै प्रमाणका प्रमाणपणा तिस प्रमाणहीतैं होय है जातैं तिस प्रमाणतै अन्य वस्तुका ही अभाव है, अर जो कहोगे अन्यकारण नेत्रादिकके निर्मलपणा आदि गुण हैं ते हैं तौ यह कहना वचनमात्र है—वस्तुभूत नाहीं, जातै विधिकी मुख्यताकरि अथवा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है प्रमाण सिवाय गुण न्यारे किछू भासते नाहीं प्रत्यक्ष करि तौ किछू गुण प्रमाणतै न्यारे दीखै नाहीं जातै प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियनिकरि जानना है सो इन्द्रियनिकी प्रवृत्ति अतीन्द्रियविषै होय नाहीं इन्द्रियनितै किछू न्यारे ही गुण दीखै नाहीं। बहुरि अनुमानकरि किछू गुणनिका लिंग दीखै नाहीं, ताकरि अनुमान कीजिये, इन्द्रियनिकरि लिंग ग्रहण होय तब अनुमान होय है अर लिंगका भी लिंग अनुमानकरि ग्रहण करना कहिये तौ अनवस्था आवै है तातै प्रमाणतै न्यारे गुण प्रमाणसिद्ध नाहीं। बहुरि प्रमाणकी अप्रमाणता तौ आपहीतै होय है अर प्रमाणता परहीतै होय ऐसा विपर्यय भी कह्या न जाय, जातैं पक्षधर्म, सपक्षे सत्व, विपक्षाद्व्यावृत्ति इनि तीनरूप सहित जो लिंग तिसहीतै केवल अनुमान प्रमाणकै प्रमाणपणा उपजता देखिये है। अन्वय व्यतिरेक करि ऐसैं ही उत्पत्ति दीखै है अन्य प्रकार तौ नाही। बहुरि ऐसै ही प्रत्यक्षविषैं भी लगावणा जो निर्दोष नेत्रादिकरि ही प्रमाणपणा उपजै है अन्यप्रकार नाही। तैसै ही आगमविषै भी लगावणा जो आप्तका कह्यापणा आगममे गुण होतै आगमका प्रमाणपणा तिस गुणतै नाही है, तिस आगमविषै गुणनितैं दोषनिका अभाव है अर दोषनिके अभावतै संशय—विपर्ययस्वरूप जो अप्रमाण-

पणा ताका अभाव होतै स्वाभाविक प्रमाणपणा निर्दोप आप ही तिष्टै है तातैं यह ठहरी जो प्रमाणपणा उत्पत्तिविषै अन्यसामग्रीकी अपेक्षा नाही करै है। वहुरि विपयका जाननेंकी क्रियारूप जो अपना कार्य ताविषैं अपने जाननेकी भी अपेक्षा न करै है। जो प्रमाण आप आपकूं जानैं तब अन्यविपयकूं जाणैं ऐसी अपेक्षा नाही चाहै है, जातै आपका प्रमाणपणा जानें विना ही ज्ञानकै विपयके जाननेंकी क्रियारूप कार्य देखिये है। वहुरि कहोगे जो जाननक्रियामात्र तौ प्रमाणका कार्य नांही जातै जाननक्रियामात्र तौ मिथ्याज्ञानविपै भी पाइए है। जाननक्रियाका विशेप है सो तौ पहली प्रमाणकी प्रमाणता ग्रहण होय तब उपजै सो ऐसा कहना भी वालकका विलास है विना समझ्या कहना है जातैं प्रमाणका प्रमाणपणा ग्रहणके उत्तरकालमैं उत्पत्ति अवस्थातैं जानन-क्रियाका विशेप कछू भासै नाही, जैसा जानना प्रमाणपणा ग्रहण होतैं होय है तैसाही विना ग्रहण किये होय है जाका प्रमाणपणा ग्रहण किया जो यह मेरा ज्ञान प्रमाण है तिसतै भी विपयके जाननेमैं तौ किछू विशेप भासता नाही, निर्विशेप विपयकी उपलब्धि है। वहुरि कहोगे जो जाननेमात्रका तौ सीपकै विपैं रूपेका ज्ञान भया तामैं भी सद्भाव है सो याकै भी प्रमाणका कार्यपणाका प्रसग आवै है। तौ ऐसैं तौ जब होय जो वस्तुविषैं अन्यथापणाकी प्रतीति अर अपनें कारणकरि उपज्या दोषका ज्ञान इनि दोऊनिकरि निराकरण न कीजिये सो इहां सींपविषैं रूपाका ज्ञान होय तौ ताका निराकरण होय हैं जो यह रूपा नाही सींप है। वहुरि नेत्रनिमै दोप है तातैं रूपा दीखै है ऐसैं तिस-ज्ञानका वाधक है तातैं तिसकै प्रमाणपणाका प्रसग नाही आवै है। तातैं जिस वस्तुविपै प्रमाणका कारणका तौ दोपका ज्ञान अर वाध-ककी प्रतीति न होय तहा प्रमाणका प्रमाणपणा आपहीतैं होय है।

बहुरि ऐसै अप्रमाणपणाविषै नाही है अप्रमाणपणा परतै ही होय है, जातैं विज्ञानके कारणतैं भिन्न जो दोपस्वभावरूप सामग्री ताकी अपेक्षा सहितकरि अप्रमाणपणा उपजै है। बहुरि अप्रमाणताकी निवृत्तिस्वरूप जो अप्रमाणका कार्य ताविपै अपना अप्रमाणतारूप स्वरूपका ग्रहणकी सापेक्षा है ही सो जैतैं अपनी अप्रमाणताकू न जाणै तेतै अपना अन्यथापणारूप जो विपय तातै पुरुपकू नहीं निवृत्तिरूप करै है, अप्रमाणताकू जाणैं तबही विषयका अन्यथापणा जाणि छोडै, ऐसै मीमासक स्वतः प्रमाणकी पक्षकू दृढ किया।

अब याका निराकरण आचार्य करै है;—जो यह मीमासकनैं कह्या सो सर्वही बडे अज्ञानरूप अन्धकारका विलास है, सो ही कहिये है—प्रथम तौ प्रामाण्यकी उत्पत्तिविपै अन्य सामग्रीकी अपेक्षापणा असिद्ध कह्या सो असिद्ध नाही है, आगमके आप्तका कह्यापणारूप जो गुण ताका सनिधान होतैं सतै ही आप्तप्रणीत वचन विपैं प्रमाणता देखिये है, जातै जिसके अभावतैं तौ अनुत्पत्ति अर जिसके सद्भावतै उत्पत्ति होय सो तिसका कारण होय है ऐसा लोकमैं प्रसिद्ध है सो आगमकी प्रमाणता सत्यार्थ आप्त होतै होय है न होतैं नाही होय है, सो जो मीमासकनैं कह्या जो विधिकी मुख्यताकरि तथा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है, तहा प्रथम तौ आप्तके कहे शब्दविपै गुणनिकी प्रतीति नाही है ऐसा कहना अयुक्त है जातै ऐसै होय तौ आप्तके कहेपणेंकी हानिका प्रसंग आवै है, अनाप्तका वचनकै समान ठहरै है, अर जो कहै नेत्र आदिकै विषैं गुणानिकी अप्रतीति है तौ सो भी अयुक्त है, नेत्रनिके निर्मलपणा आदि गुण है ते स्त्री बालक गुवाल सर्वके प्रसिद्ध हैं—सर्व जानै है, जो ये नेत्र निर्मल है ये निर्मल नाही है। बहुरि जो कहै निर्मलपणा तौ नेत्रका स्वरूप ही है गुण नाही है

तौ हेतुकै अविनाभावकरि रहितपणाहै सो भी स्वरूपकी विकलता ही है दोप नाही है ऐसैं गुणका निपेध तैसैं ही दोपका निषेध दोऊ समान भये। बहुरि कहै जो स्वरूपकी विकलता है सो ही दोप है तौ लिंगकै तथा नेत्रादिककै तिसका स्वरूपका सकलपणा है सो ही गुण है ऐसै क्यो न कहिये? ऐसैं ही आप्तके कहे शब्द विपै भी मोह, राग, द्वेष आदि लक्षण दोपका अभाव सो ही यथार्थज्ञानादिलक्षण गुणका सद्भावकूं अंगीकार करता मीमासक अन्य प्रमाणीविपै ऐसै न मानै सो उन्मत्त कैसैं नाही? उन्मत्त ही है।

बहुरि मीमासकनैं कह्या जो शब्द विषै गुण तौ है परन्तु प्रमाणकी उत्पत्तिविषै ते व्यापार नाही करैं हैं, दोपका अभाव है सो ही प्रमाणकी उत्पत्तिविषै व्यापार करै है। सो यह कह्या तौ सत्य परंतु युक्त नांही, जातैं कहनेंमात्र ही करि साध्यकी सिद्धिका अयोग है जातैं गुणनितैं दोपनिका अभाव है। ऐसैं कहनें विपै तौ अज्ञान ही कारण है अन्य किछू नाही है, भावार्थ—यह भूलि करि कहै है। फेरि मीमासक कहै है;—जो अनुमानविषैं तीनरूप सहित जो लिंग तिस हीमात्र करि उपजी प्रामाण्यकी उपलब्धि होय है सो ही तहां हेतु है। ताकू कहिये ऐसै नाही है याका उत्तर तौ पहले दिया था तहा तीनरूप पणा है सो ही गुण है, जैसै तिसकी विकलता कहिये तीनरूपपणासूं रहित सो ही दोप है, ऐसै हेतु है सो भलै प्रकार मान्यां हूवा है। ऐसैं ही अप्रामाण्यविपै भी कह्या जाय है तहा दोषनि तै गुणनिका अभाव है तिनिके अभावतै प्रमाणपणांका अभाव होतै अप्रमाणपणा स्वाभाविक तिष्ठै ही है। ऐसैं अप्रामाण्य स्वतैं ही आवै है ताका भिन्न कारणतैं उपजनेंका वर्णन उन्मत्तभापित ही ठहरै है। भावार्थ—जो मीमांसक प्रामाण्य तौ स्वतै कहै है अर अप्रामाण्य परतैं कहै है सो इहां दोऊ ही स्वतैं होय

है ऐसैं दिखाय तिसका मत खंडन किया है। बहुरि विशेष कहै है,—जो गुणनितै दोषनिका अभाव है ऐसै कहता जो मीमांसक सो ऐसै याके कहनेमैं यहु आया जो गुणनितै ही गुण होय है जातै अभाव है अन्यभावस्वभावपणा है अभावभी भाव ही स्वरूप है तातैं अप्रामाण्यका अभाव है सो ही प्रामाण्य है सो एतै ही कहनेमैं तौ परकी पक्षका निराकरण होय नाही जातै यह कहना तौ परपक्षका विरोधक नाही। बहुरि अनुमानतैं भी गुण प्रतीतिमैं आवै है सो ही कहिये है,—प्रामाण्य है सो विज्ञानके कारणतैं भिन्न जे कारण तिनितैं उपजै है जातै प्रामाण्य है सो विज्ञानतैं अन्य है अर कार्य है जैसैं अप्रामाण्य है ऐसा प्रयोग है। तथा अन्य प्रयोग कहै है;—प्रमाण अर प्रामाण्य दोऊ भिन्न कारणतै उपजै है जातै ये भिन्न कार्य हैं, जैसे घट अर वस्त्र भिन्न कार्य है सो घट तौ माटी नामा कारणतै वणै अर वस्त्र सूतनामा कारणतै वणैं ऐसैं भिन्न कार्य होय सो भिन्न कारणहीतै होय। तातैं यह ठहरी जो प्रामाण्य है सो उत्पत्तिविषै परकी अपेक्षा सहित है, भावार्थ—परतै उपजै है। बहुरि तैसैं ही प्रमाणका कार्य जो विषयका जाननेंरूप क्रियास्वरूप तथा विषयविषैं प्रवृत्तिस्वरूप ताविषै अपना ग्रहणकी अपेक्षा नाही है, ऐसा एकान्त नाही है। मीमांसकनै कह्या था जो अपना स्वरूपका आपकरि जाननें विषै परकी अपेक्षा नाही है सो कोई अभ्यस्त विषय होय तहां ही परकी अपेक्षाका अभावका व्यवस्थापन है अर अनभ्यस्तविषय होय तहां तौ जलमरीचिकाका साधारण प्रदेश होय तहा जलका ज्ञान परकी अपेक्षाहीतैं होय है। याका प्रयोग ऐसा,—यह जल सत्य है जातैं जैसा जलका आकार होय तैसा विशिष्ट आकारधारीपणा यामै है। याका समर्थन—जो घट है पाणी भरनहारीका समूह हैं मींडकनिके शब्द हैं कमलनिका गंध आवै है इनिसहित

है जैसैं प्रत्यक्ष देख्या जल होय तैसैं यहु है ऐसैं अनुमानज्ञानतै तथा जलकी अर्थक्रियाका ज्ञानतैं पहले जलका ज्ञान हुवा था तैसी ही ताकै प्रमाणता कहिये यथार्थपणां सो बहुतकालपर्यन्त कल्पिये ही है जातै पहले अनुमानप्रमाणकै स्वतः सिद्ध प्रामाण्य भया तिसतै इस जलज्ञानकै प्रमाणता भई तातै पहले अनभ्यस्तमै परतै प्रमाणता कहिये। बहुरि मीमासकनैं कह्या था जो प्रामाण्यके ग्रहणके उत्तरकालमै उत्पत्ति अवस्थातै जाननेमै किछू विशेप नाही भासै है जो प्रमाण उपजतैं जैसा था जैसा ही पीछै है। ताका उत्तर;—जो अभ्यस्तविपयविषै विशेप न भासता कहै तौ यह तौ हम भी मानैं है जातै तहा पहले निःसन्देह विषयका जाननेंका विशेपका अंगीकार है। बहुरि अनभ्यस्तविपयविषैं कहै तौ जाननेमै विशेप है ही, प्रामाण्य ग्रहणके उत्तरकालमै विपयका अवधारण कहिये नियमरूप स्वभाव लिये प्रतिभास भया, यह ही विशेप प्रतिभास भया। बहुरि मीमासक कहै है—जो प्रामाण्यकै अरु जाननक्रियाकै तौ अभेदभाव है इनिमैं पहली पीछैं होनां कैसै वणै ? ताकूं कहिये है;—जो ऐसै नांही है जातै सर्व ही जाननेकी क्रिया प्रमाणस्वरूप नाही है अर प्रामाण्य है सो जाननक्रियास्वरूप है ही, तातै कथंचित् भेद भया, तातैं दोप नाही। बहुरि मीमासकनैं कह्या जो बाधक अर कारण दोपका ज्ञान इनि दोऊनिकरि प्रमाण्यका निराकरण होय है सो यह कहना भी निष्फल है जातैं अप्रामाण्यविपैं भी ऐसैं कह्या जाय है, सो ही कहिये है—पहले तौ ज्ञान अप्रमाणरूप ही उपजै है पीछैं बाधारहित ज्ञान अर गुणका ज्ञान होय ताकै उत्तरकालविपै तिस अप्रमाणरूप ज्ञानका निराकरण होय है। तातै यह निश्चय भया जो प्रामाण्य अथवा अप्रामाण्य अपने कार्यविषैं कोई जायगां आभ्यासकी अपेक्षा स्वतै होय है कोई जायगा अनभ्यासकी अपेक्षा परतैं होय है सो ऐसै ही निर्णय करना योग्य है।

ऐसैं बौद्धमती तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतै मानैं हैं, अर नैयायिक परतै ही मानै है, अर मीमासक उत्पति अर ज्ञप्तिविषैं प्रमाणता दोऊ आपहींतै अर अप्रमाणता परहीतैं मानै है, अर साख्यमती प्रमाणता तौ परतै मानै हैं अप्रमाणता आपहीतै मानैं हैं तिनि सर्वनिका निराकरण स्याद्वादतै होय है ।

आगैं इहा टीकाकारकृत श्लोक है,—

देवस्य सम्मतमपास्तसमस्तदोषं
वीक्ष्य प्रपञ्चरुचिरं रचितं समस्य ।
माणिक्यनन्दिविभुना शिशुबोधहेतो-
र्मानस्वरूपममुना स्फुटमभ्यधायि ॥ १ ॥

याका अर्थ—' देवस्य ' कहिये अकलङ्कदेवनामा आचार्य ताका समस्तदोषरहित विस्तारकरि सुन्दर भलै प्रकार मान्या ऐसा जो न्यायशास्त्रमै प्रमाणका स्वरूप ताहि विचारिकरि माणिक्यनदिनामा जे समर्थ आचार्य तिनिनै इस परीक्षामुखशास्त्रविषै सक्षेपकरि रच्या जो प्रमाणका स्वरूप तिसकू बालक जे अल्पज्ञानी तिनकै ज्ञान करनैं आर्थी मैं अनन्तवीर्य आचार्य प्रगटकरि कह्या है ॥ १३ ॥

छप्पय ।

आप जानि परवस्तु अपूरवका निश्चय कर
करणरूप जो ज्ञान ताहि भाष्या प्रमाण वर ।
उपजै परतैं आनकूं गहै अभ्यासै
विन अभ्यास सहाय्य आनका लिये प्रकासै ॥
अकलंकदेव जैसैं कह्या माणिकनंदि विचारि उर ।
भाष्यो स्वरूप संक्षेप यह ग्रन्थ परीक्षाद्वार धुर ॥

इति परीक्षामुखकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषैं
प्रमाणका स्वरूपका उद्देश समाप्त भया ।

द्वितीय–समुद्देश।



(२)

आगै प्रमाणका स्वरूपकी विप्रतिपत्ति दूरि करि अब सख्याकी विप्रतिपात्ति निराकरण करता संता आचार्य सकल प्रमाणके भेदनिकी रचनाका संग्रह जामैं पाइये अर प्रमाणकी संख्या जामै पाइये ऐसा सूत्र कहै है;—

तद्द्वेधा ॥ १ ॥

याका अर्थ—सो प्रमाण दोय प्रकार है। इहा तत्शब्दकरि तौ प्रमाणका परामर्श करना। सो ही प्रमाण पहले स्वरूपकरि निश्चय किया सो दोय प्रकार है। इहा एवकार अवधारण अर्थमें लेना जो संक्षेपकरि प्रमाणकी संख्या दोय है एक तीन आदि नाही है। यामैं प्रमाणके जे ते भेद हैं तिनि सर्वका अन्तर्भाव है ॥ १ ॥

आगै जो प्रमाणकी संख्या दोय भेदरूप कही सो दोयपणा प्रत्यक्ष अनुमान भेदकरि भी संभवै है ताकी आशंका दूरि करनेकूं प्रमाणके जे समस्त भेद तिनिका सग्रह करनेवाली ऐसी संख्याकूं प्रगट करै है—

प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥ २ ॥

याका अर्थ—पहले सूत्रमै कही जो प्रमाणकी दोय संख्या सो प्रत्यक्ष अर परोक्ष ऐसैं दोय भेदतै है। तहा प्रत्यक्षका लक्षण आगैं कहसी तिसतैं इतर कहिये अन्य परोक्ष ऐसै दोय भेदतैं प्रमाणकी सख्या दोयरूप है। अन्यमतीनिकरि कल्पित जो प्रमाणकी एक दोय तीन च्यारि पाच छह प्रकार संख्या ताका नियमविषैं समस्त प्रमाणके भेदनिका अन्तर्भाव किया न जाय है सो ही कहिये है;—प्रथम तौ

चार्वाक मतवाला एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही मानै है ताविषैं अनुमानका अन्तर्भाव होय सकै नाही है जातैं अनुमानतैं प्रत्यक्ष विलक्षणस्वरूप है, तिनि दोऊनिकै सामग्री अर स्वरूप भेदरूप है—न्यारे न्यारे है।

इहां चार्वाक कहै है;—प्रमाण तौ एक प्रत्यक्ष ही है दूजा अनुमानदिकरूप परोक्षप्रमाण कहो है सो परोक्षप्रमाण नाही है जातैं परोक्षप्रमाणमैं विसंवाद है—बाधा आवै है। सो दिखावै है,—देखो, अनुमान प्रमाणका स्वरूप ऐसा कह्या है जो निश्चित अविनाभावस्वरूप जो हेतु तातैं लिंगी जो साध्य ताकै विषैं जो ज्ञान सो अनुमान है, ऐसा अनुमानप्रमाण माननेवालाका मत है। तहां लिंग दोय प्रकार, तामैं एक स्वभावलिंग ताविषैं बहुत अन्यथापणा देखिये है। सो ही कहिये है,—कषायला रसकरि सहित जे आमला ते इस देशकालसंबंधी देखिये हैं ते देशान्तर कालान्तर तथा अन्य द्रव्यका संबंध होतैं अन्यप्रकार भी देखिये है तातैं जो स्वभाव हेतुकरि अनुमान कीजिये है तौ तामैं व्यभिचार आवै ऐसा अनुमान कीजिये जो आमला होय है ते कषायला होय है तौ कोई देशकालमैं अन्य द्रव्यके संबंधतैं रस अन्यप्रकार होय तब अनुमानमैं व्यभिचार आवै। अथवा कोई देशमै आम्रवृक्ष है कोई देशमै लता-आकार आम्र है अथवा कोई देशमै शीसू लताकू कहैं हैं, तहां कोई ऐसा अनुमान करै जो यह वृक्ष है जातैं शीसू है तौ जिस देशमैं लताकू शीसूं कहै है तातैं व्यभिचार भया। ऐसैं ही कार्यलिंग मानिये तामै भी व्यभिचार है जैसैं धूमतैं अग्निका अनुमान कीजिये है सो धूम इन्द्रजालके घड़ेमै अग्नि विना देखिये है तथा बंबीमैं धूम अग्नि विना नीसरती देखिये है तातैं अग्निका अनुमान व्यभिचारी होय है। तातैं एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है, याहीकै अविसंवादकपणा है—निर्बाध सत्यपणा है।

ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कह्या सो बाल कहिये अज्ञानी ताका विलास सारिखा भासै है जातै जो वार्त्ता कही सो उपपत्तितै शून्य है—बणती न कही। सो ही कहिये हैं;—इहा दोय पक्ष पूछिये जो परोक्षकै प्रमाणपणा निषेधै है सो याके उत्पत्तिके कारणके अभावतै निपेधै है कि आलंबनके अभावतैं निषेधै है ? तहा प्रथम तौ पहला पक्ष जो उत्पादक कारणका अभाव सो तौ नाही बणै है जातैं याका उत्पादक कारण सुनिश्चित भई जो साध्यतै अन्यथा अनुत्पत्ति ताका नियमका निश्चय सो है लक्षण जाका ऐसा जो साधन कहिये हेतु ताका सद्भाव है। बहुरि दूजा उत्तरपक्ष जो आलंबनका अभाव सो भी नाही है जातै याका आलंबन जो अग्नि आदिक सो समस्त जे विचार करनेंविषैं चतुर है चित्त जिनिका तिनिकै सदाकाल प्रतीतिमै आवै है, अग्निकूं आलंब्यकरि अनुमान उपजै सो आलंबनका अभाव कैसै कहिये। अर जो स्वभावहेतुकै व्यभिचारकी संभावना कही सो भी अयोग्य है जातै स्वभावमात्र ही हेतु नाही होय है, जो व्याप्यरूप स्वभाव होय सो व्यापक प्रति गमक होय है सो ही हेतु होय यातैं व्याप्यकै व्यापकतै व्यभिचार नाही है, जो व्यभिचार होय तौ वह व्याप्य ही न कहिये। इहा अन्य विशेष कहैं हैं;—जो ऐसैं अनुमानकूं व्यभिचारी कहकरि उत्थापन करनेंवाला जो चार्वाक ताकै प्रत्यक्ष प्रमाण भी नाही ठहरैगा, तहा भी अविसंवादपणा अर मुख्यपणा ये दोऊ ही अनुभान विना निश्चय नाही होगा जातै प्रमाणपणाकै अर अविसवादकपणाकै तथा मुख्यपणाकै अविनाभावीपणा है सो अनुमान मान्या विना कैसैं निश्चय होय, प्रमाणका सत्यार्थपणां तौ अनुमान ही करै है। बहुरि जो कार्यनामा हेतुकै भी व्यभिचार बताय अन्यथाका संभावन किया सो, भी विना विचारया किया, नीकैं विचारया परीक्षारूप किया कार्य सो,

कारणतैं नाही व्यभिचरै है—कारणकू साधै ही है। जैसा धूम अग्निका कार्य पर्वतके तट आदिविषै अतिसघन धवलपणा करि फैलता पाइये है तैसा इद्रजालके घडा आदिविषै नाही देखिये है। बहुरि जो कह्या वंबीविपै अग्नि विना धूमका सद्भाव है सो हम पूछै है तहा यहु बबी अग्निस्वभाव है कि अनग्निस्वभाव है? जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है तिसतैं भया धूमकै अन्यथाभाव कैसैं कल्पिये, अर जो अग्निस्वभाव नाही है तौ तिसतैं भया धूम ही नाही तब तहा विना अग्नि भया धूम कैसैं कहिये—अग्नितैं व्यभिचार कैसैं मानिये। सो ही कह्या है इहा श्लोक 'उक्तं च' है, ताका अर्थ—जो शक्रमूर्द्धा कहिये बबी सो जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है अर अग्निस्वभाव नाही है तौ तहा धूम कैसैं होय।

बहुरि विशेष कहै है,—जो चार्वाक प्रत्यक्ष एक प्रमाण मानैं है सो परशिष्यकू प्रत्यक्ष प्रमाण कैसै कहैगा परपुरुषका आत्मा तौ प्रत्यक्ष ही करि ग्रहण करिवेकू असमर्थ है, अर कहैगा जो वचन आदि कार्यके देखनेतै परके बुद्धि आदि जानिये है तौ कार्यतै कारणका अनुमान आया ही, अनुमानका निषेध कैसै करै है। बहुरि जो कहै, लोकव्यवहारकी अपेक्षा अनुमान मानिये ही है परलोक आदिकके सद्भावविषैं ही अनुमानका निषेध कीजिये है जातैं परलोकका अभाव है। ताकू कहिये,—जो परलोकका अभाव कैसैं मानै है जो कहैगा मेरै परलोककी

---

१ अग्निस्वभावः शक्रस्य मूर्द्धा चेदग्निरेव सः।
अथानग्निस्वभावोऽसौ धूमस्तत्र कथं भवेत् ॥ १ ॥

लिखित वचनिका प्रतिमें यह श्लोक नहीं लिखा है। संस्कृत प्रतिमें 'उक्तं च' कहकर दिया है सो वहासे लेकर लिखा है। —सम्पादक।

उपलब्धि नाहीं—मोकूं दीखै नाहीं तातैं अभाव मानूं हूं तौ अनुपलब्धि-नामा लिंगकरि उपज्या अनुमान एक और आया, निषेध तौ न भया।

बहुरि प्रत्यक्षका प्रमाणपणां भी स्वभावहेतुतैं उपजी जो अनुमिति जाकू अनुमान भी कहिये तिस विना न बणैगा सो यह पहले कह आये है यातैं अब काहेकूं कहै। इस अनुमानका समर्थन बौद्धमतका आचार्य धर्मकीर्तिनैं किया है, ताका श्लोक[1] है ताका अर्थ;—प्रत्यक्ष प्रमाण सिवाय अन्य प्रमाणका सद्भाव तीन हेतुतै होय है,—प्रथम तौ प्रमाण अर अप्रमाण सामान्यका ठहरनां प्रत्यक्ष सिवाय अन्य प्रमाण विना होय नाहीं प्रत्यक्षमैं विपर्यय ही ग्रहण भया होय ताका निषेधकू अन्य प्रमाण चाहिये। दूसरै अन्यकी बुद्धिका जाणपणा प्रत्यक्षतैं नाहीं तातै अन्य प्रमाण चाहिये जाकरि अन्यकी बुद्धिका ज्ञान होय, सो वचन आदि कार्यनितैं अनुमान होय है। तीसरा परलोक आदि अदृष्ट वस्तुका निषेध करनेंकू अन्य प्रमाण चाहिये। ऐसै सौगत जो बौद्धमती है सो चार्वाक एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानै ताकै दूजा अनुमान प्रमाणका सद्भाव दिखाय अर आपका स्थापनेंकूं अनुमानका समर्थन करि कहै है, जो प्रत्यक्ष अर अनुमान ये दोय प्रमाण हैं।

तहा आचार्य कहैं हैं;—ऐसैं दोय प्रमाण मानता जो बौद्ध सो भी युक्तवादी नाही है जातै स्मृतिनामा प्रमाण विसवादरहित निर्बाध है ताका सद्भाव है। याकू विसवादरहित कह करि प्रमाण न मानिये तौ देनें लेने आदिका व्यवहारका लोपकी प्राप्ति आवै है, पहले काहूकौ धन सौप्या पीछै ताकू यादि करै मागै। बहुरि जाकूं सौप्या ताकू यादि

१ यदप्युक्त धर्मकीर्तिना,—

प्रमाणेतरसामान्यस्थितेरन्यधियो गतेः।
प्रमाणान्तरसद्भावः प्रतिषेधाच्च कस्यचित्॥ इति

करि कहै इसकूं मैं धन सौंप्या था सो यह प्रत्यभिज्ञान होय तब सौंप्या धन मागै है सो स्मृतिकूं प्रमाणभूत न मानिये तौ देनें लेनेका व्यवहार नाहीं होय। बहुरि वह कहै जो स्मृति तौ अनुभवन किये वस्तुविषै होय है सो जिसकाल स्मृति होय तिस काल अनुभूयमान जो वस्तु जाविषै स्मृति भई सो वस्तु विद्यमान नाही तातै विषयरहित जो स्मृति सो तौ प्रमाणभूत नाही। ताकूं कहिये—जो ऐसैं नाही, जो तिस काल विषय विद्यमान नाहीं है तोऊ अनुभवन किया था जो वस्तु तिसका आलंबनतैं स्मृति भई तातैं निरालंब नाही, निरालंब तौ जब होय जो अकस्मात् विना अनुभूत वस्तुविषै स्मृति होय सो ऐसैं होय नाही। अर ऐसैं अनुभूत वस्तुविषै स्मृति होतै भी निरालंबन कहिये अर अप्रमाण कहिये तौ प्रत्यक्षकै भी अनुभूत वस्तुविषैं अप्रमाणपणा ठहरै। बौद्धमती प्रत्यक्षकूं अतीतपदार्थविषयरूप कहै है तातै स्मृति अतीतानुभूतार्थ विषयतैं अप्रमाण कहैगा तौ प्रत्यक्ष भी ऐसा न ठहरैगा ऐसैं कह्या है। अथवा अनुमानकरि पहिले अग्निका निश्चय भया पीछै ताविषैं प्रत्यक्ष प्रवर्त्त्या सो ऐसा प्रत्यक्ष भी अप्रमाण ठहरैगा। अर अपना जो विषय है ताका प्रतिभासना प्रमाण कहिये तौ अपना विषयका प्रतिभासना तौ स्मरणविषै भी है ही याकूं अप्रमाण कैसैं कहिये।

बहुरि विशेष कहैं है,—जो स्मृतिकूं अप्रमाण कहिये तौ अनुमानकै प्रमाणपणाकी वार्त्ता भी कहना दुर्लभ होय है जातैं स्मृतिकरि व्याप्तिकूं याद किये अनुमान होय है, विना स्मृति व्याप्तिका स्मरण नाही तब अनुमानका उत्थान काहेतैं होय। तातैं यह कहना जो स्मृतिकै प्रमाणता है जातै अनुमानकै प्रमाणपणाकी याही तैं प्राप्ति है यहु न होय तौ अनुमानकै प्रमाणपणाकी प्राप्ति नाही है। ऐसै यहु स्मृति सो बौद्धमतीकै मान्या जो प्रत्यक्ष अनुमानरूप प्रमाणकै दोषप-

णाकी संख्याका नियम ताहि विगाडै है—निषेधै है तातैं हमारी चिंता-करि कहा साध्य है।

तैसैं ही प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो भी वौद्धकी दोयपणाकी संख्याका नियमका निराकरण करै है। तिस प्रत्यभिज्ञानाका भी प्रत्यक्ष अनुमानविषैं अतर्भाव न होय है। इहा वौद्धमती तर्क करै है,—जो प्रत्यभिज्ञानविपैं 'तत्' कहिये सो है ऐसा तौ स्मरण भया अर 'इद' कहिये यहु है ऐसा प्रत्यक्ष भया ऐसैं ये दोय ज्ञान भये इनितै न्यारा तीसरा तौ ज्ञान भया नाही ताकू हम प्रत्यभिज्ञान मानै अर न्यारा प्रमाण कहैं यातै तिस प्रत्यभिज्ञानकरि प्रमाणकी सख्याका निपेध कैसैं होय? ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यह कहना भी युक्त नाही जातैं प्रत्यभिज्ञानका विपयरूप जो पूर्वापरका जोडरूप वस्तुभूत अर्थ ताकूं स्मृति अरु प्रत्यक्ष ये दोऊ ही ग्रहण करनेकूं समर्थ नाही है, पहली अर पिछली दोऊ अवस्थाविषैं वर्त्तनेंवाला जो एक द्रव्य सो प्रत्यभिज्ञानका विपय है। यहु स्मरणकरि ग्रहणमें आवै नांही जातै स्मरणका तौ पूर्वे अनुभवन जाका भया सो ही विपय है। बहुरि प्रत्यक्षकरि भी ग्रहणमै आवै नाही जातैं प्रत्यक्षका विपय तौ वर्त्तमान अवस्था ही है। वहुरि वौद्धनैं कह्या जो स्मरण अर प्रत्यक्षतै न्यारा तौ प्रत्यभिज्ञान नाही सो यह कहना भी अयुक्त है। पूर्वोत्तरअवस्थाविपैं अभेदका ग्रहण करनेंवाला तीसरा प्रत्यभिज्ञान प्रतिभासमै आवै है। स्मृति प्रत्यक्षमैं कोई एककै तौ पूर्वोत्तर अवस्थाविषैं व्यापक जो अभेद ताका ग्रहणस्वरूपपणा नाही है जातै इनि दोउनिके विपय न्यारे न्यारे हैं। वहुरि यहु प्रत्यभिज्ञान प्रत्यक्षविषैं अन्तर्भाव होय नाही तथा अनुमानविपैं अन्तर्भाव होय नाही जातैं प्रत्यक्ष तौ वर्त्तमान निकटवर्त्ती वस्तुकूं ग्रहण करै है याका यह ही विषय है अर अनुमान है सो

अविनाभूत जो लिंग ताकरि सभावित जो वस्तु ताकू ग्रहण करै है याका यह विपय है, पूर्व-उत्तर पर्यायव्यापी जो एकपणा सो प्रत्यक्ष अनुमानका विपय नाही। बहुरि प्रत्यभिज्ञान है सो स्मरणविपै भी अन्तर्भूत नाही य है जातै पूर्व--उत्तरका एकपणा स्मरणका भी विपय नाही है। बहुरि इहा कोई कहै जो सस्कार अर स्मरणका सहायकरि ये इंद्रिय हैं ते ही प्रत्यभिज्ञानकू उपजावै हैं सो जो इन्द्रियतैं उपजै सो प्रत्यक्ष ही है तातै प्रत्यभिज्ञान न्यारा प्रमाण नाही ? ताकू आचार्य कहै हैं,—जो ऐसी कहनेवाला तो अतिमूर्ख ही है जातैं अपने विपयकू मुख्यकरि प्रवर्त्तता जो इन्द्रिय ताकैं सैकडा सहकारी सहाय मिलै तोऊ अन्यके विपयविपैं प्रवर्त्तनेंरूप जो अतिशय ताका अयोग हैं, इन्द्रिय अपनें अपनें विपै ही प्रवर्त्तें हैं। अर यह अतीत वर्त्तमान अवस्थाविपै व्यापी जो एक द्रव्य सो इन्द्रियनिका विपय नाही, अन्य ही है। इन्द्रियनिका विपय तो रूप ही हैं ये तावन्मात्र ही विपयविपै चरितार्थ है। बहुरि अदृष्ट जो पुण्यपापकर्म तिसके सहकारीपणाकी अपेक्षा स्वरूप होयकरि भी इन्द्रिय इस पूर्वापर अवस्थाका एकत्वविपैं नाही प्रवर्त्तें हैं तहा भी पूर्वोक्त दोप ही आवै है, सहकारीके वलतै इन्द्रिय अपनें विपय सिवाय प्रवर्त्त नाही।

बहुरि विशेप कहै है,—जो अदृष्ट कहिये पूर्वकृत कर्म अर धारणाज्ञानरूप सस्कार आदिकी अपेक्षातैं प्रत्यक्षकै एकत्व विपयविपैं प्रवर्तना कह्या तौ ऐसैं प्रवर्तना आत्माहीकै तिस एकत्वका विज्ञान क्यो न कल्पिये जातैं देखिये है जो स्वप्न सारस्वत चाण्डालिक आदि विद्याके सस्कारतैं आत्माकै विशिष्ट ज्ञानकी उत्पत्ति होय है। तहा अतीत अनागत वर्तमानके लाभ अलाभकी सूचना जातैं होय सो स्वप्नविद्या है। बहुरि अन्यतैं ऐसा न वणै ऐसा वादीपणा कवीश्वरपणा आदिकी कर-

णहारी सारस्वत विद्या है। बहुरि नष्ट मुष्टि आदिकी सूचना जातैं होय सो चाण्डलिक विद्या है। इहा बहुरि नैयायिकमती तर्क करै है,—जो अंजन आदिके संस्कारतैं नेत्रकै भी ऐसा अतिशय देखिये है? ताका समाधान;—आचार्य कहै है, ऐसै नाहीं है जातै नेत्रके अतिशय होय है सो अपने विषयविषैं ही होय है अपना विषयकूं नांहीं उलंघै है, ऐसा तो नाहीं जो अजनके सस्कारतैं नेत्र अपना विपय सिवाय जो रस गंध तिनिकौ जाणै, सो ही कह्या है; 'उक्तं च' श्लोक है ताका अर्थ;—जहा अतिशय देखिये है सो अपनें विपयकूं उलंघिकरि नांही होय है श्रोत्रकी प्रवृत्तितै रूपविषैं तौ अतिशय होय नाहीं जो होय तौ दूरवर्त्ती तथा सूक्ष्मवस्तुके देखनेविषै नेत्रकै अतिशय होय।

इहा नैयायिक फेरि कहै है;—जो यह श्लोक तौ सर्वज्ञके निषेधकै अर्थि मीमासकनै कह्या है इहां तुमनै कह्या सो मिलै नाहीं यह दृष्टान्त विषम है? ताका सामाधान;—इहा दृष्टान्त इन्द्रियनिकै अन्यके विपयविषै प्रवर्तनेका अतिशयका अभावमात्र दिखावनेकी समानतामात्र कह्या है तातैं बणै है, दृष्टान्तका सर्वही धर्म तौ दार्ष्टान्तविषै होय नाही जो सर्व ही धर्म मिलै तौ दृष्टान्त नाही दार्ष्टान्त ही होय है। तातै यह निश्चय भया जो प्रत्यक्ष अनुमानतै न्यारा ही प्रत्यभिज्ञान वस्तुभूत है जातैं इसकी सामग्री अर स्वरूप दोऊ ही भेदरूप न्यारे ही है। बहुरि यह प्रत्यभिज्ञान अप्रमाण नाही है जातैं इस प्रत्यभिज्ञानतैं अर्थकूं जाणकरि तिस विषैं प्रवर्तनेवालाकै अर्थक्रियामैं विसंवाद नाही है, जैसैं प्रत्यक्षकरि विपयविषैं प्रवर्तनेंवालेकै विसंवाद नाही तैसैं इहा भी

१ तथा चोक्तम्;—

यत्राऽप्यतिशयो दृष्टः स स्वार्थानतिलंघनात्।
दूरसूक्ष्मादिदृष्टौ स्यान्न रूपे श्रोत्रवृत्तितः॥ १॥

नाही। बहुरि इस प्रत्यभिज्ञानका विषय पूर्वोत्तर अवस्थाका एकपणा है ताका लोप कीजिये तौ बंध मोक्ष आदिकी व्यवस्था बहुरि अनुमान प्रमाणकी व्यवस्था न ठहरै जातै एकत्व विना बंध्या सो ही छूट्या ऐसैं न ठहरै, तथा अनुमानका साधन जो लिंग ताका संबंधका ग्रहण एकत्वा विना कैसैं होय. बहुरि या प्रत्यभिज्ञानका विषयविषैं बाधक प्रमाण भी नांही है, जो बाधक होय तौ प्रमाणपणा न मानिये जातै प्रत्यक्षकै अर अनुमानकै तिस प्रत्यभिज्ञानके विषयविषै प्रवृत्ति ही नाही बाधक कैसैं होय, अर प्रवृत्ति होय तो तिसका साधक ही होय बाधक तौ न होय। तहा बहुत कहनेंकरि पूरी पडो, प्रत्यभिज्ञान प्रमाण न्यारा ही है।

बहुरि तैसैं ही बौद्धकी प्रमाणसंख्याका विरोधी बाधारहित तर्क-नामा प्रमाण आवै ही है सो यह तर्कनामा प्रमाण प्रत्यक्षविषैं अन्तर्भूत नाही होय है जातै साध्यक अर साधनकै जो व्याप्यव्यापकभाव है ताका समस्तपणा करि सर्वक्षेत्रकालका ग्रहण तर्कका विषय है, सो प्रत्यक्षका विषय नाही है, यह इन्द्रियप्रत्यक्ष है सो सर्वदेशकालसंबंधी जे व्यापार है तिनिकूं करनेंकूं समर्थ नाही जातैं यह प्रत्यक्ष प्रमाण विचा-ररहित है अर इन्द्रियनिके समीपवर्ती पदार्थ याका विषय है। बहुरि तर्कके विषयकू अनुमान भी ग्रहण करनेंकू समर्थ नाही है जातैं याका भी जिस देश आदिमै तिष्ठता पदार्थ है सो ही विषय है, व्याप्ति सर्व देशकालसंबंधी है सो अनुमानका विषय नाही। बहुरि जो व्याप्तिकू अनुमानका विषय मानैं तौ तहा दोय पक्ष पूछिये,—जो व्याप्तिकूं ग्रहण करैं सो अनुमान तिस व्याप्तिसू सिद्ध भया सो ही है कि अन्य अनु-मान है? जो कहैगा तिसव्याप्तिसू सिद्ध भया सो ही है तौ तहा इतरेतराश्रयनामा दूषण आवैगा जातैं पहले व्याप्तिग्रहण होय तब पीछें

अनुमान सिद्ध होय, बहुरि अनुमान सिद्ध भये पीछैं व्याप्तिग्रहण होय ऐसे दोपतै दोऊकी सिद्धि नाही है । बहुरि कहै जो अन्य अनुमानतै अविनाभावस्वरूप व्याप्ति ग्रहण होय है तौ अनवस्थानामा दूषणरूपी वघेरी तिसपक्षकूं भखि जाय है जातैं अनुमान तौ व्याप्तिके ग्रहण विना होय नाही अरु व्याप्ति अन्य अनुमानकरि ग्रहण होय तौ तिस अनुमानकी व्याप्ति अन्य अनुमानकरि होय ऐसैं कहूं ठहरै नाही तब अनवस्था दूषण आवै । तातैं अनुमानका विपय व्याप्ति नांही सिद्ध होय है।

बहुरि सांख्यमती आदिकरि कल्प्या जो आगम उपमान अर्थापत्ति अभावप्रमाण तिनिकरि भी समस्तपणाकरि अविनाभावस्वरूप व्याप्तिका ग्रहण नाही है जातैं तिनि प्रमाणनिकै अपने अपने विषयका ग्राहकपणा है तातैं व्याप्ति तिनिका विषय नाही । बहुरि सांख्यमती आदि तिनि प्रमाणनिका व्याप्ति विपय मानैं भी नाही है । तहा आगमका विपय तौ वस्तुका संकेतकरि ग्रहण करना है । अर उपमानका विपय सादृश्यभाव है । अर्थापत्तिका विपय अर्थका अन्यथा न होना है, एक वस्तुकी सामर्थ्यतै अन्य अर्थ आय पडै सो अर्थापत्ति है । बहुरि अभावका विषय अभाव ही है । इनिका विपय व्याप्ति नाही ।

इहां बौद्धमती फेरि कहै है;–जो प्रत्यक्षकै पीछै विकल्प होय है–विचार होय है तातैं साध्यसाधनभावका ज्ञान समस्तपणाकरि होय है तातै तिस व्याप्तिके ग्रहणकै अर्थि अन्य प्रमाण नाही हेरना । ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहनेवाला भी युक्तवादी नाही, जातै इहां ताकूं दोय पक्ष पूछिये—जो तिस विकल्पकै प्रत्यक्षकरि ग्रहे विपयका व्यवस्थापकपना है कि प्रत्यक्ष करि ग्रह्या नाही ऐसे विपयका व्यवस्थापकपना है ? जो कहैगा प्रत्यक्षकरि ग्रहे विपयकूं ही थापै है तौ दर्शनस्वरूप प्रत्यक्षकी ज्यों ताकै पीछैं भया निर्णयकै भी नियतविषयपणा ही ठहरया।

व्याप्ति तौ ताका विषय न ठहरैगा। बहुरि कहैगा जो प्रत्यक्षकरि नाही ग्रह्या विषयकू थापै है तौ यामैं भी दोय पक्ष है,—प्रत्यक्षकै पीछै भया विकल्प ज्ञान है सो प्रमाण है कि अप्रमाण है? जो कहैगा प्रमाण है तौ प्रत्यक्ष अनुमान सिवाय तीसरा प्रमाण आया जातै दोऊ प्रमाणमैं याका अन्तर्भाव नाही होय है। बहुरि कहैगा अप्रमाण है तौ तिसतै अनुमानकी व्यवस्था न ठहरैगी जातै व्याप्तिके ज्ञानकू अप्रमाण मानें तिसपूर्वक अनुमान भी प्रमाण न ठहरैगा जातैं सन्दिग्ध आदि जो लिंग तातै उपज्या अनुमानकै प्रमाणताका प्रसग आवैगा। तातै व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क सो विचारसहित विसवादरहित प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान दोय प्रमाणतै न्यारा ही मानना योग्य है। यातै बौद्धकरि मान्या जो प्रमाणके दोयकी सख्याका नियम सो नाही है।

याही कथनकरि अनुपलभ कहिये जाका सद्भाव ग्रहण नाही तिसतैं बहुरि कारणका अर व्यापकका अनुपलभतैं कार्यकारणभाव अर व्याप्य-व्यापकभावका ज्ञान होय है यह ही व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा कहना भी निराकरण किया, जातैं अनुपलभ तौ प्रत्यक्षका विशेष है अर कारण आदिका अनुपलभ है सो लिंग है सो लिंगकरि उपज्या अनुमान है है यातै प्रत्यक्ष अनुमानकरि व्याप्तिग्रहणमैं पहले दोष दिखाये ते ही जानने। इस ही कथनकरि प्रत्यक्षका फल जो ऊहापोह——जो पहले तर्क उपजै जो यह कैसैं है पीछैं ताका निराकरणकरै ऐसा विकल्प-ज्ञान ताकरि व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा वैशेषिकमती माने है ताका भी निराकरण किया जातै प्रत्यक्षका फलकू प्रत्यक्ष अथवा अनुमान कहै तौ ते तौ व्याप्तिकू विषय करै नाही अर तिनितैं अन्य कहै तौ न्यारा प्रमाण ठहरया ही। बहुरि कहै ज़ो व्याप्तिका जाननेरूप विकल्प तौ प्रमाण ठहरै नाही तौ यह कहना भी युक्त नाही जातै फल है तौऊ यातै

अनुमान होय है सो अनुमान याका फल है ताका कारणपणाकी अपेक्षा याकै भी प्रमाणपणां युक्त है यामैं विरोध नाहीं जैसैं इन्द्रियकै अर अर्थकै जुडनेंरूप सन्निकर्ष होय ताका फल जो विशेषणका ज्ञान ताकै विशेष्यका ज्ञानस्वरूप जो फल ताकी अपेक्षाकरि प्रमाणपणा मानिये है तैसैं यहु भी मानना । यातैं वैशेषिककरि मान्या जो ऊहापोह विकल्प ताहीकै प्रमाणान्तरपणां आवै है, प्रमाणपणाकूं उलंघि नांही वर्त्तै है।

याही कथनकरि तीन च्यारि पाच छह प्रमाणकी संख्या कहनेंवाले जे साख्य अर अक्षपाद कहिये नैयायिक अर प्रभाकर जैमिनीय मीमासक ते अपनें अपने प्रमाणकी सख्याके थापनेकू समर्थ नांही हैं ऐसैं कह्या जो न्याय तिसकरि स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क इनि तीन प्रमाणनिकै तिनि सांख्यमती आदिनिकरि माने प्रमाणकी संख्याका विपक्षपणां है, स्मृत्यादि तिनिके प्रमाणकी सख्याकू निराकरण करै हैं ॥ २ ॥

आगैं प्रथम प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके निरूपण करनेकूं सूत्र कहै हैः—

विशदं प्रत्यक्षम् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—विशद कहिये स्पष्ट जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष प्रमाण है । इहां ज्ञानकी तौ अनुवृत्ति करनीं, अर प्रत्यक्ष है सो तौ धर्मी है अर विशद ज्ञानस्वरूप साध्य है अर प्रत्यक्षपणा हेतु करनां । सो ही प्रयोग कहिये है,—प्रत्यक्ष है सो विशद ज्ञानस्वरूप ही है जातैं प्रत्यक्ष है, जो विशद ज्ञानस्वरूप नाही सो प्रत्यक्ष नांही जैसैं परोक्ष, इहा विवादमै आया प्रत्यक्ष है तातैं विशद ज्ञानस्वरूप ही है, ऐसैं अनुमानके पांच अवयवरूप प्रयोग या सूत्रका है । इहां कोई कहै जो यह प्रत्यक्षपणा हेतु किया सो सूत्रमैं तौ एक धर्मीहीका शब्द प्रत्यक्ष ऐसा था तिसहीकूं हेतु किया सो पक्षका वचनरूप जो प्रतिज्ञा ताका अर्थका एकदेशकूं

हेतु किया सो यह हेतु असिद्ध है । ताका समाधान आचार्य कहै है,– जो प्रतिज्ञा कहीं है अर तिसका एकदेश कहा है तव वह कहै जो धर्मका अर धर्मीका समुदाय सो प्रतिज्ञा है ताका एकदेश धर्मी अथवा धर्म है सो तिसमैंसू एक कह्या सो ही प्रतिज्ञाका एकदेश है ऐसा धर्मी हेतु असिद्ध है, ताका समाधान—जो धर्मीकै हेतुपणा कहते असिद्धपणाका अयोग है जातै तिस धर्मीकै पक्षके प्रयोगकालविषैं जैसै असिद्धपणा नाही है तैसै ही हेतुके प्रयोगविषैं भी असिद्धपणा नाही है धर्मी प्रसिद्ध ही कह्या है । बहुरि वह कहै है जो धर्मीकू हेतु कहते अनन्वयनामा दोप आवै है जातैं धर्मी साध्यतैं अन्वयस्वरूप नाही । ताका समाधान–जो ऐसैं नाही है इहा प्रत्यक्ष विशेप तौ धर्मी है अर प्रत्यक्ष सामान्य है सो हेतु किया है सो सामान्य है सो विशेपविषैं अन्वयरूप है ही जातै सामान्य है सो विशेप विना नाही होय है । बहुरि कहै जो साध्य जो धर्मी ताकै हेतुपणा होतै प्रतिज्ञाका एकदेशस्वरूप असिद्ध हेतु होय है कि नाही [1] ताकू कहिये—जो ताकै प्रतिज्ञाका एक देशपणातैं असिद्धपणा नाही है साध्यकै तौ स्वरूप ही करि असिद्धपणा है । जो प्रतिज्ञाका एक देशपणा करि असिद्धपणा कहिये तौ धर्मी भी प्रतिज्ञाका एकदेश है ताकरि व्यभिचार होय है । बहुरि कहै जो इहा धर्मीकू हेतु किया अर व्यतिरेकव्याप्तिरूप व्यतिरेक ही दृष्टान्त कह्या सो सपक्षविषैं याकी वृत्ति नाही तातैं अनन्वय दोप आया, ताका समाधान—जो यह भी असत्य है जातैं बौद्धमती सर्व वस्तुकै क्षणभगका सगम है सो ही स्वरूप है ऐसैं मानै है तहा सत्वकू हेतु करै है कि जो जो सत् है सो सर्व क्षणभंग है सो ऐसा सत्वनामा हेतुकै सपक्ष नाही जातैं सर्व ही पक्षमैं आय गये, सो ऐसे हेतु भी अनन्वयदोषरूप

---

१ क्या ।

भये तव हेतुका उदय नांही होय है। अर कहै ऐसे हेतुकै विपक्षविर्षै बाधकप्रमाणका अभाव है अर पक्षमै व्यापकपणा है तातैं दोप नांही अन्वयवान्‌पणां है तौ हमारा भी हेतु ऐसा ही है, याकै वाकै समानता भई तव दोष काहेका है ॥ ३ ॥

आगै प्रत्यक्ष विशद ज्ञानकूं कह्या सो विशदपणांका स्वरूप कहै है;—

प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जो अन्यप्रतीति बीचिमै न आवै आप ही जानैं अर विपयकू विशेषनिसहितपणाकरि जानै सो विशदपणां है । तहां एक प्रतितितै दूसरी अन्य प्रतीति होय सो प्रतीत्यंतर कहिये तिसकरि जाकै अव्यवधान होय—बीचिमैं अन्यप्रतीति न आवै, तिस अव्यवधानकरि जो प्रतिभासना सो वैशद्य कहिये। इहां जो अवायज्ञानकै अवग्रह ईहा प्रतीतिकरि व्यवधान है, अवायकै पहली अवग्रह ईहाकी प्रतीति होह है तौऊ तिस अवायज्ञानकै परोक्षपणा नाही है जातैं इहा विषय जो पदार्थ अर विपयी जो विषयका जाननेवाला ज्ञान ताके भेदकरि प्रतीति नाही है। जहा विषयविषयीके भेद होतै व्यवधान होय तहां परोक्षपणां होय है। इहां जो अवग्रहका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, ईहाका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, अवायका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है: परंतु ये सारे प्रत्यक्ष ही हैं अर इनिका विषय प्रत्यक्ष ही है, प्रतीत्यन्तर न कहिये। यातै ऐसा नांही जो जो जाका विपय है ताकी प्रतीति पहले अन्यकी प्रतीति बीचिमैं आवै तव होय। बहुरि कोई कहे जो ऐसैं है तौ पहिले अग्निका अनुमान भया होय पीछैं सो ही पुरुप अग्निकूं देखै तव अग्निका देखनाकै परोक्ष-

पणा आवै है ? ताकूं कहिये—जो यह कहना अयुक्त है जातै इहा देखना प्रत्यक्ष है भिन्न विषयपणाका अभाव है तातैं प्रतीत्यन्तर नाही, देखनेतै प्रतीति भई है सो ही प्रत्यक्ष है ऐसैं नाही जो पहिले अनुमान प्रतीति भई तिसतै प्रत्यक्षकी प्रतीति भई। इहा अग्नि वस्तु है ताकूं अनेक प्रमाण करि अपनें अपनें विषयसारू जाननेमैं दोष नाही जातै विसदृश सामग्री करि उपजै जो भिन्न विषयविषै प्रतीति सो प्रतीत्यंतर कहिये है तातैं पहले अनुमानकी प्रतीति भई सो अपने विषयविषै भई अर प्रत्यक्ष प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई इनिकै परस्पर कार्यकारणभाव नाही है। बहुरि विशदपणा केवल एतावन्मात्र ही नाही है यामै विशेषनिसहितपणा करि भी प्रतिभासना है। वस्तुका आकार वर्ण रस गंध स्पर्श आदिके जे विशेष तिनिकरि वस्तुका सर्वस्व देखना सो वैशद्य है ॥ ४ ॥

आगैं सो प्रत्यक्ष दोय प्रकार है एक मुख्य प्रत्यक्ष, दूजा सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष, सो आचार्य दोऊनिकूं मनमै धारि पहले सांव्यवहारिक प्रत्यक्षकी उत्पत्ति करनेवाली सामग्री अर तिसके भेदनिका सूत्र कहैं हैं;—

इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकं ॥ ५ ॥

याका अर्थ—इन्द्रिय अर मन है कारण जाकू ऐसा जो एकदेश विशद ज्ञान सो सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष है। इहा विशद अर ज्ञानकी अनुवृत्ति लेणीं। यातैं देशतै विशद ज्ञान होय सो सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा अर्थ भया। तहा 'स' कहिये समीचीन—भला प्रवृत्तिनिवृत्तिरूप जो व्यवहार सो संव्यवहार है तिसविषै होय सो सांव्यवहारिक कहिये। बहुरि कैसा है ? इन्द्रिय कहिये नेत्र आदिक अर अ-

निन्द्रिय कहिये मन ये दोऊ हैं निमित्त कहिये कारण जाकूं। सो इन्द्रिय मन समस्त भी कारण हैं अर व्यस्त कहिये न्यारे न्यारे भी कारण हैं। तहां इन्द्रियनिके प्रधानपणातैं मनके सहायतैं उपजै सो तौ इन्द्रिय प्रत्यक्ष है, बहुरि कर्मके क्षयोपशमतैं विशुद्धि होय ताकी अपेक्षासहित जो मन तिसहीतैं उपजै सो अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष है। तहां इन्द्रिय प्रत्यक्ष है सो अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणाभेदतैं च्यार प्रकार है सो भी बहु, अबहु, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, अनिसृत, निसृत, अनुक्त, उक्त, ध्रुव, अध्रुव, इनि बारह विषयनिके भेदनिकरि अड़ताळीस भेद होय हैं, ते पांचूं इन्द्रिय प्रति होय हैं सो दोयसै चालीस होय। ऐसैं ही मनके प्रत्यक्षके अड़ताळीस मिलाये दोयसै अठ्यासी भेद होय हैं, सो ये तौ अर्थकी अपेक्षा भये। बहुरि व्यंजन विषयका अवग्रह ही होय है सो मन अर नेत्र द्वारै नांही होय तातैं च्यार इन्द्रियनिकै द्वारै बहु आदि बारह विषयका अवग्रह होय ताके अड़ताळीस भेद होय। सर्व भेळे किये इन्द्रिय अनिन्द्रिय प्रत्यक्षके तीनसै छत्तीस भेद होय हैं।

इहां प्रश्न—जो स्वसंवेदननाम प्रत्यक्ष अन्य है सो क्यों न कह्या? ताका समाधान—ऐसैं न कहनां जातैं सो संवेदन सुख ज्ञान आदिका अनुभवनस्वरूप है सो मानसप्रत्यक्षमैं आय गया अर इन्द्रियज्ञानका स्वरूपका संवेदन सो इन्द्रियप्रत्यक्षमैं आय गया। जो ऐसैं न मानिये तौ तिस ज्ञानकै अपनें स्वरूपका निश्चय करनेंका अयोग आवै है। बहुरि स्मरण आदिका स्वरूपका संवेदन है सो मानसप्रत्यक्ष ही है अन्य नांही है सो स्वसंवेदन प्रत्यक्ष कहिये ही है, परन्तु जुदा भेद नांही ॥५॥

आगैं नैयायिक कहै है—जो प्रत्यक्षका उत्पादक कारण कहता जो ग्रंथकार इन्द्रियादिककूं कारण कहे तैसैं ही अर्थ अर आलोककूं कारण

क्यों नाही कहे। अर्थ कहिये वस्तु ताकरि भी ज्ञान उपजै है अर आलोक कहिये प्रकाशकरि भी ज्ञान उपजै है इनिकूं विना कहे कारणनिका सकलपणाका संग्रह न भया तब शिष्यजनकै भ्रम ही रहेगा जातैं कारण एते हैं ऐसा निश्चय न होयगा। जो परम करुणावान भगवान हैं तिनकै शिष्यजनकै भ्रम होय ऐसी चेष्टा न होय है ऐसी आशंका नैयायिककी दूरि करनेंकूं सूत्र कहैं हैं,—

नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अर्थ कहिये वस्तु अर आलोक कहिये प्रकाश ये दोऊ ही सांव्यवहारिक प्रत्यक्षकूं कारण नाही हैं जातैं ये परिच्छेद्य कहिये जानने योग्य ज्ञेय हैं। जैसे अंधकार ज्ञेय है तैसैं ही ये हैं। याका अर्थ सुगम है तातैं टीकाकार टीका न करी है।

इहां बौद्धमती तर्क करै है—जो बाह्य आलोकका अभाव सो ही अंधकार है इसतैं न्यारा किछू अन्धकार वस्तु है नाही तातैं सूत्रमैं अन्धकारका दृष्टान्त साधनविकल है—यामैं साधन नाही? ताकूं आचार्य कहैं हैं;—जो ऐसैं नाही है जो ऐसैं होय तौ बाह्यप्रकाशकूं भी ऐसैं कहिये, जो अंधकारका अभाव सो ही प्रकाश, इस सिवाय अन्य किछू वस्तु नाही। ऐसैं तौ तेजवान पदार्थ हैं तिनिका असंभव आवै है। सो याका विस्तारकरि निरूपण प्रमेयकमलमार्तण्ड याकी बड़ी टीका ताका नाम याका अलंकार है तामैं प्रतिपादन किया है सो जानना॥६॥

आगैं इस सूत्रके साध्यकूं साधनेंविषैं अन्यहेतु कहै है,—

तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तञ्चरज्ञानवच्च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—अर्थ अर आलोककै सांव्यवहारिकप्रत्यक्षके कारणपणाका अन्वय-व्यतिरेकका अनुविधानका अभाव है। ऐसा नियम नाही

जो अर्थ आलोक होतैं तौ ज्ञान उपजै अर नांही होतैं न उपजै जैसैं केशनिका गुच्छाका ज्ञान होय है। काहूकै मांछरनिका समूह मस्तकपरि उडै था सो काहूकूं केशनिका झूमका दीख्या ऐसैं तौ अर्थ ज्ञानका कारण नाही है अर अंधकारमैं विलाव आदिकूं दीखै है तातैं प्रकाश ज्ञानका कारण नांही। इहा कारणकार्यकै व्याप्तिका प्रयोग करै है—जो जाकै अन्वय-व्यतिरेकका जोड़ न करै सो तिसका कार्य नांही जैसैं केशनिका झूमकाका ज्ञान, सो ज्ञान अर्थका अन्वय-व्यतिरेकपणा नांही करै है अर्थ तौ मांछरनिका समूह था अर ज्ञान केशनिका झूमकाका भया। तैसैं ही आलोक जो प्रकाश है, तहां यह विशेष है जो नक्तंचरका दृष्टान्त है ते नक्तंचर विलाव आदि हैं तिनिकूं अंधारेमैं दीखै है जो प्रकाश ही ज्ञानका कारण होय तौ तिनिकूं अंधकारमैं ज्ञान कैसै होय ॥ ७ ॥

इहा बौद्धमती तर्क करै है;—जो विज्ञान है सो अर्थ करि उपजै अर्थकै आकार होय सो अर्थका ग्राहक होय, ज्ञानकी अर्थतैं उत्पत्ति न मानिये तौ विषय प्रति नियमका अयोग ठहरै—घटके ज्ञानका घट ही विषय ऐसा नियम न ठहरै। बहुरि अर्थतैं उपजना है सो आलोक जो प्रकाश तामैं अविशिष्ट है तातैं 'ताद्रूप्य' कहिये तदाकार होनां, तिससहित ही जो 'तदुत्पत्ति' कहिये अर्थतैं ज्ञानका उपजनां ताकै विषय प्रति नियमरूप हेतुपणा है। ज्ञान ज्ञेयका भिन्न काल है तौऊ ग्राह्य ग्राहकभावका अविरोध है, तैसैं ही हमारै कह्या है, इहां श्लोक है[1] ताका अर्थ—कोई पूछै जो जाका भिन्नकाल होय सो ग्राह्य कैसैं होय तौ ताकूं कहै है—जे युक्तिके जाननेवाले हैं ते ऐसैं कहैं हैं—

१ तथा चोक्तम्—

भिन्नकालं कथं ग्राह्यमिति चेद् ग्राह्यतां विदुः।
हेतुत्वमेव युक्तिज्ञास्तदाकारार्पणक्षमम् ॥ १ ॥

यह जो हेतुपणा है—अर्थकै ज्ञानकी उत्पत्तिका कारणपणा है सो ही ग्राह्यपणा है, कैसा है यह हेतुपणा? अर्थके आकारकू ज्ञानमें अर्पण करनेविषै समर्थ है। भावार्थ—जो अर्थकै ज्ञानका उपजावणापणा है सो ही तिस अर्थके आकार होना ज्ञानकै करै है ऐसी बौद्धकै आशका होतैं सूत्र कहै हैं,—

अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो ज्ञान अर्थकरि न उपजै है तौऊ अर्थका प्रकाशक है जैसैं दीपक घट आदि अर्थतैं उपज्या नाही तौऊ तिनिका प्रकाशक है तैसैं जानना। तहां अर्थकरि जन्य नाही है तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा अर्थ भया सो इहां 'अतजन्य' ऐसा शब्द है सो उपलक्षणरूप है ताकरि अतदाकार कहिये अर्थाकार न होय तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा भी ग्रहण करना। बहुरि दोऊ ही अर्थमैं प्रदीपका दृष्टान्त है जैसैं दीपककै घटादिककरि जन्यपणा नाही तथा तिनिकै आकारपणा होय नांही तौऊ तिनिकूं प्रकाशै है तैसैं ज्ञानकै भी है ऐसा अर्थ भया ॥ ८ ॥

इहां बौद्ध कहै है—जो अर्थतैं तौ उपज्या नाही अर अर्थकै आकर न भया ऐसे ज्ञानकै अर्थका साक्षात्कारीपणा कहोगे तौ नियमरूप दिशा देश कालवर्त्ती जे पदार्थ तिनिका प्रकाश प्रति नियमका अभाव होनेंतै सर्व ही विज्ञान अप्रतिनियत विषय कहिये न्यारे न्यारे नियमरूप विषय जाका होय ऐसा न ठहरैगा ऐसी बौद्धकी आशका होतैं सूत्र कहै है,—

स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अपना आवरण जो ज्ञानावरण वीर्यान्तराय कर्म ताका क्षयोपशम सो है लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता ताकरि प्रति-

नियत जो जो जिस ज्ञानका अर्थ होय सो ही विषय ताकू व्यवस्थापै है। तहा अपना आवरण तिनिका क्षय कहिये उदयका अभाव वहुरि तिनिहीका सत्ता अवस्थारूप उपशम ये दोऊ है लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता सो यह तौ कारणरूप है ताकरि प्रतिनियत जो अर्थ ताहि स्थापन करै है—अपना विषय करै है सो ज्ञान प्रत्यक्षप्रमाण है ऐसा सूत्रमैं वाक्य शेप है। वहुरि 'हि' शब्द है सो 'यस्मात्' अर्थमै है तातैं ऐसा अर्थ भया जो जातै ऐसैं है तातैं वौद्ध आशका करी थी जो प्रतिनियत अर्थकी व्यवस्था न होगी सो ऐसा दोप नाही है। इहा यह तात्पर्य है जो ताद्रूप्य कहिये तदाकारपणा अर तदुत्पत्ति कहिये तिसतै उपजना अर तदध्यवसाय कहिये तिस स्वरूप अर्थका निश्चय ये तीनू कल्पिकरि भी योग्यता अवश्य मानने योग्य है, इस विना तीनूं ही व्यभिचारसहित हैं। सो ही दिखाइए है;—ताद्रूप्यकै समान अर्थकरि व्यभिचार है जो ज्ञान तदाकारपणातैं उपजै सो जिस पदार्थतै उपजै तिस समान अन्यपदार्थकू तिसकाल क्यो जानै नाही सो पदार्थ भी तौ तिसही आकार है, यह ही व्यभिचार। वहुरि तदुत्पत्तिकै इन्द्रियआदिकरि व्यभिचार है, इन्द्रियतै उपजै है अर इन्द्रियनिकू तिसकाल क्यो नाही जानै, यह ही व्यभिचार। वहुरि तिनि दोऊनिकै भी समान अर्थ समनंतर प्रत्ययनिकरि व्यभिचार है, पहिले क्षण जैसै नीलका ज्ञान भया सो दूसरे क्षण सो ज्ञान तिस नील ज्ञानका उपजावनहारा है अर तिसतैं तदाकार भी है अर पहले क्षणका ज्ञानकू क्यो जानै नांही यह ही व्यभिचार। वहुरि ताद्रूप्य तदुत्पत्ति, तदध्यवसाय, इनि तीनूंनिकै धोला शखकै विपैं पीलेका ज्ञान होय तहा व्यभिचार है, काहूके नेत्रविपैं कामला रोग था ताकूं धोला शख पीला दीख्या तहा धोला आकारकरि पीला आकारका ज्ञान उपज्या। वहुरि जो तदाकार ज्ञान अर

तिसका निश्चय भया सो ऐसा ज्ञानकरि दूजे क्षण तैसा ही ज्ञान उपज्या सो तदाकार भी है तिसका निश्चयस्वरूप भी है; अर पहले क्षणका पीताकारज्ञानकूं क्यो नाही जानै, यह ही व्यभिचार। ऐसै च्यारू ही प्रकार यह व्यभिचार भया, तातैं क्षयोपशमलक्षणयोग्यता मानना श्रेष्ठ है। इस ही कथनकरि जो बौद्धनें ऐसै कह्या ताका श्लोक है ताका अर्थ—प्रत्यक्ष ज्ञान निर्विकल्प है ताहि अर्थ रूपता विना अन्य कोई अर्थ करि नाही रचै, अर्थरूपता ही प्रत्यक्षरूप निर्विकल्प ज्ञानकूं अर्थकरि जोडै है तातैं प्रमेयका जानना प्रमाणका फल है प्रमेयरूप होना सो ही ताका प्रमाण है, ऐसै कहना निराकरण किया जातै समान अर्थनिके आकार भये जे अनेक ज्ञान तिनिविषैं प्रमेयरूप होनेका सद्भाव है। बहुरि बौद्धमती यहु सारूप्य मानै है सो समानपरिणामरूप समान्य ही सारूप्य है सो सामान्यकूं वस्तुभूत नाहीं मानै है सो अवस्तुभूत होय सो काहेका सारूप्य? तातै यह ही ठहरै है जो क्षयोपशमलक्षण योग्यता है सो ही विषय प्रति नियमका कारण है॥ ९॥

आगै कोई ऐसा मानै है—जो अर्थ है सो ज्ञानका कारण है याहीतैं अर्थ ज्ञेयरूप कहिये है ऐसा मतकूं निराकरण करै है ताका सूत्र;—

कारणस्य च परिच्छेद्यत्वे करणादिना व्यभिचारः १०॥

याका अर्थ—जो कारणकै परिच्छेद्यत्व कहिये ज्ञेयपणा मानिये तौ नेत्रादि करण है तिनिकरि व्यभिचार होय है, ते कारण तौ हैं अर परिच्छेद्य नाही है आपकूं आप नाहीं जानै है। इहा वह कहै जो हम कारणपणातैं परिच्छेद्यपणा नाही कहैं हैं परिच्छेद्यपणातैं कारणपणा कहै

---

१ एतेन यदुक्त—

अर्थेन घटयत्येनां न हि मुक्त्वार्थरूपताम्।
तस्मात्प्रमेयाधिगतेः प्रमाणं मेयरूपता॥ १॥

हैं जो ज्ञेय होय सो कारण होय तौ ऐसैं कहे केशनिका झूमका आदिकरि व्यभिचार होय है सो पूर्वैं कह्या ही था काहूके मस्तक परि मांछर उडैं थे सो काहूकूं केशनिका झूमका दीख्या सो ते मांछर ज्ञानके कारण न भये ॥ १० ॥

आगैं अब अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष जो मुख्य प्रत्यक्ष ताहि कहै हैं;—

सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियमशेषतो मुख्यम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—सामग्री जो द्रव्य–क्षेत्र–काल–भावलक्षण ताका विशेष जो सर्वकी पूर्णता–एकता मिलना ताकरि दूरि भये हैं अखिल कहिये समस्त आवरण जाके ऐसा, बहुरि अतीन्द्रिय कहिये इन्द्रियनिकूं उलंघि वर्त्तैं, बहुरि अशेषतः कहिये समस्तपणांकरि विशद कहिये स्पष्ट ऐसा ज्ञान मुख्य प्रत्यक्ष है ॥ ११ ॥

इहां कोई पूछे समस्तपणाकरि विशदपणांविषैं कहा कारण है ? ताकूं कहिये—ज्ञानका प्रतिबंध जो कर्म ताका अभाव कारण है हम ऐसैं कहैं हैं। फेरि पूछे तहां भी कहा कारण है ? ताकूं कहिये अतीन्द्रियपणां है अर अनावरणपणा है ऐसैं कहैं हैं फेरि पूछे यह भी काहेतैं है ? ताका समाधानकूं सूत्र कहै है;—

सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबंधसंभवात् ॥१२॥

याका अर्थ—जो ज्ञानकै आवरणसहितपणां होय अर इंद्रियजन्यपणा होय तौ प्रतिबंध संभवै तातैं निरावरण अतीन्द्रिय होय सो ही मुख्य प्रत्यक्ष है। इहा कोई कहै कि अवधि मनःपर्यय ज्ञानका इस सूत्रकरि ग्रहण न भया तातैं यहु लक्षण अव्यापक है ? ताकूं आचार्य कहै है—ऐसैं न कहना तिनि दोऊनिकै भी अपने विषयविषैं समस्तपणांकरि विशदपणां आदि धर्म संभवै है। बहुरि ऐसैं मति–श्रुतज्ञानकै

अपने विषयविषैं भी विशदपणा नाही है ऐसैं अतिव्याप्ति दूषणका भी परिहार है सो यह अतीन्द्रिय अवधि, मनःपर्यय, केवलके भेदतै तीन प्रकार मुख्य प्रत्यक्ष है जातैं ये आत्माके सनिधिमात्रकी अपेक्षातैं उपजै हैं; अन्य इन्द्रिय आदिकी अपेक्षा इनिकै नाही है ।

इहा मीमासकमती भट्टमताका आशय ले कहै है,—जो समस्त विषयविषै विशदका अवभासनेवाला ज्ञानकै अर तिस ज्ञानसहित पुरुषकै प्रत्यक्ष आदि पाच प्रमाणका विषयपणाका अभावपणाकरि अभाव प्रमाण सो ही भया विषमसर्प ताकरि नष्ट भई है सत्ता जाकी तिसपणातैं कौनकै मुख्य प्रत्यक्ष होय है। भावार्थ—सर्वका जाननेंवाला ज्ञान अर सर्वज्ञ ये पाचू ही प्रमाणका विषय नाही—अभाव प्रमाणका विषय है तातैं अभाव ही सिद्ध होय है । सो ही कहै है,—प्रथम तौ प्रत्यक्ष प्रमाण है ताका सर्वज्ञ विषय नाही, जातै प्रत्यक्षकै तौ रूपादिक नियमरूप जे विषय तिनिविषैं प्रवर्त्तनपणा है इन्द्रिय प्रत्यक्ष जो विषय सबधरूप होय अर वर्त्तमान होय ताही विषय (विषैं) प्रवर्त्तै है सो समस्तका ज्ञाता सर्वज्ञ इन्द्रियनितैं सबद्ध नाही वर्त्तमान नाही । बहुरि अनुमानतैं भी ताकी सिद्धि नाही है, जातैं ग्रहण किया है संबंध जानैं ऐसा पुरुषकै वस्तुका एकदेश देखनेंतै दूरववर्त्ती वस्तुविषैं बुद्धि होय है सो सर्वज्ञका सद्भावतैं अविनाभावी कार्यलिंग तथा स्वभावलिंग हम नाही देखे हैं जातैं अनुमान करैं, जातैं सर्वज्ञके जानें पहली तिसका स्वभाव अर तिसका कार्य जो तिसके सद्भावतैं अविनाभावीका निश्चय करनेंका असमर्थपणा है । बहुरि आगमप्रमाणकरि भी ताकी सिद्धि नाही है । इहा दोय पक्ष—आगम नित्यरूप तिसके सद्भावकू जनावै है कि अनित्य आगम जनावै है ? तहा नित्य आगम तौ ताका सद्भाव नाही जनावै है जातैं नित्य तौ अर्थवादरूप है प्रयोजनमात्रकू कहै है।

अपौरुषेय वेद है सो कर्मविशेष जो यज्ञ आदि शुभकार्य ताका संस्तवन कहिये प्रशसादिक ताकै विषै प्रवीण है सो पुरुषविशेषका जनावनहारा नाहीं। पुरुष तौ आदि लिये है अर नित्य आगम वेद है सो अनादि है सो अनादिकै आदिमान पुरुषका कहना वर्णै नाहीं। बहुरि जो अनित्य आगम स्मृति पुराण आदि है ते सर्वज्ञकू साधै है ऐसैं कहिये तौ तिस अनित्य आगमकै (कू) भी सो सर्वज्ञका कह्या कहिये तौ सर्वज्ञका निश्चय पहिले किया विना ताका प्रमाणपणांका निश्चय नांही होय है, बहुरि इतरेतराश्रयनामा दोष आवै है, सर्वज्ञके कहे पणेंतैं तौ तिस आगमका प्रमाणपणां सिद्ध होय अर तिस आगमका प्रमाणपणांकी सिद्धितै सर्वज्ञकी सिद्धि होय ऐसै इतरेतराश्रयदोष होय। बहुरि असर्वज्ञका कह्या आगमका प्रमाणपणा ही नांही ताकै सर्वज्ञका प्ररूपणविषै प्रवीणपणां है ऐसा कहना ही अतिशयकरि असभाव्य है। बहुरि सर्वज्ञसमान अन्यका ग्रहणका असभवतैं उपमान प्रमाण ताका सद्भाव नाही जनावै है। बहुरि अर्थापत्तिप्रमाण है सो भी सर्वज्ञका जनावनेवाला नाही है जातैं याका अनन्यथाभूत वस्तुतैं जानना है, सो कोई ऐसा वस्तु नाही जो सर्वज्ञविना न होय ताकरि अर्थापत्ति सर्वज्ञकूं जनावै। बहुरि जो धर्मादिकपदार्थ है तिनिका उपदेश है ताकरि अर्थापत्ति होय ऐसै कहिये तौ धर्म आदिका उपदेश तौ व्यामोहतैं भी सभवै है, जातैं उपदेश दोय प्रकार है सम्यक् उपदेश, मिथ्या उपदेश। तहा मनु आदि ऋषि भये हैं तिनिका तौ सम्यक् उपदेश है जातै तिनिकै यथार्थज्ञानका उदय है सो वेदमूल है—वेदतैं उपज्या है। बहुरि बुद्ध आदिका उपदेश है सो व्यामोहपूर्वक है जातै तिनिकै ज्ञान वेदतै उपज्या नाही ते—वेदार्थके जाननेवाले नांही। तातैं सर्वज्ञ पांचू ही प्रमाणका विषय नांही, तहा अभाव प्रमाणहीकी प्रवृत्ति है ताकरि सर्वज्ञका अभाव ही जानिये

है। पाच प्रमाणका तौ व्यापार भावके अशविषैं ही होय है ऐसैं भट्टमती अपनें मतका समर्थन कीया।

अब आचार्य ताका प्रतिविधान करै है,—प्रथम तौ कह्या जो सर्वज्ञकै प्रत्यक्षादिक प्रमाणका अविपयपणा है सो अयुक्त है जातैं तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमान प्रमाणका सभव है, सो ही कहै है,—कोई पुरुप सकल पदार्थका साक्षात् करनेंवाला है जातैं तिनि पदार्थनिके ग्रहण करनेंका स्वभावपणाके होतै सतैं प्रक्षीणप्रतिबधप्रत्ययपणा है, भावार्थ—सूक्ष्म आदि पदार्थनिकू ग्रहण करनेका पुरुपका स्वभाव है सो ज्ञानका प्रतिवधक कर्मके नाश भये ज्ञान प्रकट होय है। जो जिसका ग्रहणस्वभावपणाकू होतै प्रक्षीणप्रतिबधप्रत्यय होय सो तिसका साक्षात् करनेवाला होय जैसै जाका तिमिर दूरि भया ऐसा नेत्र सो रूपका साक्षात् करनेंवाला होय, सो इहा तिसके ग्रहणरूप स्वभावपणाके होतै प्रक्षीणप्रतिबंधप्रत्ययस्वरूप विवादमै आया कोई पुरुप है। ऐसैं च्यार प्रयोगका अनुमानकरि सर्वज्ञका सद्भाव मीमासककू आचार्यनैं बताया। बहुरि सकल पदार्थनिका ग्रहणस्वभावपणा कह्या सो आत्माकै असिद्ध नाही है जातै आत्माका ऐसा स्वभाव न मानिये तौ वेदतैं सकलपदार्थका ज्ञान होय ऐसे कहनेका अयोग आवै है, जैसैं आधे पुरुपकै आरसेसूं रूपकी प्रतीतिका अयोग होय तैसैं। बहुरि व्याप्तिज्ञानकी उत्पत्तिके बलतैं समस्तपदार्थसबधी परोक्षज्ञानका सभव मानिये ही है, इहा केवल एक ज्ञानकै विशदपणा जो स्पष्टपणा—प्रत्यक्षपणा ताही विपैं विवाद है। तहा आवरणाका दूर होना ही कारण है, जैसै धूलितैं आवरण तथा बरफका आवरण कोई पदार्थकै होय सो आवरण दूर होय तब पदार्थ स्पष्ट दीखै तैसै ज्ञानकै कर्मका आवरण दूर होय तब ज्ञान स्पष्ट प्रगटै है। बहुरि पूछै है—जो प्रक्षीणप्रतिब-

घप्रत्ययपणा कैसैं है ? ताका समाधानकूं प्रयोग करै है;—दोप अर आवरण कोई पुरुप विषैं मूलतैं नाश होय है जातैं इनकी हानि बधती बधती देखिये है सो जाकी बधती हानि है सो कोई विषैं मूलतैं समस्त भी नाश होय है, जैसैं अग्निके पुटका पाकतैं दूर भये हैं कीट अर कालिमा आदि अतरग बहिरग दोऊ मल जाकै ऐसैं सुवर्ण शुद्ध होय है तैसैं ही बधती बधती हानिरूप दोप अर आवरण हैं, ऐसा प्रयोग जानना। बहुरि विवादमैं आया जो ज्ञान ताकै आवरण कैसैं सिद्ध है जातै प्रतिपेध है सो विधिपूर्वक है ? इहां कहिये है—विवादमै आया जो ज्ञान सो आवरणसहित है जातै अपने विपयकूं अविशदपणाकरि जनावनहारा है जैसैं रज करि तथा धूम बरफ आदि करि पदार्थ अंतरित होय है आच्छादित होय है तैसै है। बहुरि कोई कहै आत्मा तौ अमूर्तीक है सो अमूर्तपणातैं आवरणका अयोग्य है ? सो ऐसैं नाही है, चैतन्यकी शक्ति अमूर्तीक है तौऊ मदिरा तथा मांचणा कोदूं आदि करि याकै आवरण होय है। कोई कहै मदिरादिकरि तौ इन्द्रियकै आवरण है तौ ऐसैं भी नाही है जातैं इन्द्रिय तौ अचेतन है सो आवरण भये भी अनावरणा समान ही है बहुरि स्मरण आदिका प्रतिबंधका अयोग होय, मतवालाकै स्मरण नाही है जो इंद्रियहीकै आवरण होय तौ मदोन्मत्तकै स्मरण कैसैं न होय। बहुरि मनकै भी आवरण न कहिये जातैं आत्मा विना अन्य मनका निषेध आगैं करैंगे तातैं अमूर्तिककै आवरणका अभाव नाही है। तातैं तद्ग्रहण स्वभावपणा होतैं प्रक्षीणप्रतिबंध प्रत्ययपणा हेतु है सो असिद्ध नाही है। बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है जातै विपरीत जो विपक्ष आत्माकै सूक्ष्मादिग्रहण स्वभावका अभाव ताविपैं निश्चयस्वरूप जो अविनाभाव ताका अभाव है। बहुरि यहु हेतु अनैकान्तिक भी नाही है जातै एकदेशकरि तथा साम-

स्यकरि विपक्षकै विपै वृत्तिका अभाव है। बहुरि कालात्ययापदिष्ट भी नाही है जातैं यातैं विपरीत अर्थका स्थापनेवाला प्रत्यक्षप्रमाण तथा आगमप्रमाणका अभाव है। बहुरि सत्प्रतिपक्ष भी यह हैतु नाही है जातैं इसका प्रतिपक्षसाधनेका हेतुका अभाव है।

इहा मीमासक कहै है—जो याका प्रतिपक्षका साधनका अनुमान यह है ताका प्रयोग—विवादमै आया जो पुरुष सो सर्वज्ञ नाही है जातै वक्ता है, पुरुष है, हास्तदिकसहित है ऐसै तीन हेतुतै पुरुष सर्वज्ञ नाही जैसै हरेक गैलै चालता पुरुष सर्वज्ञ नाही तैसैं? ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहना सुन्दर नाही जातैं वक्तापणा आदि तीन हेतु कहे ते समीचीन भले हेतु नाही। इहा तीन पक्ष पूछिये, जो वक्तापणा कह्या सो प्रत्यक्ष—अनुमानतैं विरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि अविरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि वक्तपणा सामान्य कह्या? इनि तीन सिवाय चौथी गति नाही है। तहा प्रथमपक्ष तौ न बणै हैं याकै तौ सिद्धसाध्यपणाका प्रसग है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै सो सर्वज्ञ काहेका? बहुरि दूसरा पक्ष कह्या सो यह विरुद्ध है जातै प्रत्यक्ष अनुमानतै विरुद्ध अर्थ कहै सो ऐसा वक्तापणा तौ ज्ञानके अतिशयविना न बणै जामै ज्ञान बहुत होय सो ही वक्ता सत्यवादी होय। बहुरि वक्तापणा सामान्य है सो भी विपक्षतैं अविरुद्ध है। तातैं प्रकरणगोचर जो साध्य असर्वज्ञपणा ताकू साधनेविषै समर्थ नाही। ज्ञानकी बधवारी होतै वक्तापणाकी हानि दीखै नाही, उलटा ज्ञानकी बधवारीवालाकै वचनकी प्रवृत्तिकी बधवारीका सभव है। इस ही कथनकरि पुरुषपणा हेतु भी निराकरण किया। पुरुषपणा होतै जो रागादिदोषदूषित होय तौ सिद्ध साध्यता ही है ताकै सर्वज्ञपणाका अभाव सिद्ध ही है अर रागादि दोषकरि दूषित नाही होय तौ हेतु विरुद्ध है, वीतराग विज्ञान आदि गुणनिकरि युक्त

पुरुषपणाका सर्वज्ञ विना अयोग है। बहुरि पुरुषपणा सामान्य है सो सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिक है असर्वज्ञपणाका विपक्ष सर्वज्ञपणा सो कोई पुरुषमैं होय भी तातैं विपक्षतै व्यावृत्ति संदेहरूप है। ऐसैं सकल पदार्थका साक्षात्कारीपणा कोई पुरुषकै सिद्ध होय है इस अनुमानतैं यातैं पाच प्रमाणका विषय सर्वज्ञ नाही ऐसैं कहना अयुक्त है।

बहुरि असर्वज्ञवादी कहै है—जो इस अनुमानविषै सामान्य सर्वज्ञपणा सिद्ध भया सो यह सर्वज्ञपणा अरहंतकै है कि अन्यकै है? जो कहोगे अन्य जे बुद्ध आदि तिनिकै है तौ अरहंतके वाक्य अप्रमाण ठहरैंगे। बहुरि कहोगे अरहंतकै है तौ आगम करि सामर्थ्यकरि अथवा स्वशक्ति कहिये अविनाभावी लिंगपणा ताकरि अथवा ताका दृष्टान्तका अनुग्रह करि तिस हेतुतै अरहतकौ सर्वज्ञ जाननेका असमर्थपणा है जातैं हेतुकै अन्यपक्ष जो बुद्धादिक तिनिविषै भी समानवृत्ति है, जैसै हेतुतै अरहतकै साधिये तैसैं ही बुद्ध आदिकै भी सिद्ध होयगा। ऐसैं असर्वज्ञवादी मीमासक आदिक कहैं। सो यह कहना भी तिनिकै अपने घातकै अर्थि कृत्य कहिये करतूति तथा शस्त्रविशेष तथा मारीका उठावना है जातै ऐसैं पूछना है सो तौ सर्वज्ञसामान्यका माननेंपूर्वक है। सो सर्वज्ञ सामान्य मान्या तब अपनी पक्षका घात भया। अर जो सर्वज्ञसामान्य न मानिये तौ काहूहीकै सर्वज्ञपणां नाही है ऐसैं ही कहना। बहुरि प्रसिद्ध अनुमानविषै भी इस दोषका सभवकरि जातिनामा दूषणरूप उत्तर होय है, सो ही कहिये है;—जैसैं काहूनै अनुमान किया जो शब्द नित्य है जातैं प्रत्यभिज्ञानकरि जान्या जाय है, ऐसैं कहनेंतैं जातिवादी कहै है—शब्दकू व्यापकरूप नित्य साधिये है कि अव्यापकरूप नित्य साधिये है? जो अव्यापकरूप नित्य साधिये है तौ व्यापकपणा करि मान्या जो शब्द सो किछू भी अर्थकू पुष्ट नांही करै है

व्यापक माननां निरर्थक ठहरया, मीमासक शब्दकू व्यापक मानै है। बहुरि व्यापकरूप शब्द नित्य साधिये तौ आगमकरि अथवा सामर्थ्यकरि अथवा अपनी शक्तिकरि तथा दृष्टान्तके अनुग्रहकरि व्यापकपणा नाही निश्चय होय है जातैं अव्यापक नित्यपक्षविषै भी याकी समानवृत्ति है, तातैं जाति—उत्तर होय है। दोऊ पक्षविषै प्रश्न उत्तर समान होय जाय तहा जातिनामा दूषण होय है। ऐसैं पूर्व सर्वज्ञका साधनरूप हेतु कह्या सो निर्दोष है तातैं सर्वज्ञ सिद्ध होय है। बहुरि जो अभावप्रमाणकरि सर्वज्ञकी सत्ता ग्रासीभूत करी कही सो भी अयुक्त है—तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमानप्रमाणका सद्भाव होतै पाच प्रमाणका अभाव है मूल जाका ऐसा जो अभाव प्रमाण ताकी उत्पत्तिकी सामग्रीका अयोग है जातैं हे मीमांसक! तेरे ही मतमै ऐसा कह्या है ताका श्लोक है, ताका अर्थ—वस्तुका सद्भावकू ग्रहण करि बहुरि ताका प्रतियोगीकूं यादि करि इन्द्रियनिकी अपेक्षारहित मनसंबंधी नास्तिताका ज्ञान उपजै है अन्यप्रकार नाही उपजै है। ऐसैं होतै तीनकाल तीन लोकस्वरूप जो वस्तु ताका सद्भावका ग्रहणविषै कोई काल कोई क्षेत्रविषै ग्रहण किया जो सर्वज्ञ ताका स्मरण होतै कोई क्षेत्र कालविषै ताकी नास्तिताका ज्ञानरूप अभावप्रमाण युक्त होय है, अन्यप्रकार नाही है। सो कोई छद्मस्थ असर्वज्ञजनकै तीन जगत तीनकालका ज्ञान नाही बणै है तातैं सर्वज्ञ अतीन्द्रियका ज्ञान न होय है, यह सर्वज्ञपणां चैतन्यका धर्म है तातैं अतीन्द्रिय है सो भी असर्वज्ञ जनका विषय नाही ऐसैं होतैं अभावप्रमाण कैसैं उदयकू प्राप्त होय। असर्वज्ञ पुरुषकै तिस सर्वज्ञके अभावकी उपजावनेंकी सामग्रीका संभवका अभाव है। बहुरि

---

१ गृहीत्वा वस्तुसद्भावं स्मृत्वा च प्रतियोगिनम्।
मानसं नास्तिताज्ञानं जायतेऽक्षानपेक्षया ॥१॥

जो असर्वज्ञकै सर्वकाल सर्वक्षेत्रका ज्ञान मानि सर्वज्ञके अभावका उपजनेंकी सामग्री मानिये तौ ऐसैं जाननेंवालाहीकै सर्वज्ञपणा ठहरया। बहुरि कहै—जो इस क्षेत्र कालमै सर्वज्ञका अभाव साधिये है तौ युक्त नांही यामैं सिद्धसाध्यपणाका प्रसग आवै है कोई क्षेत्र कालकी अपेक्षा सर्वज्ञका अभाव सिद्ध ही है, सिद्धकू कहा साधिये। तातैं मुख्य अतीन्द्रियज्ञान समस्तपणाकरि विशद ऐसा सिद्ध भया।

बहुरि सर्वज्ञका ज्ञान अतीन्द्रिय है तातै अपवित्रका देखना तिसका रसका आस्वादन करनां ऐसा दोप भी निराकरण भया, अशुच्यादिकका देखनां रसका आस्वाद करना दोप तौ इन्द्रियज्ञान अपेक्षा कह्या है, वीतरागकै यह दोप नाही।

बहुरि पूछै है—जो अतीन्द्रियज्ञानकै विशदपणा कैसैं है; हम तौ नेत्रादिकतै स्पष्ट ज्ञान होता जानैं हैं। ताका समाधान;—जैसैं सांचा स्वप्नका ज्ञानकै तथा भावनाका ज्ञानकै विशदपणां है तैसैं इन्द्रियनि विना भी विशदपणा जानना, जातै देखिये है—भावनाके बलतैं दूरदेश अन्यदेशवर्त्ती वस्तुकौं विशद जानिये है, जैसैं कह्या है ताका श्लोक[1] है; ताका अर्थ;—काहू कामीजनकू बंदीखानेमै दीया सो कहै है;—देखो! यह गुप्त आछाद्या जुड्या जो बंदीखानांका घर तहां ऐसा अंधकार जो सूईके अग्रभागकरि भी भेद्या न जाय तहा मेरे नेत्र मींचिकरि मैं वैठा तौऊ तिस स्त्रीका मुख मोकूं प्रगट दीखै है। ऐसा काहू कामीका वचन है सो ऐसे बहुत उदाहरण हैं। इन्द्रियनिके संबंध विना केवल मनकै ही द्वारा विशद—स्पष्ट प्रतिभास होय है, ऐसैं मीमासककूं तौ उत्तर दिया।

---

१ पिहिते कारागारे तमसि च सूचीमुखाग्रदुर्भेद्ये।
मयि च निर्मीलितनयने तथापि कान्ताननं व्यक्तम् ॥१॥

अब इहा नैयायिक बोलै है,—जो सर्वज्ञपणाकी तौ सिद्धि भई परंतु आवरणके अभावतैं सर्वज्ञपणा है यह नाही बणै है, शरीर इन्द्रिय लोक आदि ये कार्य हैं तिनिके निमित्तपणाकरि सर्वज्ञकी सिद्धि होय है। बहुरि इहा शरीर आदि कार्यनिका होना बुद्धिवान पुरुषकरि किये होय है सो असिद्ध नाही है जातैं अनुमान प्रमाण आदिकतैं इह नीकै प्रसिद्ध होय है, सो ही कहिये है, ताका प्रयोग करै है—नाही निश्चयमै आये-विवादमै आये जे पृथिवी पर्वत वृक्ष शरीर आदिक सो कोई बुद्धिवान पुरुषके रचे हैं तिस हेतुक हैं जातैं ये कार्यरूप है कार्य होय सो किया विना होय नाही। बहुरि इनिका उपादान अचेतन है। बहुरि इनिका संनिवेश कहिये आकारादिकी रचना सो भलै प्रकार है ऐसे आकारादिक बुद्धिवान पुरुष विना होय नाही जैसैं वस्त्र आदिका बनावनेवाला कारीगर तिनिकी यथास्थान रचना बनावै तैसैं ये भी काहूनैं बनाये हैं। बहुरि आगम भी तिस सर्वज्ञका प्रतिपादक सुनिये है, सो वेदका वचन है—'विश्वतश्चक्षु' कहिये सर्व तरफ जाके नेत्र हैं—समस्तकूं देखै हैं, 'उत विश्वतो मुख.' कहिये सर्व तरफ जाका मुख है, बहुरि 'विश्वतो बाहु' कहिये सर्व तरफ जाका भुजानिका व्यापार है, 'उत विश्वत पात्' कहिये सर्व तरफ जाके पग हैं—सर्व व्यापक हैं, बहुरि 'सम्बाहुभ्या धमति' कहिये पुण्य पापतै सर्वकूं जोडै है—सर्व प्राणीनिकै पुण्य पापका सयोग करै है, ऐसा 'सपतत्रैः द्यावा-भूमी जनयन् देव एक.', कहिये एक देव ईश्वर है सो पृथिवी आकाशकूं परमाणूनिकरि उपजावना सता वर्तै है। बहुरि व्यासका वचन ऐसा

१-विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतः पात्
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एक ॥

है;—ताका[१] श्लोक है ताका अर्थ,—यह जतु कहिये जीव सो अज्ञानी है आप ही आपके सुख दुःख करिवेकू असमर्थ है यातैं ईश्वरका प्रेरया हुआ स्वर्ग तथा नरककू गमन करै है। बहुरि ऐसैं भी न कहना जो अचेतन जे परमाणु आदि कारण तिनिहीकरि कार्यकी निष्पत्ति होय है तातै बुद्धिमान कारणका अनर्थकपणा है जातैं अचेतनकै कार्यकी उत्पत्तिविषै आपहीतैं व्यापार करनेका अयोग है—जड़ आप ही कार्य करि सकै नाही, जैसै कोलीकै राछ वेम तुरी अर ततु इनितै आपहीतैं वस्त्र बणैं नाही कोली पुरुष व्यापार करै तब वणै। बहुरि ऐसैं चेतनकै भी अन्यचेतनपूर्वक कार्य करना नाही है जातैं यामैं अनवस्था आवै। ईश्वर है सो सकल पुरुषनितै बडा है समर्थ है अतिशयकी हदकूं प्राप्त है, सर्वज्ञबीज कहिये जगत्का कारण सर्वज्ञ सो ही बीज है। बहुरि क्लेश कर्म विपाक आशय इनिकरि अपरामृष्ट है—रहित है। बहुरि अनादिभूत अविनाशी ज्ञानका संभव जाकै है, ऐसैं ही पतंजलिनै कह्या है—क्लेश कहिये अविद्या १ अस्मिता १ रागद्वेष १ अभिनिवेश १, तहा अविद्या तौ विपरीत जानना सो है, बहुरि अस्मिता कहिये अहंकार, रागद्वेष कहिये सुख–दुःख तथा ताके साधनविषै प्रीति–अप्रीति, अभिनिवेश कहिये अपना ईश्वरपणाका भगका भय, ये तौ क्लेशके विशेष। बहुरि कर्म कहिये धर्म–अधर्मके साधन यज्ञ अर ब्रह्महत्यादिक। बहुरि विपाक कहिये जाति आयु भोग, तहा जाति देव मनुष्य आदि-

---

१–अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मनः सुखदुःखयोः।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा॥ १॥

२—यदाह पतञ्जलि,—
क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषः सर्वज्ञः
स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनाविच्छेदादिति।

पणा, आयु कहियें आयुर्बल, सुख दुःखका भोगना सो भोग ये विपाकके विशेष। बहुरि आशय कहिये निवृत्ति ताईं जो भाव लाग्या रहै सो ऐसे भावनिकरि सर्वज्ञ पुरुष स्पर्शित नाही है। सो सर्व ही विषैं गुरु है बडा है कालकरि जाका विच्छेद नाही है, ऐसैं पतजलिके वचन हैं। बहुरि अवधूत जो सन्यासीनिका आचार्य ताके ऐसे वचन है, श्लोकका अर्थ,—हे भगवन्! एते विशेषण तेरे ही हैं, प्रथम तौ जो काहूकरि हत्या न जाय ऐसा ऐश्वर्य तेरै ही है, बहुरि स्वभावहीतैं विरागता तेरै ही है, बहुरि स्वभावतैं उपजी तृप्तिता तेरै ही है. बहुरि इन्द्रियनिका वश करना तेरै ही है, बहुरि अत्यन्तसुख तेरै ही है, बहुरि आवरणरहित शक्ति तेरैं ही है, बहुरि सर्वविषयका जाननहारा ज्ञान तेरै ही है ऐसा अवधूतका वचन है। ऐसैं ईश्वर सर्वतैं बडा है तातैं कार्यके करनेंमैं अनवस्था नाही है। बहुरि तहा ईश्वरकी सिद्धिकूं कार्यत्वनामा हेतु है सो असिद्ध नाही है, अवयवसहितपणाकरि कार्यत्वकी सिद्धि है जो अवयवनिकरि सहित होय सो कार्य है सो किया ही होय। बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है जातै याकी विपक्ष जो विना किया होना ताविषैं वृत्तिका अभाव है। बहुरि अनैकान्तिक भी नाही है विपक्ष जे परमाणु आदि तिनि विषैं याकी अप्रवृत्ति हैं, परमाणु आप कार्य नाही। बहुरि प्रकरणसम भी नाही है जातै प्रतिपक्षकी सिद्धिका कारण जो अन्य हेतु ताका अभाव है।

२—ऐश्वर्यमप्रतिहत सहजो विराग-
स्तृप्तिर्निसर्गजनिता वशितेन्द्रियेषु।
आत्यन्तिकं सुखमनावरणा च शक्ति-
र्ज्ञानं च सर्वविषयं भगवस्तवैव॥

इत्यवधूतवचनाच्च।

बहुरि इहां कोई कहै—याका प्रतिपक्षका साधन हेतु है, ताका प्रयोग —तनु आदि बुद्धिमान हेतुक नाही है जातै देख्या है कर्त्ता जाका ऐसा जो प्रासाद आदिक तिनितै यह तनु आदि विलक्षण हैं, प्रासाद आदि सारिखे नाही, जैसैं आकाश आदिक है, ऐसैं याका प्रतिपक्षका हेतु है तनु आदिककै अकर्त्ताकूं साधै हैं, तातै कार्यत्व हेतु प्रकरणसम है। ताकूं नैयायिक कहै है—यह कहना अयुक्त है जातै इस हेतुकै असिद्धपणा है, सनिवेशविशिष्टपणांकरि प्रासादादिकतै समानजातीयपणाकरि शरीरादिकका उपलंभ है जैसैं प्रासादादिकका आकार रचनाविशेष है तैसै ही शरीरादिकका आकार ऐसा ही रचना विशेष है। बहुरि कहोगे जैसा प्रासादादिकविषैं संनिवेशविशेप देखिये है तैसा तनुशरीर आदि विषै नाही तौ सर्व ही एकसे सर्वस्वरूप तौ होय नाही कोईमैं किच्छू विशेष होय कोईमैं किछू होय। अतिशयसहित सनिवेश होय सो सातिशय कर्ताकूं जनावै है, जैसै प्रासादादिक, जो प्रासाद सुन्दर वणै तब जानिये चतुर कारीगरनै वणाया है। बहुरि कोईका तौ कर्त्ता दृष्ट है—जानिये है फलाणांनैं बनाया है अर कोईका कर्त्ता अदृष्ट है जाण्या न पड़ै है तौ इनि दोऊ रीतितैं तौ बुद्धिवानका किया अर बुद्धिवान न किया स्वयमेव है ऐसा सिद्ध होय नाही। मणि मोती आदिका कर्त्ता कौननैं देख्या ये स्वयमेव भये ठहरै है, ऐसै सनिवेशविशेप हेतु सिद्ध है। इस ही कथनकरि अचेतन उपादानपणां आदि हेतु भी दृढ किया। ऐसैं बुद्धिवान हेतुक तनु आदि है ऐसा भलै प्रकार कह्या हुवा बणै है। इस ही हेतुतैं सर्वज्ञपणा सिद्ध होय है। ऐसै नैयायिकनै अपना मत दृढ किया।

ताका समाधान आचार्य करै है;—जो यहु कहना अनुमानरूप मुद्रा करनेकू धनकरि रहित दरिद्रीके वचन है जातै कार्यत्व आदि हेतु

कहे तिनिकैं असम्यक् हेतुपणाकरि तिनि हेतुनिकरि उपज्या ज्ञानकै मिथ्यारूपपणा है, सो ही कहिये हैं;—यह कार्यत्वनामा हेतु कह्या सो याका कहा स्वरूप है, स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्यत्व है, कि अभूत्वा भावित्व है, कि अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धि उत्पादकपणा है, कि कारणके व्यापारकै अनुविधायीपणा है? इनि सिवाय गतिका अभाव है, ऐसे चार पक्ष पूछिये हैं। तहा आदिका पक्ष कहैगा तौ योगीश्वरनिकै समस्त कर्मका नाशनामा जो कार्य सो भी कार्यत्वपक्षमें ही है तातैं कार्यत्वनामा हेतुकी अप्रवृत्ति है यातैं हेतु भागासिद्ध होयगा। जो हेतु पक्षके कोई देशमैं न व्यापै सो भागासिद्ध कहिये। सो इस कर्मका नाशविषै स्वकारणसमवाय भी नाहीं अर सत्तासमवाय भी नाही। वस्तुकी सत्तासूं एकता होय सो तौ सत्तासमवाय कहिये, बहुरि वस्तुके कारणसूं एकता होय सो स्वकारणसमवाय कहिये। सो कर्मका नाश प्रध्वंसनामा अभावस्वरूप है सो यामैं सत्ता भी नाही अर समवाय भी नाही जातैं सत्ता तो द्रव्य, गुण, क्रियाकै आधार मानिये है, बहुरि समवाय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, इनि पाच पदार्थमें वर्त्तनेंवाला मानिये है यह नैयायिक-वैशेषिकका मत है। तहा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, दिशा आत्मा, काल, मन, ये नव तौ द्रव्य मानैं हैं। बहुरि बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सस्कार, धर्म, अधर्म, रूप, रस, गध, स्पर्श, सख्या, परिमाण, पृथक, सयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व,

---

१–सत्तासूं वस्तुकै एकता होय सो तौ सत्तासमवायस्वरूप कार्य वस्तु है बहुरि वस्तुके कारणसूं सत्ताकै एकता होय सो स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्य है ऐसे दोऊमें ही कहिये, वस्तुमे वा वस्तुके कारणमें सत्तासमवाय मान्या यातैं सत्तासमवायलक्षण कार्यका स्वरूप मानै है।

द्रवत्व, स्नेह, शव्द, ए चौईस गुण मानैं हैं। बहुरि प्रसारण, आकुंचन, उत्क्षेपण, गमन, आगमन, ये पांच कर्म मानैं हैं। पर सामान्य, अपर सामान्य ये दोय प्रकार सामान्य मानैं है। विशेष अनेक हैं सो इनिमैं अभाव नाही। अभावनामा सातवां पदार्थ न्यारा है। बहुरि कहे जो अभावका परित्याग करि इहा भाव ही विवादाध्यासितकरि पक्ष किया है तातैं तुमनैं दोप वताया सो इहा नांही प्रवेश करै है? ताकूं कहिये---जो अभावकूं कार्यका पक्षमैं न लीजिये तौ मुक्तिके अर्थी जे मुनि तिनिकै ईश्वरका आराधनां अनर्थक ठहरैगा जातैं तिस कर्मनाशके कार्यविषैं ईश्वरका आराधना किछू करनेंवाला नांही। बहुरि यह सत्तासमवाय कार्यका स्वरूप मानना विचार किये सैंकडां प्रकार खंड्या जाय है तातैं कार्यत्व हेतु स्वरूपासिद्ध है, जातैं सो सत्तासमवाय पदार्थ उत्पत्ति भये होय है कि उपजते संतेकै होय है? जो कहैगा उत्पत्ति भये होय है तौ तहा भी पूछिये जो छतेनिकै होय कि अछतेनिकै? जो कहैगा अणछतेनिकै होय है तौ गदहाके सींग आदिकै भी सत्तासमवायका प्रसंग आवैगा। बहुरि कहैगा जो छते पदार्थनिकै होय है तौ तहां पूछिये जो सत्तासमवायतैं होय है कि आपहीतैं होय है? तहां प्रथम सत्तासमवायतैं कहैगा तौ अनवस्थाका प्रसग आवैगा जातैं पहले पूछया था जो छत्ते पदार्थकै होय है कि अणछतेनिकै सो ही विकल्प फेरि पूछिये तब अनवस्था चली जाय। बहुरि कहैगा पदार्थनिकै आपहीतैं सत्तासमवाय है तौ जुदा सत्तासमवायका माननां अनर्थक है। बहुरि दूजा कहै जो पदार्थ उपजते संतेनिकै सत्तासमवाय है जातैं पदार्थनिकी निष्पत्ति अर संबंध इनि दोऊनिकै एक कालपणांका अंगीकार है तौ पूछिये जो यह सत्तासंबंध है सो उत्पादतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहैगा भिन्न है तौ उत्पत्तिके असत्त्वतैं अवि:

शेष भया तौ उत्पत्तिकै अर अभावकै भेद कैसै भया। बहुरि कहैगा उत्पत्तिकरि सहित वस्तुकै सत्व है तातै उत्पत्ति भी तैसा नाम पावै है तौ ऐसा कहना भी मूर्खपणाकरि ही है जातै इहा उत्पत्तिका—सत्त्वका विवाद है तहा वस्तुका सत्व कहना कबहू न वणैगा। बहुरि यामैं इतरेतराश्रयदोष आवैगा, वस्तुविषै उत्पत्तिका सत्त्व होतै तिस ही काल भया सत्तासबधका निश्चय होय अर तिसका निश्चय होय तब ही तिस वस्तुकै सत्त्वकरि उत्पत्तिका सत्त्वका निश्चय होय ऐसै इतरेतराश्रय होय है। बहुरि इस दोषके दूर करनेकी इच्छाकरि उत्पत्तिकै अर सत्तासंबंधकै एकता मानिये तौ सत्तासबध ही कार्यत्व भया तातै बुद्धिमानहेतुपणा तनु आदिकै होतै आकाश आदिकरि हेतु अनैकान्तिक भया जातै आकाश आदिविषै सत्तासबध तौ है अर कार्यपणा नाही। नित्यवस्तुकै कार्यपणा होय नाही तातै बुद्धिमानहेतुकपणा भी नाही। ऐसै सत्तासमवाय तौ कार्यत्व नाही तैसै ही स्वकारणसबध भी कार्यत्व नाही, जो चर्चा सत्तासबधमै है सो ही इहा भी लगावणीं। बहुरि कहै जो स्वकारणसमवाय अर सत्तासमवाय दोऊ सबध कार्यत्व है तौ सो भी युक्त नाही है, तिनि सबधनिकै भी कदाचित् काल होतै तौ समवायकै अनित्यताका प्रसग आवै जैसै घट आदिककै अनित्यता है तैसै, बहुरि सदाकाल कहै तौ सर्वकाल तिस कार्यपणाका उपलभ कहिये प्राप्ति ताका प्रसग आवै। बहुरि इहा कहै जो वस्तुनिके उत्पादक कारणनिकी निकटता न होय तब समवाय न होय यातै सर्वकाल उपलभका प्रसग न आवै तौ तहा पूछिये है—वस्तुकी उत्पत्तिकै अर्थि तौ कारणनिका व्यापार है अर उत्पाद स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप है सो यह सर्वकाल है ही, ऐसै तौ कारणका ग्रहण अनर्थक ही है। बहुरि कहै जो वस्तुकै कारणका ग्रहण उत्पत्तिकै अर्थि तौ

नाही अभिव्यक्तिकै अर्थि है, सो यह भी कहना वार्तामात्र ही है—– वस्तुके उत्पादकी अपेक्षाकरि अभिव्यक्ति कहनां बणैं नाही, वस्तुकी अपेक्षा अभिव्यक्ति कहिये तौ तात्रिपै कारणके आवनें पहले भी कार्य-वस्तुका सद्भावका प्रसग आवै है । वहुरि उत्पादकै अभिव्यक्ति भी असभवरूप है जातै स्वकारणसत्तासंबंध है लक्षण जाका ऐसा जो उत्पाद ताकै वस्तुके कारणके व्यापार पहले सद्भाव होतैं वस्तुका सद्भावका प्रसंग आवै है जातै वस्तुके सत्त्वका सो ही लक्षण इहां है । सो पहले सत्-रूप होय ताकै ही कोई कारणकरि आच्छादित होय ताकी अभि-व्यजककरि अभिव्यक्ति होय, जैसैं घट आदि वस्तु अधकारकरि आ-च्छादित होय तव दीपक आदि अभिव्यंजककरि ताकी व्यक्ति होय तैसैं इहा भी जानना । तातैं अभिव्यक्ति अर्थि कारणका ग्रहण करनां युक्त नाही । तातैं स्वकारणसत्तासंबंध तौ कार्यत्व नाही है ।

वहुरि अभूत्वा भावित्वनामा दूसरा पक्ष है सो भी कार्यत्व नाही है ताकै भी विचारका सहवापणा नाही है, परीक्षा किये अयुक्त ही है जातैं अभूत्वा भावित्वपणा है सो पहले न होय करि आगामी होय ताकूं कहिये है। सो भिन्नकालविषै जो दोय क्रिया ताका आधारभूत जो कर्त्ता ताकै सिद्धि होतैं सिद्धि होय है जातै अतीतकालवाची जो 'क्त्वा' प्रत्यय तदन्तपद-करि विशेपित जो वाक्यका अर्थपणा तिसरूप है, जैसैं 'भुक्त्वा व्रजति' इत्यादि वाक्यार्थ है । कोई पुरुप भोजन करि चलै है, तहा 'भुक्त्वा' ऐसा तौ अतीतकाल भया 'पीछै चलै है' सो यह भावीकाल है सौ इहा दोऊ कालविपै क्रिया दोयका आधार पुरुप है सो इहां कार्यत्वविषैं 'भवन अभवन' कहिये होना न होना रूप जो दोय क्रिया ताका आधारभूत एक कर्त्ताका अनुभव नाही है जातै अभवनका आधारकै अविद्यमानपणाकरि अर भवनका आधारकै विद्यमानमणाकरि भाव

अभावका एक आश्रयकै विरोध है, भावार्थ—कार्य है सो भावस्वरूप ही है अभावस्वरूप नाही है । अर जो अविरोध मानिये तौ तिनि दोऊनिकै पर्यायमात्रकरि ही भेद आवै वस्तुभेद नाही आवै । अथवा कोई प्रकार अभूत्वा भावित्व है सो कार्यत्वका स्वरूप होहु तौऊ तनु आदिक सर्वविषै नाही माननेतैं हेतु भागासिद्ध होय है जातैं हमारै पृथिवी पर्वत समुद्र उद्यान आदि पहली न होय करि होते नाही मानिये है जातैं हमारै जैनीनिके पृथिवी आदिका सदाकाल अवस्थान मानै हैं । बहुरि कहै जो पृथिवी आदिकै अवयवसहितपणाकरि आदिसहितपणा साधिये है सो ऐसा कहना भी विना सीखकरि कह्या है, जातैं इहा दोय पक्ष पूछिये, अवयवनिविषै अवयवीकी प्रवृत्तितै है कि अवयवनिकरि आरभिये है यातैं है ? इनि दोऊ ही पक्षनिविषैं अवयवसहितपणाकी अनुपपत्ति है । जो प्रथम पक्ष लीजिये तौ अवयवसामान्यकरि अनेकात है जातै अवयवसामान्य है सो अवयवनिविषैं वत्त है अर कार्य नाही है । बहुरि दूसरी पक्ष जो अवयवनिकरि अवयवी आरभिये है तौ साध्यतै अविशिष्ट है जातैं आदिसहितपणा साधिये है सो ही अवयवनिकरि आरभिये है ऐसा हेतु कह्या यामैं साध्यतै विशेष कहा भया। बहुरि कहै—जो यह सनिवेश है आकाररूप रचनाविशेष है सो ही सावयवपणा है सो ही घट आदिकी ज्यों पृथिवी आदिविषै पाइए है यातैं अभूत्वा भावित्व ही कहिये है सो ऐसैं कहना भी सुन्दर नाही, सनिवेशके भी विचारका असहपणा है—परीक्षा किये वणै नाही है । इहा दोय पक्ष पूछिये, यह सनिवेश है सो अवयवनिका सबध है कि रचनाका विशेष है ? जो कहैगा अवयवनिका सबध है तौ आकाश आदिकरि अनेकात होगा जातैं आकाशकै समस्त मूर्तीक द्रव्यका सयोग है कारण जाकू ऐसा प्रदेश-

निका नानापणांका सद्भाव है। इहा कहै—जो आकाशकै विषैं तौ प्रदेश उपचरित है तौ समस्त मूर्तीक द्रव्यनिका संबंधकै भी उपचरितपणा आया तब आकाशकै सर्वगतपणा भी उपचरित ठहरया, तव श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणा न ठहरैगा श्रोत्र इन्द्रिय आकाशतै जुडै तव शब्द आकाशका गुण है सो ग्रहण होय है ऐसैं नैयायिक मानैं है सो सर्वत्र उपचरित ठहरै तब श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणा—शब्दका ग्रहण करना है सो न ठहरैगा जातै आकाश उपचरित प्रदेशरूप मान्या है। बहुरि कहै जो धर्म अधर्मके संस्कारतैं श्रोत्रतै अर्थक्रिया होय है, ताकू कहिये—जो उपचरित तौ अभावरूप है सो ताके तिनि धर्मादिकरि उपकारका अयोग है जैसै गदहाके सीगकै कछू काहूकरि उपकार न होय तैसै है। तातैं अवयवनिका सवंधस्वरूप जो संनिवेश कह्या सो तौ किछू भी नाही। ब्रहुरि दूसरी पक्ष रचनाविशेप है सो मानिये तौ हमारै जैनिनकै पृथ्वी आदि रचनाविशेषकू सावयवरूप कार्यस्वरूप नाही मानिये है तातै यह हेतु भागासिद्ध होय है सो यह दूपण अवस्थित होय है ऐसैं अभूत्वा भावित्व है सो विचारमैं नांही बणै है।

बहुरि तीसरा पक्ष अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धिका उत्पादकपणा है, याका अर्थ यह—जो कार्यके उपजनेंकी क्रिया तौ न देखी तौऊ ताविषै ऐसी बुद्धि उपजे जो यह काहूनैं किया है सो यह कार्यपणा मानिये तौ दोय पक्ष पूछिये है, सो ऐसी बुद्धि उपजे जो पहले काहूनै संकेत किया होथ जो ऐसा तौ किया ही होय है ताकै उपजै है कि विना ही संकेत उपजै है? जो कहैगा संकेत करनेवालेकै उपजै है तौ आकाश आदिकै भी बुद्धिमानकरि कियापणा ठहरैगा। तहा भी कहूं खोदिकरि माटी काढ़ै तब खाना (डा) होय जाय आकाश प्रगट होय तहा ऐसी बुद्धि उपजै है जो यह आकाश काहूनै

किया है जातै पूर्वे खोदता देख्या था तथा काहूके वचनतै निश्चय किया था तहां ऐसा सकेत भया था जो खोदेतै आकाश नीकसै है तातैं इहां कृतबुद्धि उपजै है। इहां कहै—जो यह बुद्धि तौ मिथ्या है तौ तेरी भी बुद्धि अन्यविषै किये उपजै है सो मिथ्या क्यों न होय? बाधाका सद्भाव अर प्रतिप्रमाण विरोधका अन्यविषै समानपणा है, जो आकाशविषै कृतबुद्धिमैं बाधक बतावैगा सो ही तन्वादिकमैं आवैगा, बहुरि कर्त्ताका ग्रहण दोऊ ही जायगा प्रत्यक्ष नाहीं है। इहां प्रमाणकी समानताका प्रयोग ऐसा—पृथिवी आदिक है ते बुद्धिमान हेतुक नाहीं हैं जातै हम आदिककै नाहीं ग्रहण करनैं योग्य याका परिमाण अर आधार है, जैसा आकाश आदिकका परिमाण आदि नाहीं ग्रहणमैं आवै है तैसे यह भी है ऐसा प्रमाण पृथिवी आदिका कर्त्ताका निषेधका समान है। तातै कृतसमय कहिये जाकै सकेत किया ताकै तौ पृथिवी आदिकविषै कृतबुद्धिका उपजावनहारापणा नाहीं है। बहुरि अकृतसमय कहिये नाहीं किया है सकेत जाकै ताकै भी कृतबुद्धिका उपजावनहारा नाहीं है जातै यह असिद्ध है विना सकेत किये कृतबुद्धि उपजै नाहीं जो उपजै तौ विप्रतिपत्ति नाहीं होय सर्वहीकै उपजै। कोई कहै—जो अग्नि शीतल है तो जाकै अग्निका सकेत नाहीं सो ऐसैं जानै जो शीतल ही होगा याम सदेह न उपजै तैसे पृथिवी आदि कार्य काहूके किये बतावे तो किये ही मानै न किये बतावै तौ विना किये ही मानै।

बहुरि चौथा पक्ष कारणव्यापारानुविधायिपणा है, याका अर्थ यह—जो जैसा कारणका व्यापार होय तिसकै अनुसार तैसा ही कार्य होय। सो इहां दोय पक्ष पूछिये, तहां जो कारणमात्र ही की अपेक्षा कहै तौ यह विरुद्ध होय जातै कार्य तो अबुद्धिमानके किये भी होय

है सो विपक्षकू साध्या तब कारणविशेष जो ईश्वर ताकी सिद्धि भई तातै विरुद्ध भया। बहुरि कारणविशेषकी अपेक्षा कहै तौ इतरेतराश्रयनामा दूषण आवै, कारणविशेष जो बुद्धिमान ताकी सिद्धि होतै तौ तिसकी अपेक्षाकरि कारणव्यापारानुविधायित्वस्वरूप कार्यत्व सिद्ध होय अर तिसतै ताके विशेषकी सिद्धि होय ऐसैं इतरेतराश्रय भया।

बहुरि इहा सन्निवेशविशिष्टपणा अर अचेतन-उपादानपणा ये दोऊ भी हेतु हैं ते कहे जे दोष तिनकरि दुष्ट है—निर्बाध नाही, तातैं न्यारे नाही विचारे हैं। सन्निवेशविशिष्ट तौ सुख आदिविषै नाही वर्त्तै तातै भागासिद्ध है, सुख आदि कार्य तौ है अर रचनाविशेषरूप नाही है। बहुरि अचेतनोपादानपणा ज्ञानस्वरूप कार्यविषैं नाही तातै भागासिद्ध है, ज्ञान कार्यरूप तौ है अर अचेतनोपादानरूप नाही ऐसैं भागासिद्धनामा दूषण तहा भी सुलभ है। बहुरि ये हेतु विरुद्ध है जातै दृष्टातके अनुग्रह कहिये घट आदि दृष्टातका बल ताकरि शरीररहित सर्वज्ञपूर्वक साधन किया है अर घटका कर्त्ता कुंभकार है सो शरीरसहित असर्वज्ञ है तातै हेतु विरुद्ध होय है। बहुरि कहै—जो ऐसै तौ धूमतै अग्निका अनुमान कीजिये तामै भी यह दोष आवैगा सो दोष नाही आवै है जातैं तहा तृणकी अग्नि तथा पान आदिकी अग्नि सर्व ही अग्निमात्रविषैं व्याप्त जो धूम सो देखिये हैं तैसैं इनि हेतुनिमै नाही देखिये है जो सर्वज्ञ तथा असर्वज्ञ जो कर्त्ताका विशेष ताका आधार जो कर्त्तापणा सामान्य तिसकरि कार्यत्वनामा हेतुकी व्याप्ति है ऐसै नाही देखिये है अर सर्वज्ञ जो कर्त्ता ताकी इस अनुमान पहले असिद्धि है, इस ही अनुमानकरि कर्त्ता साधिये है। बहुरि यह हेतु व्यभिचारी है बुद्धिवान कारण विना भी विजली आदि कार्य प्रकट होय है। बहुरि सूता आदि पुरुषकी अवस्थाविषैं बुद्धिपूर्वक विना भी कार्य

होते देखिये है। बहुरि कहै जो शिव तिनि कार्यनिविषै भी अवश्य कारण है तौ ऐसा कहना अतिमुग्धका विलास है जातैं तहा शिवका व्यापारका असंभव हैं जातैं शिव शरीररहित हैं अर ज्ञानमात्र ही करि कार्यकारीपणा बणै नाही, बहुरि इच्छा अर प्रयत्न ये दोऊ शरीरविना संभवै नाहीं, ताका असंभव आप्तपरीक्षा आदि ग्रंथनिविषैं पुरातन बडे आचार्यनिकरि विस्तारकरि कह्या है तातै इहा नाही कहिये है। बहुरि जो महेश्वरकैं क्लेश आदिका रहितपणा अर निरतिशयपणा अर ऐश्वर्य आदि सहितपणा कह्या सो सर्व ही आकाशके कमलकी सुगध ताका वर्णन सारिखा है जातें जाका आधार सिद्ध होय नाही तातै हमारै आदरने योग्य नाही। तातै महेश्वरकैं सर्वज्ञपणा कहै सो नाही।

बहुरि ब्रह्मकै सर्वज्ञपणा कहैं सो भी नाही है जातै ताका सद्भावका कहनेंवाला जनावनेवाला प्रमाणका अभाव है। तहा प्रथम तौ प्रत्यक्ष-प्रमाण ताका जनावनेंवाला नाही है, जो प्रत्यक्ष ब्रह्म दीखै तौ विप्रतिपत्ति नाही होय, सन्देह काहेकूं होय। बहुरि अनुमान भी ताका सिद्धि करने-वाला नाही हैं जातै ब्रह्मतैं अविनाभावी जो लिंग ताका अभाव है लिंग विना अनुमान कैसैं होय।

इहा ब्रह्मवादी कहै हैं—प्रत्यक्षप्रमाण ब्रह्मका ग्राहक है ही जातै नेत्र उघाडिकरि देखे लगता ही निर्विकल्प अभेदरूप सत्तामात्रकी विधि दीखै है ताका विषयपणाकरि प्रत्यक्षकी उत्पत्ति है, सर्व वस्तु एक सत्तारूप भासै है, बहुरि जो सत्ता है सो ही परमब्रह्मका स्वरूप है, ताका श्लोकका अर्थ—प्रथम ही आलोचना कहिये दर्शन-

१ तथा चोक्तम्—

अस्ति ह्यालोचनाज्ञानं प्रथमं निर्विकल्पकम्।
बालमूकादिविज्ञानसदृशं शुद्धवस्तुजम्॥ १॥

मात्र ज्ञान है सो निर्विकल्पक है–भेदरहित है जैसा बालक तथा मूक कहिये गूगा बहरा आदिकै ज्ञान होय है तैसा होय है सो यह ही शुद्ध वस्तुतै उपज्या है। भावार्थ—शुद्धसत्तामात्र अभेद ब्रह्मका स्वरूप है। बहुरि कोई कहै—विधिकी ज्यों परस्पर जुदायगीरूप निषेध भी प्रत्यक्ष-करि प्रतीतिमै आवै है तातैं विधिनिषेधरूप द्वैतकी सिद्धि होय है सो ऐसै नाही है जातै प्रत्यक्षका विषय निषेध नाही है, सो ही हमारे कही है; ताका श्लोकका अर्थ—पंडित पुरुष है ते प्रत्यक्षप्रमाणकूं विधान करनेवाला कहैं है निषेध करनेवाला न कहै है तातैं एकत्व जो अद्वैत ताके कहनेवाला आगम है सो तिस प्रत्यक्षकरि न बाधिये है। बहुरि अनुमानतै भी ब्रह्मका सद्भाव पाइये है, ताका प्रयोग;—ग्राम बाग आदि पदार्थ है ते प्रतिभासमात्रमैं सर्व प्रवेशकरि रहे हैं जातैं प्रतिभा-समानपणा सबकै पाइये है जो प्रतिभासै है सो सर्व प्रतिभासकै मध्य आय गया जैसै प्रतिभासका स्वरूप, ऐसैं ही सर्व विवादमै आये पदार्थ प्रतिभासै है, ऐसे च्यार प्रयोगरूप अनुमानतैं ब्रह्म सिद्ध होय है। बहुरि तिसके आगममैं भी वचन बहुत पाइये है 'जो हूवा अर जो होयगा बहुरि यह वर्त्तमान है सो सर्व एक पुरुष है, ऐसा वचन है। बहुरि श्लोक है, ताका अर्थ;—'इद सर्व' कहिये यह जो प्रत्यक्ष सर्व दीखै है सो निश्चयतैं ब्रह्म है इस जगतमैं नानारूप किछू वस्तु नांही है अर

१ तथा चोक्तम्—

आहुर्विधातृ प्रत्यक्षं न निषेधृ विपश्चितः।
नैकत्वे वागमस्तेन प्रत्यक्षेण प्रबाध्यते ॥ १ ॥

२–सर्वं वै खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन।
आरामं तस्य पश्यन्ति नतं(तत्) पश्यति कश्चन ॥ १॥

लोक है सो तिस ब्रह्मके आराम कहिये विवर्त्तरूप पर्यायनिकू देखै है तिसकू कोई न देखै है ऐसा वेदका वचन सुनिये है। इहा कोई पूछै —परमब्रह्मकै ही परमार्थ सत्त्व होतै घट आदिका भेद भासै है सो कैसें है? सो ऐसा तर्क इहा नाही करना जातैं सर्व ही घट आदि वस्तु है ते तिसके विवर्त्तपणाकरि भासै हैं जैसें दर्पणकै विषै प्रतिबिंब भासैं है तैसें है। एक ही वस्तुके अपरमार्थरूप अनेक प्रतिबिंब भासै सो विवर्त्त कहिये। बहुरि सर्व ही भेद हैं तिनिकै ब्रह्मका विवर्त्तपणा असिद्ध नाही जातैं प्रमाणकरि सिद्ध होय है, ताका प्रयोग—विवादमैं आया जो विश्व लोक सो एक कारणपूर्वक है जातै एकरूपतैं जुडि रह्या है, जैसें घडा हाडी ढाकणा डीवा आदिक है ते माटीस्वरूप हैं तातै अन्वयरूप है सो ये माटीनामा कारणपूर्वक ही है तैसै सत्‌रूप करि जुडे सर्व वस्तु हैं। तैसें ही आगम भी ताका साधक है, ताका श्लोकका[1] अर्थ—जैसै माकडी है सो जालाके ततूनिका एक कारण है अथवा जैसें जलका चद्रकातमणि कारण है अथवा जैसै कूपलनिका बडवृक्ष कारण है तैसें सर्व जीवनिका एक ब्रह्म कारण है, ऐसें ब्रह्मवादीनै अपना मत दृढ किया।

अब ताकू आचार्य कहै हैं—हे ब्रह्मवादी! यह तेरा कहना जैसें मदिराका रसकू पानकरि गदगद वचन कहै तैसा है अथवा माचणा कोद्रू खायकरि गहला होय मूर्ख विलास करै—यथा कथंचित् कहै तैसा है जातै यह विचारमैं आवै नाही—परीक्षामैं न आय सकै है। जातै जो तैं प्रत्यक्षकै सत्ताविषयपणा कह्या तहा दोय पक्ष पूछिये है,—निर्विशेषसत्ताविषयपणा कह्या कि विशेषसहित

१-ऊर्णनाभ इवांशूनां चद्रकात इवाम्भसाम्।
प्ररोहाणामिव प्लक्षः स हेतुः सर्वजन्मिनाम्॥ १॥

सत्ताका जनावनहारा कह्या ? तहा प्रथम पक्ष तौ न बणै है जातैं सत्ताकै सामान्यरूपपणा है तातै विशेपकी अपेक्षारहितपणाकरि सत्ताका प्रतिभास होय नाहीं जैसै गोत्वसामान्य है सो कावरा धोला आदि विशेपरहित प्रतिभासता नाही, जातै ऐसा कह्या है जो विशेषरहित सामान्य है सो सुस्साके सींगसमान अवस्तु है, बहुरि सामान्यरूपपणा सत्ताका सत् सत् ऐसा अन्वयरूपबुद्धिका विषयपणाकरि प्रसिद्ध ही है। बहुरि दूसरा पक्ष कहैगा तौ परमपुरुषकी सिद्धि न होयगी जातैं परस्पर न्यारे न्यारे है आकार जिनके ऐसे विशेषनिका प्रत्यक्षतै प्रतिभास होय हैं। बहुरि अनुमानका साधन कह्या जो प्रतिभासमानपणा सो भी समीचीन नाही जातै विचारमैं बनता नांही। तहा दोय पक्ष पूछैं हैं—यहु प्रतिभासमानपणा स्वतै होय है कि परतै होय है ? जो कहैगा स्वतै होय है तौ नाही बणैगा जातै हेतु असिद्ध है जातैं पदार्थनिका स्वयमेव प्रकाशन है तौ नेत्र मीचिये अथवा प्रकाश नाही होय तहा भी प्रतिभासना होहु सो नांही होय है तातै असिद्ध है। बहुरि कहैगा परतैं होय है तौ विरुद्ध है परतै प्रतिभासनां पर विना न बणै, बहुरि प्रतिभासमात्र भी नाही सिद्ध होय है जातै तिस प्रतिभासकै ताके विशेपनितै अविनाभावीपणां है, बहुरि प्रतिभासकै विशेप मानिये तौ द्वैतका प्रसंग आया। बहुरि किछू विशेप कहै हैं—अनुमानका उपायभूत जे धर्मी हेतु दृष्टात ये प्रतिभासै है कि नाही ? जो कहैगा प्रतिभासै है तौ प्रतिभासमांही प्रवेश भये प्रतिभासै है कि तातै बाह्य न्यारे प्रतिभासै है ? जो कहैगा प्रतिभासमांही प्रतिभासै है तौ साध्यकै माही ही आय पड़े तिनितै अनुमान कैसै होय, बहुरि प्रतिभासकै बाह्य प्रतिभासैं है तौ हेतुकै तिनिहीकरि व्यभिचार भया। बहुरि जो कहै—प्रतिभासै नाही है तौ धर्मी आदिकी व्यवस्थाका अभाव है तब तिनि विना

अनुमान कैसै होयगा। बहुरि ब्रह्मवादी कहै है—जो अनादि अविद्याके उदयतै यह सर्व असबद्ध है ? तहा आचार्य कहै है—यह कहना भी महा-अज्ञानका विलास है जातै अविद्याविषै भी पहिले कहे जे दोष तिनिका प्रसग है। बहुरि कहै—जो अविद्या सर्वविकल्पनितै रहित है तातै दोष नाही आवै है सो यह कहना भी अतिमुग्धका वचन है जातै अविद्याका कोई ही रूपकरि प्रतिभासका अभाव होतै तिसका स्वरूप ही अवधारण मे आवै नाही। बहुरि और भी इहा विस्तार करि विचार है सो देवागमस्तोत्रका अलकार जो अष्टसहस्री ताविषै है तातै इहा विस्तार न कीजिये है। बहुरि समस्त भेदनिकै विवर्त्तपणा कह्या, तहा एकरूपकरि अन्वयपणा हेतु है सो अन्वय करनेंवाला अर अन्वीयमान कहिये जाका अन्वय करिये सो वस्तु इनि दोऊनिकरि अविनाभावीपणाकरि पुरुषाद्वैतकू निषेधै है यातै अपना इष्ट जो अद्वैतब्रह्म ताका विधानकारीपणातै विरुद्ध है। बहुरि अन्वितपणा है सो एक हेतुक जे घट आदिकविषै अर अनेक हेतुक जे स्तभ कुभ कमल आदिविषै दोऊविषै पाइये हैं तातै अनैकान्तिक है। बहुरि पूछिये—जो यह अद्वैत ब्रह्म है सो जगतनामा कार्य कौन अर्थि करै है, तहा च्यार पक्ष हैं,—एक तौ अन्यका प्रेरया करै, दूसरै कृपाके वशतै करै, तीसरा क्रीडाके वशतै करै, चौथे स्वभावहीतै करै। तहा जो कहै—अन्यका प्रेरया करै है तौ स्वाधीनपणाकी हानि भई अर द्वैतका प्रसग भया। बहुरि कृपाके वशतै करना कहै तौ कृपाविषै दु:खिनिका तौ न करनेंका प्रसग आवै जगतमै दु:खी है ही अर तिसकै कृपाका करणां तौ परके उपकार करनेतै बणै, बहुरि सृष्टि रचे पहली प्राणी है नाही तिनिकी कृपाकै अर्थि नवीन सृष्टि रचै तौ कृपाके अर्थि रचना युक्त होय, बहुरि कृपाविषै तत्पर होय ताकै प्रलयका विधान युक्त होय नाही,

बहुरि प्रलय तौ प्राणीनिके अदृष्ट जो पाप ताके वशतै होय है तौ ऐसैं तौ स्वाधीनपणाकी हानि होय है, कृपाविषै तत्पर होय ताकै पीड़ाका करना अर अदृष्ट-पाप ताकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि क्रीड़ाके वशतै करना कहै तौ क्रीड़ा अर्थि प्रवृति करनेमैं प्रभुपणा नाहीं जैसै वालक क्रीड़ा करनेंकूं उपाय गीन्दड़ी आदि बनावै तैसैं ठहरै यामैं कहा वडाई, बहुरि क्रीडाका उपाय बनाया जो जगत अर याकरि साध्य जो सुख ताकी एक काल उत्पत्ति भई चाहिये, जातैं समर्थ कारणके होतैं कार्यका अवश्य होना होय, जो समर्थ कारण न होय तौ अनुक्रमतैं भी तिसतैं कार्य न होय, जैसैं दीपक है सो काजलका पाड़नां तेल शोपणा वातीका वालनां प्रकाश करना एककाल करै है यह सामर्थ्य है, अर ऐसै न होय तौ अनुक्रमकरि भी ये कार्य न होय। बहुरि कहै—ब्रह्म स्वभावहीतैं जगतकूं रचै है जैसैं अग्नि स्वभावहीतैं वालै है पवन स्वभावहीतैं चलै है ता यह कहना भी अज्ञानका वचन है, पहले कहे जे दोप ते मिटै नाही, सर्व दोष आवैं है, सो ही दिखावै है ताका प्रयोग—समस्त अनुक्रमतै उपजता जो विवर्त्तका समूह सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो भी ब्रह्महीकरि साधनें योग्य है ताका एककाल संभव है। भावार्थ—सर्व ही ब्रह्मके कार्य मानिये हैं, तहां ब्रह्म तौ समर्थकारण है ही बहुरि सहकारी चाहै तौ सो भी तिसहीका किया होय तब सर्वजगत एककाल उपज्या चाहिये, बहुरि अग्नि पवनका उदाहरण दिया ताकै भी विषमपणा है, कोई कालविषैं स्वहेतु जो काष्ठादिक ताकरि उपज्या अग्निके दहन करनेंकी शक्ति स्वरूपपणाकी प्राप्ति मर्याद रूप है जिस देशकालमैं भया तेता ही है, अर ब्रह्मविषैं तौ नित्यपणा सर्वव्यापकपणा

अर सर्वसामर्थ्यस्वरूप एकस्वभावरूप कारणकरि उपजावापणा है सो देशकालका न्यारा न्यारा नियमरूप कार्यनिविषै वणै नाही। सो ऐसैं ब्रह्मकी असिद्धि होतै वेदनिमैं ताकी सुप्त अवस्थाका कहना अर ताकी जागृत अवस्थाका कहना अर तिस परमपुरुषनामा महाभूत ताका निश्वास वेद है ऐसा कहना आकाशके कमलकी सुगधका वर्णन सारिखा है, सो अग्राह्य पदार्थ है विषय जाका तिस स्वरूप होनेतै आदरने योग्य नाही है, असत्यार्थकू कौन आदरै। बहुरि जो ब्रह्मके साधनेविषै आगम प्रमाण कह्या " सर्वं वै खल्विद ब्रह्म " इत्यादि "बहुरि ऊर्णनाभ" इत्यादि सो सर्व ही कहे विधानकरि अद्वैतका विरोधी है यातैं अवकाश नाही पावै है। बहुरि आगमकू अपौरुषेय कहै है सो वणैं नाही याका विस्तार आगैं कहसी तातै पुरुपोत्तम परमब्रह्म कहै सो भी परीक्षामैं नाही आवै है।

ऐसैं मुख्यप्रत्यक्षका वर्णन किया, तहा सर्वज्ञकी सिद्धि यथार्थ करी, अन्यवादीकी बाधाका परिहार किया।

इहा टीकाकारकृत श्लोक है,—

प्रत्यक्षेतरभेदभिन्नममलं मानं द्विधैवोदितं
देवैर्दीप्तगुणैर्विचार्य विधिवत्संख्याततेः संग्रहात्।
मानानामिति तद्दिगप्यभिहितं श्रीरत्ननंद्याव्हयै-
स्तद्व्याख्यानमदो विशुद्धधिषणैर्बोद्धव्यमव्याहतम् ॥१॥

याका अर्थ—'देवै' कहिये श्रीअकलकदेव आचार्य जैसे विधि जिनागममैं है तैसे विचारिकरि अर प्रत्यक्ष अर परोक्ष भेदकरि भिन्न निर्दोषप्रमाण दोय प्रकार ही कह्या, कैसैं है आचार्य ? दीप्त कहिये देदीप्यमान है सम्यग्दर्शन आदि गुण जिनिमैं बहुरि प्रमाणनिकी

संख्याकी पक्तिका संग्रह कहिये संक्षेपतैं तिनि प्रमाणनिका उपदेश श्रीमाणिक्यनदिनाम आचार्य भी ऐसै ही करया, बहुरि तिनिका व्याख्यान यहु मैं अनन्तवीर्य आचार्यनें किया है सो विशुद्धबुद्धीनिके माननें योग्य है कैसा है व्याख्यान? अव्याहत कहिये बाधारहित है।

बहुरि श्लोक—

मुख्यसंव्यवहाराभ्यां प्रत्यक्षमुपदर्शितम्।
देवोक्तमुपजीवद्भिः सूरिभिर्ज्ञापितं मया ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष प्रमाण मुख्य-संव्यहारके भेदकरि दोय प्रकार अकलंकदेवजीने कह्या सो ही माणिक्यनंदिजीनें दिखाया सो ही मै अनंतवीर्यनें जनाया है ॥ १२ ॥

सवैया तेईसा।

श्री अकलंक मुनीश भजो परतक्ष परोक्ष प्रमाण जु दोउ।
ता मधि हू परतक्ष कह्यो व्यवहार यथारथ भेद है सोउ ॥
माणिकनंदि लयो अनुसार कह्यो तसु आगम जानहु कोउ।
वृत्ति रची जु अनंत सुवीरजि देशकथामय मैं सब जोउ ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रकरणकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषै द्वितीय समुद्देश समाप्त भया।

तृतीय-समुद्देश ।

(३)

आगैं अब प्रत्यक्ष-परोक्षभेदकरि प्रमाण दोय प्रकार कह्या ताविषैं प्रथमभेद जो प्रत्यक्ष ताका व्याख्यानकरि अर परोक्ष प्रमाणकू कहै है,—

परोक्षमितरत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्षतै इतरत् कहिये अन्य विलक्षण सो परोक्ष है। इहा कह्या जो प्रत्यक्ष ताका प्रतिपक्षीकू इतर शब्द कहै है तातै तिस प्रत्यक्षतै इतरत् ऐसा पाइये सो परोक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्षका स्वरूप विशद कह्या था इहा अविशद ग्रहण करना ॥१॥

आगै याके सामग्री अर स्वरूपभेद कहते संते सूत्र कहैं हैं,—

प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागम-भेदम् ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष आदि प्रमाण है निमित्त जाकू ऐसा परोक्ष प्रमाण है ताके पाच भेद हैं, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान आगम ऐसैं। तहा प्रत्यक्ष अर आदिशब्दकरि परोक्ष ग्रहण करना ये दोऊ निमित्त है—उत्पत्तिकू कारण हैं सो तौ यथावसर निरूपण करियेगा। बहुरि प्रत्यक्ष आदि हैं निमित्त जाकू ऐसा समास करना। स्मृति आदि-विषै द्वन्द्वसमास करना ॥ २ ॥

आगैं अनुक्रममैं आया जो पहलै स्मृति ताहि दिखावते सते सूत्र कहैं हैं;—

संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ॥३॥

याका अर्थ—संस्कारका जो उद्बोध कहिये प्रगट होना सो है निबन्धन कहिये कारण जाकूं, बहुरि तत् कहिये पूर्वैं अनुभवमैं आया था ताका 'सो है' ऐसा यादि आवना ऐसा जाका आकार है ऐसी स्मृति है। इहां 'भवति' ऐसी क्रिया सूत्रमैं वाक्यशेषतैं लेनीं ॥ ३ ॥

आगै याका उदाहरण कहै हैं;—

स देवदत्तो यथा ॥४॥

याका अर्थ—जैसैं पहले काहू पुरुषकूं देख्या था सो वर्त्तमानमैं मनविषैं यादि आया जो 'सो फलाणा पुरुष' ऐसा स्मृति प्रमाण है ॥ ४ ॥

आगै प्रत्यभिज्ञानप्रमाण कहनेका अवसर है सो कहै हैं;—

दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वर्त्तमानका दर्शन—पूर्वैं देख्या ताका स्मरण ये दोन्यों है कारण जाकूं ऐसा जोड़रूप ज्ञान ताकूं प्रत्यभिज्ञान कहिये। सो च्यार प्रकार है—वर्त्तमानमैं काहू वस्तुकूं देखिकरि अर ताकूं पूर्वैं देख्या था ताकूं यादिकरि ऐसा जान्यां जो 'यह सो ही है' ऐसा तो एकत्व-प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं देख्या तिस सारिखा पूर्वैं देख्या था ताकूं जान्या जो 'यह तिस सारिखा है' सो सादृश्य प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं काहूकूं देखिकरि तिसतैं विलक्षण पूर्वैं देख्या था ताकूं यादिकरि तिसतैं विलक्षण जान्या जो 'यह तिसतै विलक्षण है' सो तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पूर्वैं देख्या था तिसका वर्त्तमानमैं प्रतियोगी कहिये जिसतैं अवश्य जोड़ मिली जाय ऐसा अन्यपदार्थकूं देखि

जान्या जो 'यह तिसका प्रतियोगी है' सो तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञान है । आदिशब्दतैं और भी पूर्वापरका जोडरूप ज्ञान होय सो जानना । इहां दर्शन-स्मरणकारणपणातैं सादृश्यादिक जाका विषय होय सो भी प्रत्यभिज्ञान ही कह्या है । बहुरि जिनिके मतमै सादृश्यविषयकू उपमान-नामा जुदा प्रमाण कह्या है तिनिके मतमै वैलक्षण्यादिक जाका विषय ऐसा ज्ञान भी अन्य प्रमाण ठहरैगा, सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ,—प्रसिद्ध पदार्थके समान धर्मपणातै साध्यका साधना सो उपमानप्रमाण मानिये तौ तिसके असमानविलक्षणधर्मतै साध्य साधना सो प्रमाण कहा कहिये, किछू कह्या चाहिये । बहुरि जहा सज्ञा जो नामरूप पदार्थ ताका प्रतिपादन जो सज्ञा पहले सुनी थी तातै जोडरूप प्रतिपादन करिये सो प्रमाण न्यारा कहना, ऐसै उपमानकू न्यारा प्रमाण मानें दोष आवै है । बहुरि यह यातैं अल्प है, यह यातैं बहुत है, यह यातै दूर है, यह यातै निकट है, यह यातैं ऊँचा है, यह यातै नीचा है, बहुरि इनके निषेध यह यातै अल्प नाही है इत्यादि, ऐसैं प्रत्यक्ष देख्या पदार्थविषै परस्पर अपेक्षातै अन्यभावका निश्चय होय है सो ये अन्य प्रमाण ठहरै तब अपने इष्ट जो प्रमाणकी सख्या ताका विघटन होय है। तातै उपमान प्रमाण न्यारा मानना युक्त नाही ॥५॥

आगैं इनि प्रत्यभिज्ञानका भेदनिका अनुक्रमकरि उदाहरण दिखावता सता सूत्र कहै है,—

१—तथा चोक्तम्—

उपमानं प्रसिद्धार्थसाधर्म्यात्साध्यसाधनम् ।
तद्वैधर्म्यात्प्रमाणं किं स्यात्सज्ञिप्रतिपादनम् ॥ १ ॥
इदमल्पं महद्दूरमासन्नं प्रांशु नेति वा ।
व्यपेक्षातः समक्षेऽर्थे विकल्पः साधनान्तरम् ॥ २ ॥

यथा स एवायं देवदत्तः, गोसदृशो गवयः, गोविलक्षणो महिषः, इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ॥६॥

याका अर्थ—जैसैं काहू पुरुषकूं देखिकरि कहै ' यह पहले देख्या था सो ही पुरुष है' यह तौ एकत्वप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण भया। बहुरि काहूनै वनविषै गवयनाम तिर्यंच प्राणी देखिकरि जानीं 'जो गऊ पहले देख्या था तिस सारिखा यह गवय है' यह सादृश्यप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि भैंसाकूं देखिकरि यह जान्या 'जो पहले गऊ देख्या था तातैं विलक्षण यह भैंसा है' यह तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वस्तुकूं निकट देखिकरि अन्य काहूकू ऐसैं जान्यां 'जो यह यातैं दूर है' यह तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वृक्षकू देखिकरि वृक्षसामान्यकी सञ्ज्ञाकूं यादि करि जानैं 'जो यह वृक्ष है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि आदिशब्दकरि अन्यभी उदाहरण हैं–जैसैं पहले सुन्या था तथा देख्या था जो जलका अर दूधका भिन्न करनेंवाला हंस होय है, बहुरि कहू जल दूधकूं भिन्न करता देखि जान्या जो 'यह हस है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहली सुन्या था जो छह पादका भ्रमर होय है, बहुरि छह पाद देखिकरि पहले सुण्या ताकूं यादिकरि जाण्या जो 'यह भ्रमर है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुण्या था जो सात पान जाकै एकलगमै होय सो

१–पयोऽम्बुभेदी हंसः स्यात् षट्पादैर्भ्रमरः स्मृतः।
सप्तपर्णैस्तु तत्त्वज्ञैर्विज्ञेयो विषमच्छदः ॥ १ ॥
पंचवर्णं भवेद्रत्नं मेचकाख्यं पृथुस्तनी।
युवतिश्चैकशृंगोऽपि गण्डकः परिकीर्त्तितः ॥ २ ॥
शरभोऽप्यष्टभिः पादैः सिंहश्चारुसटान्वितः ॥ ३ ॥

विपमच्छद वृक्ष होय तब सात पत्र देख पहले सुण्या ताकू यादकरि जान्या जो यह 'विषमच्छद है' भीमसेनी कर्पूरकी उपजावनेंवाली जो वेलि ताकूं भी विपमच्छद कहैं हैं, यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुण्या था जो पंचवर्णका मेचकनामा रत्न होय है तब कहू पचवर्णका देखकरि पहले सुण्या ताकूं यादिकरि जानैं 'यह मेचकनाम रत्न है, यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुनी थी जो जाकै कुच बड़े भारे विस्तारसहित होय सो स्त्री होय है पीछैं भारे स्तन देखि पहले सुनींकू यादकरि जानैं जो 'यह स्त्री है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुन्या था जो जाकै एक सीग खग होय सो गैडा होय है पीछैं एक सींग देखि पहलेकू यादकरि जाण्या जो 'यह गैंडा है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुन्या था जो जाकै आठ पग होय सो शरभ होय है पीछैं आठ पग देखि पहले सुनेकू यादिकरि जानीं जो 'यह शरभ है' शरभ ऐसा नाम अष्टापदका है यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले जान्यां था जो जाकै सुन्दर मस्तकपरि सटा कहिये केशनिकी लटी बहुत होय सो सिंह होय है पीछैं सटाकू देखिकरि पहले जाण्याकू यादकरि जानैं 'यह सिंह है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। ऐसैं इनिकू आदि देकरि ये उदाहरण हैं। इनिके नामके शब्द सुनि बहुरि तैसा ही हस आदिकूं देखिकरि पहले सुनेकू यादिकरि तैसै ही प्रतीति करै तब तिनिका सकलनरूप जोडका ज्ञान भया सो प्रत्यभिज्ञान कह्या है जातैं इनिमै देखना अर याद करना ये दोऊ कारण सर्वमैं समान हैं। बहुरि अन्यमतीनिकै ये न्यारे प्रमाण ठहरैं हैं जातैं उपमानप्रमाणविपैं इनिका अन्तर्भाव नाही होय है तब प्रमाणकी सख्या विगडै है॥६॥

आगै ऊह कहिये तर्क प्रमाणके कहनेका अवसर पाया है ताकू कहैं हैं;—

उपलंभानुपलंभनिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूह इदमस्मिन् सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—उपलंभ तौ प्राप्ति अनुपलभ अप्राप्ति ये दोऊ हैं निमित्त जाकूं ऐसा व्याप्तिका ज्ञान सो ऊह कहिये तर्कप्रमाण है। तहां यह याके होतैं सतैं ही होय ऐसा तौ अन्वय, बहुरि यह न होय तौ नहीं होय ऐसा व्यतिरेक, ऐसैं दोऊनितैं व्याप्तिज्ञान है। इहा उपलंभ तौ प्रमाणमात्रका ग्रहण करना। जो प्रत्यक्षहीकूं उपलंभ शब्दकरि ग्रहण कीजिये तौ अनुमानके विषय जे साधन तिनिविषै व्याप्तिका ज्ञान न होय। इहा कोई कहै—व्याप्ति तौ सर्वोपसंहारवती है सर्व क्षेत्र-कालका संग्रहकरि प्रतीति कीजिये है सो अतीन्द्रिय ही साध्य होय अर ताका साधन भी अतीन्द्रिय होय तौ तिस साध्यकरि साधनकै व्याप्ति कैसै'जानी जाय? ताका समाधान—जो ऐसै नाहीं है, जैसैं प्रत्यक्षके विषय साध्य-साधन होय तिनिविषै व्याप्ति जानिये है तैसै ही अनुमानके विषय साध्य-साधनकैविषै भी व्याप्ति जाननेका अविरोध है। जातैं व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क ताकै परोक्षपणा मानिये है ॥ ७ ॥

इहा याका उदाहरण कहैं हैं;—

यथाऽग्नावेव धूमस्तदभावे न भवत्येवेति च ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जैसै अग्निके होतैं ही धूम होय अग्निके अभाव होतैं धूम नाही ही होय ऐसैं। इहा अतीन्द्रिय साध्यसाधनका उदाहरण ऐसा—जो जैसै सूर्यकै गमनशक्तिसहितपणा साध्य करै अर गतिमानपणाकूं हेतु करै सो ये दोऊ ही अतीन्द्रिय है—सूर्यकी गमनशक्ति दीखै नाही अर चलता भी दीखै नाही सो यह आगमगम्य है। बहुरि

याका समर्थन यह—जो जब दूरि देश जाय तब जानिये चालै है, ऐसै अनुमान दृढ होय है। ऐसै ही अन्यत्र जानना ॥ ८ ॥

आगै अनुमान अनुक्रममै आया ताका लक्षण कहैं है,—

साधनात् साध्यविज्ञानमनुमानम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—साधन कहिये हेतु तातै साध्य कहिये साधनें योग्य जो वस्तु ताका विज्ञान होय सो अनुमान प्रमाण है ॥ ९ ॥

आगैं साधनका लक्षण कहैं है,—

साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ॥ १० ॥

याका अर्थ—साध्यतै अविनाभावीपणाकरि जो निश्चय किया होय सो हेतु कहिये। इहा बौद्धमती कहै है—जो हेतुका लक्षण तीनरूपपणा ही है ताके होतैं ही हेतुकै असिद्ध आदि दोषका परिहार बणै है, सो ही कहिये है,—प्रथम तौ हेतु पक्षका धर्म होय तब असिद्धपणा दोपका परिहार होय तातैं ताके अर्थि हेतुकू पक्षधर्मरूप कहिये। बहुरि सपक्षविषै जाका सत्व होय सो विरुद्धपणाका निराकरणकै अर्थि है। बहुरि विपक्षविषै जाका असत्व होय सो अनैकान्तिकके निषेधकै अर्थि है, ऐसें तीनरूप हेतु कहे, सो ही कहिये है—श्लोकका अर्थ,—दिग्नागनामा बौद्धमतका आचार्य हेतुकै तीन रूपनिविषै निर्णय वर्णन किया है जातैं ये तीन रूप असिद्ध विरुद्ध व्यभिचारी जे हेतु सदूषण तिनिके प्रतिपक्षी हैं। ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहना अयुक्त है जातै अविनाभावका नियमका निश्चय होतै तीनू दोपनिका परिहार वणै है, अविनाभाव है सो साध्यविना न वणना है। इस अ-

१—हेतोस्त्रिष्वेपि रूपेषु निर्णयस्तेन वर्णित ।
असिद्धविपरीतार्थव्यभिचारिविपक्षत ॥ १ ॥

विनाभावपणाकू ही अन्यथानुपपन्नपणा ऐसा नाम कहिये, सो यहु अन्यथानुपपन्नपणा असिद्ध हेतुकै संभवै नाही । जातैं ऐसा कह्या है जो अन्यथानुपपन्नपणा असिद्धकै नाही सिद्ध होय है। वहुरि विरुद्धहेतुकै भी तिसके लक्षणकी उपपपत्ति नाही वणै है जातैं साध्यतैं विपरीत अविनाभावस्वभावरूपविषैं साध्यतैं अविनाभावनियमलक्षणकी अनुपपत्ति है जातैं दोऊनिकै विरोध है। वहुरि व्यभिचारी हेतुविषैं भी तिस प्रकृत कहिये कह्या लक्षणका अवकाश नांही है जातैं विरुद्धविषैं हेतु सो ही इहा जानना। तातैं हेतुका स्वरूप अन्यथानुपपत्ति ही श्रेष्ठ है अर तीन रूपता श्रेष्ठ नाही है । जातै तिस त्रिरूपताकै होतैं भी यथोक्तलक्षणका अभाव होतैं हेतुकै साध्य प्रति गमकपणा नाही देखिये है, सो ही कहिये है—जैसैं काहूकै पहले पाच पुत्र भये थे ते श्याम भये थे तिनिकू देखिकरि तिनिकी ज्यो ही ताकी स्त्रीकै गर्भविषै तिष्ठताकै भी तिसपुत्रपणां नामा हेतुतैं श्यामपणां साधनेंमैं तीनरूपपणा तौ संभवै है—जातै गर्भमैं तिष्ठताकै तिसके पुत्रपणां है यह तौ पक्षधर्मपणा भया। वहुरि सपक्ष अन्य पुत्रनिमैं तिसके पुत्रपणा है ही। वहुरि अन्यके पुत्रमैं गौरपणा है तिनि विपक्षनितैं व्यावृत्ति है ही। ऐसैं तीनरूप होतै भी साध्य जो श्यामपणा तिस प्रति गमकपणा नाही, गर्भमै तिष्ठता गौर भी होय तौ बाधक कहा। इहां वौद्ध कहै—जो इस हेतुमैं विपक्षतैं व्यावृत्ति नियमरूप नाही दीखै है तातै गमकपणा नाही ? ताकू कहिये—जो यह कहना भी मुग्धका विलास है, जातैं तिस विपक्षतै व्यावृत्ति कहिये न्यारापणाकै ही अविनाभावरूपपणा है, अन्य दोयरूपका सद्भाव होय अरु विपक्षतै व्यावृत्ति न होय तौ हेतुकै अपने साध्यकी सिद्धि प्रति गमकपणाकी अनिष्टि होतै सो विपक्षतै व्यवृत्ति ही हेतुका निर्बाध लक्षण करनां ।

जातैं ताका सद्भाव होतै अन्य दोयरूपकी अपेक्षा विना ही साध्य प्रति गमकपणा बनै है। इहा उदाहरण—जैसै अद्वैतवादीकै प्रमाण है जातै अपने इष्टका साधन अनिष्टका दूषणकी अन्यथा अप्राप्ति है प्रमाण विना साधन-दूषण बणै नाही। इस हेतुमै पक्षधर्मपणा नाही है सपक्षविषै अन्वय भी नाही है, केवल एक अविनाभावमात्रहीकरि साध्य प्रति गमकपणाकी प्रतीति है साध्यकूं साधै है। बहुरि बौद्धादिकनैं और भी कही है—जो पक्षधर्मपणाका अभाव होतैं भी हेतुकू गमक कहिये तौ काकके कृष्णपणातैं यह प्रासाद कहिये महल धवल है ऐसै हेतुकै भी गमकपणा आवै है, भावार्थ—कोई श्वेत महल था तापरि काक बैठा था तहा काहूनैं कह्या जो महलकू धवल कहिये है सो काकके काला-पणाकी अपक्षातै साधिये है, ऐसै कहे काकका कृष्णपणा पक्ष जो प्रासाद ताका धर्म नाही अर पक्षधर्म विना हेतुकै गमकपणा नाही। ताका समाधान आचार्य करै है—जो यह कहना भी इस ही कथन-करि निराकरण किया जातैं अन्यथानुपपत्तिका बलहीकरि पक्षधर्मरहित हेतुकै भी साधुपणा मान्या है, सो इस तेर प्रयोगमैं अन्यथानुपपत्ति नाही है। तातैं हेतुका स्वरूप अविनाभाव ही प्रधान है जाकू अन्य-थानुपपत्ति भी कहिये सो ही अगीकार करना, जातै अविनाभावकूं होतैं तीनरूपपणा न होतै भी हेतुकै साध्य प्रति गमकत्वका दर्शन है। तातै तीनरूपपणा हेतुका लक्षण नाही है जातै याकै अव्यापकपणा है, सो ही कहिये है—बौद्ध आप मानै है जो जहा सर्व पदार्थनिविषैं क्षणिक-पणा साध्य थापै है ताका सत्त्व आदि साधन थापै है ताका सपक्ष नाही है सर्वहीकू साधतै (?) पक्षमैं सर्व आय गये सपक्ष न रह्या तब तहा त्रिरू-पपणाकी हानि भई तौऊ गमकपणा मानै है। बहुरि इस ही कथनकरि नैयायिक हेतुकै पंचरूपपणा मानैं है सो भी नाही वणैं है ऐसै कह्या

जानना। पक्षधर्मपणा बहुरि सपक्षसत्वपणां सो तौ अन्वयरूप अर विपक्षतैं व्यावृत्तिपणां सो व्यतिरेकरूप, अर अबाधितविषयपणां, असत्प्रतिपक्षपणां ऐसैं पाच लक्षण हैं । तिनिकै भी अविनाभावहीका विस्तारपणां है । पंचरूपपणा अविनाभावहीका विशेष है । जो बाधितविषय है सो जाका विषय साध्य ही बाधासहित होय ताकै अविनाभावका अयोग है जाकै प्रतिपक्षीसहितपणा होय ताकी ज्यों ऐसै जानना । बहुरि साध्याभास जाका विषय ताकै असम्यक् हेतुपणा है—समीचीनहेतुपणा नांही जातैं जैसा पक्ष कह्या तैसा ताका विषयका अभाव है। तिस ही दोषकरि हेतु दोषसहित है । यातै यह निश्चय भया जो साध्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चित होय सो ही हेतु है ॥ १० ॥

आगे अविनाभावका भेद दिखावते सते सूत्र कहै हैं;—

सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ॥ ११ ॥

याका अर्थ—साध्य साधनकै लार एककाल होनेका नियम सो तौ सहभावनियम कहिये, बहुरि जहा कालभेदकरि साध्य साधन अनुक्रमतै होय सो क्रमभावनियम है। ऐसै अविनाभाव नियम दोय प्रकार है ॥११॥

आगै सहभावनियमका विषय दिखावते सते सूत्र कहै है,—

सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ॥१२॥

याका अर्थ—सहचारीनिकै जैसैं रूप रसकै एक वस्तुविषैं युगपत् रहनेका नियम है। बहुरि व्याप्यव्यापकपणाकै जैसैं वृक्षपणांकै अरु शीसूंपणाकै व्याप्यव्यापकभाव नियम है । ऐसै सूत्रविषैं सप्तमीविभक्ति करि विषय दिखाया है सो सहभावनियम जानना ॥ १२॥

आगैं क्रमभावनियमका विषय दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

पूर्वोत्तरचारिणोः कार्यकारणयोश्च क्रमभावः ॥१३॥

याका अर्थ—पूर्वोत्तरचारी कहिये पहली पीछें होय ते कृतिका नक्षत्रका उदय अर रोहिणीका उदय पूर्वोत्तरचारी है तिनिकै क्रमभाव नियम है। बहुरि कार्यकारणकै जैसें धूमकै अर अग्निकै कार्यकारणभाव है तिनिकै क्रमभाव नियम है ॥ १३ ॥

आगैं इस प्रकारका अविनाभावका ग्रहण कैसे प्रमाणकरि होय है तहा कहै है प्रत्यक्ष प्रमाणकरि तौ ग्रहण नाही जातै प्रत्यक्षका विषय तौ निकटवर्ती वस्तु है। बहुरि अनुमानकरि भी ग्रहण नाही जातैं प्रकृत अनुमानकरि ग्रहण मानिये तौ इतरेतराश्रय दूपण आवै अर अन्य अनुमानकरि मानिये तौ अनवस्था दूपण आवै। बहुरि आगम आदिका भी यह अविनाभाव विषय नाही जातै तिनिका न्यारा न्यारा विषय है सो प्रसिद्ध है। तातै अविनाभावकी काहू प्रमाणकरि प्रतिपत्ति नाही, ऐसी आशंका होतै ताका ग्राहक प्रमाणका सूत्र कहैं हैं,—

तर्कात्तन्निर्णयः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—पूर्वं कह्या है लक्षण जाका ऐसा जो तर्क प्रमाण ताका द्वितीयनाम ऊह है तातै तिस अविनाभावका निर्णय है—यह अविनाभाव ताका विषय है ॥१४॥

आगैं अत्र साध्यका लक्षण कहैं है,—

इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यम् ॥ १५ ॥

याका अर्थ—जो साधनें योग्य होय सो साध्य कहिये, तिस साध्यके तीन विशेपण है,—साधनेवालेकै इष्ट होय जाकू साधनेंका अभिप्राय होय ऐसा, बहुरि जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाध्या न जाय ऐसा, बहुरि जो पहले सिद्ध न किया होय ऐसा सो साध्य है।

इहा अन्यवादी दूषण कहै है—जो इष्टकूं साध्य कहे आसन शयन भोजन यान मैथुन इत्यादिक भी इष्ट है ते साध्य ठहरै है? ताकूं आचार्य कहै है—ऐसी कहनेवाले अतिमूर्ख है जातै विना अवसर कहनेंवालाकै अतिप्रलापीपणा है, इहा तौ साधनका अधिकार किया है जो साधनका विषय होय ताकी अपेक्षा इहा इष्ट कह्या है ॥१५॥

आगैं आपनैं कह्या जो साध्यका लक्षण ताके विशेषणनिकूं सफल करते सते प्रथम ही असिद्ध विशेषणकूं दृढ़ करनेकूं सूत्र कहै हैं,—

सन्दिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—सन्दिग्ध विपर्यस्त अव्युत्पन्न इनिकै साध्यपणा जैसैं होय इस हेतुतैं साध्यका असिद्धपदरूप विशेषण है। तहां काहू क्षेत्रमैं अंधकार आदिके निमित्ततै खड़ा पदार्थ देखि विचारै जो यह स्थाणु हैं कि पुरुष है? ताका निश्चय न होय ज्ञान दोऊ तरफ स्पर्शता रहै ऐसैं संशयकरि व्याप्त जो वस्तु सो तो संदिग्ध है। बहुरि सत्यार्थतै विपरीत वस्तुका निश्चय करनेवाला जो विपर्यय ज्ञान ताका विषयभूत जो वस्तु जैसै सीपविषैं रूपेका ज्ञान तहा रूपा आदि विपर्यस्त वस्तु है। बहुरि नाम जाति संख्या आदि विशेषनिका ज्ञान विना जो अनिर्णीत विषयरूप वस्तु निश्चय विना ग्रहण करनां जाका होय सो वस्तु अव्युत्पन्न है यह अनध्यवसायज्ञानका विषय जानना। इनि तीननिकै साध्यपणा कहनेंकै अर्थि असिद्धपदका ग्रहण है, ऐसा अर्थ जानना॥१६॥

आगैं अत्र इष्ट अर अबाधित इनि दोऊ विशेषणनिका सफलपणां दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं मा भूदितीष्टाबाधितवचनम् ॥ १७ ॥

याका अर्थ—अनिष्टकै अर प्रत्यक्षादि प्रमाणकरि बाधितकै साध्यपणा न होय इस हेतुतैं इष्ट अर अबाधित ऐसा वचन है। अनिष्ट तौ जैसैं मीमांसककै शब्दकै अनित्यपणा है जातैं मीमांसक शब्दकूं नित्य मानैं है सो अनित्य साधै तौ अनिष्ट होय। बहुरि शब्दकै अश्रावणपणा कहिये श्रोत्रके सुननेमैं न आवना साधै तौ प्रत्यक्षप्रमाणकरि बाधित होय आदिशब्दकरि अनुमान-आगम लोक-स्ववचनकरि बाधित लेनें। इनिका उदाहरण अकिंचित्कर हेत्वाभासका निरूपण करसी तिसके अवसरमैं ग्रंथकार आप विस्तारकरि कहसी यातैं इहां न कहिये है ॥१७॥

इहां साध्यका असिद्धविशेषण तौ प्रतिवादी जो पीछै उत्तर कहै ताहीकी अपेक्षाकरि है जातैं पहलें पक्ष स्थापै ऐसा जो वादी ताकै प्रसिद्ध ही है, बहुरि इष्टपद है सो वादीकी अपेक्षा ही है ऐसा विशेष दिखावनेंकूं सूत्र कहैं है,—

न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः ॥ १८ ॥

याका अर्थ—जैसैं प्रतिवादीकी अपेक्षा असिद्धकूं साध्य कहिये है तैसैं ताकै इष्ट साध्य नाही है। इहां ऐसा प्रयोजन है–जो साध्यके सर्व ही विशेषण सर्वकी अपेक्षा नाही है कोई कोईकी अपेक्षा है कोई कोईकी अपेक्षा है। बहुरि असिद्धवत् ऐसा व्यतिरेककूं मुख्यकरि उदाहरण दिया है। जैसैं असिद्ध प्रतिवादीकी अपेक्षा है तैसैं इष्ट ताकी अपेक्षा नाही है ऐसा अर्थ है ॥ १८ ॥

आगैं यह काहेतै कह्या ऐसैं पूछैं सूत्र कहैं हैं,—

प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥ १९ ॥

याका अर्थ—परकूं प्रतीति उपजावनेंकूं इच्छा वक्ता ही की है तातैं इष्ट वादीहीकी अपेक्षा है। जो इच्छाका विषय ताकूं इष्ट कहिये ताकी परकूं प्रतीति कहनेंवाला ही उपजावै तातैं ताहीकी इच्छा कही ॥१९॥

आगैं पूछै है कि यह साध्य धर्म है कि इस साध्य धर्मकरि विशिष्ट धर्मी है? ऐसैं प्रश्न होतैं तिसका भेद दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्टो वा धर्मी ॥ २० ॥

याका अर्थ—धर्म है सो साध्य है, बहुरि कोई जायगां तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी है सो साध्य है। जाकै आधार साध्य वस्तु होय सो धर्मी कहिये तिसकी अपेक्षा साध्यकूं धर्म कहिये। इहां ऐसा अर्थ है—जो व्याप्तिकालकी अपेक्षाकरि तौ साध्यनामा धर्म ही साध्य है, बहुरि कोई जायगां प्रयोगकालकी अपेक्षा तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी साध्य है जातैं सूत्रके वाक्य हैं, ते उपस्कारसहित होय हैं, सूत्रमैं पद ऊपरतैं लाइये ताकूं उपस्कार कहिये सो इहां अपेक्षाका पद उपरतैं आया है। इहां भावार्थ ऐसा—जो धर्मीकै साध्यपणां तौ प्रयोग कालहीविषैं कोई ठिकानै है। जहां अनुमानकै प्रतिज्ञा हेतु आदि अवयव वचनकरि कहिये ताकूं प्रयोग कहिये। अर जहां व्याप्ति जनाइये तहां साध्य धर्महीतैं जोड़िये है साधनकै साध्य धर्महीतैं है ॥ २० ॥

आगैं साध्यधर्मकरि विशिष्ट जो धर्मी तिसका नामान्तर कहिये अन्य नाम कहैं हैं;—

पक्ष इति यावत् ॥ २१ ॥

याका अर्थ—जाकै आधार साध्य होय सो धर्मी कहिये ताहीका दूसरा नाम पक्ष भी है। इहां प्रश्न—जो धर्मधर्मीका समुदाय सो पक्ष है ऐसा पक्षका स्वरूप पुरातन आचार्य अकलंक देव आदिकरि कह्या है सो इहां

धर्मीहीकूं पक्ष कह्या सो सिद्धान्तका विरोध कैसैं न भया? ताका समाधान आचार्य करै है—जो ऐसैं नाही है जातैं साध्य जो धर्म ताके आधारपणाकरि विशेषितरूप किया जो धर्मी ताकूं पक्षवचनकरि कहतैं भी दोपका अवकाश नाही है। रचनाका विचित्रपणामात्रकरि तात्पर्यका निराकरण नाही होय है तातैं सिद्धान्तका अविरोध है॥२१॥

इहां बौधमती कहै है धर्मीकूं पक्ष कह्या सो तौ होहु परतु धर्मी है सो विकल्पबुद्धिकैविषैं वर्त्तमान ही है अर वस्तुस्वरूप नाही है जातैं "अनुमान अनुमेयका व्यवहार सर्व ही बुद्धिकरि कल्पिये है, बुद्धिकरि कल्पे जे धर्म धर्मी तिस न्यायकरि बाह्य ताका सत्व है कि नाही है ऐसी अपेक्षा नाही करै है" ऐसा हमारै कह्या है सो ताकै निराकरणके अर्थि आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

प्रसिद्धो धर्मी ॥ २२ ॥

याका अर्थ—धर्मी है सो प्रसिद्ध है कल्पित ही नाही है इहां यह अर्थ है—जो बाह्य अर अन्तरंग पदार्थका नाही है आलबनभाव जाकै ऐसी विकल्पबुद्धि है सो ही धर्मीकूं स्थापै है सो ऐसैं नाही है। जो धर्मी अवस्तुस्वरूप होय तौ तिसकै व्यापार जो साध्यसाधन ताकै भी वस्तुस्वरूपणा न बणैं जातैं अनुमानकी बुद्धिकै परपराकरि भी वस्तुकी व्यवस्थाका कारणपणाका अयोग होय। तातैं विकल्पकरि अथवा अन्यप्रमाणकरि स्थापन किया जो पर्वत आदिक सो अनुमानका विषयस्वरूप होता संता धर्मीपणाकूं पावै है। ऐसा निश्चय भया जो धर्मी प्रसिद्ध है बहुरि तिसकी प्रसिद्धि है सो कोई विषैं तौ विकल्पतैं, कोई विषैं प्रमाणतैं है, कोई विषैं प्रमाण अर विकल्प दोऊनितैं है, ऐसैं एकातकरि विकल्पविषैं ही ल्यायाकै अथवा प्रमाण प्रसिद्धहीकै धर्मीपणा नाही॥२२॥

आगै मीमांसक कहै है—जो धर्मीकी विकल्पतै प्रतिपात्ति होतै तुमारें साध्य कहा है ऐसैं आशंका होतैं सूत्र कहै हैं;—

विकल्पसिद्धे तस्मिन् सत्तेतरे साध्ये ॥ २३ ॥

याका अर्थ—तिस धर्मीकूं विकल्पसिद्ध होतैं सत्ता अर इतर कहिये असत्ता दोऊ साध्य है। इहा सुनिर्णीत कहिये भलै प्रकार निश्चय किया जो असंभवद्बाधक प्रमाण ताका वलकरि तौ सत्ता साध्य है। बहुरि योग्य जो अनुपलब्धि ताका वलकरि असत्ता साध्य है। ऐसैं सत्ता असत्ता साध्य है ऐसा वाक्यशेप लेना ॥ २३ ॥

इहां उदाहरण कहैं है;—

अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ है, इहा तो विकल्पसिद्ध जो सर्वज्ञ धर्मी ताविषैं सत्ता साध्य है। बहुरि खरविषाण नाही है, इहा गदहाकै सींग विकल्पासिद्ध धर्मी है ताविषैं असत्ता साध्य है। या सूत्रका अर्थ सुगम है सो टीकाकार टीका न लिखी है।

इहा मीमासक कहै है–जो असिद्ध है सत्ता जाकी ऐसा जो धर्मी ताविषैं सद्भाव अर अभाव अरु भावाभाव इनि तीनूंही धर्मनिकै असिद्ध विरुद्ध अनैकान्तिकपणा है तातैं अनुमानके विपयपणांका अयोग है तातैं सत्ता अर असत्ताकै साध्यपणा कैसैं बणैं। सो ही कह्या है श्लोकका अर्थ;—जो सत्ता साधिये है सो तहा हेतु भावका धर्म है तौ असिद्ध है, अर अभावका धर्म है तौ विरुद्ध है, दोऊका धर्म है तौ व्यभिचारी है सो ऐसी सत्ता कैसै साधिये? ताका समाधान आचार्य करैं

१ असिद्धो भावधर्मश्चेद् व्यभिचार्युभयाश्रतः।
विरुद्धो धर्मो भावस्य सा सत्ता साध्यते कथं ॥ १ ॥

हैं,—जो यह कहना अयुक्त है जातैं मानसप्रत्यक्षविषैं भावरूप ही धर्मीका प्राप्तपणा है । वहुरि कहै—तिस धर्मीकी सिद्धि मानसप्रत्यक्षमैं होतैं ताका सत्त्वभी आय गया तातैं अनुमान व्यर्थ है, सो ऐसैं नाही है—तिसका सत्व अगीकार भया तौ ऊपर वादी धीटपणातैं—प्रतिपक्षपणातैं अगीकार न करै तब तिसकूं सिद्ध करनेकूं अनुमानका सफलपणां है। वहुरि कहै—जो मानसप्रत्यक्षमैं आकाशका फूलकाभी सद्भावकी संभावनातैं अतिप्रसग आवै ? सो ऐसैं भी नाही है, जातैं आकाशके फूलका ज्ञानकै वाधक प्रतीतिकरि निराकरण भई है सत्ता जाकी ऐसा असत्स्वरूप वस्तु विषयपणाकरि ताकै मानसप्रत्यक्षाभासपणा है । बहुरि इहा कहै—जो ऐसैं होतैं घोडाके सींग इत्यादिककै धर्मीपणा कैसैं बणैंगा ? तौ ऐसा तर्क न करना जातैं धर्मीका प्रयोगकालविषैं वाधक प्रत्ययका उदय नाही है तातैं धर्मीका सत्त्वकी सभावना है ।] वहुरि सर्वज्ञादिक धर्मीविषै साधकप्रमाणका अभावपणाकरि सत्त्व प्रति सशय वतावै तौ संशय नाही है, सुनिश्चितासंभवद्बाधकप्रमाणपणाकरि जैसैं सुख आदिकै विषै सत्त्वका निश्चय है तैसैं सत्त्वका निश्चय है, तहा सशयका अयोग है । सुनिश्चितासंभवद्बाधकप्रमाण जाकूं कहिये जहा भलै प्रकार निश्चय किया असंभवता बाधक प्रमाण होय, भावार्थ—बाधकप्रमाण निश्चयतैं न होय ॥ २४ ॥

आगैं प्रमाणसिद्ध अर उभयसिद्ध जो धर्मी तिनिविषैं साध्य कहा है ऐसी आशंका होतै सूत्र कहैं हैं;—

प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता ॥ २५ ॥

याका अर्थ—प्रमाणसिद्ध अर प्रमाणविकल्पसिद्ध इनि दोऊ धर्मी विषैं साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता जो धर्मीपणा सो ही साध्य है ।

इहां पहले सूत्रमै 'साध्ये' ऐसा द्विवचन है तौऊ अर्थके वशतैं इहाँ एकवचन ही संबंध करना, साध्यधर्मविशिष्टता साध्या ऐसै। बहुरि प्रमाण अर उभय कहिये प्रमाण विकल्प दोऊ ऐसै दोय भातिकरि सिद्ध जो धर्मी ताविषै साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता साध्य है। दोऊ प्रकारके धर्मीविषैं जो साध्यका पूर्वस्वरूप कह्या सो ही धर्म ताकरि सहितपणां साध्य है। जहा जैसा साध्य होय तैसाहीकरि युक्त धर्मी साध्य है। इहा यह अर्थ है—जो प्रमाणकरि प्राप्त भया भी वस्तु विशिष्टधर्मके आधारपणाकरि विवादमै आवै सो साध्यपणांकूं नाही उलंघै, साध्य होय ही। ऐसै ही प्रमाण विकल्प विषै भी जोड़ि लेना ॥ २५ ॥

आगै प्रमाणसिद्ध अरु उभयसिद्ध दोऊ धर्मी अनुक्रमकरि दिखावते संते सूत्र कहै हैं;—

अग्निमानयं प्रदेशः, परिणामी शब्द इति यथा ॥२६॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है यह तौ प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध धर्मी है, बहुरि शब्द है सो परिणामी है इहां शब्द धर्मी है सो उभयसिद्ध है जो शब्द श्रवणमै आया सो तौ श्रवणप्रत्यक्ष प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध है अर अन्यदेशकालवर्त्ती शब्द विकल्पसिद्ध है। इहा अग्नि जहा साधिये है सो प्रदेश प्रत्यक्षप्रमाणकरि सिद्ध है, बहुरि शब्द है सो उभयसिद्ध है जातै अल्पज्ञानवाले पुरुषनिकरि अनिश्चित दिशा–देश–कालविषैं व्याप्त जे सर्व शब्द ते निश्चय करनेंकूं समर्थ नांही हूजिये है तौऊ तिस प्रति अनुमानका निरर्थकपणा है, अनुमान तौ अल्पज्ञ ही करै है ॥२६॥

आगै प्रयोगकालकी अपेक्षा साध्यका नियम दिखावता संता सूत्र कहै हैं;—

व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ॥ २७॥

याका अर्थ—व्याप्तिविषैं साध्य है सो धर्म ही है। याका अर्थ सुगम है यातैं टीका नाही। इहा अर्थ जिस धर्मीविषैं जो साध्य साधिये ताकूं तिस धर्मीका धर्म कहिये। ऐसा साध्य जो धर्म सो ही साधने योग्य है। व्याप्ति साध्यसाधनहीकै होय है ॥ २७॥

आगै धर्मीकै भी साध्यपणा होतै कहा दोप है, ऐसैं पूछें सूत्र कहै है;—

अन्यथा तद्घटनात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—जो धर्मीकूं साध्य करिये तौ धर्मीकै अर साधनकै व्याप्ति वणै नाही। इहा अन्यथा शब्द है सो पहले व्याप्तिविपै साध्यधर्म कह्या तिसतै विपर्यय अर्थमै है, तातै ऐसै कहना जो धर्मीकै साध्यपणा होतै व्याप्ति वणैं नाही। यह सूत्र पूर्वसूत्रका हेतुरूप है। धूमके दर्शनतै सर्व जायगा पर्वत अग्निमान है ऐसी व्याप्ति नाही करी जाय है जातै यामै प्रमाणतैं विरोध आवै है ॥ २८ ॥

आगैं बौद्धमती कहै है—जो अनुमानविषैं पक्षका प्रयोगका असभव है तातै 'प्रसिद्धो धर्मी' इत्यादि वचन अयुक्त है जातैं तिस धर्मीकै सामर्थ्यलब्धपणा सामर्थ्यतै जाणिये है, बहुरि जाणें पीछैं भी ताका वचन कहना सो पुनरुक्तताका प्रसंग आवै है, जातै ऐसा कह्या जो अर्थतै आय प्राप्त हूवा तौऊ ताका फेरि वचन कहना सो पुनरुक्त है, ऐसैं सौगतनैं पक्ष करी ताका निराकरणकूं आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

साध्यधर्माधारसन्देहापानोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—पक्ष है सो साध्य जो धर्म ताका आधार है तातैं साध्यकूं साधिये तब ऐसा सन्देह पड़ै जो कौंन जायगा इस साध्यकूं

साधिये है ताके सन्देह दूर करनेकूं जाननेमैं भी आया जो पक्ष ताका वचनकरि प्रयोग करनां। साध्य सो ही धर्म ताका आधार ताविषैं संदेह पड़ै जो अग्निकूं पर्वत आदिमै साधिये है कि महानस आदिमैं? ऐसा सन्देहका अपनोद जो दूर करना तिसकै अर्थि गम्यमान भी जो साध्यका आधार पक्ष ताका वचन कहना--प्रयोग करनां। इहां पक्षका गम्यमानपणा ऐसैं है जो साध्यसाधनकै व्याप्यव्यापकभाव दिखावनेकी अन्यथा अप्राप्ति है। साध्य साधनकै व्याप्यव्यापकभाव दिखावतैं तिसके आधारस्वरूप पक्षकूं भी जानिये है तौ ऊपरके सन्देह दूर करनेकूं पक्षका वचन कहनां युक्त है ॥ २९ ॥

आगैं याका उदाहरण कहै हैं;—

साध्यधर्मिणि साधनधर्मावबोधनाय पक्षधर्मोपसंहारवत् ॥ ३० ॥

याका अर्थ—साध्यकरि विशिष्ट जो धर्मी पर्वतादिक ताविषैं साधन धर्मका जाननेकै अर्थि जैसैं पक्षधर्मका उपसंहाररूप जो उपनय ताका प्रयोग करिये है तैसैं पक्षका भी प्रयोग करनां। साध्यकरि विशेषणरूप जो धर्मी पर्वतादिक तहां साधनधर्मके जाननेंकै अर्थि जैसै पक्षधर्मका उपसंहाररूप उपनय कहिये है जातैं पक्षधर्म जो हेतु ताका उपसंहार कहिये संक्षेप करना सो उपनय है जैसै अग्निमान् साध्यका प्रयोगविषैं धूमवान् यह्न है ऐसा उपनय कहना ताकी ज्यों पक्षका भी प्रयोग युक्त है। इहां यह अर्थ है—जो साध्यतै व्याप्त जो साधन ताकै दिखावनेंकरि तिस हेतुके आधारका जाणपणा होतैं भी नियमरूप जो धर्मी ताका संबंधीपणाकै दिखावनेकूं जैसैं उपनयका प्रयोग करिये है तैसैं साध्यकै विशिष्ट जो धर्मी ताका संबंधीपणां जनावनेकूं पक्षका भी वचन कहनां।

बहुरि किछू विशेष कहै है;—जो हेतुका प्रयोग करिये है ताका समर्थन भी अवश्य है-कहने योग्य होय है जातै विना समर्थन हेतुपणाका अयोग है, ऐसैं होतै समर्थनका प्रयोगतै ही हेतुकै सामर्थ्य सिद्धपणा होय तब हेतुका प्रयोग भी अनर्थक ठहरै है। इहा कहै—जो हेतुका प्रयोग न करिये तौ समर्थन किसका कहिये? तौ ताकू कहिये—जो पक्षका प्रयोग न करिये तौ हेतु किसका कहिये? ऐसैं यह प्रश्नोत्तर समान है। तातै कार्य, स्वभाव, अनुपलभ, ऐसै तीन भेदकरि हेतुकू कहता तथा पक्षधर्मपणा आदि तीन प्रकार हेतुकू कहकरि ताका समर्थन करता जो बौद्धमती ताकरि पक्षका प्रयोग भी अंगीकार करनें योग्य ही है। इहा भावार्थ ऐसा-जो बौद्धमती अनुमानका प्रयोग करता व्युत्पन्न पडितकै एक हेतु ही मानै है, ताकू कह्या है जो पक्षका वचन भी मानने योग्य है जातै पक्ष कहे विना साध्य जा ठिकानैं साधिये तामैं सन्देह रहै तौ पक्षके वचन विना दूर होय नाहीं। बहुरि हेतुका समर्थन बौद्ध करै है-ताकू चेत कराया जो जा हेतुका समर्थन हेतु कह्या तब पहला हेतु तौ पक्ष ही भया सो पक्षका प्रयोग निषेध किये हेतुका भी प्रयोग अनर्थक ठहरै है, समर्थन ही कहना युक्त ठहरै है। तातैं पक्षका ही वचन पहले क्यों न कहना, ऐसैं जानना ॥३०॥

आगैं इस ही अर्थके कहनेकू सूत्र कहै है,—

को वा त्रिधा हेतुमुक्त्वा समर्थयमानो न पक्षयति ॥ ३१ ॥

याका अर्थ—'को वा' कहिये वादी प्रतिवादी ऐसा कौन है जो तीन प्रकार हेतुकूं कहकरि अर ताका समर्थन करता सता तिस हेतुकू पक्ष न करै, करै ही करै। इहा 'को' ऐसा कहनेतैं वादी प्रतिवादी कोई लेना। बहुरि 'वा' शब्द है सो निश्चय अर्थमैं है, सो युक्तिकरि

पक्षप्रयोगका अवश्य भाव होते निश्चयतैं कौन पक्ष नाहीं करै है, अवश्य करै ही है। कहा करता संता? हेतुका समर्थन करता संता—हेतुकूं कह करि ही समर्थै है विना कहे नांहीं समर्थै है। इहां समर्थनका स्वरूप ऐसा—जो हेतुका असिद्धपणां आदि दोपका परिहारकरि अपनें साध्यकूं अर साधनकूं सामर्थ्यरूप प्ररूपणा करनेकू समर्थ वचन होय सो ही समर्थन है। सो हेतुके प्रयोगकै पीछैं वौद्धमतीकरि अंगीकार किया है तातै सूत्रमैं उक्त्वा' ऐसा वचन है ॥ ३१ ॥

अव इहा साख्यमती कहै है—जो पक्षका प्रयोग तौ होहु परन्तु पक्ष, हेतु, दृष्टात, भेदकरि अनुमानके तीन ही अवयव है। वहुरि मीमासक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, भेदकरि च्यार अवयवस्वरूप अनुमान है। वहुरि यौग कहिये नैयायिक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, भेदते पाच अवयवस्वरूप अनुमान है। तिनिके मतकूं निराकरण करते संते अपनें मतविषैं सिद्ध जो अनुमानके अवयव दोय तिनिहीकूं दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अनुमानके अवयव पक्ष अर हेतु ये दोय ही है अर उदाहरण नाही है। ये पक्ष अर हेतु तिनिका द्वय कहिये द्विक सो ही अनुमानके अग है अधिक नाही है। इहा एवकारकरि उदाहरण आदिका निपेध सिद्ध होतैं भी परमतके निराकरणकै आर्थै फेरि उदाहरण नांही है ऐसा वचन कह्या है ॥ ३२ ॥

आगै सो उदाहरण कहा साध्यकी प्रतिपात्तिकै अर्थि है कि हेतुकै अविनाभावके नियमकै अर्थि है कि व्याप्तिके स्मरणकै अर्थि है? ऐसै, तीन विकल्पकरि तिनिकूं दूपणरूप करते संते सूत्र कहै है;—

न हि तत्साध्यप्रतिपत्त्यङ्गं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण है सो साध्यकी जो प्रतिपत्ति ताका अंग नाही है जातै साध्यविर्पै तौ जैसा हेतु कह्या तिसहीका व्यापार है । इहा तत् कहिये उदाहरण सो साध्यकी प्रतिपत्ति कहिये साध्यका ज्ञान ताका अग—कारण नाही है ऐसा सबध करना जातैं तिस साध्यकी प्रतिपत्तिविपै यथोक्त जो साध्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चय किया हेतु तिसहीका व्यापार है ॥ ३३ ॥

आगै दूसरे विकल्पकू शोधता संता सूत्र कहैं है,—

तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः ॥ ३४ ॥

याका अर्थ—'तत्' ऐसी अनुवृत्ति लेनीं, बहुरि 'न' ऐसा निपेध की भी अनुवृत्ति लेनीं, ताकरि यह अर्थ भया—जो उदाहरण तिस साध्यकरि हेतुका अविनाभाव निश्चय करनेकै आर्थि नाही है जातैं विपक्षविर्पै बाधक प्रमाणके बलतै ही अविनाभावनिश्चयकी सिद्धि होय है ॥ ३४ ॥

बहुरि किछू विशेप कहै हैं,—जो उदाहरण तौ व्यक्तिरूप है, सामान्यके बहुत विशेप होय तिनिमैं एक विशेपकूं व्यक्ति कहिये, सो व्याप्तिकू समस्तपणैकरि कैसै गमक होय, तिस व्यक्तिविपै व्याप्तिकै आर्थि अन्य उदाहरण हेरना पडै है ताकै भी व्यक्तिरूपपणाकरि सामान्यरूप जो व्याप्ति ताका निश्चय करनेंका असमर्थपणा है यातै और

१ मुद्रित सस्कृत प्रतिमें 'वाधकप्रमाणवलादेव' इसके स्थानमें 'वाधकादेव' इतना ही पाठ है ।

और उदाहरणकी अपेक्षा होतैं अनवस्था दूषण होय है, सो ही सूत्रमैं कहैं हैं;—

व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्तरापेक्षणात् ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—निदर्शन कहिये उदाहरण सो तौ व्यक्तिरूप है जिस साध्यसाधनकै जोड़िये तहा ही लागै, बहुरि व्याप्ति है सो सामान्य करि है सर्व साध्यसाधनमैं व्यापै है, सो एक उदाहरणतैं व्याप्तिका निश्चय नाही होय तहा दूसरी जायगा उदाहरणके विषैं भी तिस व्याप्तितैं साध्यसाधन जोड़िये तब अन्य दृष्टांत चाहिये ऐसैं अन्य दृष्टांतकी अपेक्षा करनेंतैं अनवस्था होय है ॥ ३५ ॥

आगैं तीसरा विकल्पविषैं दूषण कहै है;—

नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण व्याप्तिके स्मरण कहिये यादि करनेंकै अर्थि नांही है जातैं अविनाभावस्वरूपहेतुके प्रयोग करनेंहीतै तिस व्याप्तिका स्मरण होय है। ग्रह्या है साध्यतैं संबंध जानैं ऐसा पुरुषकै हेतु दिखावनेंहीकरि व्याप्तिकी सिद्धि होय है। जानैं संबंध न ग्रह्या होय ताकै सौ दृष्टांतकरि भी स्मरण न होय जातैं स्मरण तौ पहली अनुभव होय ताहीका होय है, ऐसा भावार्थ है ॥ ३६ ॥

आगैं ऐसैं सो इस उदाहरणके प्रयोगकै साध्य पदार्थ प्रति उपयोगीपणां नांही है उलटा संशयका कारणपणा ही है ऐसैं दिखावै है;—

तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने संदेहयति ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—सो उदाहरण पर कहिये केवल कह्या हुआ साध्यके धर्मीविषैं साध्य अर साधनकूं संदेहसहित करै है। जातैं दृष्टान्तका धर्मीविषैं साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताकूं दिखावतै भी साध्यके धर्मीविषैं तिस साध्यका अर साधनका निर्णयका करनेका अशक्यपणा है ऐसा वाक्यशेष है। भावार्थ—उदाहरण कह्या हुवा साध्य साधनकूं संदेहरूप करै है ॥ ३७ ॥

आगैं इस ही अर्थकूं व्यतिरेककूं प्रधानकरि दृढ करते संते कहै हैं;—

कुतोऽन्यथोपनयनिगमने ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जो उदाहरण कहें संदेह न उपजता तौ उपनय अर निगमन इनि दोऊनिका प्रयोग काहेकूं करते। जातै यह जान्या जो उदाहरणके प्रयोगतैं संशय होय है ॥ ३८ ॥

आगै नैयायिक कहै है—जो उपनय निगमन इनि दोऊनिकै भी अनुमानका अंगपणा है, जो इनिका प्रयोग न कीजिये तौ निर्दोष साध्यकी सिद्धिका अयोग है तिसके निषेधकै अर्थि सूत्र कहैं है,—

न च ते तदङ्गे, साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—ते उपनय निगमन भी तिस अनुमानके अंग ही नाहीं हैं जातैं साध्यके धर्मीविषै हेतु अर साध्यके वचनतै संशयका निराकरण है। उपनय निगमनका स्वरूप आगैं कहसी। अर इहा एवकारकरि ऐसा जानना जो दृष्टान्त आदिके प्रयोग विना ही प्रतिज्ञा हेतुतैं ही साध्यकी सिद्धि होय है—संशय मिटि जाय है, ऐसा भावार्थ है ॥ ३९ ॥

आगैं विशेष कहैं हैं—जो दृष्टान्तादिक कहकरि भी हेतुका समर्थन अवश्य कहनां जातैं विना समर्थ्या हेतुकै अहेतुकपणां है यातैं सो समर्थन ही श्रेष्ठ है, जो हेतुस्वरूप है अथवा अनुमानका समर्थन भी होहु जातैं साध्यकी सिद्धिविषैं ताहीका उपयोग है उदाहरण आदिक अनुमानके अवयव नांहीं है, इस ही अर्थरूप कहैं हैं;—

समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात् ॥ ४० ॥

याका अर्थ—हेतुका समर्थन है सो ही श्रेष्ठ है सो हेतुरूपही है, अर यह समर्थन अनुमानका अवयव भी होहु जातैं साध्यविषैं तिसका उपयोग है—साध्य यातैं दृढ़ होय हैं। इहा सूत्रमैं पहला 'वा' शब्द है सो नियमकै अर्थि है। बहुरि दूसरा 'वा' शब्द है सो न्यारा पक्षके सूचनेंकूं है। अब शेष या सूत्रका अर्थ सुगम है ॥ ४० ॥

आगैं पूछैं हैं कि दृष्टांत आदिक विना मन्दबुद्धीनिका समझावनेंका असमर्थपणां है तातैं पक्षहेतुके प्रयोगमात्रहीकरि तिनिकै साध्यकी प्रतिपत्ति कैसैं होय, ऐसैं पूछे सूत्र कहैं हैं;—

बालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—बाल कहिये अल्पज्ञानी तिनिकै ज्ञान होनेकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव तिनिका अंगीकार होतैं भी शास्त्रहीविषैं तिनका मानना है, अर वादविषैं नांही जातैं वादविषैं इनिका उपयोग नांही प्रयोजन नांही—जातै वादके कालविषैं शिष्य समझावनें नांही, व्युत्पन्ननिहीका वादकैविषैं अधिकार है—जे न्यायविषैं प्रवीण हैं तिनिहीका वादविषैं अधिकारीपनां है ॥ ४१ ॥

आगैं बाल जे अल्पज्ञानी तिनेके समझावनेंकै अर्थि उदाहरण आदि तीन प्रयोग शास्त्रविषैं अगीकार किया, तिनि तीननिका स्वरूप दिखावैं हैं;—

दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—जा विषैं साध्य साधन ये दोय अत कहिये धर्म अन्वयकूं मुख्यकरि तथा व्यतिरेककूं मुख्यकरि प्रत्यक्ष दृष्ट होय सो दृष्टान्त है। याका अर्थ ऐसा—जो दृष्ट कहिये प्रत्यक्ष देखे हैं अन्त कहिये साध्यसाधनलक्षण धर्म जहां ऐसा दृष्टान्तशब्दका अर्थि है। सो दोय प्रकार है—अन्वयदृष्टान्त, व्यतिरेकदृष्टान्त ॥ ४२ ॥

तहां प्रथम अन्वयदृष्टान्तकूं दिखावते सन्ते सूत्र कहै है,—

साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—जा विषैं साध्यकरि व्याप्त जो साधन सो नियमरूप दिखाइए सो अन्वय दृष्टांत है। इहां व्याप्तिपूर्वकपणाकरि दिखावै ऐसा अभिप्राय है। जैसैं जहां जहां धूमसहितपणा है तहां अग्निसहितपणा, जैसें रसोईका स्थान, ऐसैं अन्वयदृष्टांत जानना ॥ ४३ ॥

आगैं दूसरा भेद दिखावै है;—

साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—जाके न होतें जो न होय सो व्यतिरेक कहिये, सो यहां प्रधान होय सो व्यतिरेक दृष्टांत है। जैसैं जहां अग्नि नाहीं तहां नियमकरि धूम नाहीं, जैसैं जलका निवास। ऐसैं व्यतिरेकदृष्टान्त जानना ॥ ४४ ॥

आगै अनुक्रममैं आया जो उपनय ताका स्वरूप निरूपण करै है;–

हेतोरुपसंहार उपनयः ॥ ४५ ॥

याका अर्थ—इहां 'पक्षे' ऐसा अध्याहार लेना, ताकरि यह अर्थ है;—जो पक्ष विषै हेतुका संक्षेप करिये सो उपनय है। धूमवान्‌पणां हेतुतैं अग्निमानपणा काहू जायगां साधै ताका दृष्टान्त कहकरि अर हेतुकूं पक्षका विशेषण करे, जैसै कहै–जो यह धूमवान है ऐसा कहना उपनय है। याकी निरुक्ति ऐसै है–'उपनीयते' कहिये फेरि उच्चारिये हेतु जा करि सो उपनय है, ऐसा जानना ॥ ४५ ॥

आगैं निगमनका स्वरूप दिखावै है;—

प्रतिज्ञायास्त निगमनम् ॥ ४६ ॥

याका अर्थ—जहां प्रतिज्ञाका उपसंहार करिये सो निगमन है। इहा उपसंहारकी अनुवृत्ति लेनी। प्रतिज्ञाकू साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टपणांकरि दिखावना। जैसैं पहले प्रतिज्ञा कहै जो यह पर्वत अग्निमान है पीछैं हेतु दृष्टान्त उपनय कहकरि फेरि फेरि प्रतिज्ञाकू सकोचकरि नियम करै जो तातै अग्निमान ही है, ऐसैं प्रतिज्ञाका संक्षेप करनां सो निगमन है ॥ ४६ ॥

आगैं अन्यवादी तर्क करै जो शास्त्रविषैं दृष्टान्त आदि कहनें ही ऐसा नियम तौ मान्या नाही तब आचार्य इहा तिनि तीननिकू कैसैं दिखाये ? ताका समाधान—जो इहा ऐसा तर्क न करना जातैं आप आचार्य इनि तीनूंनिकू अंगीकार न किये है तौऊ जिनमतके अनुसारी आचार्यनिनैं शिष्यके वशकरि प्रयोगकी परिपाटीतैं मानैं है सो प्रयोगकी परिपाटी तिनिका स्वरूप जिनिनैं न जान्या होय तिनकरि करी जाय नाही इस हेतुतै तिनिका स्वरूप भी शास्त्रविषैं कहना ही

योग्य है। ऐसैं सो अनुमान मतभेदकरि दोय अवयव, तीन अवयव, च्यार अवयव, पाच अवयवस्वरूप मानिये है सो अनुमान दोय प्रकार ही है ऐसैं दिखावते संते सूत्र कहै हैं,—

तदनुमानं द्वेधा ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—सो अनुमान दोय प्रकार है ॥ ४७ ॥

आगैं सो दोय प्रकारपणाकूं कहैं हैं;—

स्वार्थपरार्थभेदात् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—स्वार्थानुमान परार्थानुमान ऐसैं भेदकरि दोय प्रकार है। अपनी अर परकी जो अनुमानविषै अन्यथा मानि ताका दूर होना याका फल है तातैं दोय ही प्रकार है ऐसा अभिप्राय जानना ॥४८॥

आगैं स्वार्थानुमानके भेदकूं कहैं हैं,—

स्वार्थमुक्तलक्षणम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—"साधनात्साध्यविज्ञानमनुमान" ऐसा पूर्वैं अनुमानका लक्षण कह्या था सो ही स्वार्थानुमान जानना ॥ ४९ ॥

आगैं दूसरा अनुमानका भेदकूं दिखावते संते सूत्र कहै है,—

परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—तिस स्वार्थानुमानका जो अर्थ साध्यसाधन है लक्षण जाका तिसकूं जो अपना विषय करै प्रगट करै ऐसा जाका स्वभाव होय सो तदर्थपरामर्शी कहिये ऐसा जो वचन तिसतै उपज्या होय ज्ञान सो परार्थानुमान है। इहां नैयायिक कहै है—पचावयवरूप वचनात्मक परार्थानुमान प्रसिद्ध है सो इहां स्वार्थानुमानका अर्थका प्रतिपादक वचनकरि उपज्या ज्ञानकूं परार्थानुमानपणा कहता जो आचार्य सो तिस वचनकूं कैसैं ग्रहण न किया? ताका समाधान करै है—जो

ऐसैं न कहना, जातैं वचन तौ अचेतन है सो अचेतनकै साक्षात् प्रमिति जो प्रमाणका फल ताका कारणपणां नांही है, तातैं मुख्य प्रमाणपणाका अभाव है, बहुरि मुख्य अनुमानके कारणपणातैं तिसं वचनकै उपचरित अनुमानका व्यपदेश कहिये नाम कहना सो नाहीं निवारण कीजिये है ॥ ५० ॥

आगैं परार्थानुमानके वचनकै जो कह्या उपचारकरि परार्थानुमान-पणां सो ही आचार्य सूत्रकरि कहै हैं;—

तद्वचनमपि तद्धेतुत्वात् ॥ ५१ ॥

याका अर्थ—तिस परार्थानुमानका वचन है सो भी परार्थानुमान है जातैं ज्ञानरूप जो परार्थानुमान ताका कारण है। इहां ऐसा जानना–जो उपचार है सो मुख्यका अभाव होतैं प्रयोजन अर निमित्त होतैं प्रवर्त्तै है। तहां वचनकै मुख्य अनुमानपणाका तौ अभाव है अर तिसका कारणपणां है सो ही परार्थानुमानपणाविषै निमित्त है तातैं परार्थानुमानका प्रतिपादक वचन भी परार्थानुमान है ऐसा संबंध करनां, जातैं कारणविषैं कार्यका उपचार होय है। अथवा परार्थानुमानका प्रतिपादक जो वक्ता ताका अनुमान सो है कारण जाकूं ऐसा परार्थानुमानका वचन सो भी अनुमान है ऐसा संबंध करनां, इस पक्षविषैं कार्यविषैं कारणका उपचार होय है। बहुरि वचनकै अनुमानपणां कहतै प्रयोजन ऐसा जो अनुमानके प्रतिज्ञा आदि अवयव हैं तिनिका शास्त्रविषैं व्यवहार है सो ही प्रयोजन है जातैं ज्ञानस्वरूप अनुमान निरंश है अभेदरूप है। तातैं अवयवरूप भेदका व्यवहार नाहीं किया-जाय है वचनकरि अवयवनिका प्रयोगरूप व्यवहार प्रवर्तै है ॥ ५१ ॥

आगैं सो ऐसैं 'साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानं' ऐसा अनुमानका सामा-न्य लक्षण है सो ही अनुमान दोय प्रकार है ऐसैं तिसके प्रकार विस्ता-

रसहित कहकरि अब साधन है सो लक्षण कह्या ताकी अपेक्षा एक है तौऊ अतिसंक्षेपकरि भेदरूप किये दोय प्रकार हैं, ऐसें कहैं हैं;—

स हेतुर्द्वेधोपलब्ध्यनुपलब्धिभेदात् ॥ ५२ ॥

याका अर्थ—सो हेतु दोय प्रकार है; उपलब्धि अनुपलब्धि ऐसैं दोय भेदतै। याका अर्थ सुगम है। जो पदार्थ विद्यमान भावरूप ग्रहणमैं आवै सो उपलब्धि कहिये, बहुरि जो पदार्थ ग्रहणमैं नांही आवै अभावरूप सो अनुपलब्धि कहिये ॥ ५२ ॥

आगैं अन्यवादी कहै है—जो उपलब्धि है सो विधिहीका साधक है बहुरि अनुपलब्धि है सो प्रतिषेधहीका साधक है ऐसा नियम है; तहां आचार्य तिसके नियमकूं निषेध करता संता उपलब्धिकै अर अनुपलब्धिकै अविशेषकरि विधिप्रतिषेधका साधकपणा है, ऐसैं कहैं है;—

उपलब्धिर्विधिप्रतिषेधयोरनुपलब्धिश्च ॥ ५३ ॥

याका अर्थ—उपलब्धि है सो विधि अर प्रतिषेध दोऊनिकी साधक है, बहुरि अनुपलब्धि भी तैसैं ही दोऊनिकी साधक है। याका अर्थ पहले कह्या सो ही है ॥ ५३ ॥

आगैं अब उपलब्धिका भी संक्षेपकरि विरुद्ध अविरुद्ध भेदतैं दोय प्रकारपणा दिखावते संते अविरुद्ध उपलब्धिकै विधिसाध्य होतैं विस्तारतै भेद कहैं हैं;—

अविरुद्धोपलब्धिर्विधौ षोढा व्याप्यकार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरभेदात् ॥ ५४ ॥

याका अर्थ—अविरुद्धोपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध नाही ऐसी जो प्राप्ति सो विधि कहिये वस्तुका सद्भाव ताकूं साधै ऐसी छह प्रकार है। साध्यतै व्याप्यस्वरूप, साध्यका कार्य, साध्यका कारण, साध्यतैं

पूर्वैं प्रवर्तै, साध्यतैं पीछैं दीखै, साध्यकै साथि ही रहै, ऐसै छह भेद हैं। इहा सूत्रविषै समास ऐसै करना--पूर्व, उत्तर, सह, इनि तीन शब्दनिका द्वन्द्वसमासकरि पीछै चर शब्द करनां सो द्वंद्वतैं चरशब्द प्रत्येककै लगावणा, तत्र पूर्वचर, उत्तरचर, सहचर ऐसा होय। पीछैं व्याप्य आदिकरि द्वंद्व करना तातैं पूर्वोक्त अर्थ भया ॥ ५४ ॥

इहा सौगत कहिये बौद्धमती सो कहै है—विधिका साधन दोय प्रकार ही है, स्वभाव अर कार्य ऐसैं। बहुरि कारणकै तौ कार्यतैं अविनाभावका अभाव है तातैं साध्यका लिंग नाही जातैं कारण हैं ते कार्यसहित अवश्य होय नाही ऐसा वचन है। बहुरि इहा कहौगे जो—जा कारणका सामर्थ्य काहूतैं रुकै नाही ऐसा कारण है सो कार्य प्रतिगमक होय है सो ऐसा कहना न बनैगा जातैं सामर्थ्य तौ इन्द्रियगोचर नाही जो कारणमैं विद्यमान भी है तौ ताका निश्चय होय सकै नांही ? ताका समाधान आचार्य करैं है—ऐसा कहना विना विचारे है, ऐसैं दिखावनेकूं सूत्र कहै है;—

रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानामिच्छाद्भिरिष्टमेव किंचित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबंधकारणान्तरावैकल्ये ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—आस्वादमैं आया जो रस तातै तिसके उपजावनहारी फल आदि सामग्री ताका अनुमान कीजिये है। पीछै तिस अनुमानतैं रूपका अनुमान होय है ऐंसै मानता जो बौद्धमती ताकरि तानैं किछू कारणकूं हेतु मान्या ही ? जिस कारणविषै सामर्थ्यका रोकनेवाला न होय तथा सहकारी अन्यकारणका विकलपणा न होय, समस्त सहकारी आय मिलै तिस कारणकै कार्य जो साध्य ता प्रतिगमकपणा होय है, जातै पहला रूपका क्षण है सो अपना सजातीय जो

पिछलारूपका क्षणस्वरूप कार्य ताहि करता सता ही रूपतैं विजातीय जो रस तिसस्वरूप कार्यकू करै है, ऐसैं रसतैं रूपका अनुमानकूं इष्ट करता मानता जो बौद्धमती सो किस ही कारणकू हेतु इष्ट करै ही है— मानैं ही है, जातै पहला रूपका क्षण है तातैं अपना सजातीय रूपका दूसरा क्षणकै व्यभिचार नाही है, उत्तर क्षणनामा कार्यकूं उपजावै ही है। जो ऐसैं न मानैं तौ रसकै ही काल रूपकी प्राप्तिका अयोग ठहरै। बहुरि अंत्यक्षणनैं प्राप्त भया जो कारण तथा अनुकूलमात्रहीकूं नांही लिंग मानिये है। जाकरि मणिमत्र आदिकरि जाकी सामर्थ्य रुकनेंतैं तथा अन्य सहकारी कारणका सकलपणा न होनेंतैं कार्य नाहीं उपजावै तब कारणनामा हेतुकै व्यभिचारीपणा आवै। अर दूसरे क्षण कार्य प्रत्यक्ष देखिकरि कारण मानि तिस कारणतैं अनुमान करिये तब अनुमानकै अनर्थकपणा आवै। हमनैं तौ कार्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चय किया ऐसा जो छत्र आदि कारण ताकू छाया आदिका लिंगपणाकरि अगीकार किया है। जहा जाकी सामर्थ्य तौ काहूकरि रुकै नांही अर सहकारी अन्यकारणका सकलपणा होय कोई सहकारी घटता न होय ऐसा निश्चयतैं कारणकूं हेतु मान्या है सो तिस ही कारणकै लिंगपणा है, अन्य जामैं व्यभिचार दीखै सो कारण हेतु नाहीं है तातैं बौद्ध कहै सो दोष नाहीं है।

इहा भावार्थ यह—जो बौद्धमती कारणकूं तौ हेतु कहै नाही अर मानैं ऐसैं जो काहूनै अधारेमैं विजोरा आदि फलका रस चाख्या तब ताका अनुमान भया जो यह रस विजोरा आदिका है। पीछैं तिस विजोरा आदि कारणतै ताकै रूपका अनुमान किया सो ऐसे अनुमानमैं तौ कारण हेतु आया ही, अर यामैं व्यभिचार भी नाहीं। जातैं सर्व तत्वकू क्षणिक मानि ऐसैं कहै है—पहला क्षण तौ कारण है अर उत्त-

रक्षण ताका कार्य है सो पहले रूपकै क्षण पिछला रूपक्षणकूं उपजाया तैसैं ही पहले रसके क्षण पिछले रसक्षणकूं उपजाया ऐसैं दोऊ समानकाल कारण अर कार्य भये। तहां कारणतैं कार्यका अनुमान निर्व्यभिचार होय है। ऐसा नांही—जो प्रथमक्षण दूजे क्षणका अनुकूलमात्र ही कारण है जातैं इहां तिसकी सामर्थ्यका रोकनेवाला कोई नाही अर सहकारीकी घटती नांही; अथवा अन्त्यक्षणमात्र नांही जातैं कार्य न उपजै। अर अब कार्य अवश्य उपजै तब व्यभिचार काहेका? ऐसै जामैं व्यभिचार नांही सो कारण हेतु अवश्य मानना योग्य है॥५५॥

आगैं अब पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुका स्वभाव, कार्य, कारणनामा, हेतुनिविषै अन्तर्भाव नाही, तातै न्यारे ही भेद है, ऐसैं दिखावै हैं; —

न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुकै तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नाही है जातै इनिकै कालका व्यवधान है—कालका बीचिमैं अंतर है, सो जहां कालव्यवधान होय तहां तादात्म्य अर तदुत्पत्तिकी अप्राप्ति है। तादात्म्य तौ स्वभाव अर स्वभाववान्कै कहिये अर तदुत्पत्ति कार्य कारणकै कहिये। भावार्थ—साध्यसाधनकै तादात्म्यसंबंध होतै स्वभाव हेतुविषैं अंतर्भाव होय, अर तदुत्पत्तिसंबंध होतै कार्य अथवा कारणविषै अन्तर्भाव होय। सो पूर्वचर उत्तरचर हेतुकै अंतर है तातैं दोऊ ही संबध नाही, तातै स्वभाव कार्य कारणमैं इनिका अन्तर्भाव न होय, जो सहभावी होय तिनिकै ही तादात्म्य संबंध होय, अर अनंतर होय तिनिकै ही हेतु कहिये कारण अर फल कहिये कार्य ऐसा भाव होय, कालके अन्तरमैं ते दोऊ ही भाव नाही ॥ ५६ ॥

इहां तर्क करै है जो—कालका व्यवधान कहिये अंतर होतैं भी कार्यकारणभाव देखिये है जैसै जागताकी दशाका ज्ञानकै अर सोयकरि फेरि जागताकी दशाका ज्ञानकै कार्यकारणभाव है, तथा मरणकै अर पहले आवते अरिष्टकै कार्यकारणभाव है, ऐसा तर्कका परिहारकै अर्थि सूत्र कहै हैं;—

भाव्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ॥ ५७ ॥

याका अर्थ—आगामी होगा ऐसा तौ मरण अर पहले जागै था ताका अतीतज्ञान इनि दोऊनिकै मरणकै पहलै आया जो अरिष्ट अर सूता पीछै जाग्याकी अवस्थाका ज्ञान इनिकै कारणकार्यभाव नाही है। अरिष्ट तौ आवै अर मरण होय तथा नाही भी होय अर सूता जागै तब पूर्वली वात यादि आवै तथा नाही यादि आवै ॥ ५७ ॥

याहीका समर्थन करैं हैं;—

तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ—इहा 'हि' शब्द हेतु अर्थमैं है तातै यह अर्थ है जातैं तिस कारणकै सद्भाव होतै कार्यका होना है सो कार्यमै है सो कारणकै व्यापारकै आश्रय है, तातै जो पूर्वे कहे जाग्रत्दशा अर प्रबोधदशाका ज्ञान अर मरण अर अरिष्ट इनिकै तौ कारणकै अर कार्यकै कालका अतर है तहा कारणकै व्यापारका आश्रय काहेका? तातैं कार्यकारणभाव नाही है। इहा यह अर्थ—जो अन्वय व्यतिरेककरि निश्चयरूप सर्वत्र कार्यकारणभाव है सो ये दोऊ कार्य प्रति कारणकै व्यापारकी अपेक्षा लिये ही होय है जैसैं कुभकारकै कलश प्रति होय है। जो कुभकार होय तौ कलश होय न होय तौ न होय तैसैं है। सो जे अतिव्यव-

हित कालके अंतरसहित होय तिनिविषैं कारणका व्यापारका आश्रितपणा कहां ? भावार्थ—ऐसा तर्क किया—जो कोई पुरुष रात्रिकूं जागतैं कार्य विचारि सूता पीछैं प्रभात जाग्या तब जो विचाऱ्या था सो यादि आया तहां पहली अवस्थाका ज्ञान पीछली अवस्थाका ज्ञानकूं कारण भया। बहुरि मरणकै पहले अरिष्ट आवै है तिनिकूं मरण कारण है। ऐसैं कालके अंतर होतैं भी कार्यकारणभाव होय है। ताका समाधान आचार्य किया—जो ऐसैं नाही जातैं कार्य है सो कारणके व्यापारकै आश्रय है सो जिनिकै कालका अतर है तिनिकै कारणका व्यापारका आश्रय कहातैं होय। कार्य—कारणकै तौ अन्वयव्यतिरेकपणां है। जो कारण होय तौ कार्य होय ही होय, कारण न होय तौ कार्य न होय। सो जहां कालका अन्तर होय तहां कारणके व्यापारका आश्रय कार्यकै संभवै नांही, विना व्यापार कार्य होय नाही, ऐसा जाननां ॥ ५८ ॥

आगैं सहचर हेतुकै भी स्वभाव कार्य कारण हेतुनिविषै अंतर्भाव नाही है, ऐसा दिखावै है ;—

सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ॥ ५९ ॥

याका अर्थ—जे सहचारी एककाल लारा रहैं है तिनिकै भी तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नाही होय है जातैं परस्पर स्वरूपभेदकरि परिहार पाइए है अर एक काल दोऊका उत्पाद है। तातैं व्याप्यव्यापकभाव अर कार्यकारणभाव नाही है तातैं न्यारा ही हेतुपणां है। इहां यहु अभिप्राय है—परस्पर परिहारकरि जिनिका ग्रहण होय है तिनिकै तादात्म्य नांही तातैं तौ स्वभावहेतुविषैं अन्तर्भाव नाही। अर जिनिकी साथ उत्पत्ति है तिनिका कार्यविषैं तथा कारणविषैं अन्तर्भाव नाही जातैं एककाल वर्त्तैं जिनिकै कार्यकारणभाव नाही है, जैसैं गऊकै बावा दा-

हिणा सींग है तिनिकी साथ उत्पत्ति है परस्पर कार्यकारणभाव नाही तैसैं जानना । बहुरि एककाल उपजैं तिनिकै कार्यकारणभाव मानिये तौ कार्यकारणकै प्रति नियमका अभावका प्रसंग आवै । इहा एक वस्तु-विषैं दोय भाव तिष्ठैं तौऊ तिनिकै स्वरूपभेदतैं तादात्म्य न (?) कहिये, जैसैं रूप—रसमै स्वरूप भेद है अर एकवस्तुमैं दोऊ है ही । बहुरि जिनिकै साथ उत्पाद नाही ऐसे धूम अग्नि आदि तिनिकै कार्यकारण-भाव है ही । तातै सहचर न्यारा ही हेतु है ॥ ५९ ॥

आगैं अब कहे हेतुनिके उदाहरण कहैं हैं । तहा पहले क्रममैं आया जो व्याप्यनामा हेतु ताहि उदाहरणरूप करते सते कहे जे अन्वय व्य-तिरेक तिनिकू प्रधानकरि शिष्यके आशयके वशतैं कहे जे अनुमानके प्रतिज्ञादिक पाच अवयव तिनिकू दिखावै है,—

परिणामी शब्दः कृतकत्वात्, य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परि-णामी स न कृतको दृष्टो यथा वंध्यास्तनंधयः, कृत-कश्चायं, तस्मात्परिणामी ॥ ६० ॥

याका अर्थ—शब्द है सो परिणाभी है यह तौ प्रतिज्ञा है, जातैं कृतक है यह्ु हेतु है, जो कृतक है सो परिणामी देखिये है जैसैं घट है यह्ु अन्वयव्यातिपूर्वक उदाहरण है, बहुरि यह्ु शब्द कृतक है यह्ु उपनय है, तातैं परिणामी है यह्ु निगमन है । ऐसैं तौ अन्वयव्याप्ति-करि पंच अवयव दिखाये, बहुरि जो परिणामी नाही है सो कृतक नाही देखिये है जैसैं बाझका पुत्र यह्ु व्यतिरेकव्याप्तिपूर्वक उदाहरण है । अरु यह्ु शब्द कृतक है तातैं परिणामी है । ये व्यतिरेकव्याप्तिकरि दिखाये ते पाचूं ही समझनें । इहा अपनीं उत्पत्तिविषैं जो परके व्यापा-रकी अपेक्षा करै ऐसा भाव होय सो कृतक कहिये । सो ऐसा कृतक

पणां कूटस्थ जो सदाकाल एक अवस्थारूप रहै ऐसा नित्यपक्षविषैं नांही बणै है। बहुरि क्षणिक जो समय समय अन्य अन्य ही होय ताविषैं भी नांही बणैं है, तातैं परिणामीपणां होतैं ही बणै है ऐसैं आगैं कहसी। इहां परिणामीकी निरुक्ति ऐसी जो पूर्व आकारका तौ परिहार उत्तर आकारकी प्राप्ति अर दोऊमैं स्थिति ऐसा जाका लक्षण सो परिणाम, सो जाकै होय सो परिणामी कहिये। बहुरि कृतकका ऐसा स्वरूप कहनेंतैं कार्यपणांका कोई स्वरूप कहै जो स्वकारणसत्ता-समवायकूं कार्यत्व कहिये, तथा अभूत्वाभावित्वकूं कार्यत्व कहिये, तथा 'अक्रियादर्शिनोऽपि कृतबुद्ध्युत्पादकत्वं' ऐसा कहै, तथा 'कारणव्यापारानुविधायित्व' ऐसा कहै, ते सर्व निराकरण किये। कृतकका ऐसा ही अर्थ सर्वत्र जानना। ऐसै कृतकपणा हेतु है सो शब्दकै परिणामीपणांकूं साधै है, सो परिणामीपणातै व्याप्य है तातैं व्याप्यनामा हेतु भया ॥६०॥

आगै कार्यहेतुकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्याहारादेः ॥ ६१ ॥

याका अर्थ—या प्राणीविषैं बुद्धि है जातै याकै वचनादिककी प्रवृत्ति है। इहा आदि शब्दतै व्यापार आकारविशेप आदि लेनें। वचनादिकी चतुरता आदि बुद्धि विना होय नांही। ऐसै बुद्धिका कार्य वचनादिक हैं ते बुद्धिनामा कारण जो साध्य ताकूं साधैं हैं तातैं कार्य-नामा हेतु भया ॥ ६१ ॥

आगैं कारणहेतुकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र छाया छत्रात् ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—इहा छाया है जातैं छत्र देखिये है। काहू जायगां छत्र देख्या तब जाणीं जो याकै नीचै छाया भी है, जहा छत्र है तहां

छाया भी होय ही। ऐसैं छत्रनामा कारणहेतु छायानामा साध्यकूं साधै है तातै कारणहेतु भया ॥ ६२ ॥

आगै पूर्वचर हेतुकूं कहैं हैं,—

उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात् ॥ ६३ ॥

याका अर्थ—रोहिणी नक्षत्र उगिसी जातै कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिये है। इहा 'मुहूर्त्तान्ते' ऐसा सम्बंध करना जातैं ऐसा नियम है जो कृत्तिकाका उदय भये पीछैं एक मुहूर्त्तमैं रोहिणीका उदय होय है। सो पहले कृत्तिकाका उदय देख्या तब जानीं रोहिणी एक मुहूर्त्तमै अवश्य उगिसी, ऐसा पूर्वचर हेतु कृत्तिकाका उदय भया ॥६३॥

आगैं उत्तरचर लिंगकूं कहैं हैं;—

उदगाद्भरणिः प्राक्तत एव ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—भरणी नक्षत्रका उदय पहले भया जातैं कृत्तिकाका उदय देखिये है। इहा मुहूर्त्ततैं पहलै ऐसा संबध करना। काहूनै कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिकरि जान्या जो यातैं मुहूर्त्त पहले भरणीका उदयका नियम है सो वह भी उदय पहले भया है। यहु भरणीके उदय पीछैं उदय है तातैं उत्तरचर हेतु कहिये ॥ ६४ ॥

आगै सहचर लिंगकू कहैं है,—

अस्त्यत्र मातुलिंगे रूपं रसात् ॥ ६५ ॥

याका अर्थ—इस मातुलिंग कहिये विजोराकैविषैं रूप है जातैं रस है। काहूनैं अंधारेमैं मातुलिंगका रसका स्वाद लिया तब जान्या यह मातुलिंग है तामैं रूप भी है। इहा रस हेतु है सो रूपतै सहचर है। ऐसैं अविरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥ ६५ ॥

आगै विरुद्धोपलब्धिकू कहैं हैं,—

विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा ॥ ६६ ॥

याका अर्थ—साध्यतै विरुद्ध जे पदार्थ तिनिसबंधी जे व्याप्य कार्य कारण पूर्वचर उत्तरचर सहचर तिनिकी उपलब्धि है सो प्रतिषेध साध्यविषैं तथा कहिये पूर्वोक्त प्रकार ही छह भेद रूप है ॥ ६६ ॥

आगैं तहा साध्यविरुद्धव्याप्य उपलब्धिकूं कहैं हैं;—

नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—इस जायगा शीतस्पर्श नांही है जातैं उष्णपणां है, इहा शीतस्पर्श साध्य है सो प्रतिषेधरूप है तातै विरूद्ध अग्नि है तिसतैं व्याप्यस्वरूप उष्णपणा है सो शीतस्पर्शतै विरुद्ध व्याप्योपलब्धिहेतु है ॥ ६७ ॥

आगैं विरुद्ध कार्यका उपलंभ कहै हैं;—

नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—इहा शीतस्पर्श नाही है जातै धूम है। इहां भी प्रतिषेधरूप साध्य शीतस्पर्श तातै विरुद्ध अग्नि है ताका कार्य धूम है सो हेतु है शीतस्पर्शका प्रतिपेधकूं साधै है सो साध्यविरुद्धकार्योपलब्धि हेतु भया ॥ ६८ ॥

आगैं विरुद्ध कारणकी उपलब्धि कहैं है;—

नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् ॥६९॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं सुख नाही है जातैं याके हृदयमैं शल्य है। इहा सुखका विरोधी जो दुःख ताका कारण जो हृदयशल्य सो हेतु है सो सुखके प्रतिषेधकूं साधै है। सो प्रतिषेध साध्यविषैं विरुद्ध कारणोपलब्धि हेतु भया ॥ ६९ ॥

आगैं विरुद्ध पूर्वचर हेतुकूं कहैं है;—

नोदेष्यति मुहूर्तान्ते शकटं रेवत्युदयात् ॥ ७० ॥

याका अर्थ—इस मुहूर्त्तके अन्तमैं रोहिणी नाही उगैगा जातै रेवतीका उदय है। इहा रोहिणीके उदयतैं विरुद्ध जो अश्विनीका उदय ताकै पूर्वचर रेवतीका उदय हेतु है सो रोहिणीके उदयका प्रतिषेधकूं साधै है, सो विरुद्धपूर्वचर हेतु भया ॥ ७० ॥

आगै विरुद्ध उत्तरचर लिंगकूं कहै हैं;—

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—भरणी नाही उगी है मुहूर्त्ततै पहली, जातै पुष्यका उदय है। इहा भरणीके उदयतै विरुद्ध पुनर्वसुका उदय है ताकै उत्तचर पुष्यका उदय हेतु है सो भरणीका उदयका प्रतिषेधकूं साधै है, सो विरुद्ध उत्तरचर हेतु भया ॥ ७१ ॥

आगै विरुद्ध सहचर हेतुकूं कहै हैं;—

नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—या भींतिविषै परले भागका अभाव नाही है जातैं वैला एक भाग देखिये है। इहा परले भागका अभावकै विरुद्ध जो तिस परले भागका सद्भाव ताकै सहचर जो वैलाभाग ताका दर्शन सो विरुद्ध सहचर हेतु है। ऐसै विरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥७२॥

आगैं साध्यतैं अविरुद्ध जो अनुपलब्धि कहिये अप्राप्ति ताके भेद कहै हैं;—

अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात् ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—साध्यतै अविरुद्धकी अनुपलब्धि सो प्रतिषेधविषै सात प्रकार है,—स्वभाव, व्यापक, कार्य, कारण, पूर्वचर, उत्तरचर,

सहचर, इनि भेदनितैं । इहां स्वभाव आदि पदनिका द्वंद्व समास है, तिनिका अनुपलंभ ऐसै पीछे षष्ठीतत्पुरुप समास है ॥ ७३ ॥

आगैं स्वभावानुपलंभका उदाहरण कहैं हैं;—

नास्त्यत्र भूतले घटोऽनुपलब्धेः ॥ ७४ ॥

याका अर्थ—या पृथिवीतलविपैं घट नाही है जातै अनुपलब्धि है, दीखै नांही है । इहां कोई पिशाच काहूकूं दीखै नाही तथा परमाणु आदि सूक्ष्म वस्तु काहूकूं दीखैं नांही अर तिनिका नास्तित्व है नांही तातैं हेतुकै व्यभिचार आवै है तौ ताके परिहारकै आर्थि इहां उपलब्धिलक्षण प्राप्तपणा कहिये दृश्यपणा जामैं है अरु दीखै नांही है, हेतुका ऐसा विशेपणकरि लेणा । इहा केवल भूतल घटरहितस्वभाव है सो ही अनुपलब्धि है सो प्रतिपेधस्वरूप जो घट ताकै अविरुद्ध है सो घटके प्रतिषेधकूं साधै है, तातैं स्वभावानुपलंभ हेतु भया ॥ ७४ ॥

आगैं व्यापकानुपलब्धि हेतुकू कहैं हैं;—

नास्त्यत्र शिंशपा वृक्षानुपलब्धेः ॥ ७५ ॥

याका अर्थ—इस क्षेत्रमैं शीसूं नाही है जातैं वृक्षकी अनुपलब्धि है— वृक्ष दीखै नाही । इहा वृक्ष व्यापक है ताके अभाव होतैं तिसके व्याप्य शीसू है ताका भी अभाव है सो वृक्षकी अनुपलब्धि शीसूंके प्रतिषेधकूं साधै है, तातैं व्यापकानुपलब्धि हेतु है ॥ ७५ ॥

आगैं कार्यकी अनुपलब्धिकूं कहैं है;—

नास्त्यत्राप्रतिबद्धसामर्थ्योऽग्निर्धूमानुपलब्धेः ॥७६॥

याका अर्थ—इस जायगा नाही रुकै है सामर्थ्य जाका ऐसी अग्नि नाही है जातै धूमकी अनुपलब्धि है । इहा अग्निका कार्य धूम है सो अग्निका विशेषण किया जो अप्रतिबद्ध सामर्थ्य सो इस विशेषणतैं धूम-

नामा कार्यकूं अवश्य निपजावै ऐसी अग्निका प्रतिषेध है सो साध्य है । इहा धूमनामा कार्य दीखै नाही, यह हेतु अग्निके प्रतिषेधकू साधै है । तातैं कार्यानुपलब्धिनामा हेतु भया ॥ ७६ ॥

आगैं कारणका अनुपलंभकू कहै हैं;—

नास्त्यत्र धूमोऽनग्नेः ॥ ७७ ॥

याका अर्थ—इस जायगा धूम नाही है जातैं अग्नि नाही है । इहा अग्नि धूमका कारण है सो ताकी अनुपलब्धितैं धूमका प्रतिषेध साध्या है, तातै कारणानुपलंभ हेतु भया ॥ ७७ ॥

आगैं पूर्वचरकी अनुपलब्धिकू कहैं है,—

न भविष्यति मुहूर्तान्ते शकटं कृत्तिकोदयानुपलब्धेः ॥ ७८ ॥

याका अर्थ—मुहूर्त्तके अंतमैं रोहिणीका उदय न होसी जातैं कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि है, नाही दीखै है । इहा मुहूर्त्तके अंतमैं रोहिणीका उदयका प्रतिषेध साध्य है ताका कृत्तिकाके उदयका अनुपलंभ पूर्वचरानुपलब्धि हेतु है ॥ ७८ ॥

आगैं उत्तरचरकी अनुपलब्धिकू कहैं हैं;—

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्त्तात्प्राक्तत एव ॥ ७९ ॥

याका अर्थ—मुहूर्त्त पहली भरणि नाही उगी है जातैं कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि है । इहा मुहूर्त्त पहली भरणिके उदयका प्रतिषेध साध्य है ताका कृत्तिकाका उदयकी अनुपलब्धि हेतु है सो उत्तरचरानुपलब्धि हेतु भया ॥ ७९ ॥

आगै सहचरकी अनुपलब्धिका अवसर है, सो कहै है,—

नास्त्यत्र समतुलायामुन्नामो नामानुपलब्धेः ॥८० ॥

याका अर्थ—इस बराबर ताखड़ीकैविषैं डांडी एक वोर ऊंची नांही है जातै दूसरी वोर नींची डांडीकी अनुपलब्धि है। एक वोर नीचापणां एक वोर ऊंचापणा सहचर हैं तिनिमैं एकका निषेध साध्य एकका निषेध हेतु भया, सो सहचरानुपलब्धि हेतु है ॥८०॥

आगैं विरुद्ध कार्य आदिककी अनुपलब्धि विधि विषैं संभवै है ताके भेद तीन ही हैं, तिनिकूं दिखावनेकूं कहैं हैं;—

विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् ॥ ८१ ॥

याका अर्थ—साध्यतैं विरुद्धकी अनुपलब्धि सो विधिसाध्यविषैं तीन प्रकार है; विरुद्धकार्यानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कार्यका अभाव, बहुरि विरुद्धकारणानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कारणका अभाव, बहुरि विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका स्वभावका अभाव, इनि भेदनितैं ॥ ८१ ॥

आगैं तिनिमैं विरुद्धकार्यानुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः ॥ ८२ ॥

याका अर्थ;—इस प्राणीविषैं रोगका विशेष है जातैं नीरोग चेष्टा कि याविषैं अनुपलब्धि है। इहां व्याधिविशेषका सद्भाव साध्य है तिसतैं विरोधी व्याधिविशेषका अभाव है ताका कार्य नीरोग चेष्टा ताकी अनुपलब्धि हेतु है, सो विरुद्ध कार्यकी अनुपलब्धिनामा हेतु भया ॥८२॥

आगैं विरुद्धकारणकी अनुपलब्धिकूं कहैं हैं;—

अस्त्यत्र देहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ॥८३॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं दुःख है जातैं इष्ट संयोगका याकै अभाव है। इहां दुःखके विरोधी सुख ताका कारण इष्टसंयोग ताकी

अनुपलब्धि हेतु है सो दु·खके सद्भावकूं इष्टसयोगका अभाव साधै है, तातैं विरुद्धकारणानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८३ ॥

आगे विरुद्धस्वभावानुपलब्धिकू कहै हैं,—

अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुपलब्धेः ॥८४॥

याका अर्थ—वस्तु है सो अनेकान्तस्वरूप है जातैं एकातस्वरूपकी अनुपलब्धि है। इहा अनेकान्तात्मकका विरोधी नित्य आदि एकान्त है सो लेना बहुरि तिसका ज्ञान नाही लेना जातै एकान्तका ज्ञानकै तौ मिथ्याज्ञानरूपपणाकरि उपलभका सभव है। एकान्तका स्वरूप अवस्तुभूत है ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो वस्तुकू अनेकान्तस्वरूप साधै है, तातैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८४ ॥

आगैं पूछै है कि व्यापकविरुद्ध कार्यादिकका बहुरि परंपराकरि अविरोधी कार्यादि लिंगनिका बहुलताकरि उपलभका सभव है सो ते भी आचार्य उदाहरणरूप किये नाही? ऐसी आशंका होतै सूत्र कहै हैं;—

परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् ॥८५॥

याका अर्थ—परपराकरि जे साधन कहिये हेतु सभवते होंहि ते इनि कार्य आदि हेतुनिविषैं ही अन्तर्भाव करनें ॥ ८५ ॥

आगैं तिस ही हेतुके उपलक्षणकै अर्थि दोय उदाहरण दिखावैं है;—

अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात् ॥ ८६ ॥

याका अर्थ—इस चाकविषैं शिवक पहले हुवा है जातैं स्थास देखिये है। इहा ऐसा भावार्थ-जो कुभार चाकपरि माटीका पिंड धरि वासण वणावै है तब पिंडके आकार अनुक्रमतै करै है, तिनकी संज्ञा

ऐसी—शिवक, छत्रक, स्यास, कोश, कुसूल इत्यादि; सो इहां काहूनैं स्यास देख्या तब जान्यां जो इहां पहले शिवक भया था॥ ८६॥

सो इस हेतुकी संज्ञातौ कही अर अन्तर्भाव कौनमैं भया ऐसी आशंका होतैं कहैं हैं;

कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ ॥ ८७ ॥

याका अर्थ—यह कार्यका कार्य है सो अविरुद्ध कार्योपलब्धिविषैं अंतर्भाव करनां। इहां सूत्रविषैं 'अन्तर्भावनीयं' ऐसा उपरले सूत्रतैं संबंध करना। पहले शिवककार्य छत्रक भया ताका कार्य स्यास भया सो याकूं अविरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत करनां॥ ८७॥

आगैं दृष्टान्तद्वारकरि दूसरा उदाहरण कहैं हैं;—

नास्त्यत्र गुहायां मृगक्रीडनं मृगारिसंशब्दनात्, कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा ॥ ८८ ॥

याका अर्थ—इस पर्वतकी गुफाविषैं मृगका क्रीडन नांहीं है जातैं नाहर बोलै है। इहां कारणविरुद्ध कार्य है सो विरुद्धकार्यकी उपलब्धि-विषैं अन्तर्भूत करनां। यह सूत्र पहले सूत्रका दृष्टांतरूप है, जैसैं इहां अन्तर्भाव तैसैं पहले सूत्रमैं जाननां जातैं मृगक्रीड़ाका कारण मृग है ताका विरोधी मृगारि कहिये नाहर है तिसका कार्य संशब्दन कहिये बोलनां है सो मृगकी क्रीड़ाके अभावकूं साधै है, तातैं हेतु है। जैसैं विरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत होय है तैसैं पहले कह्या सो तिसमैं अन्तर्भूत जाननां॥ ८८॥

आगैं बाल कहिये अल्पज्ञ ताकैं ज्ञान करनेकै आर्थैं पांच अवयव-निका प्रयोग है ऐसैं कह्याथा सो जो व्युत्पन्न होय ज्ञानवान होय ——

शास्त्रविषै प्रवीण होय, तिस प्रति प्रयोगका नियम कैसै है, ऐसी आशंका होते सूत्र कहै हैं,—

व्युत्पन्नप्रयोगस्तु तथोपपत्त्याऽन्यथानुपपत्त्यैव वा ॥८९॥

याका अर्थ—न्यायशास्त्रकै विषै प्रवीण जो व्युत्पन्न ता प्रयोग कीजिये सो दोय ही प्रकार है—एक तौ तथोपपत्ति कहिये साध्य होतै ही हेतुकी उपपत्ति है, दूसरा अन्यथोपपत्ति कहिये साध्यका अभाव होतैं हेतुकी अनुपपत्ति ही है, ऐसैं दोय प्रकार है, इनिमैं एकका प्रयोग करना। इहां व्युत्पन्न प्रयोगका समास ऐसा-जो 'व्युत्पन्नका प्रयोग'ऐसै षष्ठी तत्पुरुष, तथा व्युत्पन्नकै अर्थि ऐसैं चतुर्थीतत्पुरुष ॥ ८९ ॥

आगैं तिसही अनुमानका रूप कहैं हैं,—

अग्निमानयं प्रदेशस्तथैव धूमवत्त्वोपपत्तेर्धूमवत्त्वान्यथानुपपत्तेर्वा ॥ ९० ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निमान है जातै तैसै होतैं ही धूमवानपणाकी यामैं उपपत्ति है—धूमवानपणा वर्णै है, अथवा धूमवानपणाकी अग्निमानपणा विना अनुपपत्ति है—धूमवानपणा नाही वर्णै है; ऐसैं प्रयोग करना ॥ ९० ॥

आगैं पूछै है—जो साध्यसाधनतै न्यारे ऐसे दृष्टान्त आदिककै व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति उपयोगीपणा है ये भी उपकारी है सो व्युत्पन्नकी अपेक्षा इनिका प्रयोग कैसै नाही; ऐसैं पूछैं सूत्र कहैं हैं;—

हेतुप्रयोगो हि यथा व्याप्तिग्रहणं विधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधार्यते ॥ ९१ ॥

याका अर्थ—व्युत्पन्न पुरुष हेतुका प्रयोग करै हैं ते जैसैं व्याप्ति ग्रहण होजाय तैसैं करैं हैं सो तिस व्याप्तिकूं व्युत्पन्न पुरुष तिस हेतुके

प्रयोग मात्रहीकरि अवधारण करैं हैं—निश्चय करैं है। इहा 'हि' शब्द है सो हेतु अर्थमें है तातै ऐसा अर्थ भया। जातैं तथा उपपत्ति अन्यथा अनुपपत्ति ऐसै अन्वय व्यतिरेक रूप व्याप्तिका ग्रहणकूं न उलंघि करि हेतुका प्रयोग व्युत्पन्न करै है, तातै ताकरि ही व्युत्पन्न है ते व्याप्तिका निश्चय करि ले है, दृष्टान्तादिकका किछू प्रयोजन न रह्या। दृष्टान्तादिककैं व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति अगपणा जैसैं नांही है तैसैं पहले कह आये, इहा फेरि काहेकूं कहिये ॥ ९१ ॥

आगै दृष्टान्त आदिका प्रयोग है सो साध्यकी सिद्धिकै अर्थि भी फलवान नाही है, ऐसैं कहैं है;—

तावता च साध्यसिद्धिः ॥ ९२ ॥

याका अर्थ—तावता कहिये विपक्षविषैं जाका असंभव निश्चित होय ऐसे हेतुके प्रयोगमात्र हीकरि साध्यकी सिद्धि है, दृष्टान्तादिकका प्रयोजन नांहीं ॥ ९२ ॥

आगैं इस ही कारणकरि पक्षका प्रयोग है सो भी सफल है ऐसैं दिखावते सते कहैं है;—

तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्तः ॥ ९३ ॥

याका अर्थ—जा कारणकरि पूर्वोक्त विधानही करि व्याप्तिकी प्रतिपत्ति होय तिस कारणकरि तिसका आधारका सूचन कहिये साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताके आधारके सूचनेंकै अर्थि पक्ष कह्या है। इस कहनेंकरि बौद्धमती कहै है ताका निराकरण किया, बौद्धमतीका श्लोकका[1]

ऐसैं परोक्ष प्रमाणके भेदनिविषै अनुमानका निरूपण किया।

1—ततो यदुक्तं परेण,—

तद्भावहेतुभावौ हि दृष्टान्ते तदवेदिनः।
व्याप्येते विदुषां वाच्यो हेतुरेव हि केवलः ॥ १ ॥

अर्थ—जे साध्यव्याप्त साधनकू नाही जानैं है तिनि प्रति पडितजन दृष्टान्तविषैं साध्यसाधनभाव पक्ष हेतुभाव कहैं है अर पडितकूं तौ एक हेतु ही कहनें योग्य है, ऐसें बौद्धमती कहै हैं। जो पडितनिकै तौ एक हेतु प्रयोग ही युक्त है, तिनिका निराकरण करि पक्षहेतु दोऊ प्रयोगनिका स्थापन किया है। जातै व्युत्पन्न प्रति जैसा कह्या तैसे हेतुका प्रयोग करै तौऊ पक्षके प्रयोग विना साधनकै नियमरूप आधारपणाका निश्चय न होय ॥ ९३ ॥

आगैं अनुमानका स्वरूप प्रतिपादनकरि अब अनुक्रममैं आया जो आगम ताका स्वरूपकू निरूपण करनेंकू कहैं हैं;—

आप्तवाक्यादिनिबंधनमर्थज्ञानमागमः ॥९४॥

याका अर्थ,—आप्तका वाक्य आदि है कारण जाकूं ऐसा अर्थका ज्ञान सो आगमप्रमाण है। तहा जो जिस उपदेशादि कार्यविषैं अवचक होय सो तहा आप्त है ऐसे आप्तके वचन, अर आदिशब्दकरि अगुली आदिकी समस्या लेनीं, सो है कारण जाकू ऐसा अर्थ ज्ञानकूं आगमप्रमाण कहिये। इहा इस सूत्रकी पदव्यवस्था ऐसी—जो 'अर्थज्ञान' ही कहिये तो प्रत्यक्ष आदितैं भी अर्थज्ञान होय है तिनिविषैं अतिव्याप्त होय, तातैं वाक्य निबधन कह्या। बहुरि ऐसै भी कहे हरेकके वाक्यनिबधनविषै अतिव्याप्ति होय, तातैं आप्त कह्या,। बहुरि ऐसैं भी कहे आप्तका वाक्य काननिकरि सुण्या तब श्रावण प्रत्यक्ष मतिज्ञानरूप साव्यवहारिक प्रत्यक्ष भया ताविषैं अतिव्याप्ति होय यातै अर्थज्ञान ऐसा कह्या, ऐसैं आगमका लक्षण निर्दोष है। इहा अर्थका स्वरूप तात्पर्यरूप जानना।

१—मुद्रित सस्कृत प्रतिमें 'वाक्यादि' इसके स्थानमे 'वचनादि' ऐसा पाठ है।

बहुरि आप्तशब्दके ग्रहणतैं मीमासक आगमकूं अपोरुपेय मानै हैं ताका निराकरण है। बहुरि अर्थज्ञान पदकरि अन्यापोह कहिये अन्यके निषेधकूं बौद्धमती शब्दका अर्थ मानैं हैं ताका निराकरण है, तातै अन्यापोहज्ञान आगम प्रमाण नाहीं। तथा शब्दका केई ऐसा अर्थ मानै है—जैसै काहूनै कह्या जो 'घट ल्याव' तब ताकूं सुणि ऐसा विचारै जो जल भरनेंकै आर्थे घट मंगावै है, यह वाक्य ऐसैंसूचै है, ऐसा अभिप्राय कल्पि घट ल्यावै; सो ऐसा आभिप्रायकै अर्थपणाका निराकरण है, तातैं अभिप्राय सूचन आगमप्रमाण नाही।

अब मीमासकमतका विशेप जो भट्टमत तिसका पक्षी कहै है;— जो यह आगमका लक्षण असंभवी है जातै शब्दके नित्यपणां है तातैं आप्तका कह्यापणाका अयोग है। बहुरि शब्दकै नित्यपणा है जातै याके अवयव जे अक्षर तिनिकै व्यापकपणा है सर्वदेशमै अक्षर व्याप रहे हैं, अर नित्य हैं तातैं शब्द भी नित्य ही है। बहुरि अक्षरनिका व्यापकपणां असिद्ध नांही है, एक जायगा उच्चारणरूप भया जो गौशब्दका गकारादिक अक्षर सो प्रत्यभिज्ञानकरि अन्य देशविषै भी ताका ग्रहण होय है, जो एकदेशमै सुन्या था गकारादिक सो ही अन्यदेशमैं सुन्या तब जान्यां जो सो ही यह गकारादिक है। बहुरि ताका नित्यपणां तिस प्रत्यभिज्ञानकरि ही निश्चय भया जातैं कालान्तरकैविषै भी तिस ही गकारादिकका निश्चय होय है। बहुरि इस हेतुतैं भी नित्यपणा निश्चय कीजिये जो शब्दकै संकेतकी नित्यपणा विना अप्राप्ति है सो ही कहिये है;—एक शब्दका संकेत ग्रहण किया ऐसा शब्द अन्य ही श्रवणमैं आया मानिये तौ इस विना संकेत ग्रहण किये शब्दतैं अर्थकी प्रतीतिरूप ज्ञान कैसैं होय? जो इस शब्दका यह ही अर्थ है? अरु अर्थरूप प्रतीति लिये ज्ञान होयही है। सो इहां भी संकेतमैं ऐसा जानिये है;

कि पहले सुन्यां था सो ही यह शब्द है, प्रत्यभिज्ञान इहा भी सुलभ है। इहा संकेतका उदाहरण ऐसा—जो गोशब्दका संकेत खुर ककुद लांगूल सास्नादिक सहित अर्थ विषैं है। बहुरि अक्षरनिकै अथवा शब्दकै नित्यपणा होतै सर्वपुरुषनिकरि सर्वकालमैं सुननेंका प्रसग आवै है, ऐसा भी न मानना—जातैं शब्दकी अभिव्यक्ति कहिये श्रवणमैं आवै ऐसा प्रगट होना सदाकाल नाही सभवै है। बहुरि याका असभवका कारण यहु—जो शब्दके अभिव्यजक कहिये प्रगट करनेवाले पवन हैं तिनिकै अक्षर अक्षर प्रति न्यारा न्यारा पणा है तालुवा होठ आदि सबधी पवन न्यारे न्यारे हैं सो वक्ताके प्रेरे पवन चलै तब अक्षर प्रगट होय। बहुरि ऐसा नाही जो ये पवन नाही वणै हैं जातैं प्रमाणतै पवन प्रसिद्ध है, सो ही कहिये है—जे वक्ताके मुखकै निकटदेशवर्त्ती पुरुष हैं ते तौ अपना स्पर्शनप्रत्यक्ष प्रमाणकरि शब्दके व्यजक पवननिकूं ग्रहण करैं ही हैं जानैं ही है, बहुरि वक्ताके दूरदेशवर्ती है ते मुखकै समीप तिष्ठते जे तूल कहिये रज फूफदा सूक्ष्म तिनिके चलनेंतै अनुमानरूप जानैं है। बहुरि सुननेवालाका कानके प्रदेशनिविषै शब्दके सुनने-की अन्यथा अनुपपत्तितैं अर्थापत्तिप्रमाणतै भी निश्चय कीजिये है—जो पवन शब्दकू न प्रेरै तौ श्रोताका कान ताई कैसै जाय। तातै पवनतैं शब्दके अक्षरनिकी अभिव्यक्ती होय है तातै सर्वकाल सर्वकरि नाही सुनिये है। बहुरि अभिव्यक्तिपक्षमै सर्वकरि सर्वकाल सुनेंनका प्रसंगरूप दोष बतावै तौ उत्पत्तिपक्षमैं भी ये दोष आवै हैं, भावार्थ—मीमासक शब्दकूं नित्य मानैं है अर अभिव्यक्ति सदा नाही मानैं है। ताकी पक्षमैं अनित्यपक्षकारि उत्पत्ति माननेंवाला जो नैयायिक सो दोष बतावै तौ ताकू मीमासक कहै है—जो अनित्य पक्षमैं ये ही दोष बराबर आवै हैं। सो ही कहै है—यह शब्द है सो पवन अ

आकाशका संयोग सो तौ असमवायिकारण कहिये सहकारी कारण अर आकाश समवायिकारण इनितै दिशा देश आदिका अविभाग करि उपजता होय है सो सर्व हीकरि तौ सुननेंमै न आवै, नियमरूप न्यारे न्यारे दिशा देशमै तिष्ठते पुरुपनिकरि सुनिये है। तैसै ही नित्य-पक्षमै अभिव्यज्यमान कहिये प्रकट होता सुनिये है, ऐसैं समान भया। बहुरि अभिव्यक्तिका संकरपणा भी नाही है जातै यहभी दोऊ पक्षमैं समान है। सोही कहिये है:—जैसैं तालु आदिका संयोगतै जो वर्ण जिसतैं उपजै है सो तिसहीतैं उपजै है अन्यका संयोगतै अन्य नाही करिये है, तैसे ही अन्यध्वनिका अनुसारी तालु आदि है ते अन्यध्वनिका आरंभ नाही करै है। तातैं संकरपणाका दोप वतावै तौ यहभी समान ही आवैहै। तातै उत्पत्तिपक्ष अर अभिव्यक्तिपक्षविपैं समानपणा होतैं एक ही पक्षविपै प्रश्नका अवसर नाही, ऐसैं मीमासक कहै है हमारा कहना सर्वही निश्चित है। बहुरि किछू और कहै है;—जो अक्षरनिकै अर तिनिस्वरूप जो शव्द ताकै कूटस्थस्वरूप नित्यपणां भी मति होहु तौऊ वेदकै अनादिपरंपराकरि चल्या आवनेंतैं नित्यपणां है, तातैं आगमका पौरुपेय लक्षण किया ताकै अव्यापकपणा दूपण आवै है। बहुरि यह प्रवाहकरि परपराकरि नित्यपणा है सो अप्रमाण स्वरूप नाही है, अवार भी याका कर्ता कोई दिखै नांही। बहुरि अतीत अनागत कालविपै याका कर्ताका अनुमान करावनेंवाले लिंगका अभाव है। जे साध्य साधन अतीन्द्रिय हैं तिनिका संबंध सदाकाल अतीन्द्रिय है ताकू इन्द्रियनिकरि ग्रहण करने-योग्यपणाका अभाव है, जातैं ऐसैं कह्या है जो लिंग प्रत्यक्षकरि ग्रहण होय सो ही है तिसहीतै अनुमान होय है। ग्रहण किया है सवंध जानैं ऐसे पुरुषकै एक देशके देखनेतै जो पदार्थ इन्द्रियनितै न भिड़े ऐसा

परोक्ष ताका ज्ञान होय है सो अनुमान है। बहुरि वेदके कर्ताकी अर्थापत्ति प्रमाणतैं भी सिद्धि नाही होय है जातै जाके होतैं अवश्य अन्य पदार्थ आय पड़े तिसतैं अर्थापत्ति होय सो अनन्यथाभूत अर्थका अभाव है। बहुरि उपमान प्रमाणभी वेदका कर्ताका साधक नाही जातै उपमान उपमेय दोऊ ही प्रत्यक्ष नाही। यातैं केवल अभाव प्रमाण ही रह्या सो वेदका कर्ताका अभावहीकूं साधै है। बहुरि ऐसैं नाही कहनां—जो पुरुषका सद्भावका साधना जैसैं दुःसाध्य है तैसैं याका अभावका भी साधना दु.साध्य है, यातै संशयकी आपत्ति आवै जातैं तिसके कर्त्ताका अभावके साधकप्रमाण सुलभ है। अवार काल-विषैं तौ तिसके अभावविषै प्रत्यक्ष प्रमाण साधक है। अतीत अनागत कालविषै अभावका साधक अनुमान प्रमाण है। इहा अनुमानके दोय प्रयोगके श्लोक है, तिनिका अर्थ—अतीत अनागत काल है ते वेदके कर्त्ताकरि रहित हैं जातै 'काल' ऐसा शब्दकरि कहनेंयोग्य अर्थ है जैसा अवार काल तैसे ही ते भी काल है ॥ १ ॥ बहुरि कोई पूछै वेदका पढना कैसै है? तौ ताकूं कहिये—जो वेदका पढनां है सो सर्व ही वेदके पढनेंपूर्वक है पहले पढे हैं ते अन्यकूं पढावैं है, ऐसैं ही परि-पाटी चली आवै है जातै "वेदका अध्ययन" ऐसे पदकरि वाच्य कहिये कहनें योग्य अर्थ है जैसैं अवार कोई पढ़ै है सो ऐसैं ही पढनेकी परिपाटी है ॥ २ ॥ बहुरि तैसैं ही अन्य प्रयोग कहै है,—वेद है सो

---

(१) तथा च—

अतीतानागतौ कालौ वेदकारविवर्जितौ।
कालशब्दाभिधेयत्वादिदानीन्तनकालवत् ॥ १ ॥
वेदस्याध्ययनं सर्वं तदध्ययनपूर्वकम्।
वेदाध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययनं तथा ॥ २ ॥

अपौरुषेय है जातै संप्रदायका अविच्छेद होतैं जाका कर्त्ताका स्मरण नांही, कथनी नांही, वेदके सप्रदायीकी परिपाटीमै काहूनै कर्त्ता देख्या नाही, सुन्या नांही, कह्या नाही, जैसैं आकाशका कर्त्ता काहूनैं कह्या नांही तैसैं। बहुरि अर्थापत्ति प्रमाण है ताकरि वेदके कर्त्ताका अभाव निश्चय कीजिये है जातै वेदकी प्रमाणता है लक्षण जाका ऐसा अनन्यथाभूत पदार्थका दर्शन कहिये सद्भाव देखिये है। जातैं धर्म आदि अतींद्रिय पदार्थ है विपय जाका ऐसा जो वेद ताका अल्पज्ञ पुरुपनिकरि करनेंका असमर्थपणा है। अर अतींद्रिय पदार्थका देखनेवाला पुरुपका अभाव ही है तातैं वेदका प्रमाणपणा अपौरुपेयपणाहीकूं साधै है। ऐसैं मीमासकनै अपना वेदकै अपौरुपेयपणांकूं दृढ़ किया पौरुपेय आगमकूं दूपण दिया।

अब आचार्य याका प्रत्युत्तरकी विधि करै है—प्रथम तौ जो कह्या कि अक्षरनिकै व्यापीपणाविपै अर नित्यपणां विपै प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो यह तौ असत्य है, तिसविपैं ज्ञान प्रमाण होय तौ एकवर्णका अनेक देशविपै सत्त्व होतैं खंड खंडरूप प्रतिपत्ति होय सो तौ नांही है। एकदेशमैं एकवर्ण अखंड ग्रहण होय है। दूसरे देशमैं दूसरा तिस सारिखा अखंड न्यारा ग्रहण होय है, सो जो अक्षर सर्वदेशमै व्यापक होय तौ एक ही देशमैं एकवर्णका समस्तपणांकरि ग्रहण कैसै वणैं, नाही वणै। जो ऐसै होय एक ही देशमैं अक्षर समस्तपणां करि ग्रहण होय तौ व्यापक न ठहरै, ऐसैं भी व्यापकपणा मानिये तौ घट आदिककै भी व्यापकपणाका प्रसंग आवै। ऐसैं भी कह्या जाय जो घट सर्वगत है जातैं नेत्र आदिके निकटतै अनेक देशविषैं प्रतीतिमैं आवै है। बहुरि जो कहै घटके उपजावनहारे माटीके पिंड अनेक देखिये हैं तातैं अनेकपणा ही है। तथा बड़ा घट छोटा घट

ऐसा देखिये है तौ यह तौ अक्षरनिविपै भी समान है, तहा भी वर्ण वर्ण प्रति न्यारे न्यारे तालुवा आदिक कारणके समूह तथा तीव्र मंद आदि धर्म भेदका संभवका अविरोध है। वहुरि तालुवा आदिककै अक्षरनिका व्यजकपणा आगै इहा ही निषेध करसी, तातै यह कथन इहा ही रहौ। वहुरि कहै हैं—जो अक्षरनिकै व्यापीपणा होतै भी सर्वक्षेत्रमै सर्वस्वरूपकरि प्रवृत्तिसहित हैं, तातै तुम कहो सो दोप नाही। ताकू आचार्य कहै है,—ऐसै होतै तौ सर्वथा एकपणाका विरोध आवै है जातैं देशका भेदकरि एककाल सर्वस्वरूपकरि सर्वक्षेत्रमैं प्रतीतिमैं आवै ताकै एकपणा वणै नाही, यामै प्रमाणविरोध है। ताका प्रयोग —गो शब्दका गकार आदि अक्षर हैं ते प्रत्येक अनेक ही हैं जातै एककाल भिन्न न्यारे न्यारे क्षेत्रनिविपै सर्वस्वरूपकरि जैसो उच्चारण है तैसो ही समस्तपणाकरि प्रत्येक ग्रहण होय है, जैसैं घट आदि न्यारे न्यारे देखिये हैं तैसैं। वहुरि कहै कि सामान्य पदार्थ सर्व जायगा प्रतीतिमैं आवै है अर एक है ताकरि हेतुकै व्यभिचार आवैगा, तौ इहा सो व्यभिचार नाही है, सदृश परिणामस्वरूप सामान्यकै भी अनेकपणा है। वहुरि चन्द्रमा सूर्य आदिकू एककाल अनेक क्षेत्रमै तिष्टते पुरुष पर्वत आदि अनेक प्रदेशनिमै तिष्टयापणाकरि अनेक न्यारा न्यारा देखैं हैं अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही है तिनिकरि भी व्यभिचार नाही है जातैं ते अतिदूरवर्त्ती है एकदेशमैं तिष्टैं हैं तौऊ भ्रातिके वशतै अनेक क्षेत्रमै न्यारे न्यारे तिष्टे दीखै है। सो जो भ्रान्तिरहित सत्यार्थ होय तातै भ्रातिसू दीखे तिनिकरि व्यभिचारकी कल्पना करना युक्त नाही। वहुरि जलके पात्रविषैं चन्द्रमा सूर्य आदिका प्रतिविंव न्यारा न्यारा दीखै अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही हैं, अर ते प्रतिविंव भ्रान्तिरूप भी नाही तिनिकरि भी व्यभिचार नाही है जातै चंद्रमा सूर्य आदिका

प्रकाशकी समीपताकी अपेक्षाकरि जल तैसैं ही चन्द्रमा सूर्य आदिके आकाररूप परिणमि जाय है यातैं न्यारा न्यारा प्रतिबिंब दीखैं हैं ते अनेक हैं, तातैं अनेक प्रदेशविषैं एक काल समस्तस्वरूपकरि ग्रहणमैं आवै ऐसा एक विषयका असंभाव्यमानपणातैं तिसविषैं प्रवर्त्तमान जो प्रत्यभिज्ञान सो प्रमाण नांही यह निश्चय भया। तैसैं ही नित्यपणा भी प्रत्यभिज्ञानकरि नाही निश्चय होय है जातैं नित्यपणां है सो एक वस्तुकै अनेकक्षणमैं व्यापीपणां है, सो ऐसा नित्यपणा तौ वीचिमैं—अन्तरालविषैं सत्ताका ग्रहण विना निश्चय न कह्या जाय। बहुरि प्रत्यभिज्ञानहीका बलकरि अन्तरालविषैं सत्ता न जानी जाय है—वीचिमैं सत्ताका सभव नाही सिद्ध होय है जातैं प्रत्यभिज्ञानके सादृश्यतैं भी संभवनेंका अविरोध है। बहुरि घट आदिविषै भी ऐसा प्रसंग नाही आवै है जातै ताकी उत्पत्तिविषैं अन्य अन्य माटीके पिंडस्वरूप कारणका असंभवपणांकरि अतरालविषैं सत्ताका साधनेंका समर्थपणा है, भावार्थ—पहले घटकूं देख्या पीछैं तिसहीकूं फेरि देख्या तब एकत्वप्रत्याभिज्ञान भया जो यहु घट सो ही है, तहा कहै याके अन्तरालमै सत्ता कैसैं सधी ? ताका समाधान किया है—जो अन्य अन्य मांटीके पिंडतै घट उपजै ताकी जुदी सत्ता होय, इहां अन्य माटीका पिंडतैं उपजना नाही तातैं तिसहीकी सत्ता सधी। अर शब्दविषै ऐसैं नाही—पहले शब्द सुन्या ताका कारण अन्य ही था फेरि सुन्या ताका कारण अन्य है। तातैं अपूर्व कारणनिका व्यापार संभवनेंतै अन्तरालविषै सत्ताका संभव नाही है। बहुरि जो और कह्या—संकेतकी अन्यथा अप्राप्ति है जो शब्द नित्य न होय तौ पदार्थविषैं संकेत नाही बणैं। सो ऐसा कहना भी पुरुषका स्वरूप विना जाण्यां कहै है जातैं अनित्यविषैं भी यहु जोड़नां बणैं है। सो ही कहै है—

ग्रह्या है सकेत जाका ऐसा जो दड ताका नाश होतै अव अगृहीतस-केतदंड अन्य ही ग्रहणमे आवै है । ऐसै होतै तिस अगृहीतसकेतदडतै दंडी ऐसा कहना न होय, तैसै ही ग्रहण करी है व्याप्ति जाकी ऐसे धूमका नाश होतैं अन्य धूमके देखनेंतै विना व्याप्ति ग्रहण अग्निका ज्ञानका अभाव होय । सो दंडीका व्यपदेश तथा धूमतैं अग्निका ज्ञान होय ही है, अर ते अनित्य हैं तातै अनित्यविपै सकेत होय ही है । वहुरि इहा कहै—जो दडी इत्यादिविपै तौ सदृशपणातै यह प्रतीति होय है तातै हमारी पक्षमे दोप नाही, तौ इहा शब्दविपै भी सदृशप-णातैं अर्थकी प्रतीति होतै कहा दोप है ? शब्दकूं नित्य मानि खोटा अभिप्राय क्यों करना, ऐसे मानें अन्तरालविपै अदृष्ट सत्त्वकी भी कल्पना न होय । वहुरि जो और कह्या कि—शब्दके व्यंजक पवनकै न्यारा न्यारापणा है तातै एक काल सुनना न होय है, सो भी कहना विना सीखे कह्या है,—समान एक कर्णइन्द्रियकरि ग्रहणमैं आवे, अर समान ही जाका उदात्त अनुदात्तादि धर्म, अर समान ही क्षेत्रविपै तिष्ठते विपय विपयी कहिये कर्ण इंद्रिय अर शब्द, तिनिविपैं न्यारे न्यारे पवनकरि न्यारे न्यारे ग्रहणका अयोग है एक ही काल ग्रहण चाहिये । सो ही कहै है,—श्रोत्र इन्द्रिय है सो समान क्षेत्रविपैं तिष्टता समान इन्द्रियकरि ग्रहणयोग्य समान ही जिनिका धर्म, ऐसे जे गकारादि शब्दनामा पदार्थ तिनिका ग्रहणकै अर्थि न्यारा न्यारा सस्कार करनेवाला पवनकरि संस्कार करने योग्य नाही होय है, एक ही पवन सस्कारकतैं गकारादि पदार्थका ग्राहक होय है जातैं श्रोत्र है सो इन्द्रिय है, इन्द्रिय हैं ते ऐसे ही हैं, जैसैं नेत्र इन्द्रिय है सो अंजनादिकका सस्कार एकही करि अपना सर्व विपयकूं ग्रहण करै है, तिसविपै न्यारे न्यारे अंजनादिकके सस्कार

नाही चाहै है। बहुरि शब्द हैं ते भी न्यारे न्यारे संस्कारक जे पवन तिनिकरि सस्कार करने योग्य नाही है जातैं समान इन्द्रियकरि ग्रहण करने योग्य समान धर्म स्वरूप समान क्षेत्रमैं तिष्ठे, ऐसे होतैं एककाल इंद्रियकरि सवंधरूप होय हैं जैसै घट आदि होय है। बहुरि कहै—जो उत्पत्तिपक्षमैं भी यह दोष समान है सो ऐसै नाही है जातैं माटीके पिंड अर दीपक इनिके दृष्टान्तकरि कारक व्यंजक पक्षमैं विशेषकी सिद्धि है। विद्यमान घटका माटीका पिंड तौ कारक है अर दीपक ताका व्यंजक है, परन्तु ऐसै विशेष है—जो एक घट करनेकै अर्थि लिया एक माटीका पिंड सो तौ एक ही घटकूं करै है अन्यकूं नांही करै है, अर दीपक एक घटके प्रकाशनेकै अर्थि जोया सो तिस घटकूं प्रकाशै अर अन्यकूं भी प्रकाशै। तैसैं शब्दका व्यंजक एक पवन सो एककाल प्रकाशै तब सर्व शब्दका श्रवण एककाल ही चाहिये सो नाही है। यह दूषण है सो अभिव्यक्तिपक्षमैं आवै अर उत्पत्तिपक्षमैं तौ नाही आवै। तातै बहुत कहनेकरि पूरी पड़ो—शब्दकै उत्पत्ति पक्ष ही मानना योग्य है।

बहुरि और कह्या—जो प्रवाहके नित्यपणाकरि वेदकै अपौरुषेयपणां है, तहा दोय पक्ष पूछने? शब्दमात्रकै अनादि नित्यपणा है कि केई विशिष्टशब्दनिकैं अनादि नित्यपणा है? जो कहैगा शब्दमात्रकै है तौ जे शब्द लौकिक हैं ते ही वेदके हैं, तातैं यह कहनां तौ अल्प ही भया जो वेद तौ अपौरुषेय है अर लौकिक शब्द अपौरुषेय नाही? सर्व ही शास्त्रनिकै अपौरुषेयता आवैगी। बहुरि कहैगा—जो विशिष्ट अनुक्रमरूप चले आये हैं ते ही शब्द अनादि नित्यपणाकरि कहिये है, तौ इहा भी दोय पक्ष पूछनें—ते शब्द जिनिका अर्थ जाननेंमैं आया ऐसे हैं कि जिनिका

अर्थ जाननेमै न आया ऐसे हैं? जो कहैगा—उत्तर पक्ष है अर्थ जाननेंमै न आया ऐसे है तौ तिनिकै अज्ञानस्वरूप अप्रमाणताका प्रसग आवैगा। वहुरि कहैगा आद्यका पक्ष है जो अर्थ जाननेमैं आया ऐसे हैं तौ पूछिये तिनिका व्याख्यान करनेंवाला अल्पज्ञ है कि सर्वज्ञ है? जो कहैगा—अल्पज्ञ है तौ जिनि वेदवाक्यनिका संवंध कठिन है जाननेमैं न आवै तिनिका अर्थ अन्यथा भी होय जाय तब मिथ्यात्वस्वरूप अप्रमाणपणा होय। सो ही कही है, ताका श्लोकका अर्थ—मेरा यह अर्थ है अर यह नाही है ऐसा शब्द ही तौ आप कहै नाही, पुरुप ही शब्दका अर्थ कल्पै हैं अर पुरुप है ते रागादि दोपनिकरि दूपित है। इहा विशेप ऐसा जो अल्पज्ञका कह्या अर्थमै विशेप नाही, तातै काहूनै कह्या जो वेदका वचन है "अग्निहोत्र जुहुयात् स्वर्गकामः" ताका अर्थ—ऐसा जो स्वर्गका इच्छुक पुरुप है सो अग्निहोत्रनैं होमै। तब काहूनैं कह्या—याका यह अर्थ नाही, याका अर्थ ऐसा है—जो अग्नि है ऐसा श्वानका नाम है ताका होत्र कहिये मास सो 'जुहुयात्' कहिये खाय जो स्वर्गका इच्छुक होय सो तथा अग्नि ऐसा नाम ही श्वानका है ताका होत्र कहिये मास सो खाय ऐसा भी अर्थ क्यों न होय। ये अर्थ अल्पज्ञके कहे कहिये तौ ऐसै ही सर्व ही अर्थ अल्पज्ञके कहे हैं ते प्रमाण कैसैं होहिं। अथवा यामै सशय उपजै जो याका कैसा अर्थ है तव अप्रमाणपणा आवै। वहुरि दूसरा पक्ष जो—वेद सर्वज्ञकरि जान्यां अर्थ रूप है सो ही अनादिपरपरातैं चल्या आवै है, तौ धर्म जे

१—तदुक्तम्—

अयमर्थो नायमर्थ इति शब्दा वदन्ति न।
कल्प्योऽयमर्थः पुरुषैस्ते च रागादिविप्लुताः॥१॥

यज्ञादिक तिनिविषै चोदना कहिये वेदवाक्यमैं प्रेरणा तिष्ठै है सो ही हमारै प्रमाण है, ऐसा कहना तौ वाध्या गया । बहुरि अतीन्द्रियार्थ प्रत्यक्ष करनेविषै समर्थ जो पुरुष सर्वज्ञ ताका सद्भाव होतैं तिसके वचनकै भी चोदनाकी ज्यों अर्थ निश्चय करावनेंवालापणाकरि प्रमाण-पणातैं यह वचन तौ वेदकै पुरुषका कियापणांका अभावकी सिद्धिका प्रतिबंधक होय, भावार्थ—सर्वज्ञ ठहऱ्या तव अर्थका निश्चय ताका वचनसूं होयहीगा अर वेदकूं अपौरुषेय माननां वृथा होयगा । बहुरि कहै—जो वेदका वक्ताकै अल्पज्ञपणां होतै भी यथार्थ व्याख्यानकी परं-पराकरि संप्रदायका संतानका विच्छेद नाही होनेकरि वेद सत्यार्थ ही मानिये है ? ताकूं कहिये ऐसैं नांही जातैं अल्पज्ञकै अतीन्द्रिय पदार्थनि-विषैं निःसन्देह व्याख्यानका अयोग है, जैसैं अंधाकरि खैंच्या जो अंधा ताकरि अनिष्ट देशकूं छोडि वांछित देशका मार्गविषै प्राप्त करनां वणैं नाही । बहुरि किछू विशेष कहै है—जो अनादितैं व्याख्यानकी परं-परातै चल्या आया कहै तौऊ वेदका अर्थकूं संवंधकूं ग्रहणकरि पाछैं भूलनेंतैं तथा वचनकी प्रवीणता विना औरसूं और अर्थ कहनेतैं तथा खोटे अभिप्रायतैं व्याख्यानका अन्यथा करनेंतैं निर्वाध तत्वका प्रकाश-नका अयोगतै अप्रमाणता ही होय । सो ही देखिये है;—अबारके पंडित भी ज्योतिषशास्त्रादिकविषैं रहस्य यथार्थ जानते भी खोटे अभि-प्रायतैं अन्यथा व्याख्यान करैं हैं । बहुरि केई जानते भी वचनकी प्रवीणता विना नीकैं कहै नांही जानैं ते अन्यथा उपदेश करै हैं । बहुरि केई वाच्यवाचकका संवंध भूलिकरि अयथार्थ कहैं हैं । जो ऐसैं न होय तौ वेदके वाक्यार्थविषैं भावना विधि नियोगरूप अर्थका अन्य-थापणांकरि विवाद कैसैं होय । भट्टके शिष्य तौ भावनाकूं वाक्यार्थ मानैं है । वेदान्ती विधिकूं वाक्यार्थ मानैं है । प्रभाकरवाला नियोगकूं वा-

क्यार्थ मानैं है। बहुरि मनु याज्ञवल्क्य आदि ऋषिनिकै श्रुतिका अर्थकै अनुसार स्मृतिके निरूपणविषै अन्य अन्य प्रकारपणा कैसैं होय। तातै प्रवाहपरिपाटीविषै भी वेदकैं अयथार्थपणा ही है। यातैं यह ठहरी जो अतीतानागतकालविषैं वेदका कर्त्ता नाहीं। काल शब्दवाच्यपणा हेतुकरि ऐसै कह्या सो भी अपनें मतका निर्मूल करनेंका हेतुपणाकरि विपरीत साधनतै यह्र हेतु हेत्वाभास ही है। सो ही कहिये है, इहां श्लोक है, ताका अर्थ—

अतीत अनागत काल है ते वेदके ज्ञाताकारि रहित है जातैं काल शब्दका अर्थ है जे कालशब्दकरि कहिये ते ऐसे ही हैं जैसै अबार का काल। बहुरि विशेष कहै हैं कि कालशब्दका अर्थ अतीत अनागत कालका ग्रहण होतै होय सो तिनिका ग्रहण प्रत्यक्षतैं होय नाही जातैं ते अतीत अनागत काल इन्द्रियगोचर नाही! अर अनुमानतैं तिनिका ग्रहण होतैं भी साध्यकरि तिनिका सम्बन्ध निश्चय करनेंकू नाही समर्थ हूजिये है जातैं प्रत्यक्षतैं ग्रहण किया साधनकैही साध्यका सबध मानिये है, सो है नाहीं। बहुरि मीमासक कालनामा द्रव्य भी नाही मानैं है। बहुरि कहै—जो अन्यवादी काल मानै है तिनिकी ही मानि लेकरि तिनिकू कह्या है काल वेदकर्त्ताकरि रहित है, ऐसा मानो—इनिकैं व्याप्यव्यापकभाव है, सो काल व्याप्यकू मानों हो तौ वेदकर्ताकरि रहितपणा व्यापककू भी मानों ऐसा प्रसगसाधनतै दोष नाही। ताकू कहिये—जो परकैं तौ इहां साध्य साधन कहिये वेदके कर्त्ताकरि रहितपणाकै अर कालकै व्याप्यव्यापकपणाका अभाव है। अबार भी

(१) अतितानागतौ कालौ वेदार्थज्ञविवर्जितौ।
कालशब्दभिधेयत्वादधुनातनकालवत्॥

देशान्तरविषैं वेदका कर्त्ता अष्टकदेव आदिका वौद्धमती आदिनिकैं अंगीकार है। वौद्धमती वेदका कर्त्ता अष्टकदेवकूं मानैं है। वैशेषिकमती ब्रह्माकूं मानैं है। जैनी कालासुरकूं मानैं है। बहुरि जो आरभी कह्या—वेदका अध्ययन वेदका अध्ययन पूर्वकही है इत्यादिक, सो भी विपक्ष ने पुरुपके किये शास्त्र तिनिका अध्ययन ताविषैं भी समान है। जैसैं भारतका अध्ययन है सो सर्वही गुरुके अध्ययनपूर्वक है जातै तिसके अध्ययन पद करिही वाच्य अर्थ है जैसै अबार अध्ययन कीजिये है ऐसै समान जानना। बहुरि और कह्या—जो वेदका कर्त्ताका सप्रदायमै कथन नाहीं किसीकूं यादि नाही जो फलाणे कर्त्ताका किया है ऐसा ही संप्रदाय चल्या आवै है ताका विच्छेद भी नाही हुवा। तहा कहिये—जो इस हेतुमैं जीर्णकूप आरामवन आदिकरि व्यभिचारके दूर करनेकूं सप्रदायका न होना ऐसा विशेपण किया तौऊ विशेष्य जो कर्त्ता यादि नाही ऐसा है सो विचार किये याका ही अयोग है तातैं यह हेतु नाही। यामैं तीन पक्ष पूछिये—कर्त्ताका यादिपणा वादीकै नाही है कि प्रतिवादी कै नाही है कि सर्वही कैं नांही है? जो वादिकै नाही है तौ यामै दोय पक्ष पूछिये—कर्त्ताका स्मरणका अभाववादीकूं कर्त्ता नाही दीख्या तातै है कि कर्त्ताके अभावहीतै है, जो कहै कर्त्ता दीख्या नाही तातै है तौ पिटकत्रय बौद्धका ग्रंथ है; ज्ञानपिटक, वंदनपिटक, चैत्यपिटक, तिनिकैं भी अपौरुषेयपणा आया। बौद्धकै शिष्यनिभी तिनिका कर्त्ता देख्या

---

(२) भारताध्ययनं सर्वं गुर्वध्ययनपूर्वकम्।
तदध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययनं यथा॥

इस श्लोकका अर्थ वचनिकामें लिखातो है परन्तु जैसे अन्यत्र "ताका श्लोकका अर्थ" ऐसा लिखकर बादमें लिखा है वैसे नहीं लिखा है।

नाही। अर कहै वौद्ध कर्त्ता मानैं है तातैं अपौरुषेयपणा नाही तौ इसही हेतुतैं वेदविषै अपौरुषेयपणा मति होहु। बहुरि जो कहै कर्त्ता के अभावतै है तौ जे कर्त्ताका अभाव कर्त्ताके अस्मरण तैं मानैं तौ यामैं इतरेतराश्रय दूषण आवै है, कर्त्ताका अभाव तैं तौ तिसका अस्मरण सिद्ध होय अर तिसके अस्मरणतैं तिसका अभाव सिद्ध होय। बहुरि कहै—कि प्रमाणपणाकी अन्यथा अप्राप्ति तैं तिसका अभाव सिद्ध होय है जो कर्त्ता होय तौ प्रमाणपणा न होय ऐसै इतरेतराश्रय नाही आवै है। तौ ऐसैं नाही है जातै अप्रामाणका कारण जो पुरुषविशेष ताहीका प्रामाण्यकरि निराकरण है, पुरुषमात्रकातौ निराकरण है नाही। बहुरि कहै जो अतीन्द्रिय पदार्थके देखनें वालाका अभावतैं अन्य पुरुषविशेषकै प्रमाणपणाका कारणपणाकी अप्रप्ति है यातै सर्वथा पुरुषका अभाव सिद्धही है। तौ ताकू कहिये—जो सर्वज्ञका अभाव काहे तै है? जो कहै प्रमाणपणाकी अन्यथा अप्राप्ति तैं सर्वज्ञका अभाव है तौ इतरेतराश्रयपणा है, बहुरि कहै कर्त्ताके अस्मरणतैं है तौ चक्रकनामा दूषण है। वेदविषै कर्त्ताके अस्मरणतै तौ सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, बहुरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय तब वेदकैं प्रमाणपणाकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय और जब प्रमाणापणाकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय तब कर्त्ताका अभाव सिद्ध होय तिसकू सिद्ध होतैं कर्त्ताका अस्मरण सिद्ध होय ताके सिद्ध होतैं फेरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, ऐसैं चक्रकका प्रसंग होय है। बहुरि कहै सर्वज्ञका अभाव अभावप्रमाणतैंसिद्ध होय है। तौ ताकू कहिये—जो सर्वज्ञका साधक अनुमान प्रमाणका प्रतिपादन पहले किया ही था तातै अभाव-प्रमाणके उत्थानका अयोग है जातैं पाच प्रमाण भावरूप है तिनिका अभाव होय तब अभाव प्रमाणकी प्रवृत्ति होय, ऐसै मीमासकनैं कह्या

है, ताका श्लोक[1] है ताका अर्थः—"जिस वस्तुके स्वरूपविषैं पांच प्रमाण न उपजै तहां वस्तुका अभावका ज्ञान होनेकै अर्थि अभावकै प्रमाणता है, ऐसैं कह्या है"। तातैं वादीकै तौ वेदका कर्त्ताका अस्मरण नाही वणै है। बहुरि दूजा पक्ष जो प्रतिवादीकैं है ऐसैं कहै। तौ ताकै भी नाही वणैं है जातै प्रतिवादी कर्त्ता वेदका स्मरण करैही है। बहुरि सर्वहीकैं कहै तौ भी नाही वणै है जातै वादीकैं वेदका कर्त्ताका अस्मरण है तौऊ प्रतिवादीकै स्मरण है॥ बहुरि मींमासक कहैं है—जो प्रतिवादी वेदविषै अष्टकदेवकूं आदि देकरि बहुत कर्त्ता स्मरै है, यातै स्मरणकै विवादतै प्रमाणता नाही है, तातैं सर्वकै कर्त्ताका अस्मरणही सिद्ध होय है। ताकूं कहिये—जो कर्त्ताका विशेषविषैंही विवाद है कर्त्तासामान्यविषैतो विवाद है नांही यातैं सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण असिद्ध है। बहुरि सर्व प्राणीनिके ज्ञानका विज्ञानकरि रहित जो अल्पज्ञ पुरुष सो सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण कैसै जानै। तातैं वेदविषैं अपौरुषेयपणांका स्थापनेका असमर्थपणां है। तातै आगमका लक्षण किया ताकै अव्यापकपणा नाही है। बहुरि असंभवीपणा दूषणभी नाही है पौरुषेयपणा साधनेविषैं प्रमाण बहुत है, सोही कहै है; बृहत्पंचनमस्कारनामा स्तोत्र पात्रकेसरीकृत है ताकी काव्यका[2] अर्थ;—जातै जन्ममरणसहित जे ऋषि तिनिके गोत्र आचरण आदि नाम

१—प्रमाणपञ्चकं यत्र वस्तुरूपेण जायते।
वस्तुसत्तावबोधार्थं तत्राभावप्रमाणता॥ इति

२—सजन्ममरणर्षिगोत्रचरणादिनामश्रुते—
रनेकपदसंहतिप्रनियमसन्दर्शनात्।
फलार्थिपुरुषप्रवृत्तिनिवृत्तिहेत्वात्मनां
श्रुतेश्च मनुसूत्रवत्पुरुषकर्त्तृकैव श्रुतिः॥ इति

वेदमैं कहे हैं, बहुरि अनेक पदनिका समूहरूप न्यारे न्यारे छंदरचना वेदमैं देखिये है, बहुरि फलके अर्थी जे पुरुष तिनिकी प्रवृत्ति निवृत्तिके कारण स्वरूप वेदमैं कहे है ते सुनिये है "स्वर्गका वाछक अग्निष्टोमकरि पूजै" इत्यादिक तौ प्रवृत्तिके वाक्य, बहुरि "कादा न खाइये, दारू न पीवै गऊकू पगतैं स्पर्शना नाही," इत्यादि निवृत्तिके वचन वेदमैं हैं जैसैं मनु ऋषिके सूत्रमै हैं तैसैं, तातैं वेद है सो पुरुषका ही किया है। ऐसा भी वचन हमारे आचार्यनिका है। बहुरि अपौरुषेयपणा वेदकै होतै भी प्रमाणता नाही बणै है जातै प्रमाणपणाका कारण जे गुण तिनिका वेदविषै अभाव है। बहुरि मीमासक कहै है—जो गुणनिकरि किया ही तौ प्रमाणपणा नाही, दोषका अभावकरि भी प्रमाणपणा है, सो दोषका आश्रय पुरुष है ताकै कर्त्तापणाका अभाव होतै भी वेदकै प्रमाणपणा निश्चय कीजिये है, गुणके सद्भावहीतै नाही है सो ही हमारे कही है ताका श्लोकका अर्थ—शब्दकै विषै दोष उपजै है सो तौ वक्ताके आधीन है ऐसा निश्चय है, बहुरि कहू दोषका अभाव है सो गुणवान वक्तापणाकै आधीन है, जातैं वक्ताके गुणनिकरि दूर किये जे दोष ते फेरि शब्दमै आवै नाही, बहुरि यह पक्ष समीचीन है जो वक्ताका अभावकरि तिस वक्ताकै आश्रय जे दोष ते शब्दमैं न होंहि। ताका समाधान आचार्य करै है—जो यह कहना भी अयुक्त है जातै हमारा अभिप्राय मीमासकनै जाण्या नाही, जातै हमनैं तौ वक्ताकै अभाव होतै वेदकै प्रमाणपणाका अभाव है ऐसैं कह्या

(१) शब्दे दोषोद्भवस्तावद्वक्त्राधीन इति स्थितम्।
तदभावः क्वचित्तावद्गुणवद्वक्तृकत्वतः॥ १॥
तद्गुणैरपकृष्टानां शब्दे संक्रांत्यसंभवात्।
यद्वा वक्तुरभावेन न स्युर्दोषा निराश्रयाः॥ २॥

नाही। हमनैं तौ ऐसैं कह्या है—जो वेदके व्याख्यान करनेवालेनिकै अतीन्द्रिय पदार्थनिका देखनां आदि गुणानिका अभाव होतै दोषनिका अभाव नाही, तातैं वेदविषै भी दोषानिका सद्भाव आवै, तब प्रमाणपणाका निश्चय नाही, ऐसै कहैं हैं। तातैं अपौरुषेयपणा होतैं भी वेदकै प्रमाणपणाका निश्चयका अयोग है। तातैं इस अपौरुषेयपणां रूप वेद करि हमारा आगमके लक्षणकै अव्यापीपणां अर असभवीपणा नांही है। यातै बहुत कहनेंकरि पूरी पड़ो ॥ ९४ ॥

आगैं बौद्धमती कहै है जो शब्दकै अर अर्थकैं संबंधका अभाव है तातै शब्द अन्यका निषेधमात्र कहनेवाला है, नाम जाति गुण क्रिया आदि स्वरूप शब्दका अर्थ नाही है तातै शब्दकै आप्तप्रणीतपणां होतै भी यातैं सत्य अर्थका ज्ञान कैसैं होय? ऐसैं तर्क होतैं सूत्र कहैं हैं;—

सहजयोग्यतासंकेतवशाद्धि शब्दादयो वस्तुप्रतिपत्तिहेतवः ॥ ९५ ॥

याका अर्थ—सहज कहिये स्वभावभूत योग्यता कहिये वस्तुस्वरूप विषै पुरुषका अभिप्रायका नियम "जैसैं पृथु बुध्नोदर आकाररूप मांटीका रूप है सो घट है" ऐसै सकेतके वशतैं 'हि' कहिये प्रकटपणैं ते पूर्वोक्त आप्तप्रणीत शब्द अर आदि शब्दतैं अंगुली आदिकी समस्या है ते वस्तुकी प्रतिपत्ति कहिये ज्ञान ताकूं कारण है ॥ ९५ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं;—

यथा मेर्वादयः सन्ति ॥ ९६ ॥

याका अर्थ—जैसैं मेरु आदिक हैं ते हैं। इहां बौधमती कहै है—जो जे ही शब्द तौ अर्थके होतैं देखे ते ही शब्द अर्थके अभाव

होतैं भी देखिये है तौ अर्थके कहनहारे शब्द कैसै? ताकूं आचार्य कहैं हैं—यह भी कहना अयुक्त है जातैं जे अर्थके कहनहारे शब्द नाही है तिनितैं अर्थके कहनहारे शब्द अन्य ही हैं, सो अन्यकै व्यभिचार होतैं अन्यकै कहना युक्त नाही, जातैं यामैं अतिप्रसग दूषण आवै है। जो ऐसैं न मानिये तो इन्द्रजालके घडेमैं धूम होतै भी अग्नि नाही ऐसैं व्यभिचार होतै पर्वत आदिके विषै धूम होय ताकै भी व्यभिचारका प्रसग ठहेरे। बहुरि जो कहै—यत्नतै परीक्षा किया कार्य कारणकूं उलघि वर्त्तै नाही, तौ ऐसैं इहा भी समान जानना, जो शब्द जिस अर्थमै होय तिसकूं ही कहै है नीकैं परीक्षा किया शब्द है सो अर्थकूं नांही व्यभिचरै हैं। ऐसैं होतै अन्यका निषेधके शब्दार्थपणाकी कल्पना है सो प्रयासमात्र ही है। बहुरि अन्यापोह कहिये अन्यका निषेध शब्दका अर्थ नाही ठहेरे है जातै प्रतीतिविरोध है प्रतीतिमै ऐसैं आवता नाही। जातैं गौ आदि शब्दके सुनने तैं यह अन्य नाही ऐसा सामान्य अभाव जो तुच्छाभाव सो तौ प्रतीतिमै आवै है नाही' तिस गऊ शब्दतै सास्नादिमान पदार्थविषै प्रतीति देखिये है, गऊतै अन्यकी बुद्धि जातै होय ऐसा तहा अन्य शब्द ल्यावना। बहुरि कहै—एक ही गऊ शब्दतै दोय अर्थकी प्रतीतिका सभावन है तातैं अन्य शब्द ल्याव नेतैं प्रयोजन नाही। ताकू कहिये—जो ऐसैं नाही, एक शब्दकै दोय विरुद्ध अर्थके कहनेका विरोध है असभव है। बहुरि विशेष कहै है—जो गऊ शब्दकै गऊतै अन्यकी व्यावृत्ति विषय होतै पहलैं तौ गऊ नाही ऐसी प्रतीति आवै है, सो ऐसै तौ बनै नाही लोककै तौ पहले ही गऊ अर्थकी प्रतीति होय है यातै अन्यापोह शब्द का अर्थ नाही। बहुरि विशेष कहै है—जो अपोह कहिये निषेध सो सामान्य है, तौ शब्दका अर्थपणाकी प्रतीतिमै लिया हुवा पर्युदास प्रतिषेधरूप

है कि प्रसज्य प्रतिषेधरूप है ? ऐसैं दोय पक्ष पूछिये। जहा विधिकी प्रधानता होय निषेध गौण होय तहा पर्युदासप्रतिषेध होय। इहां जाका निषेध करना होय ताके शब्दकै पूर्व नकार ल्यावै, जैसैं काहूनैं कह्या 'अब्राह्मणकूं ल्याव' तहा जानिये ब्राह्मणका तौ निषेध है अर अन्य वैश्यादिककी विधि है तिनिकूं वुलावै है। वहुरि जहां विधिकी तौ अप्रधानता होय अर निषेधकी प्रधानता होय तहा प्रसज्य प्रतिषेध होय इहा क्रियाकी साथ नकार ल्यावै जैसैं काहूनैं कह्या–'ब्राह्मणकू न ल्याव' तहा जानिये नांही ल्यावनेंकूं कहै है, इहां अत्यंत निषेध जानना। सो इहा अन्यापोह शब्दार्थविषैं दोय पक्ष पूछि तहा कहै—पर्युदास प्रतिषेध है तौ गऊपणा ही नामान्तरकरि कह्या जातै अभावके अभावकैं तौ अन्यभावका सद्भावपणा ही है, गऊ के अभावका अभाव कह्या तब गऊका ही अन्य नाम कह्या। वहुरि इहा पूछिये जो गऊ शब्दकै वाच्य अश्व आदिकी निवृत्ति है लक्षण जाका ऐसा अभाव कहा है। जो कहै अपना स्वलक्षण जो क्षणिक निरन्वय तिसस्वरूप है, तौ यह तौ वणै नांही जातैं स्वलक्षण तौ सकल विकल्प अर वचन इनिके गोचरतैं दूरवर्त्ती है। वहुरि कहै जो कावरापणा आदि व्यक्तिरूप है तौ यह भी नाही है, जातै बौद्ध शब्दकूं सामान्यका वाचक कहै है सो कावरापणा आदि विशेषरूप व्यक्ति तिनिकूं कहें शब्दकै सामान्यका वाचक कहनेंका अभावका प्रसग आवै है। तातैं समस्त जे गऊकी व्यक्ति तिनि विषैं अन्वयकी प्रतीतिका उपजावनहारा अर तहा न्यारा न्यारा समस्तपणाकरि व्यक्तिनिविषै वर्त्तमान ऐसा सामान्य ही गोशब्दका अर्थ है, ताहीका अपोह ऐसा नाम करतै तौ नाममात्र ही भेद होय है अर्थभेद तौ नाही। तातैं आदिका पक्ष जो पर्युदासनिषेध सो तौ श्रेष्ठ नांही। वहुरि दूसरा पक्ष जो प्रसज्यप्रतिषेध सो भी श्रेष्ठ नाही है जातै

गऊ आदि शब्दनिका प्रसज्यप्रतिषेध होय तब कोई बाह्य पदार्थ विषै प्रवृत्तिका प्रयोग होय, अर तुच्छाभाव मानिये तौ नैयायिकमतका प्रवेशका प्रसंग आवै। बहुरि विशेष कहे है—जो गऊ आदिक जे सामान्य शब्द हैं, बहुरि जे शावलेय कहिये कावरा आदिक विशेष शब्द हैं तिनिकै बौद्धके अभिप्रायकरि पर्यायशब्दपणा आवै अर्थका भेदका अभाव ठहरै जातै एक अपोह ही सर्व शब्दानिका अर्थ ठहरै, जैसे वृक्षका दूसरा नाम पादप इत्यादि पर्याय शब्द हैं तिनिका अर्थ न्यारा नाही तैसे ठहरै। बहुरि तुच्छा भाव कहिये सर्वथा अभाव ताकै विषै भेद युक्त नाही है। ससृष्टत्व, एकत्व, नानात्व भेद हैं ते तौ वस्तु ही विषै प्रतीतिमैं आवै है। बहुरि अभावविषैं भेद मानिये तौ वस्तुपणाकी प्राप्ति आवै है जातै वस्तुपणाका लक्षण भेद स्वरूप है। बहुरि निषेध करनें योग्य जे गऊ शब्दकै अश्व आदिक ते ही भये सवधी तिनिके भेदतैं अभावमै भेद कहै तौ यह वणै नाही जातै प्रमेय अभिधेय आदिक जे त्रिविरूप शब्द हैं तिनिकी प्रवृत्तिका अभावका प्रसग आवै। जातै प्रमेय आदि शब्दानिकै 'व्यवच्छेद्य' कहिये निषेध करने योग्य अप्रमेय आदि है सो ताकै अतद्रूपकरि भी अप्रमेय आदिरूपपणा होनै तिस अप्रमेय आदितै व्यवच्छेदका अयोग है, तातै तहा प्रमेय अभिधेय इत्यादि शब्द वाच्य अपोहविषै सवधीके भेदतै भेद कैसै होय। बहुरि विशेष कहै है—शावलेय कावरा आदि शब्दनिविषैं अपोह कहियं निषेध सो एक ही नाही ठहरै है जातैं व्यक्ति व्यक्ति विषैं न्यारा न्यारा ही ठहरै है। बहुरि कहै—जो कावरा आदि शब्द अपोहका भेद नाही करै है तो ताकूं कहिये—अश्व आदि शब्दभी भेद करनेंवाले मति होहु जाकै अपनें सामान्यमाही जे कावरा आदि गुण ते भेद करनेंवाले नाही, ताकै अश्व आदि भेद करनेंवाले कहना तौ अति-

साहस है, जरूरी है। वस्तुके भी संबंधीके भेदतैं भेद न पाइये तब अवस्तुकै कैसैं होय? सो ही कहिये है,—एक ही देवदत्त आदि नामा कोई पुरुष कडा कुंडल आदि पहेरे तब तिनि सबधीनिकै भेदतैं अनेकपणां होय नांही। बहुरि विपेश कहै है —संबंधीके भेदतैं भेद भी कहूं होहु परतु वस्तुभूत सामान्य मानें विना अन्यापोह है आश्रय जाका ऐसा संबंधी है सो तुमारै होनें योग्य न होय है, सो ही कहिये है —जो काबरा आदि विषैं वस्तुभूत सारूप्य कहिये समानता ताका अभाव है तौ अश्व आदिका परिहार करि तहां ही तिनिका विशेषरूप यह गऊ है ऐसा नाम अरु ज्ञान कैसैं होय तातै संबंधीका भेदकरि भेद चाहै है तौ सामान्य भी वस्तुभूत अगीकार करनों योग्य है। वहुरि विशेष कहै है—जो अपोह शब्दार्थकी पक्ष विषै संकेत ही वणैं नाहीं जातै तिस अपोह के ग्रहणका उपायका असभव है। तहां तिसका ग्रहण विपै प्रत्यक्ष प्रमाण समर्थ नांही जातै प्रत्यक्षका तौ वस्तु विपय है, अन्यापोह तौ अवस्तु है। वहुरि अनुमान भी ताका ग्रहणका उपाय नाही जातैं अनुमान तौ स्वभाव तथा कार्य वस्तुका लिंग होय तिस करि उपजै है, अपोह है सो तौ निरुपाख्य कहिये निःस्वभाव है तातैं स्वभावलिंग नाही अर अर्थक्रियाकरि रहित है तातै कार्यलिंग नाहीं॥ वहुरि विशेप कहै है—गऊ शब्दकै अगऊका अपोह कहनहारापणां होतै गऊ ऐसा शब्दका कहा अर्थ होय? जातै विना जाण्याकै विधि निशेधविपै अधिकार नाही है। जो कहै अगऊ की निवृत्ति गऊ शब्दका अर्थ है तौ इतरेतराश्रयनामा दोप आवैगा, अगऊका व्यवच्छेद तौ अगऊका निश्चय भयें होय वहुरि सो अगऊ गऊकी निवृत्तिस्वरूप है, बहुरि गऊ है सो अगऊका व्यवच्छेदरूप है ऐसैं इतरेतराश्रय दोष है। बहुरि अगऊ इस पदमैं भी गऊ ऐसा उत्तरपद है ताका अर्थ भी ऐसैं

ही विचारना, गऊकी व्यावृत्तितैं अगऊका निश्चय होय अगऊकी व्यावृत्तितैं गऊका निश्चय होय। बहुरि कहै—जो अगऊ ऐसैं इहा गोशब्दका अर्थ विधिरूप और ही है, तौ अपोहही शब्दार्थ है ऐसा कहना बिगडैगा। तातैं कही जो युक्ति ताकरि विचाऱ्या हुवा अपोहका अयोग है॥ तातैं अन्यापोह शब्दका अर्थ नाही है यह निश्चय भया जो सहज योग्यताके वशतैं शब्दादिक हैं ते वस्तुकी प्रत्तिपत्तिके कारणा है॥ ९६॥

इहा श्लोकः—

स्मृतिरनुपहतेयं प्रत्यभिज्ञानवज्ञा
प्रमितिनिरतचिन्ता लैंगिकं सङ्गतार्थम्।
प्रवचनमनवद्यं निश्चितं देववाचा
रचितमुचितवाग्भिस्तथ्यमेतेन गीतम्॥

याका अर्थ.—इस अधिकारविषै निर्बाध तौ स्मृतिप्रमाण कह्या, बहुरि आदरनेयोग्य प्रत्यभिज्ञान प्रमाण कह्या, बहुरि प्रमिति कहिये प्रमाणका फलरूप ज्ञान तिसविषैं लीन ऐसा चिंता कहिये तर्क प्रमाण कह्या, बहुरि यथार्थ है अर्थ जामै ऐमा लैंगिक कहिये अनुमान प्रमाण कह्या, बहुरि निर्दोष प्रवचन कहिये आगम प्रमाण कह्या। ये पाच परोक्षप्रमाणके भेद अकलकदेव आचार्यके वचनकरि निश्चय किया हुवा माणिक्यनदिनैं उचितवचन करि रच्या हुवा मैं अनन्तवीर्य आचार्य यहु यथार्थ गाया है॥ १॥

छप्पय

स्मृति वरनीं निरदोप तथा प्रतिभिज्ञा सांची,
तर्क यथारथरूप वहुरि अनुमा शुभ वांची।

आगम बाधारहित, देव अकलंक विचारा,
ताके वच अनुसार नंदिमाणिकनैं धारा ॥
तेही अनंतवीरज गणी भाषे भेद परोक्षके ।
देशभाषभाषी पढो गुणी सुबुद्धी नर जिसे ॥१॥

ऐसैं परीक्षामुखप्रकरणकी लघुवृत्तिकी
वचनिकाविषैं परोक्षका प्रपंच
तीसरा समुद्देश
समाप्त भया ॥

चतुर्थ-समुद्देश ।



(४)

आगै प्रमाणकी स्वरूप सख्या विप्रतिपत्तिका निराकरण करि अब प्रमाणका विषयकी विप्रतिपत्तिका निराकरणकै अर्थि सूत्र कहै है,—

सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ॥ १ ॥

याका अर्थ—सामान्य विशेष स्वरूप तिस प्रमाणका अर्थ है ताकू विषय कहिये । तहा 'तत्' शब्दकरि प्रमाण लेना ताकै ग्रहण करनें योग्य जो अर्थ सो विषय है ताका विशेषण सामान्य अर विशेष है आत्मा जाका, ऐसा है । सामान्य अर विशेषका स्वरूप आगै कहसी । इनि दोऊनिका ग्रहण तथा आत्मशब्दका ग्रहण है सो केवल सामान्यहीकै तथा केवल विशेषहीकै तथा केवल दोऊ स्वतन्त्रकै प्रमाणका विषयपणाका प्रतिषेधकै अर्थि है, न्यारे न्यारे ही केवल विषय नाही ।

तहा केई तौ सत्ता सामान्यहीकू प्रमाणका विषय मानै है तिनिमैं सत्तामात्र देह जो परम ब्रह्म ताकै तौ प्रमाणका विषयपणा का निराकरण पूर्वै सर्वज्ञके विवादविषै कियाहीथा । जातै सत्ता मात्रकै केवल सामान्यपणा है सो प्रमाणका विषय नाही । बहुरि तिस शिवाय अन्य विचारिये हैं, तहा साख्यमत वाले तौ प्रधानकू सामान्य कहै है सो प्रमाणका विषय मानै है, ताका वचनका श्लोक है, ताका अर्थ ऐसा —जो सत्त्व रजः तम ये तीन जामैं पाइये, बहुरि अविवेकी कहिये महत्

---

१ त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि ।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥

आदितैं भेदरहित बाह्यविषयस्वरूप अभिन्न एक रूप ऐसा सामान्य, बहुरि अचेतन कहिये जड, बहुरि उत्पत्तिधर्मस्वरूप, बहुरि व्यक्त कहिये प्रकट दीखै, तैसैं तौ प्रधान है; बहुरि तिसतैं विपरीत कहिये उलटा विशेषणस्वरूप अर तैसा पुरुष है ऐसैं सांख्य कहै है। ताकूं दोय पक्ष पूछिये—जो ऐसा प्रधान केवल महत् आदि कार्यके निपजावनें प्रवर्त्तै है सो काहूकूं अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है कि विना अपेक्षा ही प्रवृत्ति है? जो कहै अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है तौ किसकी अपेक्षा ले है, सो निमित्त कहनां जाकी अपेक्षा लें प्रवर्त्तै। तहा कहै—जो पुरुषका प्रयोजन ही याके प्रवर्त्तनेंमैं कारण है जातैं ऐसा कह्या है, पुरुषार्थ हेतु करि प्रधान प्रवर्त्तै है। तहां पुरुषार्थ दोय प्रकार है; एक तौ शब्द आदि विषयका ग्रहण करनां, दूजा गुण तौ स्पर्श आदि अरु पुरुषतैं अन्य जो प्रधान तिनितैं पुरुषकै भेदका देखनां, ये दोय पुरुषार्थ कहे हैं। ताकूं आचार्य पूछै है—कि यह सत्य है तैसैं प्रवर्त्तता भी प्रधान है सो पुरुषकृत किछू उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है कि नाही लेकरि प्रवर्त्तै है? जो कहैगा पुरुषकृत उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है तौ तहा पूछै है—कि सो उपकार प्रधानतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहै—भिन्न है, तौ यह उपकार प्रधानका है ऐसा नाम काहेतैं भया? जो कहै—प्रधानकै अर उपकारकै संबंध है, तौ समवायादिक संबंध सांख्य मानै ही नाही तब संबंध काहेका? बहुरि तादात्म्य कहै तौ भेद कैसैं कहिये, तादात्म्य तौ भेदका विरोधी है। बहुरि दूजा पक्ष कहै—जो उपकार प्रधानतैं अभिन्न है तौ प्रधान ही तिस पुरुष करि किया ठहऱ्या। बहुरि कहै—जो प्रधान पुरुष है उपकारकी अपेक्षा विना ही प्रवर्त्तै है तौ मुक्तात्मा प्रति भी प्रधान प्रवर्त्तै, यामैं विशेष नांही। या ही कथन करि निरपेक्षप्रवृत्ति पक्ष भी निराकरण किया, तहां भी हेतु कह्या सो ही जाननां।

बहुरि विशेष कहैं हैं—जो प्रधान कोई प्रकारकरि सिद्ध होय तौ कही बात सारी वर्णै सो प्रधानकी तौ सिद्धी ही होय नांही, काहू प्रमाण करि निश्चय किया जाय नांही। इहां सांख्य कहै है—जो कार्य जगतमैं होय है तिनिकैं एक अन्वय देखिये है तातैं कोई एक कारण करि उपजवापणां माननां, बहुरि जे महत् अहंकारादिक कार्य है तिनिके भेदनिका परिणाम देखिये है। तातैं इनि दोऊ हेतुनितैं जैसैं घट घटी सरावा आदिकैं एक माटीका अन्वय अर भेदपरिणाम देखिये है ताका कारण एक मृत्तिका दीखै है तैसें महत् आदि कार्यनिकैं एक अन्वय देखनेंतें बहुरि भेदनिका परिणाम देखनेंतें एकरूप कारण प्रधान मानिये है, ऐसैं प्रधानकी सिद्धि है। तहां आचार्य कहै है—यह चर्चा तौ सुन्दर नाही जातैं सुख दुःख मोहरूपपणा करि घट आदिकैं अन्वयका अभाव है, जडकै चेतनका अन्वय होय नाही सुखादिकका अन्वय तौ अन्तरंग तत्व ही कैं पाइये है तातैं सर्व ही कार्यनिकै तौ एक अन्वय वण्यां नांही। इहां सांख्य कहै—जो अन्तरङ्ग तत्वकै तौ सुख आदिका परिणाम नाही अर सुख दुःखादिकरूप परिणामता जो प्रधान ताके संसर्गतें आत्माकै भी ते प्रतिभासै है। तहां आचार्य कहै है—यह भी वर्णै नांही, जो प्रतिभासमान वस्तु नाही ताकैं भी संसर्गकी कल्पना कीजिये तौ तत्वकी संख्याका नियमका निश्चय नाही होय, सो कही है, ताका श्लोकका अर्थः—

जो संसर्गतें ही अविभाग कहिये अभेद मानिये जैसैं लोहके गोलाकै अर अग्निकैं है तैसें तौ सर्व वस्तुकै भेद अभेदकी व्यवस्था कहिये नियम ताका उच्छेद होय जाय, ऐसैं तत्वकी संख्याका नियम ठहरै

---

१ संसर्गादविभागश्चेदयोगोलकवह्निवत्।
भेदाभेदव्यवस्थैवमुत्पन्ना सर्ववस्तुषु ॥ १ ॥ इति।

नांही। बहुरि जो परिणामनामा हेतु कह्या सो एक स्वभावरूप मांटीतै भये जे घट घटी सरावा आदि तिनिविषै भी है, बहुरि अनेक स्वभावरूप जे पट कुटी मुकुट शकट, आदि तिनि विषै भी पाइये है, यातै हेतु अनैकान्तिक है; तातैं प्रधान जो प्रकृति ताकी सिद्धि नांही है, सो ऐसै प्रधानका ग्रहणके उपायका असंभव है। अथवा सभवै तौऊ तिसतैं कार्यकी उत्पत्तिका अयोग है। साख्यनैं जो कह्या ताकी दोय आर्या है, [1]तिनिका अर्थः—प्रकृतितैं तौ महान् होय है जो उत्पत्तितैं लगाय नाश ताई स्थायी रहै ऐसी बुद्धिकूं महान् कहै है, बहुरि तिस महान्तै अहकार होय है, बहुरि तिस अहंकारतै षोडश गण होय है (ते श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा घ्राण ये तौ पांच बुद्धि इन्द्रिय, अर पायु उपस्थ वचन पग हाथ ये पाच कर्म इन्द्रिय है, एक मन है, रूप रस गंध शब्द स्पर्श ये पाच तन्मात्रा है ऐसैं सोलह भये) बहुरि तिस षोडशगणतैं पाच जे तन्मात्रा तिनितैं पाच भूत उपजे है, ते कहिये हैं,—रूपतैं तौ अग्नि होय है, रस तैं जल होय है गधतै भूमि होय है, शब्दतै नभ होय है, स्पर्शतै पवन होय है; ऐसैं सृष्टिका क्रम है। तहा मूल प्रकृति तौ विकृति रहित है (विकार रहित है) अर याका कोई कारण भी नाही, बहुरि महत् आदि है ते प्रकृतिकी सात विकृति हैं अर सोलह गण है सो विकार है; ऐसैं विकार हैं ते सात अर सोलह तेईस हैं। बहुरि पुरुष है सो विकृति भी नाही अर प्रकृति भी नाही। ऐसैं पचीस तत्व

१ यदुक्तं परेण—प्रकृतेर्महान् ततोऽहंकारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात्पंचभ्यः पंच भूतानि ॥ १ ॥

** वचनिकाकी प्रतिमें दो आर्याओंका उल्लेख है परन्तु मुद्रित सस्कृत प्रतिमें उपरिलिखित सिर्फ एक यही आर्या है, दूसरी नहीं है।

कहे। तिनिका वर्णन वध्याके पुत्रका सुरूपपणाका वर्णन सरीखा है याका विषय असत्यार्थ है, तातैं आदरनें योग्य नाही। प्रकृतितै कार्यकी उत्पत्ति वर्णै नाही। आकाश तौ अमूर्त्तीक है अर पृथ्वी आदि मूर्त्तीक हैं तिनिकै एक कारणतैं उपजनेंका अयोग है। जो ऐसैं न मानिये तौ अचेतन जो पचभूतका समूह तातैं चैतन्यकी सिद्धि होय, तब चार्वाकमतकी सिद्धिका प्रसग आवै। तब साख्यमतका वास भी न रहै। बहुरि सत् कार्यवाद साख्य करै है ताका प्रतिषेध "प्रमेयकमलमार्त्तड" ग्रथविषै विस्तारकरि कह्या है, सो इहा नाही कहिये है, या ग्रथकै सक्षेपपरूपणा है यातै, ऐसे जानना। ऐसैं विचार किये सामान्यमात्रही प्रमाणका विषय बणैं नाही इहा ताई साख्यमतीसू चरचा है।

आगैं साख्य आदि सामान्यहीकू तत्त्व कहै है तैसै बौद्धमती कहै है—जो विशेष ही तत्त्व है, वस्तुस्वरूप है, ये ही प्रमाणका विषय है जातै तिनिकै असमान आकारनिकरि सामान्य आकारनितैं समस्तपणा करि भिन्नस्वरूपपणा है, भावार्थ—विशेष है ते सामान्यतैं सर्वथा भिन्न ही हैं। नैयायिक सामान्यकू सर्वथा एक मानै है सो ऐसे एक सामान्यकैं अनेक विशेषनि विषै व्याप्ति करि वर्त्तनकै सभवका अभाव है। एक सामान्य अनेक विशेषनिमे कैसै व्याप। तिस सामान्यकै एक व्यक्ति विषैं समस्तपणा करि तिष्टना पावै तिस ही काल अन्य व्यक्ति विषैं पावनेंका अभावका प्रसंग आवै है। बहुरि जो कहिये—तिस ही काल अन्यव्यक्ति विषै भी पाइए है तौ सामान्य नाना ठहरै जातै एक ही काल भिन्नदेशपणाकरि तिष्टते जे व्यक्ति तिनिविषै समस्तपणाकरि जैसैं व्यक्ति न्यारे न्यारे है तैसे सामान्य भी न्यारे न्यारे पावैं। बहुरि जो ऐसैं होतै भी सामान्यकै नानापणा न होय तौ व्यक्ति भी न्यारे न्यारे मति होहु। तातैं जो बुद्धि करि अभेद मानिये है सो ही सामान्य

है वस्तुभूत नाही। सो हमारे कह्या है, ताका श्लोकका अर्थः—जो पदार्थ एक जायगा देखिये सो अन्य जायगा कहूं न देखिये है तातैं बुद्धि विषैं अभेदकल्पना सो ही सामान्य है, यातै भिन्न और कछू नांही है। वहुरि बौद्ध ही कहै है:—ते विशेप परस्पर संवंधरहित ही हैं जातैं तिनिकैं संवंध विचारया हुवाका अयोग है। जो एकदेशकरि विशेपनिकै संवंध कहिये तौ एक परमाणुकै छहौही दिशातैं छह परमाणुका एककाल संयोग होतैं परमाणुकै छह अंशपणाकी प्राप्ति होय, सो परमाणुकै छह अश कहना संभवै नाही। वहुरि सर्वस्वरूपकरि संवंध कहिये तौ पिंडकै अणुमात्रपणाका प्राप्ति आवै। वहुरि अवयवीका भी निषेध है। तातै विशेषनिकै परस्पर सवंध नांही वणै है। वहुरि अवयवीका निषध ऐसैं है—जो वृत्तिविकल्प कहिये अवयवीकी अवयवनिविषैं वृत्तिका विचार ताकरि तथा अनुमानकरि वाधाही आवै है। सो ही कहिये है, वौद्ध नैयायिककू कहै है—अवयव हैं ते अवयवीविषै वर्त्तैं हैं यह तौ तैं मानीही नाही है वहुरि अवयवी है सो अवयवनिविषै वर्त्तैं है ऐसैं मानी है; सो इहा दोय पक्ष पूछिये है—जो एकदेशकरि वर्त्तै है कि सर्वस्वरूप करि वर्त्तैं है? जो कहै एकदेशकरि वर्त्तैं है तौ अवयवीकै अवयवनि सिवाय अन्य अवयवका प्रसंग आवै, वहुरि तिनि विषै भी अन्य एकदेशकरि अवयवी वर्त्तैं तव अनवस्था पावै। वहुरि कहै सर्व स्वरूपकरि अवयवी अवयवनि विषै वर्त्तैं है,—तौ पूछिये—एक एक अवयव प्रति स्वभावभेदकरि वर्त्तैं है कि एकरूपकरि वर्त्तैं है? जो कहै—

(१) तदुक्तम्—

एकत्र दृष्टो भावो हि क्वचिन्नान्यत्र दृश्यते।
तस्मान्न भिन्नमस्त्यन्यत्सामान्यं बुद्ध्यभेदतः॥१॥

स्वभावभेदकरि वर्त्तै है तौ अवयवी बहुत ठहरैं है। बहुरि कहै—एक-रूप करि वर्त्तै है, तौ अवयनिकै एकरूपपणा ठहरै है। अथवा स्वभा-वभेदकरि तथा एकरूपकरि ऐसैं पूछना मति होहु, ऐसै ही कहना—न्यारे न्यारे एक एक अवयवनि करि एक एक अवयवी समस्तपणाकरि वर्त्तै तौ अवयवी बहुत ठहरैं हैं। ऐसैं होतैं वृत्तिविकल्पतैं बाधा आवै है॥ अब अनुमानतै बाधा दिखावै है—जो देखनैं योग्य होता सता भी ग्रहणमैं न आवै सो नाही ही है, जैसै आकाशका कमल, तैसैं अवय-वनिविषै अवयवी ग्रहणमै नाही आवै है॥ बहुरि जाका ग्रहण न होतैं जाकी बुद्धि का अभाव, सो तिसतै अन्य अर्थ नाही जैसैं वृक्षका ग्रहण नाही तहा वन नाही॥ पहले अनुमानतै तौ अवयवनिविषैं अवयवी नाही ऐसा सिद्ध किया, इस अनुमानतैं भिन्न अर्थ नाही ऐसा कह्या॥ ऐसैं अवयवीका निषेध किया, सवधका पूर्वं निषेध किया ही था॥ इनि दोऊ हेतुनितैं रूप आदिके परमाणु हैं ते निरंश हैं परस्पर स्पर्श-नेवाले नाही सर्वथा भिन्न भिन्न ही है, बहुरि ते एक क्षणमात्र स्थायी है नित्य नाही है जिनिका क्षण क्षणमैं विनाश होय अन्य उपजैं है जातै विनाश प्रति अन्यकी अपेक्षा नाही है॥ याका प्रयोग ऐसा—जो जिस भाव प्रति अन्यकी अपेक्षा नाही करै है सो तिस स्वभाव विषैं नियमरूप है जैसै स्वकार्य पट आदिकी उत्पत्तिविषैं अन्तमै जो ततु आदि सामग्री है सो अन्य कारण नाही चाहै है सो तिस स्वभावविषैं नियत है॥ बहुरि इहा कोई आशका करै—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिककरि होय है यह अन्यकी अपेक्षा है॥ तहा बौद्ध दोय पक्ष पूछै है—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिक करै है सो नाश घटतैं भिन्न करै है कि अभिन्न करै है? जो भिन्न करै है तौ नाश घटतैं भिन्न रह्या तब घटकै स्थिति ही भई॥ इहा कहै—जो विनाशके संबं-

घतैं घटकूं भी नष्ट भया ऐसैं कहिये तौ सद्भावकै अर अभावकै संबंध कहा है ? जो कहै—तादात्म्य है सो तौ नांही वणैं जातैं भाव अभावकैं तौ भेद है ॥ बहुरि कहै—जो तदुत्पत्ति कहिये कार्यकारणसंबंध है तौ सो भी नांही है जातैं अभावकै कार्यका आधारपणां वणैं नाही ॥ बहुरि कहै—मुद्गर घटका नाश घटतैं अभिन्न करै है तौ घट आदिही किया ठहरै' नाश अर घटमैं भेद नाही; ऐसैं होतैं घटतौ पहले है ही, तिसनैं किया कहा ? ऐसैं घटतैं अभिन्न नाश कहनेमैं करणा वृथा होय है। ऐसैं नाशकै अन्यकी अपेक्षारहितपणां सिद्ध भया। सो परमाणुनिकै विनाशरूप स्वभावका नियमपणां साधै ही है। बहुरि अनित्य विशेषरूप परमाणु तिनिकैं तिस स्वभावका नियमपणां सिद्ध होतैं तिनितैं अन्य जे आत्मा आदिक विवादगोचर भये वस्तु तिनिकैं सत्त्व नामा आदि हेतुकरि साधतैं इस दृष्टांतकरि क्षणस्थितिस्वभावपणांकी सिद्धि होय ही है। सो ही कहिये है:—जो सत् है सो सर्व एकक्षणस्थितिस्वभावरूप हैं जैसैं घट है तैंसैं ही सत् रूप भये भाव हैं, ऐसैं तौ वहिर्व्याप्ति मुख करि अनुमान किया। अब अन्तर्व्याप्ति मुख करि अनुमान करै है—अथवा सत्व है सो ही विपक्ष जो नित्य ता विषैं बाधक प्रमाणका बलकरि दृष्टान्त विना ही समस्त वस्तुकै क्षणिकपणांका अनुमान करावै है। सो ही कहिये है;—सत्त्व है सो अर्थक्रिया करि व्याप्त है, बहुरि अर्थक्रिया है सो क्रमयौगपद्यकरि व्याप्त है, बहुरि क्रम अर यौगपद्य ये दोऊ हैं ते नित्यतैं निवृत्तिरूप होते अपनीं व्याप्य अर्थक्रियाकूं लार ले निवृत्तिरूप होय हैं, भावार्थ—नित्यमैं अर्थक्रिया न वणैं है, बहुरि सो अर्थक्रिया है सो अपनां व्याप्य सत्त्वकूं लार ले है नित्यमैं सत्त्व नाही रहै है, ऐसैं नित्यकै क्रम यौगपद्य करि अर्थक्रियाका विरोध है, तातैं अर्थक्रिया विना सत्त्वका असंभव नांही, सो ही

विपक्ष जो नित्य ताविषैं बाधकप्रमाण है। बहुरि नित्यकैं अनुक्रम करि तथा युगपत् अर्थक्रिया नाही संभवै है, नित्य जो एकही स्वभाव करि पूर्व अपर काल विषै होते दोय कार्य करै तौ कार्यका भेद करनेंवाला नाही होय जातैं नित्यकै एक स्वभावपणा है। जो नित्यकै एक स्वभावपणा होतैं भी कार्यकै नानापणा है तौ अनित्य विषै कार्यके भेदतैं कारणका भेदकी कल्पना निष्फल ही होय है। तैसा एक ही कोई कारण कल्पनें योग्य होय है जाकरि एक स्वभावरूप एक ही करि समस्त चराचर वस्तु उपजै। बहुरि नैयायिक कहै—जो नित्य वस्तुकै स्वभावका नानापणा ही कार्यके भेदतैं मानिये है, तौ तहा पूछिये—जो ते स्वभाव तिस नित्य वस्तुकै सदा सभवते हैं तौ कार्यका संकरपणा आवैगा जीव अजीव नर नारक एक काल उपजते ठहरैंगे? बहुरि ते स्वभाव सदा नाही संभवते हैं तौ तिनिकी अनुक्रमतैं उत्पति होने विषैं कारण कहा है, सो कह्या चाहिये? तिस नित्यतैं ये है ऐसैं एक स्वभावतै उत्पत्ति होतैं तिनि स्वभावनिकै भेदके असभवनेंतैं सो ही कार्यनिकै युगपत् प्राप्ति संभवै। बहुरि कहै—जो नित्य कारणकै सहकारी कारण क्रमतैं होय तिस अपेक्षा करि ताके स्वभावनिका अनुक्रम करि सद्भाव है, तातैं तुम कह्या जो दोप; सो नाही। ताकूं कहिये—जो ऐसैं कहना भी नीकैं मिलै नाही, जो नित्य है अर समर्थ है ताकै परकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि सहकारी कारणकरि सामर्थ्य करणा मानिये तौ नित्यताकी हानि आवै, सहकारिनैं नई सामर्थ्य उजाई तब नित्य कहा रह्या। बहुरि कहै—सहकारी कारण नित्यतै सामर्थ्य भिन्न ही उपजावै है यातैं नित्यताकी हानि नाही, तौ नित्य तौ अकिंचित्कर रह्या, कछू करनेंवाला नाही, सहकारी करि उपजाई जो सामर्थ्य तिसहीकैं कार्यकारणपणा ठहरया। बहुरि कहै नित्य अर

सामर्थ्यकै संबंध है तातै नित्यकैं भी कार्यकारीपणा कहिये तौ तहां दोय पक्ष पूछैं हैं—संबंध एक स्वभाव है कि अनेक स्वभाव है? जो कहैगा तिस सामर्थ्यकै संबंध है सो एक स्वभाव है तौ एक स्वभाव संबंध होतै सामर्थ्यकै नानापणाका अभावतैं कार्य विषैं भेद न ठहरैगा। बहुरि कहैगा संबंधकै अनेक स्वभावपणा है तथा अक्रमवानपणां है तौ ऐसै होतैं कार्यकी ज्यों तिस सामर्थ्यकै भी सकरपणा आवैगा, जड करनेकी अर चेतनकरनेंकी सामर्थ्यकै सकरपणा आवैगा। ऐसै सर्व आवर्त्तन होयगा तब चक्रक दोपका प्रसंग आवैगा, तातैं नित्यकै अनुक्रमकरि कार्यका करणा नाहीं वणैं है। बहुरि युगपत् एक काल भी नाही वणै है:—समस्त कार्यनिकी एककाल उत्पत्ति होतैं दूसरे क्षण कार्यका न करना आया तब अर्थक्रियाकारीपणा न रह्या तब अवस्तुपणाका प्रसंग आवै है। ऐसै नित्यकै क्रमयौगपद्यका अभाव सिद्ध ही है। ऐसै बौद्धमती अपना मत दृढ किया, जो विशेप ही वस्तुस्वरूप है सामान्य वस्तु स्वरूप नाही, वहुरि ते विशेप परस्पर असंबद्ध ही हैं सबद्ध नांही, अवयवी नांही, वहुरि ते एक क्षणस्थायी ही है नित्य नाही।

ऐसैं तीन पक्ष कही तिनि तीनोंहीका निराकरणकै अर्थि अब आचार्य कहै है;—ऐसी कहनेवाला बौद्ध भी युक्तवादी नाही जातैं सजतीय विजातीय न्यारे न्यारे अंशरहित जे विशेप तिनिका ग्राहक प्रमाणका अभाव है। प्रत्यक्ष प्रमाणकै तौ स्थूल स्थिर साधारण आकाररूप वस्तुका ग्राहकपणा है तातै अंशरहित वस्तुका ग्रहणका अयोग है, परस्पर संबंधरूप नाही ऐसे परमाणु नेत्र आदिकरि नाही प्रतिभासै हैं जो प्रत्यक्ष नेत्र आदिकरि दीखैं तौ विवाद कैसै रहै। इहां बौद्ध कहै है—जो पहले तौ निरंश क्षणरूप परमाणु ही दीखैं हैं पीछै विकल्पकी वासना तौ अन्तरङ्ग रूप ताके वलतैं अर बाह्य अन्तराल न दीखै तातैं

अविद्यमान भी स्थूल आदि आकार विकल्पबुद्धि विषैं प्रतिभासै है, सो ऐसा विकल्प तिस निर्विकल्प प्रत्यक्षके आकार करि मिल्या हूवा अपना विकल्पव्यापारकू गौणकरि प्रत्यक्ष व्यापारकू मुख्यकरि प्रवर्त्तै है तातैं प्रत्यक्ष सारिखा दीखै है तहा आचार्य समाधान करैं है—जो यह कहना तौ बालक अज्ञानीका विलास है, जातै निर्विकल्पज्ञानका ही अनुभवन नाही है, निर्विकल्प सविकल्पका भेद पहले ग्रहण होय तब अन्य आकारके मिलनेंकी अन्य आकारविषैं कल्पना युक्त होय है, जैसै पहले स्फटिकमणि अर जपाकुसुम न्यारे न्यारे देखे होंय पीछै स्फटिककैं डक लाग्या दीखै तब ऐसी कल्पना सभवै जो यह स्फटिक जपाकुसुमतैं रंगित दीखै है, जो न देखे होय तौ ऐसी कल्पना न होय। या ही कथनकरि निर्विकल्प सविकल्पकै युगपत् वृत्तितैं तथा क्रमवृत्तिमैं भी शीघ्र वृत्तितै एकपणाका निश्चय होय है ऐसा कहना भी निराकरण किया। ताकै भी बीज लेणैंतैं प्रतीति आवै तिस समानपणा है। अथवा तिनि निर्विकल्प सविकल्पका एकपणाका निश्चय कौनसे ज्ञान करि करिये ? प्रथम तौ विकल्प ज्ञानकरि तौ निश्चय नाही होय जातै विकल्पज्ञान निर्विकल्पकी वातका जाननेवाला नाही। बहुरि अनुभव ज्ञानकरि निश्चय नाही होय जातै अनुभव विकल्पकै अगोचर है। बहुरि निर्विकल्प सविकल्प जाका विषय नाही ऐसा ज्ञान भी तिनिका एकत्वका निश्चय विषै समर्थ नाही, यामै अतिप्रसग दूषण है अन्यका विषय अन्यकरि ग्रहण होतैं अतिप्रसंग है। तातैं प्रत्यक्षबुद्धिविषैं तौ भिन्न असबधरूप परमाणु प्रतिभासै नाही। बहुरि अनुमानबुद्धिविषैं भी नाही प्रतिभासै हैं जातैं तिसतैं अविनाभूत जो स्वभावलिंग अरु कार्यलिंग ताका अभाव है। अर स्थूल स्थिर साधारणका अनुपलभतैं विशेष ही तत्व है ऐसैं कहै तौ अनुपलभ लिंग है सो असिद्ध ही है

जातैं अन्वयरूप आकारका अर स्थूल आकारका प्रत्यक्ष देखनेंमैं आवनां कह्या ही है। बहुरि बौद्धनैं कह्या जो परमाणुकै एक देशकरि अर सर्व स्वरूपकरि संबंध नाही बणैं है, सो याका परिहार यह ही—जो ऐसैं हम भी सवंध नाही मानै है, हम तौ ऐसैं मानै हैं—जो रूखा चीकनाकै समान जातीयकै तथा विजातीयकै दोय अधिक गुण होय तौ कथंचित् स्कंधकै आकार परिणामै ताकै संबंध मानै है। बहुरि बौद्धनैं जो अवयवीका अवयवनिविषैं वृत्तिविकल्प आदि दूषण कह्या, तहां अवयवीकी वृत्ति ही जो न बणैं तौ अवयवी वर्त्तैं ही नाही है ऐसै कहनां था, एक देश आदि विकल्प न कहना था जातैं एक देश आदि विकल्पकैं तौ अन्य विकल्प विशेषतैं अविनाभावीपणा है। सो ही कहिये है—अवयवी अवयवनिविषैं एक देशकरि नाही वर्त्तैं है, सर्वस्वरूपकरि भी नाही वर्त्तैं है ऐसैं कहतै ऐसा आया—जो अन्य प्रकारकरि वर्त्तैं है, अर ऐसैं न मानिये तौ, नाही वर्त्तैं है—ऐसैं ही कहना। ऐसैं विशेषका निषेधकै अवशेषका अंगीकाररूपपणां है। तातैं कथंचित् तादात्म्यारूपकरि अवयवीकी अवयवनिविषैं वृत्ति है ऐसा निश्चय कीजिये है, जहा जे कहे दोष तिनिका अवकाश नाही है। बहुरि विरोध आदि दोषका निषेध आगैं करसी यातैं इहा विस्तार नाही किया है। बहुरि जो वस्तुकै एकक्षणस्थायिपणा विषैं हेतु कह्या—जो जिस भाव प्रति इत्यादि, सो भी अहेतु है जातै हेतु असिद्ध आदि दोषकरि दूषित है। तहा प्रथम तौ नाशविषैं अन्यकी अपेक्षातैं रहितपणा हेतु कह्या सो असिद्ध है जातैं घटादिकका अभावकै मुद्गर आदिके व्यापारका अन्वय व्यतिरेकका अनुसारीपणातैं तिसके अभाव प्रति कारणपणा है, मुद्गराकी दियै घट फूटै न दे तौ न फूटै। इहा आशंका करै—जो मुद्गराकी देना कपालकी उत्पत्तिकूं कारण है, अभाव तौ

निरपेक्ष ही है? ताकूं कहै है—जो कपाल आदि पर्यायांतरका सद्भाव है सो ही घट आदिका अभाव है। बहुरि तुच्छाभाव कहिये सर्वथा अभाव, सो समस्तप्रमाणकै अगोचर है ताकी बात ही न करनी। बहुरि विशेष कहे हैं—अभाव है सो जो स्वाधीन होय तौ अन्यकी अपेक्षारहितपणा विशेषणयुक्त होय, सो बौद्धमतविषैं सो अभाव स्वाधीन मान्या नाहीं यातैं हेतुका प्रयोगकाही अवतार नाही। बहुरि यह अन्यानपेक्षपणा हेतु है सो अनैकान्तिक है जातैं शालिके बीजकै कोदूका अंकुरका उपजना प्रति अन्यकी अपेक्षारहितपणा है तौऊ तिस कोदूके अंकुराके उपजनेंके स्वभाव प्रति नियमरूपपणा नाही है। बहुरि बौद्ध कहै—जो हेतुका विशेषण ऐसा किये दोष नाही, जो विनाश स्वभाव होतैं अन्यानपेक्ष है तौ तहां कहिये पदार्थकै सर्वथा विनाशस्वभावपणा ही असिद्ध है। पर्यायरूपकरि ही पदार्थनिकै उत्पाद विनाश मानिये है द्रव्यरूपकरि उत्पाद विनाश नाही है, जातैं ऐसा वचन है ताका श्लोकका अर्थ:—

जो पदार्थ उपजै है अर विनशै है सो पर्यायनयका विषय है, बहुरि द्रव्यनयकरि आलिंगित वस्तु नित्य है न उपजै है न विनशै है। अन्वय कहिये पहिले पिछलेकै जोड तिसरहित जो विनाश सो निरन्वयविनाश तिसकूं होतैं पहले क्षणतैं उत्तर क्षणकी उत्पत्ति नाही बणै है, जैसैं मूवा मोरकी कुहुक नाही होय तैसैं। ऐसै पदार्थनिका सर्वथा विनाशस्वभावपणा युक्त नाही जातैं कथंचित् द्रव्यरूपकरि पूर्वरूप जानै न

---

(१) आर्या—समुदेति विलयमृच्छति भावो नियमेन पर्ययनयस्य।
नोदेति नो विनश्यति भावनया लिंगितो नित्यम् ॥१॥
इति वचनात्।

छोड्या ऐसा भी वस्तुस्वरूपका संभव है। वहुरि द्रव्यके रूपका ग्रहण होनेका असमर्थपणातैं द्रव्यका अभाव नांही है। तिस द्रव्यके ग्रहणका उपाय जो प्रत्यभिज्ञानप्रमाण ताका बहुलपणैं पावनां है, तिस प्रमाणकै पहले प्रमाणपणां कह्याही है। बहुरि उत्तरकार्यकी उत्पत्तिकी अन्यथानुपपत्तितैं भी द्रव्यकी सिद्धि होय है, द्रव्य न होय तौ उत्तरकार्यकी उत्पत्ति न होय। वहुरि जो क्षणिक साधनेंविषैं सत्त्वनाम अन्य हेतु कह्या सो भी विपक्ष जो नित्य ताविषैं सत्त्व नांही तैसै क्षणिकमैं भी नाही है, तातैं सत्त्व हेतुतै भी क्षणिक साध्यकी सिद्धि नाही होय है। सो ही कहिये है—सत्त्व है सो अर्थक्रियातैं व्याप्त है, वहुरि अर्थक्रिया है सो क्रमयौगपद्यकरि व्याप्त है, ते क्रम यौगपद्य दोऊ क्षणिकतैं निवृत्तिरूप हुये संते अपनैं व्याप्य जो अर्थक्रिया निवृत्तिरूप होती अपनें व्यापनें योग्य जो सत्त्व ताहि लेकरि निवृत्तिरूप होय है; ऐसैं नित्यकी ज्यो क्षणिककैं भी गधाके सींगवत् सत्त्व नाही है। ऐसैं क्षणिकविषैं सत्त्वकी व्यवस्था नाही है। वहुरि क्षणिक वस्तुकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है सो असिद्ध नाही है जातै ताकै देशकरि किया अर कालकरि किया जो क्रम ताका असंभव है। जो अवस्थित एक होय ताहीकै अनेक देश अर कालकी कला तिनिविषै व्यापीपणा होय सो देशक्रम अर कालक्रम कहिये है। सो क्षणिकविषै ऐसा देशक्रम अर कालक्रम नाही है जातैं बौद्धमतमै ऐसैं कह्या भी है, ताका श्लोकका अर्थ—जो वस्तु जिस क्षेत्रमै है सो तहा ही है वहुरि जिस कालमै है सो जहा ही है यातैं पदार्थनिकै देशकाल विषैं व्याप्ति नांही है; ऐसैं आप कह्या है।

---

(१) यो यत्रैव स तत्रैव यो यदैव तदैव सः।
न देशकालयोर्व्याप्तिर्भावानामिह विद्यते॥

बहुरि पूर्व उत्तर क्षणनिकै एक सतानकी अपेक्षा करि भी क्रम नाही सभवै है जातैं जो सतानकू वस्तुभूत मानैं तौ तिसकै भी क्षणिकपणा ठहरै तब तिसकी अपेक्षा क्रम नाही बणैं है। अर अक्षणिकपणा होतैं भी वस्तुभूतपणा मानै तौ वस्तुभूतपणा करि तिस सतानही करि सत्त्व आदि हेतुकै अनैकान्तिकपणा आवै। बहुरि सन्तानकू अवस्तुभूत मानैं तौ भी तिसकी अपेक्षा क्रमयुक्त नाही होय। बहुरि युगपत्पणा करि भी क्षणिक विषैं अर्थक्रिया नाही सभवै है। इहा दोय पक्ष—जो युगपत् एक स्वभाव करि नानाकार्य करणा मानिये तौ तिसकै कार्यकै एकपणा ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव कल्पिये तौ ते स्वभाव तिसक्षण करि व्यापे चाहिये। सो जो एक स्वभाव करि ते क्षणिक तिनि स्वभावनिभैं व्यापै तौ तिनि स्वभावनिकै एकरूप ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव करि व्यापै तौ अनवस्था दूषण आवै जातैं फेरि एक स्वभाव अनेक स्वभावका प्रश्न चल्या जाय। बहुरि बौद्ध कहै है जो एक पूर्व क्षणकै एक उत्तर क्षणविषै उपादानभाव है सो ही अन्य जे रूपतैं रसादिक तिनिविषैं तिसक्षणकै सहकारी भाव है यह ही स्वभाव भेद है; तौ ताकू आचार्य कहै है—नित्य एकरूप वस्तुकैं भी क्रमकरि नानाकार्य करनेवालेकैं स्वभावका भेद अर कार्यका सकरपणा मति होहु, ऐसा दूषण तैं कह्या था सो मति होहु। इहा बौद्ध कहै—जो अक्रमतैं क्रमवान् वस्तुकी उत्पत्ति नाही तातै नित्यकै ऐसै नाही, तौ ताकू कहिये—तैसैं ही क्रमरहित जो क्षणिक सो एक है अनश है ऐसे कारणतैं युगपत् अनेक कारणनिकरि साधने योग्य जे अनेक कार्य तिनिका विरोध है, तातैं ताकैं भी कार्यकारीपणा नाही है। बहुरि विशेष कहै है, बौद्धकू पूछै है—तेरे पक्ष विषैं कार्यकारीपणा सत्कै मानै है कि असत्कै मानैं है? जो सत्कै कार्यका कर्त्तापणा मानैं है

तौ सकलकालकी कला विषै व्यापीजे क्षण तिनिकैं एकक्षणवर्त्तीपणांका प्रसंग आवैगा। बहुरि जो दूसरा पक्ष असत्‌कै कार्यकारीपणा मानैंगा तौ गधाकै सींग आदिकै भी कार्यकारीपणा ठहरैगा जातैं गधाका सींग भी असत्‌रूप है, यामै विशेप नांही। बहुरि सत्त्वका लक्षण अर्थ-क्रियाकारीपणां है सो असत्‌कै कार्यकारीपणां मानै ताकै व्यभिचार आवैगा। तातै विशेप एकांत है सो कल्याणकारी श्रेष्ठ नाही। ऐसैं विशेप एकान्त माननेवाला जो बौद्धमत ताकी पक्षका निराकरण किया, यातै विशेप एकान्त वस्तुस्वरूप नाही तातै प्रमाणका विपय नाही है। इहा ताईं बौद्धमतीसूं चर्चा है।

आगै नैयायिकसूं चर्चा करै हैं;—अब कहैं हैं—जो सामान्य विशेष दोऊ परस्पर अपेक्षारहित है ऐसै नैयायिकमती मानैं है सो तिनिका मत भी युक्तिकरि युक्त नांही है, सो कहै है जातैं तिनिकै परस्पर भेद होतैं दोऊमैं एकका भी स्थापन करनेंका असमर्थपणा है। सो ही कहिये है;—विशेप कहिये व्यक्तितैं तौ प्रथम द्रव्य गुण कर्म पदार्थ हैं। बहुरि सामान्य पर अपर भेदतै दोय प्रकार है। तहा परसामान्य तौ सत्तास्वरूप है तिसतै विशेपनिकै भेद होतै विशेपनिकै असत्ताकी प्राप्ति आई, तैसैं ही प्रयोग है—द्रव्य गुण कर्म है ते असत् रूप है—जातै सत्तातैं अत्यंत भिन्न है जैसै प्राक् अभावादिक अभाव हैं तैसैं। इहा सत्तातै अत्यंत भिन्नपणा हेतु है ताकै सामान्य विशेप समवाय पदार्थनितै व्यभिचार नाहीं है जातै तिनि विषै स्वरूप सत्त्वकूं अभिन्न नैयायिक मानै हैं। बहुरि नैयायिक कहै है—जोद्रव्यादि पदार्थनिकै प्रमाणकरि सिद्धपणां है तौ धर्मीका ग्राहक प्रमाण ताकरि तुमनै हेतु कहा सो वाधित है, जिस प्रमाणकरि द्रव्य आदिक निश्चय कीजिये है तिसही प्रमाणकरि तिनिका सत्त्व निश्चय

कीजिये है। इहा तुम कहोगे—द्रव्य आदिक प्रमाण सिद्ध नाही है तौ तुमारे हेतुकै आश्रयकी असिद्धि आवैगी, ताका उत्तर आचार्य कहैं हैं—जो यह कहना अयुक्त है जातै इहा हमनैं प्रसगसाधन किया है। परका इष्ट लेकरि परकै अनिष्ट बतावना सो प्रसगसाधन है, सो इहा प्राक् अभावादिविषै सत्त्वतैं भेद है सो असत्त्वतैं व्याप्त पाइये है सो व्याप्य है, तातै तिस भेदका द्रव्यादिविषैं अंगीकार है सो व्यापक जो असत्त्व ताका अगीकारतैं अविनाभावी है, ऐसै इहा प्रसगसाधन है। तातै नैयायिकनैं कह्या प्रमाणबाधित आदि दोप, सो नाही आवै है, पदार्थनिकूं नैयायिक जैसै भेदाभेद मानै था तिसहीकी अपेक्षा लेकरि प्रसगसाधन किया है। इसही कथनकरि द्रव्य आदिककै भी द्रव्यपणातै भेद होतैं अद्रव्यादिपणा विचरया जानना। बहुरि आचार्य नैयायिककूं पूछै हैं—कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेप समवाय इनि छह पदार्थनिकै परस्पर भेद होतै न्यारे न्यारे अपनें स्वरूपकी व्यवस्था कैसै है? जो कहैगा—द्रव्यका द्रव्य ऐसा नाम द्रव्यत्वका सबधतैं है तौ द्रव्यत्वके सबंध पहले द्रव्यका स्वरूप कहा है, सो कह्या चाहिये जाकरि सहित द्रव्यत्वका सबध होय? जो कहै—द्रव्य ही स्वरूप है तौ तिसका द्रव्य ऐसा नाम तौ द्रव्यत्वका सबधरूप कारणतैं होय है तातैं द्रव्य ऐसा स्वरूपका अयोग है। बहुरि कहै—जो निजरूप तौ सत्त्व है तौ ताका भी सत्त्व ऐसा नाम सत्ताके सबधतैं करनेतै द्रव्यका निजरूप नाही बनैगा। ऐसैं ही गुण आदिविषै भी कहि लेना। ऐसैं होतै केवल सामान्य विशेप समवाय इनि तीन हीकै स्वरूप सत्त्व करि तसौ नाम बनैं है, तातैं तिनि तीन ही पदार्थनिकी व्यवस्था ठहरै है। बहुरि इहा नैयायिक कहै है—नैयायिक वैशेपिकका अभिप्राय एक ही है तातै नैयायिक ही नाम लिख्या है, इहा सामान्य नाम यौगमत जानना, अर द्रव्यादिक सत ही पदार्थ वैशेपिक कहै है। अब वह कहै है—

स्याद्वादी जैनी जीव आदि पदार्थनिकैं सामान्यविशेपस्वरूपपणां मानैं हैं सो तिनि सामान्य विशेपका वस्तुतैं भेद अभेद हैं ते विरोध आदि आठ दोपके आवनेतै एक वस्तुविपै नाही सभवैं है, सो ही कहै है— भेद अभेद दोऊ विधि प्रतिपेधस्वरूप है ते एक जो अभिन्न वस्तु ताविपै संभवै नाही, जैसै शीत उष्ण स्पर्श दोऊ एकविपै नाहीं संभवै तैसैं, ऐसै तौ विरोध दूपण आया। बहुरि भेदका आधार अन्य अभेदका आधार अन्य, ऐसैं वैयधिकरण्य दूपण आया। बहुरि जिस स्वरूपकू मुख्यकरि भेद वर्त्तै है अर जिसकू मुख्य करि अभेद वर्त्तै है ते दोऊ स्वरूप भिन्न हैं तथा अभिन्न हैं, बहुरि तहां भी भेदाभेदके कल्पनेतैं अनवस्था दूपण है। बहुरि जिस रूपकरि भेद है तिस ही रूपकरि भेद भी अभेद भी है ऐसै सकर दूपण है, बहुरि जिसकरि भेद है तिसकरि अभेद है जिसकरि अभेद है तिसकरि भेद है, ऐसैं व्यतिकर दूपण है। बहुरि भेदाभेद स्वरूपपणा होतै वस्तुका असाधारण आकारकरि निश्चय करनेकूं असमर्थपणा है, तातै संशय दूपण है। तिस ही हेतुतैं अप्रतिपत्ति दूपण है। तिस ही हेतुतै अभाव दूपण है। ऐसै अनेकान्तात्मक वस्तु भी निश्चित नाही होय सकैं हैं, ऐ नैयायिक कहै हैं। तहा आचार्य कहैं हैः—ऐसै कहनेवाले भी प्रती स्वरूप कहनेवाले नाही जातै प्रतीतिगोचर वस्तु होय तामैं विरोधका भव है। विरोध तौ जैसैं दीखै नाही तैसैं कहै तामै है, तहा जो ने आवैं तहा कहा विरोध? भेदाभेदतै एक वस्तुमै दोऊ प्रगट दीखैं हैं। इहा ज शीत उष्णस्पर्शका दृष्टात कह्या सो धूपदहनका घट आदि एक अवयवी शीत उष्ण स्वभावकी प्राप्तितैं विरोधका दृष्टान्त अयुक्त है, धूप हनके घडेमै शीत उष्ण दोऊ स्पर्श होय हैं। आदि शब्दकरि संध्याविषैं काश तमका साथि अवस्थान होय है। एक वस्तुकै चल अचल रक्त अरक्त

आवरणसहित आवरणरहित इत्यादि विरुद्ध धर्मनिका युगपत् देखना है। तैसैं कहे जे भेदाभेद तिनिकै भी विरोध नाही है। इस ही कथनकरि वैयाधिकरण्य भी निराकरण किया, तिनि भेदाभेदकै एक आधारपणाकरि प्रतीतिमैं समानाधिकरण है, इहा भी चल अचल आदि पहले दृष्टात कहे ते जानने। बहुरि जो अनवस्था नामा दूपण कह्या सो भी स्याद्वादमतकू नाही जाननेवालेकरि बताया है, स्याद्वादीनिका यह मत है—सामान्य विशेप स्वरूप वस्तुविपैं सामान्य विशेप है ते ही भेद हैं जातैं भेदशब्दकरि तिनिकू ही कहे हैं, बहुरि द्रव्यरूप करि अभेद है ऐसा कह्या है सो द्रव्यही अभेद है जातैं वस्तुकै एकानेक स्वरूपपणा है, अथवा भेदनयका प्रधानपणाकरि वस्तुके धर्मनिकै अनतपणा है तातैं अनवस्था नाही है। सो ही कहिये है—जो सामान्य है बहुरि जे विशेप हैं तिनिकैं अन्वयरूप आकारकरि अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा आकारकरि भेद है, बहुरि तिनिकै अर्थक्रियाके भेदतै भेद है, बहुरि तिस अर्थक्रियाक शक्तिभेदतैं भेद है, सो शक्ति भेद भी सहकारीके भेदतै है, ऐसैं अनत धर्मनिका अगीकार करनेतैं अनवस्था काहेतैं होय[1] सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ—जो मूलनाशका करनहारा होय ताहि अनवस्था दूपण पडित कहै है, वस्तुकै अनतपणा होतै अथवा विचारनेकू असमर्थता होय तहा अनवस्था दूपण नाही, जो अनवस्था होय तौ भी दूपण न कहिये। बहुरि जो सकर अर व्यतिकर ये दोऊ दूपण हैं ते भी मेचक ज्ञानके दृष्टान्तकरि बहुरि सामान्य विशेपके दृष्टान्त करि दूर किये। इहा सकर दूपणके निराकर-

---

(१) तथा चोक्तम् —मूलक्षतिकरीमाहुरनवस्थां हि दूपणम्।
वास्त्वानत्येऽप्यशक्तौ च नानवस्था विचार्यते॥१॥

णकूं दृष्टान्त मेचक ज्ञान अनेकवर्णाकार वस्तुके जाननेकू कह्या है। बहुरि सामान्य विशेष ऐसै जो जो ही गऊपणा अपनीं व्यक्तिनिकी अपेक्षा सामान्य, सो ही महिष आदिकी अपेक्षा विशेष, ऐसें दृष्टान्त-करि व्यतिकर दूपण नांहीं। इहां कहै—जो मेचकज्ञान विषै तौ जैसा वस्तुमै अनेकवर्णाकार था तैसा प्रतिभासै है, तौ ताकूं कहिये इहां हमारै भी जैसी वस्तु है ताका तैसाही प्रतिभास होहु, ताका पक्षपातका अभाव है। बहुरि जैसा वस्तु है ताका तैसा निर्णय भया तहा संशय नाही युक्त है, संशय तौ चलितज्ञानरूप है, अचल प्रतिभासविषैं संशय बनैं नाही। बहुरि जो वस्तु प्राप्त भया सिद्ध भया ताकै विषै अप्रति-पत्ति कहनां यह तौ अतिधीठपणा है। बहुरि जाकी उपलब्धि होय तहां अनुपलंभ भी नाही सिद्ध है तातै अभाव भी नाही। ऐसै इनि दूपण-नितै रहित प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणकरि अविरुद्ध अनेकातात्मक वस्तुका कहनेंवाला अनेकान्तमत है सो सिद्ध है। इस ही कथन करि अवयव अवयवीकै गुण गुणीकै कर्म कर्मवान्‌कै कथंचित् भेद है कथंचित् अभेद है सो कहे जानने। अब नैयायिक कहै है—जो समवायके वशतै भिन्न पदार्थ विषैं भी अभेदकी प्रतीति है जाकै ब्रह्मतुल्य ज्ञान न उपज्या ताकै, भावार्थ—जाकै अतीन्द्रिय ज्ञान नाही ताकैं भिन्न पदार्थ विषै भी समवायतै अभेदका ज्ञान है। ताकूं आचार्य कहै है—जो ऐसै नाही जातै समवाय भी पदार्थतै भिन्न ही है ताके स्थापनेकी असमर्थता है। सो ही कहिये है—इहां दोय पक्ष हैं, समवायकी वृत्ति है सो अपना समवायी पदार्थनिविषै वृत्ति सहित है, कि वृत्तिरहित है? जो कहै वृत्तिसहित है तौ तहा भी दोय पक्ष करैं हैं, जो यह वृत्ति आपही करि वृत्तिसहित है कि अन्यवृत्ति करि है? जो कहै—आपही करि है तौ यह पक्ष तौ नाही वणैं है, समवायविषैं अन्य

समवायका अगीकार नाही पाचही पदार्थकैं समवायीपणां है, ऐसा नैयायिकका वचन है। बहुरि अन्य वृत्तिकी कल्पना करै तौ सो वृत्ति अपनें सबधीनिविषै वर्त्तै है कि नाही? ऐसैं कल्पना करेंतै अन्य वृत्तिकी परपराकी प्राप्तितै अनवस्था आवैं। इहा कहै अपनें संबधीनिविषैं अन्यवृत्तिकै अन्यवृत्तिका अंगीकार नाही तातै अनवस्था नाही आवै, तौ ताकू कहिये—समवायविषै भी अन्यवृत्ति मति होहु। अब फेरि नैयायिक कहै है—जो समवाय है सो अपनें आश्रयविषैं वृत्तिरूप नाही मानिये है, तौ ताकूं कहिये—छह पदार्थनिकै आश्रितपणा है ऐसा ग्रथका विरोध आवैगा, नैयायिकका सूत्र है—जो नित्य द्रव्य विना छह पदार्थ अन्यकै आश्रय है सो ऐसा सूत्र विरोध्या जाय। बहुरि नैयायिक कहै है—जो समवायि पदार्थनिके होतैं ही समवायकी प्रतीति है तातैं समवायकै आश्रितपणां कल्पिये है, तौ ताकू कहिये—मूर्त्तद्रव्यनिकू होतै ही दिशाद्रव्यका लिंग जो यहु यातैं पूर्व दिशाकरि है इत्यादिक ज्ञान ताकै बहुरि कालका लिंग जो पर अपर आदि प्रतीति ताका सद्भावतै तिनि दोऊ द्रव्यनिकै भी तिनि मूर्त्त द्रव्यनिका आश्रितपणा ठहरैगा। तातै सूत्रमैं कह्या जो नित्य द्रव्य विना अन्यकै आश्रितपणा है, ऐसा कहना अयुक्त भया। बहुरि विशेष कहै है—जो समवायकै अनाश्रितपणा होतै संबधरूपपणा ही न बणै है, तैसैं ही प्रयोग है—समवाय है सो संबध नाही है जातैं याकै अनाश्रितपणा है जैसै दिशा आदि द्रव्य अनाश्रित है तैसैं। इस प्रयोगविषैं समवाय जो धर्मी सो कथंचित् तादात्म्यरूप है अर अनेक है ताकूं हम मान्या है तातै धर्मीका ग्राहक जो प्रमाण ताकरि बाधा नाही है। बहुरि आश्रयासिद्ध दूपण न कहना। बहुरि तिस समवायकै आश्रितपणा होतै भी यहु दूपणा कहिये है, समवाय

है सो एक नांही है जातैं संबंधस्वरूपपणां होतैं याकै आश्रितपणां है जैसैं संयोग सबंध है। इहा सत्ताकरि हेतुकै अनेकान्त होय है तातैं हेतुका संबंधस्वरूपपणा होतैं ऐसा विशेषण किया है। अब नैयायिक फेरि कहै है—जो संयोग विषैं तौ दृढ संयोग शिथिल संयोग इत्यादि नानापणांकी प्रतीति है तातै नानापणा है अर ऐसैं समवायविषैं तौ नांही जातैं समवाय तौ तिसतैं विपरीत है, ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो ऐसैं नाही जातैं समवायविषैं भी उत्पत्तिमानपणा विनश्वरपणांकी प्रतीतिरूप नानापणां सुलभ है। बहुरि कहै—संबंधी पदार्थके भेदतैं समवायविषैं नानापणा है तौ सयोगविषैं भी तैसैं ही नानापणा समान है, एक ही विषै तौ प्रश्न युक्त नांही। तातैं नैयायिककरि कल्पित समवायकैं विचार कर अयोग्यपणा है, तातैं तिस समवायके वशतैं गुण गुणी आदि विषैं अभेदकी प्रतीति नांही वणै है। बहुरि नैयायिक कहै है—जो अवयव अवयवी आदिका भिन्न प्रतिभास है तातैं तिनिकै भेदही है। ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो यहु नाही जातैं भेदप्रतिभासकै अभेदतैं विरोध नाही है, घटपट आदिकै भेद है तोऊ कथंचित् अभेद वणैं है। सर्वथा प्रतिभासकै भेदकी असिद्धि है जातैं यहु सत् है इत्यादि अभेद प्रतिभासका भी सद्भाव है। तातैं कथंचित् भेदाभेदात्मक, द्रव्यपर्यायात्मक, बहुरि सामान्यविशेषात्मक तत्व है, सो जलकी तीर देखनेंवालेकैं पक्षी देखनेंमैं आया तिस न्यायकरि नैयायिक अपनां मत साधै था ताकै स्याद्वादमतमैं कह्या तत्त्व भी देखनेंमैं आया, यातैं बहुत कहनेकरि पूर्णता होहु ॥ १ ॥

आगैं अब अनेकान्तात्मक वस्तुके समर्थनकै अर्थिही दोय हेतु कहैं हैं;—

अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात् पूर्वोत्तराकारपरिहारावाप्तिस्थितिलक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ॥२॥

याका अर्थ—अनुवृत्त कहिये अन्वयरूप अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा रूप इनिका जो प्रत्यय कहिये ज्ञानमैं प्रतीति ताकै गोचरपणातैं, बहुरि पूर्व परिणामका छोडना उत्तर परिणामका ग्रहण करना इनि दोऊनिकरि सहित स्थितिरूप सो है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी प्राप्ति है तातैं । तहा अनुवृत्त आकार तौ जैसै अनेक गऊ विषै गऊ गऊ ऐसी प्रतीति, सो है। बहुरि व्यावृत आकार कहिये यह गऊ श्याम है यह काबरा है ऐसै न्यारी न्यारी प्रतीति, सो है । तिनि दोऊ प्रतीतिनिकै गोचर कहिये विषय ताका भाव तातैं अनेकातात्मक वस्तु है । इस हेतुकरि तौ तिर्यक् सामान्य अर व्यतिरेकलक्षण विशेष इनि दोऊ स्वरूप वस्तु साध्या । बहुरि पूर्व आकारका त्याग उत्तर आकारकी प्राप्ति अर इनि दोऊनिकरि सहित स्थिति सोही है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी उपपत्ति है, तातैं सामान्यविशेपात्मक वस्तु है । इस हेतुकरि ऊर्द्धता सामान्य अर पर्यायनामा विशेप इनि दोऊ रूप वस्तु समर्थ्या है ॥ २ ॥

आगैं पहले कह्या जो सामान्य ताका भेदकू कहै है;—

सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्ध्वताभेदात् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—सामान्य दोय प्रकार है, तिर्यक् सामान्य, ऊर्द्धता सामान्य ऐसैं भेदतै ॥ ३ ॥

आगैं पहला भेद जो तिर्यक् सामान्य ताकूं उदाहरणसहित कहै है:—

सदृशपरिणामस्तिर्यक् खंडमुंडादिषु गोत्ववत् ॥४॥

याका अर्थ—सदृश कहिये सामान्य जो परिणाम सो तिर्यक् सामान्य है जैसै अनेक खाडी मूडी गऊ हैं तिनिविपै गऊपणा है। तहां

जो गऊपणा आदिकूं सर्वथा नित्य एक रूप मानिये तौ क्रम यौगपद्य करि अर्थ क्रियाका विरोध आवै अर सर्व व्यक्तिनिविषै न्यारा न्यारा समस्तपणैं वृत्तिका अयोग आवै। तातै अनेक है अर सदृशपरिणाम स्वरूप ही है, ऐसा तिर्यक् सामान्य कह्या॥ ४॥

आगै दूसरा भेद जो ऊर्ध्वता सामान्य ताकूं दृष्टान्तसहित दिखावैं हैं;—

परापरविवर्त्तव्यापि द्रव्यमूर्ध्वता मृदिव स्थासादिषु॥ ५॥

याका अर्थ—पर कहिये पूर्वकालभावी अपर कहिये उत्तरकालभावी विशेप पर्याय तिनिविपै व्यापनेवाला जो द्रव्य सो उर्ध्वता सामान्य है जैसैं स्थास कोश कुसूल आदि मृत्तिकाकी अवस्था विपै मृत्तिका व्यापी है। इहा सामान्य शब्दकी अनुवृत्ति लेणीं। ताकरि यह अर्थ होय है जो यह उर्ध्वता सामान्य है सो कहा है? द्रव्य है, सो ही परापरविवर्त्तव्यापी ऐसा विशेपणरूप कीजिये है, पूर्व अपरकालवर्ती तीन काल विपैं अन्वयरूप है ऐसा अर्थ है, जैसैं चित्रका ज्ञान एक है ता विपैं एक कालभावी जे अनेक अपनें विपैं आये चित्रके नील आदि आकार तिनिकी व्याप्ति है तैसैं एकके भी क्रमतै होय, ऐसा परिणाम तिनिविषैं व्यापीपणा है। ऐसा अर्थ जानना॥ ५॥

आगैं विशेषकै भी दोय प्रकारपणा है, ऐसै दिखावै है,—

विशेषश्च॥ ६॥

याका अर्थ—विशेष है सो भी दोय प्रकार है। इहा द्वेधा शब्दका अधिकार करि सबंध करना॥ ६॥

सो ही कहैं हैं,—

पर्यायव्यतिरेकभेदात् ॥ ७ ॥

याका अर्थ—सो विशेष दोय प्रकार है, पर्याय अर व्यतिरेक ऐसैं भेदतैं ॥ ७ ॥

आगैं पहला विशेपका भेदकू कहैं हैं,—

एकस्मिन् द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्षविषादादिवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—एक द्रव्यविपै क्रमभावी परिणाम है ते पर्याय हैं जैसैं आत्माविपै हर्प अर विपाद अनुक्रमतै होय है ते पर्याय हैं । इहा आत्मद्रव्य अपनी देह प्रमाण मात्र ही है व्यापक नाही है, बहुरि बट-कणिका मात्र छोटासा नाही है, बहुरि कायकै आकार परिणये जे पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तावन्मात्र चार्वाकमती कहै है सो नाही है । तहा आत्माकू यौगमती व्यापक कहैं हैं, तिनिका तौ अनुमानका प्रयोग ऐसा है—आत्मा व्यापक है जातै द्रव्यपणाकू होतैं अमूर्तिकपणा है जैसैं आकाश व्यापक है। ताकू पूछिये—जो अमूर्त्तपणा है सो जो रूपादिक स्वरूप मूर्त्तीकपणा है ताका प्रतिषेधरूप अमूर्त्तपणा है तौ मन-करि अनेकान्त है । यौगमती मनकू द्रव्य मानैं हैं अर अमूर्त्तपणा ठहराया है तौहू व्यापक नाही, यह व्यभिचार आया । बहुरि कहै—असर्वगत द्रव्यका परिमाण मूर्त्तपणा है ताका निपेध अमूर्त्तपणा है तौ पर जे हम तिनि प्रति साध्य समान हेतु है, आत्माकै व्यापकपणा साध्य है तैसा ही व्यापकपणा हेतु भया । बहुरि अन्य अनुमान कहै—जो आत्मा व्यापक है जातैं अणुपरिमाण अधिकरणकका अभाव होतैं नित्य द्रव्य है, इहा नित्य है ऐसा ही हेतु कहै तौ परमाणुविषैं गुण भी नित्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य द्रव्य

कह्या । बहुरि द्रव्य ही कहते तौ घट भी द्रव्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य विशेषण किया । बहुरि नित्य द्रव्य ही कहतै मनकरि अनेकान्त होय ताके परिहारकै अर्थि अणुपरिमाणानधिकरण कह्या, इहा भी आकाशका दृष्टान्त है । सो यह अनुमान भी समीचीन नाही है । जातैं अणुपरिमाणानधिकरणपणा हेतुका विशेषण है तहां निषेध पर्युदास है कि प्रसज्य है ? जो कहैगा-पर्युदास- है तौ अणुपरिमाणका प्रतिषेध करिकैसा परिमाण है ? महापरिमाण है कि अवान्तरपरिमाण है कि परिमाणमात्र है ? जो कहै—महापरिमाण है तौ हेतु साध्य समान ही है जातै व्यापकपणा साध्य है महापरिमाण हेतु कह्या सो समान भया । बहुरि कहै—अवान्तर परिमाण है तौ हेतु विरुद्ध है, अवान्तरपरिमाणाधिकरणपणा है सो अव्यापकपणाहीकूं साधै है । बहुरि कहै—परिमाणमात्र है तौ तिसकूं परिमाणसामान्य अंगीकार करना, ऐसै होतै अणुपरिमाणका प्रतिषेधकरि परिमाणसामान्याधिकरणपणा आत्माकै है ऐसै कह्या ठहरै सो बणै नाही, यामैं विशेष अधिकरणरहितकी सिद्धिका प्रसंग आवै है; जातैं आत्माकै विषै परिमाणसामान्य व्यवस्थित नाही । तौ कहा है ? परिमाणकी व्यक्तिनिविषै ही व्यवस्थित है, सामान्य होय सो तौ अपने विशेषनिमैं ही रहै । बहुरि अवान्तरपरिमाण अर महापरिमाण इनि दोऊनिका आधारपणा करि आत्मा न पावै तब परिमाणमात्र अधिकरणपणा आत्मा विषै निश्चय किया जाय नाही । बहुरि आकाशका दृष्टान्त कहै—सो साधनरहित होय, आकाशकै तौ महापरिमाणाधिकरणपणाकरि परिमाणमात्राधिकरणपणाका अयोग है । बहुरि नित्यद्रव्यपणा है सो सर्वथा असिद्ध है, सर्वथा नित्यकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है । बहुरि कहैगा—दूसरी पक्ष प्रसज्य प्रतिषेध है, तौ प्रसज्य प्रतिषेध तौ तुच्छा-

भाव कहिये सर्वथा अभाव रूप है, ताका ग्रहणका उपायका असंभव है, तातै ताकै हेतुका विशेषणपणा ही नाही । बहुरि अगृहीतविशेषण हेतु है, सो कछू है नाही जातै ऐसा वचन है जो विशेष्यविषै वुद्धि है सो अगृहीतविशेषणस्वरूप नाही है, विशेषणकू ग्रहण किये विशेष्यकी बुद्धि होय है । बहुरि तुच्छाभावका ग्रहणका उपाय प्रत्यक्ष प्रमाण नाही है जातै प्रत्यक्षकै तुच्छाभावके सबधका अभाव है । प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियकै अर पदार्थकै सन्निकर्षतै उपजै सो नैयायिकमतविषै प्रसिद्ध है । अर विशेषण विशेष्यभाव सबधकी कल्पना करै तौ अगृहीतकै विशेषपणा नाही है, ऐसैं तौ पूर्व कया, सो ही इहा दूषण है तातैं आत्मद्रव्य व्यापक नाही है ॥ बहुरि वटकणिका मात्र भी नाही है, सुन्दर स्त्रीका कुच जघनस्पर्शनके कालविषै रोम रोममै आल्हाद आकार सुखका अनुभव होय है जो ऐसै न होय तौ सर्वांग विषै रोमाच आदि कार्यका उपजनेका अयोग होय ।

बहुरि इहा कहै—जो अणमात्र आत्माकै भी शीघ्र वृत्तितै आलात चक्रकी ज्यो युगपतका प्रतिभास होय है तौहू क्रमकरि सर्वांग सुख होय है तौ इहा अयुक्त है जातै तिस सुखका कारण अन्त करणका अन्य अन्य सबधकी कल्पना होतै बीचिमै व्यवधान कहिये अन्तरका प्रसग आवै है, सुखमै विच्छेद बीचि बीचिमै हूवा चाहिये । अर मनका सबन्ध विना ही सुख मानियें तौ सुखकै मानसप्रत्यक्षपणाका अयोग है । बहुरि पृथ्वी आदि भूतचतुष्टयस्वरूपपणा भी आत्माकै नाही है जातै पृथ्वी आदि तौ अचेतन है सो अचेतनतै चैतन्यकी उत्पत्तिका अयोग है । बहुरि पृथ्वी आदिके धारण प्रेरण द्रव उष्ण स्वभावरूपतै चैतन्यकै अन्वयका अभाव है जातैं पृथिवीका धारण स्वभाव है पवनका प्रेरण स्वभाव है जलका द्रव स्वभाव है अग्निका उष्ण स्वभाव है, इनि स्वभावनितैं चैतन्यका देखना

जानना स्वभावकै अन्वय नाही दीखै है। बहुरि तुरतके भये बालककैं स्तन आदिविषै अभिलापका प्रसंग आवै है, अभिलाप तौ प्रत्यभिज्ञान होतैं होय है, प्रत्यभिज्ञान स्मरण होतै होय है स्मरण अनुभव होतै होय है, ऐसै पूर्वें अनुभव होना सिद्ध होय है जातै वीचिकी दशा विषै तैसै ही व्याप्ति है। बहुरि मरण भये पीछै व्यन्तरकुलविषै आप उपजै ते आय कहैं जो मै फलाणा हू सो व्यतर भयाहू ऐसैं कहते देखिये है। बहुरि केईकनिकै पूर्व भवका स्मरण होय है। ऐसै चेतनकै अनादिपणां सिद्ध होय है, सो ही कह्या है ताका श्लोक है ताका अर्थ—तिसही दिनका उपज्या बालककै तिसही दिन स्तनकै लागणेकी इच्छा होय है, बहुरि व्यन्तरका देखना, भवस्मरणका होना, पृथ्वी आदि भूत अचेतनतैं अन्वय नाही; ऐसै च्यार हेतुनितैं स्वभावहीकरि ज्ञाता द्रव्यस्वरूप नित्य सिद्ध होय है। बहुरि ऐसै न कहनां—जो अपना देहप्रमाण आत्मा है, ऐसै कहनेंमैं भी प्रमाणका अभाव है यातै सर्वत्र संशय है जातैं देह प्रमाण साधनेंविषै अनुमान प्रमाणका सद्भाव है। सो ही कहै है—देवदत्तनामा पुरुषका आत्मा तिसके देह विषै ही है, बहुरि तहा सर्वत्र ही विद्यमान है जातैं तिस देह विषै ही बहुरि तहां सर्वत्र ही अपना असाधारण गुणका आधारपणाकरि ग्रहण होय है। जो जहा ही बहुरि जहा सर्वत्र ही अपना असाधारण गुणका आधारपणाकरि पाइये सो तहा ही बहुरि तहां सर्वत्र ही विद्यमान होय, जैसै देवदत्तके घर विषै ही बहुरि तहा सर्वत्र ही पाइये ऐसा अपना असाधा-

(१) तथा चोक्तम्—

तदहजस्तनेहातो रक्षोदृष्टेर्भवस्मृतेः।
भूतानन्वयनात्सिद्धः प्रकृतिज्ञः सनातनः॥ १॥

रण भासुर प्रकाशपणा आदि गुण जाकै ऐसा दीपक है तैसैं ही देव-दत्त पुरुषका देह विषै ही अर देह विषैं सर्वत्र ही आत्मा है, आत्माके असाधारण गुण ज्ञान दर्शन सुख वीर्य है ते सर्वांगविषै तिस देह विषैं ही पाइय हैं। इहा देह विषैं ही आत्मा है ऐसा कहनें तै तौ व्यापकका निषेध भया, अर देह विषै सर्वत्र है ऐसैं कहने तै वटकणिका मात्रका निषेध भया। इहा श्लोक है ताका अर्थ—सुख है सो तौ आल्हादनके आकार है, विज्ञान है सो मेय कहिये जानने योग्य वस्तुका जानना है, शक्ति है सो क्रिया करि अनुमानमैं आवै है जैसै तरुण पुरुषके स्त्रीका समागमविषैं होय है, आनंद अर जानना अरु सामर्थ्य ये तीनू तहा ताके प्रकट देखिये हैं ऐसा वचन है। तातै आत्मा अपनी देहकै प्रमाण ही निश्चित भया ॥ ८ ॥

आगै विशेषका दूसरा भेदकूं कहै है,—

अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अन्य अन्य पदार्थ विषै पाइये ऐसा विसदृश परिणाम है सो व्यतिरेकनामा विशेष है, जैसैं गऊ भैंसि आदि न्यारे न्यारे विलक्षण परिणाम स्वरूप है तैसैं। जातै विसदृशपणा है सो प्रतियोगीके ग्रहण होतैं ही होय है जैसैं गऊतै भैंसि विसदृश है। इहा गऊ प्रतियोगी हैं ताका ग्रहण है। बहुरि या विसदृशपणाकै परकी अपेक्षा स्वरूप होतै वस्तुपणा नाही है, अवस्तुविषैं तौ आपेक्षिकपणाका अयोग है जातै अपेक्षाकै वस्तुनिष्ठपणा ही है अवस्तुविषै अपेक्षा नाही होय है ॥ ९ ॥

ऐसैं प्रमाणके विषयका निरूपण किया।

---

(१) सुखमाल्हादनाकारं विज्ञानं मेयबोधनम्।
शक्तिः क्रियानुमेया स्याद्यूनः कान्ता समागमे ॥

इहा श्लोकः—

स्यात्काररलांछितमबाध्यमनन्तधर्म-
सन्दोहवर्मितमशेषमपि प्रमेयम् ।
देवैः प्रमाणवलतो निरचायि तच्च
संक्षिप्तमेव मुनिभिर्विवृतं मयैतत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्री अकलकदेव आचार्यनैं समस्त ही प्रमाणका विषय जो प्रमेय ताका निरूपण किया, कैसा है प्रमेय—स्यात्कार कहिये कथंचित् प्रकार ताकरि चिह्नित है याहीतैं अवाध्य कहिये निर्वाध है, बहुरि कैसा है—अनत धर्मका जो समूह ताकरि सहित है, सो काहेतै कह्या है—प्रमाणके वलतै कह्या है तातै प्रमाणभूत है; सो ही मुनि जे माणिक्यनदि आचार्य तिनिनै संक्षेपकारि कह्या है, सो ही मैं अनंतवीर्य आचार्य विवरणरूप किया है ॥ १ ॥

सवैया ।

अकलंक देव मुनि रची जो प्रमेयधुनि,
स्यादवाद चिह्नतैं अशेष निरबाध है ।
मानको सहाय पाय लखे जे अनंत धर्म,
मंडित अखंड पंडितांकै हू अगाध है ॥
रत्ननंदि ताहि जानि संक्षेप किया वखान,
ताका विसतारसूं अनंतवीर्य साध है ।
देशमयी कथा रूप किया बुद्धि सारू मैंभी
पढौ सुनौ भव्यजीव मिथ्यामत वाध है ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रमाणप्रकरणी लुघुवृत्तिकी वचनिका विषैं विषयका समुद्देशनामा चौथा अधिकार पूर्ण भया ॥ ४॥

अथ पंचम समुद्देश।

—•••○•••—

[५]

आगै प्रमाणके फलकी विप्रतिपत्तिका निराकारणकै आर्थ सूत्र कहै है;—

अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—अज्ञानकी तौ निवृत्ति कहिये अभाव होना बहुरि हान कहिये त्याग अर उपादान कहिये ग्रहण अर उपेक्षा कहिये उदासीनता वीतरागता एते प्रमाणके फल है ॥ तहा फल दोय प्रकार है साक्षात् कहिये लगता ही, अर पारपर्य कहिये परपरा करि। तहा साक्षात् तौ अज्ञानका नाश होना फल हे जातै वस्तुका यथार्थ ज्ञान होय तिस ही काल अज्ञानका नाश होय है, करणरूप ज्ञान सो तौ प्रमाण है अर क्रियारूप जानना सो फल हे सो ही अज्ञानकी निवृत्ति है। बहुरि परपराकरि ग्रहण त्याग अर वीतरागता ये फल हैं जातै प्रमेय वस्तुका निश्चय भये पीछैं होय है। सो यहु दोय प्रकारका ही फल प्रमाणते भिन्न ही है ऐसै तो नैयायिक मानैं हैं। बहुरि प्रमाणतैं अभिन्न ही है ऐसैं बौद्धमती मानै है ॥ १ ॥

तिनि दोऊनिका मत निराकरण करि अपना मत स्थापनेंकू सूत्र कहै हैं,—

प्रमाणादभिन्नं भिन्नं च ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रमाणतैं प्रमाणका फल कथंचित् अभिन्न है कथंचित् भिन्न है ॥ २ ॥

आगै कथंचित् अभेदके समर्थनकै अर्थि हेतु कहैं है;—

यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्षते चेति प्रतीतेः ॥ ३ ॥

याका अर्थ—जो आत्मा प्रमेयकूं प्रमाणकरि यथार्थ जानैं है सो ही दूर भया है अज्ञान जाका ऐसा होय करि अनिष्टका त्याग करै है इष्टका ग्रहण करै है जो आपकै इष्ट अनिष्ट न जानै ताविषैं मध्यस्थ होय है वीतराग होय है ऐसैं प्रतीति है। इहा ऐसा अर्थ जानना— जिस ही आत्माकै प्रमाणकै आकार परिणाम होय है तिसहीकै फलरूपपणाकरि परिणाम होय है, ऐसै एक प्रमाताकी अपेक्षाकरि प्रमाण फलकै अभेद है। वहुरि प्रमाण करणरूपपरिणाम है फल क्रियारूप है; ऐसैं करणक्रिया परिणामके भेदतै भेद है, ऐसै भेदकै सामर्थ्यसिद्धपणा है तातै भेदका समर्थन हेतु न्यारा न कह्या है ॥ ३ ॥

ऐसैं प्रमाणके फलका निरूपण किया।

इहां श्लोक—

पारम्पर्येण साक्षाच्च फलं द्वेधाऽभ्यधायि यत्।
देवैर्भिन्नमभिन्नं च प्रमाणात्तदिहोदितम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्रीअकलंकदेव मुनिनैं प्रमाणका फल साक्षात् अर परंपराकरि दोय प्रकार कह्या सो प्रमाणतै भिन्न अर अभिन्न कह्या है, सो ही या प्रकरणविषै माणिक्यनंदिआचार्यनैं कह्या है ॥ १ ॥

दोहा।

परंपरा साक्षात करि भिन्न अभिन्न विचारि।
देव कह्यो फल मानको सो ही या मधि धारि ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रमाण प्रकरणकी लघुवृत्तिकी
वचनिकाविषैं फलका समुद्देश नामा
पांचमां अधिकार संपूर्ण भया।

अथ षष्ठ समुद्देश ।



(६)

आगै अब कह्या जो प्रमाणका स्वरूप आदि चतुष्टय तिनिका आभास कहिये कहे जैसैं नाही अर तिनि सारिखे दीखै तिनिकूं कहै है—

ततोऽन्यत्तदाभासम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—ततः कहिये कह्या जो प्रमाणका स्वरूपादिक तातैं अन्यत् कहिये विपरीत सो तदाभास कहिये ताका आभास है । इहा कह्या जो प्रमाणका स्वरूप संख्या विषय फल ये च्यार भेद तिनितैं अन्यत् विपरीत सो तदाभास हैं ॥ १ ॥

आगैं क्रममैं प्राप्त भया जो स्वरूपाभास ताकूं दिखावैं हैं—

अस्वसंविदितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः ॥ २ ॥

याका अर्थ—अस्वसंविदित कहिये आपकरि आपकूं न जानै, गृहीतार्थ कहिये ग्रह्याकूं ग्रहण करै, दर्शन कहिये सामान्याकारमात्रका ग्राही, संशय कहिये संदेहरूप, आदि शब्दतैं विपर्यय अनध्यवसाय ये सर्व प्रमाणाभास है। इहा अस्वसंविदित गृहीतार्थ दर्शन संशयादि इनिका द्वन्द्वसमास करना । वहुरि आदि शब्दकरि विपर्यय अनध्यवसायका ग्रहण करना । तहां ज्ञान अस्वसंविदित है जातै अन्य ज्ञानकरि प्रत्यक्ष होय है ऐसैं नैयायिक मती कहै है, ताका प्रयोग, सो ही कहैं हैं—ज्ञान है सो आपतै न्यारा जो ज्ञान ताकरि जाननें योग्य है जातैं वेद्य

कहिये जाकूं जानिये सो तौ ज्ञेय है, जैसैं घट है। तहा आचार्य कहैं हैं—यह कहना मिलै नाही, इहा धर्मी जो ज्ञान ताकै अन्य ज्ञानकरि वेद्यपणा होतै साध्यकै मध्य आय पडनेंतैं धर्मीपणाका अयोग है जातैं धर्मी तौ प्रसिद्ध ही होय है। बहुरि धर्मी ज्ञानकै स्वसंविदितपणा कहिये तौ तिस ही करि हेतुकै अनेकान्तपणा है। बहुरि महेश्वरका ज्ञानकरि व्यभिचार आवै है जातैं महेश्वरका ज्ञान अस्वसंविदित कहै तौ सर्वज्ञपणा न ठहरै, स्वसंविदित कहै तौ स्वमतकी हानि होय है। बहुरि व्याप्तिज्ञानकरि भी अनेकान्त कहिये व्यभिचार आवै है। बहुरि अस्वसंविदित ज्ञानतैं अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है जातैं जो ज्ञापक कहिये जनावनेंवाला अप्रत्यक्ष होय सो जनावनेंयोग्यकूं जनावै नाही। जो ऐसैं होय ज्ञापक विना जाण्या भी जणावै तौ शब्द कानतैं सुण्या विना अर्थकूं जनावनेवाला ठहरै, लिंग धूमादिक नेत्रकरि देख्या विना अग्नि आदिकूं जानवनेंवाला ठहरै। इहा कहै—जो लगताही अन्य ज्ञान है ताकरि ग्रहण करिये है, तौ ताकै भी विना ग्रह्याकै परका जनावनेंवालापणा नाही तब ताके ग्रहणकूं तिसतै अन्य ज्ञान कल्पनें योग्य ठहरै तहा भी तिसतै अन्य कल्पना ऐसैं अनवस्था आवै। तातैं अस्वसंविदित ज्ञान ऐसा नैयायिकका पक्ष श्रेष्ठ नाही।

इस ही कथनकरि मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञानकै परोक्षपणाकरि स्वसंविदितपणा नाही है करणज्ञान परोक्ष ही है तातैं अस्वसंविदित ही है ताका भी निराकरण किया जातैं ऐसे ज्ञानतैं भी अर्थका प्रत्यक्षपणाका अयोग है। इहा मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञान है सो कर्मपणाकरि प्रतीतिमैं न आवै है तातैं याकै प्रत्यक्षपणा नाही है प्रत्यक्ष तौ कर्मज्ञान है, तौ ताकूं कहिये—ऐसैं कहैं फलज्ञानकै भी प्रत्यक्षपणा न ठहरैगा। बहुरि कहै—फलपणाकरि प्रतिभास-

नेंतै प्रत्यक्षपणा है तौ करण ज्ञानकै भी करणपणांकरि प्रतिभासनेंतैं प्रत्यक्षपणां होहु। तातैं अर्थ जाननेंकी अन्यथा अप्राप्तितैं जैसैं करण ज्ञान कल्पिये है तैसैं अर्थका प्रत्यक्षपणाकी अन्यथा अप्राप्तितैं ज्ञानकै प्रत्यक्षपणा भी होहु। बहुरि कहै—जो नेत्र आदि करणकै अप्रत्यक्षपणां होतैं भी रूपका प्रगटपणां होय है, तिसतैं व्यभिचार आवै है। तहा कहिये—जो भिन्न है कर्त्ता जातैं ऐसा करणक ही यहु व्यभिचार है, अभिन्नकर्त्तृककरण होतैं संतैं तौ कर्त्ताका प्रत्यक्षपणां होतैं तिस कर्त्तातैं अभिन्न जो करण ताकै कथंचित् प्रत्यक्षपणांकरि अप्रत्यक्ष एकान्तका विरोध है, जैसैं प्रकाश स्वरूपकै अप्रत्यक्षपणां होतैं प्रदीपकै प्रत्यक्षपणा होतैं विरोध है तैसैं॥ बहुरि गृहीतग्राही जो धारावाही ज्ञान सो गृहीतार्थ प्रमाणाभास है। बहुरि बौद्धकरि मान्यां जो निर्विकल्पस्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाण सो दर्शन है, सो अपनें विषयका उपदर्शकपणा याकै नाही है तातैं अप्रमाण है। जातैं तिस विषयभूत पदार्थतैं उपज्या जो व्यवसाय कहिये निश्चय ताहीकै अपनां विषयका उपदर्शकपणा है। बहुरि बौद्ध कहै है—जो व्यवसायकै प्रत्यक्षपणां नांही प्रत्यक्षके आकार करि अनुरक्तपणा ही है तातैं प्रत्यक्षकै तौ प्रमाणपणां है अर व्यवसाय है सो तौ गृहीतग्राही है यातैं अप्रमाण है। तहां आचार्य कहैं हैं—यह सुभाषित नाही, दर्शन है सो विकल्परहित है ताका उपलंभ नांही तातै ताका सद्भावका अयोग है। बहुरि सद्भाव मानिये तौ जैसैं नील आदिक विषै उपदर्शक है तैसैं क्षणक्षयादिविषै भी ताका उपदर्शकपणा ठहरै है। बहुरि कहै—जो क्षणक्षयादि विषैं क्षणिकतैं विपरीत अक्षणिकका संशयादिरूप समारोप होय यातैं ताका उपदर्शक नांही, तौ ताकूं कहिये—यह सिद्ध भई नील आदि विषैं समारोप जो संशयादिक ताका विरोधी जो ग्रहण सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चय होय है तिस

स्वरूप ही प्रमाण है अन्य तदाभास है। बहुरि संशयादि है ते प्रमाणाभास प्रसिद्ध ही हैं। तहा संशय है सो तौ दोय तरफका स्पर्शन करनेंवाला है जैसें खेतमें गड्या स्थाणुकौ देखि जाकै यह स्थाणु ही है ऐसा निश्चय नाही, सो विचारै यह स्थाणु है कि पुरुष है! ताका निश्चय नाही होनें तैं यहु प्रमाणाभास है। बहुरि अन्य विषै अन्यका विकल्प निश्चय सो विपर्यय है, जैसें सींपविषै रूपाका निश्चय। बहुरि विशेषका निश्चय नांही सो अनध्यवसाय है, जैसें चालताकै तृण लागै तब जानैं किछू है, विशेष निश्चय नाही ॥ २ ॥

आगैं कहै है इनि अस्वसंविदित आदिकै प्रमाणभासपणा कैसैं है; ताका सूत्र—

स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—जातै ये अस्वसंविदित आदिक हैं तिनिकै अपनां विषयका उपदर्शकत्व कहिये निश्चायकपणा ताका अभाव है तातैं ये प्रमाणाभास है ॥ ३ ॥

पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादि-ज्ञानवत् ॥ ४ ॥

आगैं इनि विषै दृष्टात अनुक्रमतैं कहै है,—

याका अर्थ—अन्य पुरुषका ज्ञानकी ज्यों अस्वसंविदित ज्ञान अपना विषय विषै नाही प्रवर्तै है तातै प्रमाण नाही, पूर्वं ग्रह्या है अर्थ जानैं ऐसा ज्ञानकी ज्यों गृहीतार्थ ज्ञान प्रमाण नाहीं, चालताकै तृणस्पर्श-ज्ञानकी ज्यों दर्शन प्रमाण नांही है, स्थाणु पुरुष ज्ञानकी ज्यों संशय प्रमाण नाही है, आदि शब्दतैं विपर्ययादिक तथा ऐसे और भी जाननें ते सारे प्रमाणभास है ॥ ४ ॥

आगैं जो संनिकर्षकूं प्रमाण कहै है तिस प्रति दृष्टान्त कहैं हैं—

चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च ॥ ५ ॥

याका अर्थ—नेत्रकैं अर रसकैं द्रव्यविषैं संयुक्त समवाय स्वरूप सन्निकर्ष है सो जैसैं प्रमाण नांही तैसैं और भी सनिकर्ष प्रमाण नांही। इहां यहु अर्थ है—जैसैं नेत्र अर रसकैं द्रव्यविषैं संयुक्त समवाय है तौऊ प्रमाण नांही तथा चक्षु रूपकैं संयुक्त समवाय है सो भी प्रमाण नाही है तातैं यह भी प्रमाणाभासही है, यहु अतिव्याप्ति कही सो उपलक्षणरूप है, ऐसैं ही अन्य इन्द्रियके सन्निकर्ष अप्रमाण जाननें। इहां नेत्रकरि रूपकैं संयोग भया अर रूपकैं अर रसकैं एक द्रव्य विषैं समवाय है सो रसकरि भी समवाय भया सो संयुक्त समवायनामा संनिकर्ष तौ भया अरु नेत्रकै रसका ज्ञान न भया तातैं प्रमाण न भया तब अतिव्याप्ति दूषण भया। बहुरि अव्याप्ति दूषण है जातैं नेत्र इंद्रिय विना अन्य इन्द्रियनिकैं संनिकर्ष है अर नेत्र प्रमाण है तहां संनिकर्ष व्यापै नांही तातैं अव्याप्ति है। बहुरि संनिकर्षकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कहैं हैं तिनिकैं नेत्रकै विषैं संनिकर्षका अभाव है नेत्र पदार्थतैं भिडै नांही तातैं नेत्रप्रत्यक्षमैं संनिकर्षलक्षण संभवै नांही तब असंभवी दूषण भी है। इहां नैयायिक कहै है—जो नेत्र प्राप्त अर्थका जाननेंवाला है जातैं वीचिमैं अन्य पदार्थ आडा आवै तब जानैं नांही है जैसैं दीपककै भीति आदि आडी आय जाय तिस अर्थकूं प्रकाशै नांही तैसैं, भावार्थ—नेत्र भी पदार्थतैं जुडिकर ही जाणैं है तातैं सनिकर्षकी सिद्धि है। ताकूं आचार्य कहै है:—यह भी साधनां समीचीन नाही जातैं नेत्रकै कांच भोडल आदि आडा आय जाय तौऊ नेत्र ताकरि व्यवहित पदार्थकूं प्रकाशै है तातैं हेतु असिद्ध है। बहुरि वृक्षकी शाखा अर चन्द्रमाकूं एक काल नेत्र देखै है सो नांही ठहरै यह प्रसग आवै है। बहुरि

कहैं—इहा क्रमसूं देखे है तहा पुरुपकै युगपत् देखनेंका अभिमान है, सो ऐसै भी न कहना जातैं कालका अतर नाही दीखै है एकही काल है। बहुरि विशेष कहैं हैं—जो क्रमका ज्ञान तौ प्राप्ति भयें ही नेत्रकै जाननेका निश्चय भये होय है, क्रम प्राप्ति विपै अन्य प्रमाण तौ नाही है। इहा कहै—जो नेत्र इन्द्रियकै तैजसपणा है इस हेतुकरि प्राप्त अर्थका प्रकाशपणा है यह अन्य प्रमाण है, तौ ताकूं कहिये—यह नाही है, तैजसपणाकी सिद्धि नाही होय है। इहा नैयायिक तैजसपणा साधनेकूं प्रयोग करै है—नेत्र है सो तैजस है जातै रूपादिक गुण है तिनिमे सू रूपका ही यह प्रकाशक है जैसैं दीपक है। आचार्य कहै है—यह भी प्रयोग विना विचारया किया है जातैं इहा प्रदीपका दृष्टान्त कह्या सो तौ तैजस है अर मणि तथा अंजन आदिक पार्थिव हैं पृथिवीतै उपजै है तेऊ रूपकू प्रकाशैं है। बहुरि नेत्रकू तेजोद्रव्यके रूप प्रकाशनैंतै तैजस कहिये तौ पृथिवी आदिके रूपका प्रकाशक है, तातैं याकै पृथिवी आदि करि रच्यापणाका प्रसग आवै है, भावार्थ—नेत्र भी पार्थिव ठहरै है। तातैं सनिकर्पकै अव्यापकपणा है। तातैं प्रमाणपणा नाही। बहुरि करण ज्ञानकरि याकै व्यवधान है, सन्निकर्ष भये पीछै इन्द्रिय ज्ञान पदार्थकू जाणै है सन्निकर्षही जानैं नाही। ऐसैं करण ज्ञानकरि व्यवधान भया सन्निकर्षकरि ही तौ अर्थका सवेदन नाही भया तातैं सन्निकर्प प्रमाणाभासही है॥ ५॥

आगै प्रमाण सामान्याभास कहि करि अब प्रमाणविशेपका आभासैं कहैं है, तहा प्रत्यक्षभास कहैं हैं,—

अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् ॥ ६॥

याका अर्थ—अविशदपणा होतै प्रत्यक्ष मानै सो प्रत्यक्षाभास है जैसैं बौद्धमतीकै अकस्मात् निश्चय भये विनाही धूम देखनेतैं अग्निका विज्ञान बौद्ध निर्विकल्प प्रत्यक्ष मानैं है जैसैं धूमकी परीक्षा निश्चय विना अग्निका अनुमान करै। सो विना निश्चय तदाभास है तैसैं प्रत्यक्षाभासही है प्रमाण नांही ॥ ६ ॥

आगै परोक्षाभासकू कहैं हैं;—

वैशद्येऽपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् ॥ ७॥

याका अर्थ—जहा वैशद्य होय तहां भी परोक्षमानैं सो परोक्षाभास है जैसैं मीमांसक करणज्ञान विशद है तौऊ ताकूं परोक्ष मानैं है तैसै। यहु पहले विस्तारकरि कह्या ही है ॥ ७ ॥

आगैं परोक्षके भेदाभासकूं कहते संते क्रममै आया जो स्मरणा भास ताकूं कहैं हैं;—

अतस्मिँस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो अनुभवविषैं आया नाही ताका स्मरणा सो स्मरणाभास है जैसैं जिनदत्त पुरुषकूं पूर्वैं देख्या था अर यादि देवदत्तकू किया 'जो सो देवदत्त' ऐसैं ॥ ८ ॥

आगैं प्रत्यभिज्ञानाभासकूं कहैं हैं;—

सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभिज्ञानाभासम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—सदृश विषैं तौ सो ही यहु है अर तिस ही विषैं यहु तिस सारिखा है जैसै दोयका जुगल विषै एक देखै इत्यादि प्रत्य-

भिज्ञानाभास है ॥ इहा प्रत्यभिज्ञान दोय प्रकारकाकूं लेय प्रत्यभिज्ञानाभास भी दोय प्रकार कह्या, एकत्वनिबधन, सादृश्यनिबधन। तहा एकत्वविपै तौ सादृश्यका ज्ञान, अर सादृश्यविषैं एकत्वका ज्ञान, सो प्रत्यभिज्ञानाभास है ॥ ९ ॥

आगैं तर्काभासकू कहैं हैं;—

असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावाँस्तत्पुत्रः सः श्याम इति यथा ॥ १० ॥

याका अर्थ—असबद्ध कहिये अविनाभावरहित विषै अविनाभावका ज्ञान सो तर्काभास है, जैसैं काहूकै अन्य कोई पुत्र श्याम देखि कहै—याके जे ते पुत्र हैं तथा होंयगे ते सर्व श्याम हैं; ऐसै व्याप्ति कहना तर्काभास है ॥ १० ॥

आगैं अनुमानभास कहैं हैं,—

इदमनुमानाभासम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—इद कहिये आगैं कहैं हैं सो अनुमानाभास है ॥ ११ ॥

आगैं तिस अनुमानाभासविषैं तिसके अवयवाभास दिखावनेंकरि समुदायरूप अनुमानाभासकू दिखावनेंकी इच्छाकरि पहले पहला अवयवाभास कहैं हैं,—

तत्रानिष्टादिः पक्षाभासः ॥ १२ ॥

---

(१) मुद्रित सस्कृत प्रतिमें "यावाँस्तत्पुत्रः स श्याम इति यथा" यह पाठ सूत्रमे नहीं दिया है किन्तु टीकामें दिया है और परीक्षामुख सूत्र जो अलग पुस्तककी आदिमे प्रकाशित है वहा सूत्रमेंही ऐसा पाठ दिया है। लेकिन–यह पाठ सूत्रमें ही होना चाहिये।

याका अर्थ—तिनि अवयवनिविषैं अनिष्ट आदि शब्दकरि बाधित प्रसिद्ध ये पक्षाभास हैं। इष्ट अबाधित असिद्ध लक्षण साध्य पूर्वैं कह्या था सो ही पक्ष कह्या था ॥ १२ ॥

आगैं तिनितैं विपरीत तदाभास है, ऐसैं कहैं हैं;—

अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ॥ १३ ॥

याका अर्थ—अनिष्ट पक्षाभास तौ मीमासककैं शब्द अनित्य है। मीमासक शब्दकूं नित्य मानैं है सो अनित्य कहै तौ ताकै अनिष्ट है ॥१३॥

आगैं असिद्धतै विपरीत सिद्ध पक्षाभास कहैं हैं;—

सिद्धः श्रावणः शब्दः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो श्रावण है, ऐसै पक्ष कहै तौ सिद्ध पक्षाभास है जातै शब्द तौ सुननेमैं आवै है सो श्रावण है ही फेरि साधै तौ सिद्ध पक्षाभास है ॥ १४ ॥

आगै अबाधिततैं विपरीत बाधित पक्षाभासकू कहते संते सो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाधित है ऐसै दिखावते संते सूत्र कहैं हैं;—

बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः ॥ १५ ॥

याका अर्थ—बाधित पक्ष है सो प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, लोक, स्ववचन, इनि करि है तातै बाधित पक्षाभास पंच प्रकार जाननां ॥१५॥

आगैं इनिका अनुक्रमकरि उदाहरण कहै है —

तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथा, अनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वा-ज्जलवत् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—तिनि विषै प्रत्यक्ष बाधित—जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण कहिये शीतल है जातैं याकै द्रव्यपणा है जैसै जल शीतल है तैसैं।

इहा अग्नि है सो उष्ण स्पर्श स्वरूप है सो अनुष्ण कह्या तब स्पर्शन प्रत्यक्षकरि बाधित भया ॥ १६ ॥

आगै अनुमानबाधित कहैं हैं—

अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ॥ १७ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपरिणामी है जातैं याकै कृतकपणा है, कन्या होय है, जैसै घट कन्या होय है। इहा अपरिणामी पक्ष है सो नित्य पक्ष है, सो शब्द कृतकपणा हेतुतैं परिणामी सधै है, इस अनुमानकरि नित्य पक्ष बाधित है ॥ १७ ॥

आगैं आगमबाधित कहैं हैं:—

प्रेत्याऽसुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् ॥ १८ ॥

याका अर्थः—धर्म है सो परलोकविषैं दुःख देनेवाला है जातैं यह पुरुषके आश्रय है जैसैं अधर्म पुरुषके आश्रय है तातैं दुःख देनेवाला है। इहा पुरुषके आश्रयपणातै अधर्म धर्म अविशेषरूप है तौऊ आगमविषै धर्मकै परलोकमैं सुखका कारणपणा कह्या है, तातैं पक्ष आगमबाधित है ॥ १८ ॥

आगै लोकबाधित कहै हैं;—

शुचि नरशिरःकपालं प्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत् ॥ १९ ॥

याका अर्थ—मनुष्यका मस्तकका कपाल कहिये खोपरी सो पवित्र है जातैं याकै प्राणीका अगपणा है जैसैं शख सीप पवित्र मानिये है तैसैं। इहा लोकविषैं मनुष्यकी खोपरी प्राणीका अग है तौऊ अपवित्र मानिये है, शख सीप प्राणीके अग हैं तिनिकूं पवित्र मानैं है तैसैं खोपरीकूं पवित्र कहना लोकबाधित है ॥ १९ ॥

आगै स्ववचनबाधित कहैं है,—

माता मे वंध्या पुरुषसंयोगेऽप्यगर्भत्वात् प्रसिद्धवंध्यावत् ॥ २० ॥

याका अर्थ—मेरी माता वाझ है जातै पुरुषका संयोग होतैं भी ताकै गर्भवतीपणा नाही है जैसै अन्य प्रसिद्ध वंध्या है तैसैं । इहां मेरी माता कहनेंतैं वध्या कहना अपना यचनहीतै वाधित भया, जो वंध्या है तौ आप पुत्र कैसै भया ॥ २० ॥

आगैं क्रममै आये जे हेत्वाभास तिनिकू कहैं हैं;—

हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिंचित्कराः ॥ २१ ॥

याका अर्थ—हेत्वाभास च्यारि हैं; असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, अकिंचित्कर ऐसै ॥ २१ ॥

आगैं इनिका यथानुक्रमकरि उदाहरणसहित लक्षण कहैं हैं;—

असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ॥ २२ ॥

याका अर्थ—असत् है सत्ता अर निश्चय जाका सो असिद्ध हेत्वाभास है ॥ सत्ता अर निश्चय जो है सो "सत्तानिश्चयौ" कहिये, नही है सत्ता अर निश्चय जाको सो असत्सत्तानिश्चय कहिये ॥ २२ ॥

आगैं पहला भेदकू कहै हैं;—

अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दः चाक्षुषत्वात् ॥ २३ ॥

याका अर्थ—नाहीं विद्यमान है सत्ता जाकी सो असत सत्ताक नामा असिद्ध हेत्वाभास है जातैं शब्द है सो परिणामी है जातै चाक्षुष है । इहा शब्द तौ श्रावण है अर चाक्षुष हेतु सूं साधै सो शब्दविषैं चाक्षुपपणाकी सत्ता नाही ॥ २३ ॥

आगै कहैं हैं कि इस हेतुकै असिद्धपणा कैसैं भया?,—

स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—यह स्वरूपकरि ही असिद्ध है चाक्षुपपणा शब्दका स्वरूप नाही ॥ २४ ॥

आगैं प्रसिद्धका दूसरा भेदकूं कहै हैं;—

अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ॥२५॥

याका अर्थ—प्रविद्यमान है निश्चय जाका सो असत् निश्चय हेत्वाभास है जैसें मुग्धबुद्धि जो भोलाजीव तिस प्रति कहै इहा अग्नि है जातै धूम है ॥ २५ ॥

आगे याकै असिद्धता कैसैं? ऐसैं पूछे कहैं है,—

तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् ॥ २६ ॥

याका अर्थ—तिस धूम नामा हेतुकै वाफ आदिपणाकरि पृथिवी आदि भूतसघातविपै सदेहतै असत् निश्चय है। मुग्धकै विद्यमान धूमविपै भी विना समस्या सदेह उपजै जो यह वाफ है कि धूम है? ॥२६॥

आगै अमुग्धबुद्धि प्रति और असिद्धका भेद कहैं हैं,—

सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २७ ॥

याका अर्थ—साख्य मती प्रति कहै—जो शब्द परिणामी जातै कृत कहै ॥ २७ ॥

याका असिद्धपणाविपैं कारण कहैं है,—

तेनाज्ञातत्वात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—तिस साख्यकरि नाही, जानवापणातैं जातैं साख्यके मतमै आविर्भाव तिरोभाव ही प्रसिद्ध है उत्पत्ति आदि प्रसिद्ध नाही

है। तातैं शब्द कृतक है ऐसा साख्यमती नाही जाणै है तातैं याकै भी असिद्धपणां है ॥ २८ ॥

आगैं विरुद्ध हेत्वाभासकूं दिखावता संता सूत्र कहै है;—

विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—विपरीत कहिये विपक्ष विषै है अविनाभावका निश्चय जाका ऐसा विरुद्ध हेत्वाभास है जैसैं अपरिणामी शब्द है, इहां कृतकपणा हेतु है सो अपरिणामका विरोधी जो परिणाम ताकरि व्याप्त है तातै विरुद्ध है ॥ २९ ॥

आगैं अनैकान्तिक हेत्वाभासकूं कहैं है;—

विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकः ॥ ३० ॥

याका अर्थ—विपक्षविषैं भी अविरुद्ध है वृत्ति जाकी सो अनैकान्तिक हेत्वाभास है। इहा 'अपि' शब्दतै ऐसैं जानिये जो केवल पक्ष सपक्षविषै ही याकी वृत्ति नाही है, विपक्षविषैं भी है। सो यह हेत्वाभास दोय प्रकार है; निश्चित विपक्षवृत्ति, शकितविपक्षवृत्ति ॥३०॥

तहा आदि भेदकूं दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ॥ ३१ ॥

याका अर्थ—जातैं नित्य जो आकाश ताकै विषैं भी याका निश्चय है, भावार्थ—इहा प्रमेयपणा हेतु है सो पक्ष जो शब्द ताविषै अनित्यपणा साध्य है ताविषैं भी है अर याका सपक्ष घट ताविषै भी है अर विपक्ष जो नित्य आकाश ताविषै भी निश्चयकरि पाइये है, तातैं निश्चितविपक्षवृत्ति हेत्वाभास भया ॥ ३१ ॥

आगैं याकी विपक्षकै विषैं निश्चितवृत्ति कैसैं है ऐसी आशका होता सूत्र कहैं हैं;—

आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अस्य कहिये या हेतुको नित्य आकाश जो है ताकै विषै निश्चय है यातैं ॥ ३२ ॥

आगैं शकितविपक्षवृत्तिकूं उदाहरणरूप कहै हैं,—

शंकितवृत्तिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ नाही है जातैं जाकै वक्तापणा है। इहा वक्तापणा हेतु शकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक है ॥ ३३ ॥

आगै याकं भी विपक्षविषै शकितविपक्षवृत्ति कैसैं है? ऐसी आशंका करि कहैं हैं,—

सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाविरोधात् ॥ ३४ ॥

याका अर्थ—जातैं सर्वज्ञपणाकरि वक्तृपणाकैं अविरोध है। इहा अविरोध यहु—जो ज्ञानका उत्कर्ष होतैं वचननिका अपकर्ष नाही देखिये है, वहुत ज्ञान होय तब वचन स्पष्ट नीसरै है यह निरूपण पहलैं किया है। तातैं वक्तापणा हेतु है सो विपक्ष जो सर्वज्ञका सद्भाव है तहा शंकित है सन्देहरूप है, वक्तापणा होतैं सर्वज्ञपणा होय भी है नाही भी होय है। तातैं शकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक हेत्वाभास भया ३४

आगै अकिंचित्कर हेत्वाभासका स्वरूप कहै है,—

सिद्धे प्रत्यक्षादिबाधिते च साध्ये हेतुरकिंचित्करः ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—जहा साध्य सिद्ध होय तथा प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाधित होय तहा हेतु अकिंचित्कर है ॥ ३५ ॥

आगैं इनिकूं उदाहरणरूप कहै हैं,—

सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दात्वत् ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—जैसै शब्द है सो श्रावण है श्रवण इन्द्रियका गोचर है यातैं श्रावण कहिये है जातै याकै शब्दपणा है। इहा शब्दपणा हेतु है सो श्रावणपणा साध्य है सो तौ पहले ही सिद्ध है हेतु तौ किछू साध्या नाही तातैं अकिंचित्कर है ॥ ३६ ॥

आगैं याकै अकिंचित्करपणा कैसै है सो कहिये है;—

किंचिदकरणात् ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—इस हेतुनै किछू किया नाही तातै अकिंचित्कर है सो हेत्वाभास है ॥ ३७ ॥

आगैं दूसरा भेद प्रत्यक्षादिवाधित जाका साध्य होय ताकूं पहला भेदका दृष्टान्तरूप करनेका द्वारही करि उदाहरणरूप करैं है;—

यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किंचित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जैसै अग्नि है सो अनुष्ण है जातै याकै द्रव्यपणां है। इहा अग्नि उष्ण है, अर अनुष्ण कह्या सो साध्य स्पर्शनप्रत्यक्षकरि बाधित है तातै इस द्रव्यपणा हेतुकै अकिंचित्करपणा है जातैं इहां किछू किया नाही, जैसैं इहा किछू किया नाही तैसै ही पूर्व सूत्रमैं जानना ॥ ३८ ॥

बहुरि यह अकिंचित्करपणां दोष हेतुका लक्षणके विचारका अवसर विषैं हीं अर वादकाल विषैं नाही है ऐसैं प्रकट करते संते कहै हैं;—

लक्षण एवासौ दोषो व्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—यहु अकिंचित्करपणां हेतुका दोष है सो लक्षण कहिये शास्त्रविषै हीं है, वाद विषैं व्युत्पन्नका प्रयोग है सो पक्षके

दोषहीकरि दूषित है हेतुका दोष प्रधान नाहीं। व्युत्पन्न ऐसा पक्षका प्रयोग ही न करै अर करै तौ तहां पक्षाभास कहना, जो सिद्ध साध्य कहै तौ सिद्ध पक्षाभास कहना, बाधित साध्य कहै तौ बाधित पक्षाभास कहना। अकिंचित्कर हेत्वाभासका कहना शास्त्रमैं ही प्रधान है, वादमैं नाहीं ॥ ३९ ॥

आगै दृष्टान्त है सो अन्वय व्यतिरेकके भेदतैं दोय प्रकार कह्या है तातैं आभास भी दोय प्रकार ही है, तहां अन्वयदृष्टान्ताभासकूं कहै हैं;—

दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥४०॥

याका अर्थ—दृष्टान्ताभास हैं ते अन्वयविषैं तौ तीन है, असिद्ध साध्य, असिद्धसाधन, असिद्धसाध्यसाधन ऐसैं। अर इनिका अर्थ ऐसा—असिद्ध है साध्य जा विषैं सो असिद्ध साध्य अन्वयदृष्टान्ताभास कहिये, इत्यादि जानना ॥ ४० ॥

आगैं इनि तीननिके उदाहरण एक ही अनुमानके प्रयोग विषै दिखावै है,—

अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघटवत् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपौरुषेय है पुरुषका किया नाही जातैं अमूर्त्तीक है, इहां तीन दृष्टांत है ते आभास है, इन्द्रिय सुखकी ज्यों, परमाणुकी ज्यों, घटकी ज्यो। तहां इन्द्रियसुखकी ज्यों, यह तौ असिद्धसाध्य है, इहां इंद्रियसुख पौरुषेय दृष्टांत है अर अपौरुषेयपणा साध्य है सो इंद्रियसुखमैं असिद्ध है तातैं असिद्ध साध्य भया। परमाणुकी ज्यो, यह असिद्धसाधन है—इहां साधन अमूर्त्तीकपणा है, सो परमाणु तौ मूर्त्तीक

है, परमाणुदृष्टान्तमैं अमूर्त्तपणां साधन असिद्ध है तातैं असिद्धसाधन भया। बहुरि घटकी ज्यों, यह असिद्धसाध्यसाधन है, घट पौरुषेय भी है अर मूर्त्तीक भी है अर इहां साध्य अपौरुषेय है साधन अमूर्त्तीकपणां है तातैं दोऊ घटमैं असिद्ध भये ॥ ४१ ॥

आगैं कहैं हैं साध्यतैं व्याप्त साधन दिखावनां ऐसैं अन्वय दृष्टान्तका अवसरमैं कह्या था सो जहां इसतैं विपरीत उलटा कहै सो भी दृष्टान्ताभास है;—

विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्त्तम् ॥ ४२ ॥

याका अर्थ—जहां अन्वय विपरीत कहै जैसैं जो अपौरुषेय है सो अमूर्त्तीक है। इहां जो अमूर्त्तीक है सो अपौरुषेय है ऐसैं अन्वय कहनां था सो उलटा कह्या तातैं यह भी दृष्टान्ताभास है ॥ ४२ ॥

आगैं याकै दृष्टान्ताभासता कैसैं है सो कहैं हैं;—

विद्युदादिनातिप्रसङ्गात् ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—विद्युत् कहिये वीजली आदिकरि अतिप्रसंगतैं दृष्टान्ताभास है जातैं उलटा अन्वय कहे वीजलीकै भी अमूर्त्तपणांकी प्राप्ति आवै है, वीजली अपौरुषेय तौ है परन्तु मूर्त्तीक है ॥ ४३ ॥

आगैं व्यतिरेक उदाहरणाभासकूं कहैं हैं;—

व्यतिरेके सिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—पहले प्रयोगमैं ही लगाइये है—शब्द है सो अपौरुषेय है जातैं याकै अमूर्त्तीकपणां है जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्त्तीक नाही; जैसैं परमाणु है; इद्रियसुख है, आकाश है। ये व्यतिरेक दृष्टान्ताभास हैं, इनिविषैं साध्य साधन उभय तीनूंनिका व्यतिरेक असिद्ध है। तहां

परमाणु तौ अपौरुषेय है तातैं यह तौ असिद्धसाध्य व्यतिरेक भया जातैं इहां व्यतिरेक ऐसैं है जो अपौरुषेय न होय सो अमूर्त्तीक नाही जैसैं परमाणु, सो परमाणुकै अपौरुषेयपणा साध्यते व्यतिरेक न भया । बहुरि इन्द्रियसुख है सो असिद्धसाधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्त्तीक है, सो अमूर्त्तीकपणा साधनतैं व्यतिरेक नाही भया । बहुरि आकाश है सो असिद्धसाध्यसाधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्त्तीक भी है अर अपौरुषेय भी है साध्य साधन दोऊतैं व्यतिरेक नाही भया । ऐसै तीन व्यतिरेकदृष्टान्ताभास कहे ॥ ४४ ॥

आगैं साध्यका अभाव होतैं साधनका अभाव है ऐसैं व्यतिरेक उदाहरणके अवसरमैं कह्या था ताविषै तिसतैं विपरीत कहै सो भी दृष्टान्ताभास है, यह दिखावै हैं,—

विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्त्तं तन्नापौरुषेयम् ॥४५॥

याका अर्थ—जो अमूर्त्तीक नाही सो अपौरुषेय नाही ऐसैं कहना सो विपरीतव्यतिरेक है । इहां जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्त्तीक नाही ऐसैं कहनाथा सो उलटा कह्या तातैं विपरीतव्यतिरेक दृष्टान्ताभास ही है ॥ ऐसैं दृष्टान्ताभास कहे ॥ ४५ ॥

आगैं बालव्युत्पत्तिकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव कहे थे सो अब बाल अल्पज्ञानीकूं तिनितैं घाटि कहै तौ प्रयोगाभास कहिये, ऐसैं कहै हैं,—

बालप्रयोगाभासः पंचावयवेषु कियद्धीनता ॥ ४६ ॥

याका अर्थ—अनुमानके पाच अवयव अल्पज्ञकूं कहने, तिनिमैं घाटि कहै सो बालप्रयोगाभास है ॥ ४६ ॥

आगैं याका उदाहरण कहै हैं,—

अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वाद्यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है जातैं याकै धूम सहितपणां है, जो ऐसैं होय (धूमसहित होय) सो अग्निसहित होय जैसैं महानस कहिये रसोई घर। इहा तीन ही अवयव कहे तातैं बालप्रयोगाभास है ॥ ४७ ॥

आगैं च्यार अवयवका प्रयोग होतैं प्रयोगाभास कहैं हैं;—

धूमवाँश्चायम् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—धूमवान् यह है। इहा तीन अवयव तौ पहले सूत्रके लेणें अर एक यह कहे ऐसैं च्यार अवयव कहैं सो भी बालप्रयोगाभास है ॥ ४८ ॥

आगैं अवयवनिकूं विपर्ययकरि क्रमहीन कहै तौऊ प्रयोगाभास कहिये, ऐसै कहैं हैं;—

तस्मादग्निमान् धूमवाँश्चायम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—तातै अग्निमान् है बहुरि यह धूमवान् है। इहां निगमनकूं पहलैं कह्या उपनयकूं पीछै कह्या तातैं क्रमभग भया, तातैं प्रयोगभास है ॥ ४९ ॥

आगै यह प्रयोगाभास कैसैं ? ताका हेतु कहै है,—

स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—जातै क्रमहीन अनुमानका अयोग करै तहां स्पष्टपणाकरि प्रकृत अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है। शिष्यकै स्पष्ट ज्ञान होय नाही तातैं प्रयोगाभास है ॥ ५० ॥

आगै अब आगमाभासकूं कहैं है;—

रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् ५१

याका अर्थ—रागद्वेष मोहकरि सहित जो पुरुष ताका वचनकरि जो ज्ञान होय सो आगमाभास है ॥ ५१ ॥

आगै याका उदाहरण कहै हैं;—

यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माणवकाः ॥ ५२ ॥

याका अर्थ—जैसे, नदीके तीर लाड्निकी राशि है सो हे बालक हो ! दौडो ल्यो। इहा कोई पुरुषकू बालकनिकरि व्याकुल करि राख्या था तब तिनिकू अपना लार छुडावनेंकू बहकावनेंके वाक्य कहता भया कि—नदीके तीर लाड्निके ढेर हैं सो हे बालक हो ! तुम तहा जाय ल्यो, ऐसैं कहि तिनिकू नदीके तीर चलाये। ऐसैं अपणा प्रयोजन साधनेकूं कछू कहै सो आप्तका वचन नाही तातै आगमाभास है ॥ ५२ ॥

आगैं इस उदाहरणमात्रकरि सतुष्ट न होते अन्य उदाहरण कहैं हैं,—

अंगुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च ॥ ५३ ॥

याका अर्थ—बहुरि यह उदाहरण जानना—जो अगुलीका अग्रभागविषैं हस्तीनिका समूहका सैकडा तिष्ठै है। इहा साख्यमती अपने आगमकी वासनामें लीन है चित्त जाका सो प्रत्यक्ष अनुमानकरि विरुद्ध सर्वही सर्व जायगा विद्यमान है (सर्वं सर्वत्र विद्यते) ऐसै मानता सता ऐसे वचन कहै है तातैं यह अनाप्तके वचनपणातै आगमाभास है ॥ ५३ ॥

आगैं इनि दोऊ वचननिकैं आगमाभासपणा कैसैं है ताका हेतु कहैं हैं;—

विसंवादात् ॥ ५४ ॥

याका अर्थ—जातैं ऐसे वचनके अर्थविषैं विसंवाद है। तातैं अविसंवादरूप जो प्रमाणका लक्षण ताके अभावतैं ऐसे वचन आगमाभास हैं ॥ ५४ ॥

आगैं संख्याभासकूं कहैं हैं;—

प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासम् ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है इत्यादि कहै सो संख्याभास है। प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्षके भेदकरि दोय कहे तहां तिसतैं विपरीतपणाकरि कहै—एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही है तथा प्रत्यक्ष अरु अनुमान ऐसैं दोय हैं इत्यादि नियम करै सो संख्याभास है ॥ ५५ ॥

आगैं प्रत्यक्ष ही एक प्रमाण है ऐसैं कहनां कैसैं संख्याभास है ऐसैं पूछे सूत्र कहैं हैं;—

लौकायतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण माननेंवाला जो लोकायतिक कहिये चार्वाकमती ताकैं परलोक आदिका निषेधकी अर परकी बुद्धि आदिकी अनुमान आदि प्रमाण विना प्रत्यक्षहीतैं असिद्धि है जातैं ये परलोक आदिका निषेध परबुद्धि आदि प्रत्यक्षका विषय नांही ॥ याका विस्तार पहले संख्याका निरूपणविषैं कीया ही है सो इहां नांहीं कहिये है ॥ ५६ ॥

आगैं और वादीनिकी प्रमाणकी संख्याका नियम भी बिगड़ै है ऐसैं चार्वाकमतके दृष्टान्तके द्वारकरि तिनिके मतविषैं भी संख्याभास है, ऐसैं दिखावैं हैं;—

सौगतसांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयानां प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ५७

याका अर्थ--जैसै बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, प्राभाकर, जैमिनीय कहिये मीमासक इनिमैं, बौद्धकैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं दोय, सांख्यकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम ये तीन, यौगकै प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान ये च्यार, प्राभाकरकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान अर्थापत्ति ये पाच, बहुरि जैमिनीयकैं अभावसहित ये ही छह, ऐसा संख्याका नियम है सो इनिका व्याप्ति विषय नाही यातैं व्याप्तिका ग्रहण करनेवाला तर्क प्रमाण वधै तब संख्या विगडै तैसै चार्वाककी भी संख्या परकी बुद्धि आदि प्रत्यक्ष विषय नाही ताकू ग्रहण करनहारा अनुमान आदि वधै तब ताकी संख्या विगडै है। भावार्थ--जैसैं सौगतादिक प्रत्यक्ष अनुमान आदि एक एक वधता प्रमाणकरि व्याप्तिकूं तर्क विना ग्रहण न करि सकै है तैसै चार्वाक भी प्रत्यक्ष करि परबुद्धि आदिकूं ग्रहण न करि सकै, ऐसा अर्थ है ॥ ५७ ॥

आगैं चार्वाक आदि कहै--जो परबुद्धयादिकी प्रतिपत्ति प्रत्यक्षकरि मति होहु अन्यतैं होसी, ऐसी आशंकाकरि कहै है,--

अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ--अनुमान आदिकरि परबुद्धिका ग्रहण मानिये है तौ अन्य प्रमाणपणा आया। इहा तत् शब्द करि परबुद्ध्यादिकपणा है यातैं अनुमानादिककै परबुद्ध्यादिक विषयपणा होतै प्रत्यक्ष एक प्रमाण है ऐसा वादकी हानि होय है ॥ ५८ ॥

आगैं इहा उदाहरण कहैं है,--

तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्वं, अप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् ॥ ५९ ॥

याका अर्थ—जैसैं तर्कके व्याप्तिविषयपणा होतैं अन्य प्रमाणपणां है बौद्धादिककैं अन्य प्रमाण आवै है तैसैं ही परबुद्ध्यादि अनुमानका विषय मानिये तब अन्य प्रमाणपणा आवै है, अर जो कहै तर्क अप्रमाण है तौ अप्रमाणकैं व्याप्तिका व्यवस्थापकपणां नांही है। इहा ऐसा विशेष—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाणका वादी चार्वाक है ताकरि बहुरि प्रत्यक्ष आदिमें एक एक अधिक प्रमाणका वादी बौद्धादिक है तिनिकरि स्वसंवेदन प्रत्यक्ष इन्द्रियप्रत्यक्ष ऐसैं तौ प्रत्यक्षके भेद अर प्रत्यक्ष अनुमान आदि भेदप्रतिभासका भेदकरि ही प्रमाणका भेद वक्तव्य है अन्य किछू गति नांही है। सो प्रतिभासका भेद चार्वाक प्रति तौ प्रत्यक्ष अनुमानविषैं है अर बौद्धादिककैं व्याप्तिज्ञान जो तर्क अर प्रत्यक्षादिप्रमाण इनिविषैं है, तातै सर्वहीकी प्रमाणसंख्या विगड़ै है ॥ ५९॥

सो ही दिखावैं हैं;—

प्रतिभासभेदस्य च भेदकत्वात्॥ ६०॥

याका अर्थ—जातैं प्रतिभास भेदकै ही प्रमाणका भेदकपणां है तातै सर्वकी संख्या विगड़ै है। चार्वाककै तौ अनुमान विगाड़ै है जातैं प्रत्यक्षतैं अनुमानका प्रतिभास जुदा है। अर बौद्धादिककै तर्क विगाड़ै है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानादिकतैं तर्कका प्रतिभास जुदा है॥ ६०॥

आगै अब विषयाभासकूं दिखावनेंकूं कहै हैं;—

विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम्॥६१

याका अर्थ—प्रमाणका विषय सामान्यही एक कहै अथवा विशेषही एक कहै अथवा दोऊही स्वाधीन कहै तौ विषयाभास है ॥६१॥

आगैं पूछै है कि इनिकैं विषयाभासपणा कैसैं है तहां कहै हैं;—

तथाऽप्रतिभासनात्कार्याकरणाच्च ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—जातैं जैसैं सामान्यमात्र विशेपमात्र दोऊ मात्र कह्या तैसै प्रतिभासै नाही है बहुरि यह कार्य कारणहारा नाही है ॥ ६२ ॥

आगैं इहा आचार्य अन्यवादीकूं पूछै है—जो सामान्य आदि एकान्तस्वरूप कार्यकू करै सो आप समर्थ होय करै है कि असमर्थ होय करै है ! तहा समर्थ पक्षमैं दूपण कहे हैं,—

समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् ॥ ६३ ॥

याका अर्थ—जो कहै सामान्य आदि समर्थ होय कार्य करै है तौ कार्यकी सर्वकाल उत्पत्ति चाहिये जातैं अन्यकी अपेक्षारहितपणा है ६३

बहुरि कहै सहकारीकी सापेक्षतैं कार्य करै है यातै सर्वकाल उत्पत्ति नाहीं है तौ तहा कहैं हैं,—

परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—जो परकी अपेक्षा करै तौ ताकैं परिणामीपणा आवै पहलैं न किया सहकारी आया तब किया तब सामर्थ्य नवीन आया तातैं परिणामी भया अर जो ऐसैं न मानिये तौ कार्य होनेंका अभाव है। भावार्थ—सहकारिरहित अवस्थाविषैं तौ कार्य न करै अर सहकारीका संबंध भये कार्य करै तब पहला आकार छोड्या उत्तर आकार ग्रह्या दोऊमै आप स्थित रह्या, ऐसे परिणामकी प्राप्ति होतैं परिणामीपणा आया, बहुरि ऐसैं न मानिये तौ जैसै पहले अभाव अवस्थाविषैं कार्य करनेका अभाव है तैसैं ही उत्तर अवस्थाविषै अभाव है ॥६४॥

आगैं दूसरा पक्षमै दोप कहैं है,—

स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् ॥६५॥

याका अर्थ—आप असमर्थ होय तौ कार्य करनेंवाला नाही है जैसैं पहले सहकारी विना कार्य करणहारा न था तैसैं अब भी नाही ॥६५॥

आगैं फलाभासकूं प्रकाशता सता कहै है,—

फलाभासः प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥६६॥

याका अर्थ—प्रमाणतै फल अभिन्न ही कहै अथवा भिन्न ही कहै सो फलाभास है ॥ ६६ ॥

आगै इनि दोऊ पक्षमैं फलाभासता कैसै? ऐसी आशंका होतैं आद्य पक्ष जो प्रमाणतै फल अभिन्न ही है ऐसी ताकैं फलाभासता-विपै हेतु कहैं है;—

अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—जो प्रमाणतै फल अभेद ही कहिये तौ प्रमाण फलका व्यवहार वणैं नाही, कै तौ प्रमाण ही ठहरै कै फल ही ठहरै जातै दूसरा पदार्थ ही नाही ॥ ६७ ॥

आगै कहै—संवृत्ति कहिये उपचार है नाम जाका ऐसी जो व्या-वृत्ति कहिये जुदायगी अवस्तुरूपताकरि प्रमाणफलकी कल्पना होइ, ऐसै कहें उत्तर कहैं है;—

व्यावृत्त्याऽपि न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्त्याऽफ-लत्वप्रसंगात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—जो व्यावृत्ति कहिये अवस्तुरूप जुदायगी ताकरि भी फलकी कल्पना नाही युक्त है जातै अन्यफलतै व्यावृत्ति कहिये जुदा-यगी ताकरि अफलपणाका प्रसंग आवै है। इहां यह अर्थ है—जैसै विजातीय फल जो अप्रमिति तिसतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगीकरि फलका व्यवहार है तैसै अन्यप्रमितिरूप जो सजातीय फल तिसतै भी जुदायगी है, ऐसै अफलपणा ही आया ॥ ६८ ॥

अब इहा ही अभेदपक्षविषैं दृष्टान्त कहैं हैं;—

प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥ ६९ ॥

याका अर्थ—जैसै अन्य प्रमाण करि व्यावृत्ति कहिये जुदायगी करि अन्य प्रमाणकै अप्रमाणपणाका प्रसग आवै है तैसै ही फलकै जानना । इहा भी पहले फलमै प्रक्रिया कही सो ही जोडि लेणीं । भावार्थ—जैसैं प्रमाण ऐसैं कहे अप्रमाणकी व्यावृत्ति है तौ अन्य प्रमाणतै व्यावृत्त प्रमाण है सो भी अप्रमाण ठहरै तब ऐसे कहै ताके मनमै प्रमाण न ठहरै तैसैं ही विजातीय फलतै व्यावृत्त फल प्रमिति है सो हीं सजातीय फल जो अन्य प्रमिति तिसतै भी व्यावृत्त है ऐसै अफल ही ठहरै ॥ ६९ ॥

आगै अभेद पक्षकू निराकरण करि आचार्य इस कथनकू संकोचैं हैं;—

तस्माद्वास्तवो भेदः ॥ ७० ॥

याका अर्थ—तातै भेद है सो वस्तुभूत है, प्रमाण फलकै एकान्त करि अभेद ही नाही है ॥ ७० ॥

आगै भेद पक्षकू दूषता सताकहै हैं,—

भेदे त्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—प्रमाणकै अर फलकै सर्वथा भेद ही होतैं अन्य आत्माकी ज्यों यह याका फल है ऐसैं कहना न बनै ॥ ७१ ॥

आगैं वादी कहै—जो जिस आत्मविषै प्रमाण समवायरूप है तिस ही विषैं फल भी है ऐसैं समवाय सबंध करि प्रमाण फलकी व्यवस्था है तातैं अन्य आत्मा विषै ताका प्रसग नाही, सो ऐसै कहना समीचीन नाही ऐसैं कहै है;—

---

(१) मुद्रित सस्कृतटीका प्रतिमे 'प्रमाणान्तरात्' इसके स्थानमे 'प्रमाणात्' इतनाही पाठ है (२) मुद्रित सस्कृतटोका प्रतिमें " तस्माद्वास्तवोऽभेद " ऐसा पाठ है ।

समवायेऽतिप्रसङ्ग ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—समवाय संबंध होतैं अतिप्रसंग आवै है। भावार्थ– समवाय तौ नित्य है अर एक है व्यापक है सर्व आत्माकैं समवाय तौ समान धर्म है तातैं यह इसहीका समवाय है ऐसा प्रतिनियम नाही तातैं अतिप्रसग आवै है ॥ ७२ ॥

आगैं स्वपरपक्षका साधन दूषणकी व्यवस्था दिखावै हैं;—

प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृ-तदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषण-भूषणे च ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—वादीनैं प्रमाण अर प्रमाणाभास स्थापे तिनिकूं प्रति-वादी दूषणसहित किये अर फेरि वादी ताका दोषका परिहार किया तथा परिहार न किया तौ ते दोऊ वादीकै साधन अर साधनाभास हैं अर प्रतिवादीकै दूषण अर भूषण दोऊ हैं। इहा ऐसा अर्थ है—वादी प्रमाण स्थाप्या प्रतिवादी ताकूं दूषण दिया फेरि वादी तिस दोषका परिहार किया तौ सोही वादीकैं साधन है अर प्रतिवादीकैं दूपण है। बहुरि जो वादी प्रमाणाभास कह्या अर प्रतिवादी ताकूं प्रमाणाभास दिखाया फेरि वादी ताकूं स्थाप्या नांही प्रतिवादीका वचनका परिहार न किया तौ तिस वादीकैं सो साधनाभास है अर प्रतिवादीकै सो ही भूषण है ॥ ७३ ॥

आगैं कह्या प्रकारकरि समस्त विप्रतिपत्तिका निराकरणद्वार करि पूर्वैं प्रमाणतत्व कहनेंकी प्रतिज्ञा करी थी ताकी परीक्षा करि अब नय-आदिका स्वरूप अन्य शास्त्रमैं प्रसिद्ध है सो तहातैं विचारनां, ऐसैं दिखावता संता सूत्र कहैं हैं;—

संभवदन्यद्विचारणीयम् ॥ ७४ ॥

याका अर्थ—प्रमाणके स्वरूपतैं अन्यत् कहिये और संभवता होय सो विचारना। संभवत् कहिये विद्यमान अन्यत् कहिये प्रमाणके रूपतैं और जो नयका स्वरूप सो अन्य शास्त्रविषैं प्रसिद्ध है सो विचारना, इहा युक्तिकरि जानना। तहा मूल नय तौ दोय हैं, द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक भेदतैं। तहा द्रव्यार्थिक तीन प्रकार हैं, नैगम, संग्रह, व्यवहार भेदतैं। बहुरि पर्यायार्थिक च्यार प्रकार है, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवंभूत भेदतै। तहा परस्पर गौण प्रधानभूत जो भेदाभेद तिनिका है प्ररूपण जामै सो तौ नैगम है "नैक गमो नैगमः" ऐसी निरुक्तितैं, भावार्थ—यह नय एक ही धर्मविषै नाही वर्त्तै है, विधि निषेधरूप सर्वेही धर्मनिमैं एककू मुख्यकरि अन्यकूं गौणकरि सकल्पमैं ले वर्त्तै है। बहुरि सर्वथा भेदहीकूं कहै सो नैगमाभास है। बहुरि प्रतिपक्षकी अपेक्षारहित सत्तामात्र सामान्यका ग्रहण करनहारा सो सग्रह है। सर्वथा सत्तामात्र कहै ऐसा ब्रह्मवाद सो सग्रहाभास है। बहुरि सग्रहकरि ग्रह्या ताका भेद करनहारा व्यवहार है। कल्पनामात्र कहै सो व्यवहाराभास है। शुद्धपर्यायग्राही प्रतिपक्षीकी अपेक्षा सहित होय सो ऋजुसूत्र है। क्षणिक एकान्त नय है सो ऋजुसूत्राभास है। बहुरि काल कारक लिंगनि आदिका भेदतैं शब्दकै कथंचित् अर्थभेद कहै सो शब्दनय है। अर्थभेद विना शब्दनिहीकै नानापणाका एकान्त कहै सो शब्दाभास है। बहुरि पर्यायके भेदतै अर्थकै नानापणा कहै सो समभिरूढ है। पर्यायका नानापणा विनाही इन्द्रादिक शब्दानिकै भेद कहै सो समभिरूढाभास है। बुहुरि क्रियाके आश्रयकरि भेदका प्ररूपण करै 'याही प्रकार है' ऐसा नियम कहै सो एवभूत है। क्रियाकी अपेक्षारहित क्रियाके वाचक शब्दनिविषै कल्पनारूप व्यवहार करै सो एवभूतनयाभास है।

ऐसैं नय तदाभासका लक्षण संक्षेपकरि कह्या। विस्तारकरि नयचक्र ग्रंथतैं तथा तत्वार्थसूत्रकी टीकातैं जाननां। अथवा 'संभवत्' कहिये विद्यमान संभवता अन्य वादका लक्षण अर पत्रका लक्षण अन्य शास्त्रमैं कह्या है सो इहां जाननां, तैसैं कया है—"समर्थवचनं वादः" याका अर्थ—जहा वादी प्रतिवादीकैं अथवा आचार्य शिष्यकैं पक्ष प्रतिपक्षका ग्रहणतैं समर्थ वचनकी प्रवृत्ति होय सो वाद कहिये, जो हेतु दृष्टान्त आदि करि निर्वाध वचन होय सो समर्थवचन कहिये। बहुरि पत्रका लक्षण कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ—जो प्रसिद्ध जे पाच अनुमानके अवयव ते जामैं पाइये बहुरि अपना इष्ट अर्थका साधक होय बहुरि निर्दोष गूढ जे पद ते जामैं वाहुल्यपणैं होय ऐसा वाक्य होय सो निर्दोष पत्र कहिये ॥ ७४ ॥

आगैं अब आचार्य प्रारंभ किया ताका निर्वाह अर अपनां उद्धतपणांका परिहार दिखावता संता कहैं हैं;—

श्लोक—**परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः ।**
संविदे मादृशो बालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥

याका अर्थ—मैं मंदबुद्धी परीक्षामुख नाम प्रकरण किया है, कैसा है यह—हेय उपादेय तत्वका दिखावनेंकूं आरसा सारिखा है, कौनकी ज्यौं किया है—जैसैं परीक्षाविषैं चतुर होय करै तैसैं किया है, बहुरि कौन आर्थि किया है—मो सारिखे मन्दबुद्धीनिकै ज्ञानकै आर्थि किया है। इहां वाल ऐसा पद कह्या तहां तौ उद्धतताका परिहारका वचन है। बहुरि शास्त्रका प्रारंभ करि निर्वाह करनेंतैं तत्वज्ञपणां निश्चय होय ही

(१) पत्रलक्षणम्—

प्रसिद्धावयवं वाक्यं स्वेष्टस्यार्थस्य साधकम्।
साधुगूढपदप्रायं पत्रमाहुरनाकुलम् ॥ १ ॥

है । बहुरि आरसाकी उपमा है सो जैसैं आपका अलकार आदिकरि मंडित सुन्दरपणा अथवा विरूपपणा अरसामैं दीखै तैसै यामैं हेय उपादेय तत्व साधन दूषण द्वार करि दीखैं हैं । बहुरि परीक्षादक्षकी ज्यो कह्या सो जैसै परीक्षावान् अपना प्रारभ्या शास्त्रकू निर्वाहै तैसैं मै भी निर्वाह किया है । ऐसा अर्थ है ॥

आगै टीकाकारकृत श्लोक है'—

अकलंकशशाङ्कैर्यत्प्रकटीकृतमखिलमाननिभनिकरम् ।
तत्संक्षिप्तं सूरिभिरुरुमतिभिर्व्यक्तमेतेन ॥ १ ॥

याका अर्थ—जो अकलक आचार्य रूप चद्रमाकरि प्रमाण अर प्रमाणभासका समूह समस्त प्रगट किया सो माणिकनादि आचार्यनै संक्षेपकरि कह्या, कैसे है आचार्य—बड़ी है बुद्धि जिनकी, बहुरि सो ही मैं अनतवीर्य आचार्य व्यक्त (प्रगट) किया है ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रमाणप्रकरणकी लघुवृत्ति-
की वचनिकाविषै प्रमाणआदिका
आभासका समुद्देशनामा छठा
परिच्छेद समाप्त
भया ॥

आगै टीकाकार इस टीकाकी उत्पत्तिके समाचार कहै है,—

श्लोक—**श्रीमान् वैजेयनामाऽभूदग्रणीर्गुणशालिनाम् ।**
बदरीपालवंशालिव्योमद्युमणिरूर्जितः ॥१॥

याका अर्थ—श्रीमान् कहिये लक्ष्मीवान् वैजेयनामा गुणनिकरि शोभायमाननिविषैं मुख्य होता भया, कैसा है—बदरीपालका वशकी जो आलि कहिये पक्ति परिपाटी सोही भया आकाश ताविषैं सूर्यसमान महान् होता भया ॥ १ ॥

वहुरि श्लोकः—

तदीयपत्नी भुवि विश्रुताऽऽसीत्
नाणांवनामा गुणशीलधीर्या।
यां रेवतीति प्रथिताम्बिकेति
प्रभावतीति प्रवदन्ति सन्तः ॥ २ ॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी स्त्री पृथिवीविषैं प्रसिद्ध नाणांव ऐसा है नाम जाका ऐसी होती भई, सो कैसी है—गुणनि करि शोभायमान बुद्धि अर लक्ष्मी जाकैं पाइये, वहुरि जाकूं रेवती ऐसा भी नाम प्रगट कहैं हैं तथा अंविका ऐसा भी नाम कहैं हैं तथा सत्पुरुष प्रभावती ऐसा भी नाम कहैं हैं ॥ २ ॥

वहुरि श्लोक;—

तस्यामभूद्विश्वजनीनवृत्ति-
र्दानाम्बुवाहो भुवि हीरपारव्यः ।
स्वगोत्रविस्तारनभोंऽशुमाली
सम्यक्त्वरत्नाभरणार्चिताङ्गः ॥३॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी नाणांवनामा स्त्रीविषैं हीरपनामा पुत्र होता भया, समस्त लोककूं हितकारी है वृत्ति जाकी, वहुरि दान देनेकूं पृथ्वीविषैं मेघसारिखा है वहुरि अपना गोत्रका विस्तार सो ही भया आकाश ताविषैं सूर्यसमान है, वहुरि सम्यक्त्वरूप रत्नका आभरणकरि शोभित है अंग जाका ऐसा होता भया ॥ ३ ॥

वहुरि श्लोक;—

तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्त्ते-
र्माणिक्यनंदिकृतशास्त्रमगाधबोधम् ।

(१) मुद्रित संस्कृत टीका प्रतिमें 'गुणशीलसीमा' ऐसा पाठ है।

स्पष्टीकृतं कतिपयैर्वचनैरुदारै-
र्बालप्रबोधकरमेतदनन्तवीर्यैः ॥ ४ ॥

याका अर्थ—तिस हीरपके आग्रहके वशतै मैं सत्य आचार्य अनतवीर्य माणिक्यनंदिकृत अगाधबोधरूप जो शास्त्र ताहि केई विस्तार रूप वचननि करि यह स्पृष्ट किया है, कैसा किया है-बाल जे मंदबुद्धी तिनिकै प्रकृष्ट ज्ञानका करन हारा है, बहुरि हीरप कैसा है—निर्मल है बडी कीर्त्ति जाकी ॥ ४ ॥

ऐसैं परीक्षामुख प्रकरणकी लघुवृत्ति प्रमेय-
रत्नमाला है दूसरा नाम जाका
सो समाप्त भई ॥

छप्पय ।

कह्यो प्रमाण स्वरूप, बहुरि संख्याविधि नीकी,
फुनि तसु विषय विचार, सार फल विधि हू लीकी ।
तदाभास विस्तार कियो, परमत निषेध कर
सुनि भवि लखै यथा स्वरूप, निज परमत जिम वर ॥
मुनिराज बड़ो उपकार यह, कियो परीक्षामुखकथन ।
तसु देश वचनिका शुभ बनी, सुगम पठन सुनना मथन[1] ॥

आगे या वचनिका होनेंके समाचार लिखिये है,—

(दोहा)

ग्रंथ परीक्षामुखतनी, बनी वचनिका येह ।
समाचार ताके कहूं, सुनों भव्य जुतनेह ॥ १ ॥

(चौपई)

देश ढुढाहर जयपुर जहां, सुवस वसैं नहिं दुःखी तहां ।
नृप जगतेश नीतिबलवान, ताकैं बड़े बड़े परधान ॥ २ ॥

१ मनन.

प्रजा सुखी तिनिकै परताप, काहूकैं न वृथा संताप ।
अपनें अपनें मत सव चलैं, जैनधर्महू अधिको भलैं ॥ ३ ॥
तामैं तेरहपंथ सुपंथ, शैली वडी गुनी गुनग्रंथ ।
तामैं मैं जयचन्द्र सुनाम, वैश्य छावडा कहै सुगाम ॥ ४ ॥
मैं तौ आतम द्रव्य विशुद्ध, जाति नाम कुल सवै विरुद्ध ।
तौऊ कर्मतणें संयोग, है विभाव परिणतिको भोग ॥ ५ ॥
अशुभ मंदतैं शुभ अनुराग, धर्मबुद्धि जागी धनि भाग ।
तव विचार यह भयो सुसार, जैन ग्रंथ पढ़ि करि निरधारि ॥६॥
पढ़ते सुनतैं भयो सुवोध, न्याय ग्रंथको भी कछु शोध ।
स्याद्वाद जिनमतमैं न्याय, ताकी रीति लखी कछु पाय ॥ ७ ॥
तवैं विचारी इस कलिकाल, जैनन्याय बुध विरले भाल ।
प्रकरण देश वचनिकारूप, लघु सो होय करूं जु अनूप ॥ ८ ॥
तव यह लख्यौ न्यायको द्वार, कियो वचनिकारूप उदार ।
भव्य पढ़ौ मन लाय अशेष, न्याय देशमैं करो प्रवेश ॥ ९ ॥
निज परमतको जानों भेद, मिटै विपर्यय वुधिको भेद ।
स्वपरतत्त्वकौं जानि विचार, तजो विभाव रहो अविकार॥१०॥
रत्नत्रय मारग लगि ताम, पहुचो मुक्तिपुरी सुखधाम ।
यह उपदेश जिनश्वरदेव, भॉष्यो ग्रहो करो तिनि सेव ॥११॥
पंडितजनसूं यह अरदासि, करूं परोक्ष मान मद नासि ।
हीनाधिक जो यामैं होय, मूल ग्रंथ लखि सोधो सोय ॥१२॥

(दोहा)

वालवुद्धि लखि संतजन, हसै न कोप कराय ।
इहै रीति पंडित गहै, धर्मवुद्धि इम भाय ॥ १३ ॥

(छप्पय)

नमूं पंचगुरुचरन सदा मंगलके दाता,
वंदूं जिनवरवानि सुनैं पावै सुख साता।
वीतरागता धर्म नमूं जो कर्मनाशकर,
चैत्यधाम अरु चैत्य नमूं सम्यकप्रकाशपर॥
ए नव वंदन योग्य हैं जिनमारगमैं नित्य ही,
मैं ग्रंथ अंतमंगल निमित करी वंदना सत्य ही १४

(दोहा)

अष्टादश शत साठि त्रय, विक्रम संवत माहिं।
सुकल असाढ सुचौथि बुध, पूरण करी सुचाहि॥ १५॥
लिखी यहै जयचंदनैं, सोधी सुत नंदलाल
बुध लखि भूल जु शुद्धकरि, वांचौ सिखवौ बाल॥ १६॥

इति श्रीपरीक्षामुख जैनन्यायप्रकरणकी
लघुवृत्ति प्रमेयरत्नमालाकी
श्री जयचन्द्रजीछावडाकृत
देशभाषामय वचनिका
सम्पूर्ण।

